



॥ ओ३म् ॥

# विश्व गुरु भारत

अर्थात्

(महान् भारत)

०३८६४२५५५०

लेखक—

रामा शंकर मिश्र



प्रकाशक—

भारत पुस्तक भण्डार

कटड़ा आहलूवाला

अमृतसर

मूल्य ६।

मूल्य ६)



उपहार

---

---

---

## भूमिका

प्रिय पाठक बृन्द ! इस पुस्तक का पहला संस्करण छप कर जब निकला तो भारत के लेखक, पाठक तथा प्रकाशकों ने उसे अमूल्य वस्तु समझ कर मांग की । हाथों हाथ थोड़े समय में चिक गया । युद्ध आरंभ होने के कारण इसका संस्करण छप नहीं सका । लंका (Ceylon) मद्रास, मी पी, बम्बे प्रान्त, राजपूताना, यू-पी, विहार, उड़ीसा, बंगाल आसाम व पञ्चाब आदि के विद्वानों ने इस पुस्तक पर सम्मतियां दी जिस में से कुछ सम्मतियां पाठकों की सूचना के लिये नीचे दी जाती हैं ।

### - आर्यवर्त के सुप्रसिद्ध -

श्री १०८ श्री नारायण स्वामी जी की सम्मति

“महान् भारत” को मैंने ध्यान पूर्वक पढ़ा । किंताब वास्तव में लेखक के कठिन परिश्रम का फल है, पुस्तक में भारत सम्बन्धी कोइ ऐसा विषय बाकी नहीं रहता जिसका दिग्दर्शन विदेशियों की जबानी सप्रमाण, न कराया गया हो । विशेष कर नव युवकों और युवतियों में इस पुस्तक का अधिक से अधिक प्रचार होना चाहिए ।

भारतवर्ष के सुप्रसिद्ध श्री महाबीर प्रसाद जी द्विदेशी लिखते हैं—

लेखक ने केवल विदेशी विद्वानों और यात्रियों की ही लिखी हुई सैकड़ों पुस्तकों से अवतरण देकर यह दिखाया है कि प्राचीन भारत सभी विषयों में सारे देशों से बढ़ा चढ़ा था । प्रथम भारतीय का कर्तव्य है कि वह इस पुस्तक का अवश्य स्वाध्याय करे ।

भारत माता के मन्त्रे मपूत देश भक्त डा० सत्यपाल जी  
लिखते हैं:—

हम कौन थे ? क्या बन गये, इन दो प्रश्नों को हल करने के  
लिये ही लेखक ने अतीत का उज्ज्वल चित्र उपस्थित किया है।

गड़रिये की लंकड़ी के नीचे और भेड़ों के भुगड़ में पड़े  
हुए शेर के बच्चे को जब यह पता लग जाय कि वह शेर है भेड़  
चकरी नहीं। किर वह स्वयं ददाढ़ उठेगा, बातावरण कांप  
जायगा लकड़ी और चरवाहे का पता न चलेगा। देश के  
नौजवान इसे पढ़ें और देखें कि वह क्या हो गये हैं।

भारत क्या था ? उन लोगों के पूर्वज विद्वानों के मुख से ही  
पूर्ण दिग्दर्शन कराया है जो आज हमारी हीनता का मुक्त हमत  
होकर प्रचार करते हैं। वक्ताओं, लेखकों, विद्यार्थियों को तो यह  
पुस्तक हर समय उपयोगी होगी तथा प्रत्येक भारतीय के अवश्य  
ही पढ़ने योग्य है।

### सासाहिक 'अर्जुन' देहली

विदेशों में भारत को बदनाम किया जाता है। हमारे सामने  
हमारे इतिहास को भ्रष्ट कर, हमारे साहित्य को निकम्मा सिद्ध  
भरमाने की चेष्टा की जाती है। ऐसी दशा में हम महान्-भारत  
पुस्तक का, जो भारत के महान् अतीत पर सर्वाङ्गीण, सोज,  
पूर्ण और प्रभाकराती प्रकाश डालती है, सहपै स्वागत करते हैं।

पुस्तक में केवल विदेशी विद्वानों के शब्दों द्वारा ही अतीत  
भारत के गौरव का वर्णन किया गया है जहाँ तक हम जानते हैं।  
राष्ट्र भाषा के भण्डार में यह अपने दंग की अभिनव, अभूत  
पूर्व और अद्वितीय कृति है।

### सासाहिक 'विश्ववन्धु' लाहौर

जो व्यक्ति इस पुस्तक का एक बार स्वाक्षर्य कर लेगा उसके हृदय पर भारत वर्ष की महानता का सिंक्ला जमे बगैर नहीं रह सकता ।

### सासाहिक 'हिन्दू' लाहौर

यह एक महत्व पूर्ण पुस्तक है । इस में प्राचीन भारत सम्बन्धी महत्व-पूर्ण वातों का इस ढंग से संकलन किया गया है कि भारतीय संस्कृति का एक सुन्दर चित्र सामने उपस्थित हो जाता है इतिहास के प्रेमियों की इस पुस्तक का अवश्य अध्ययन करना चाहिए ।

### मासिक 'सरस्वती' प्रयाग

महान्-भारत एक ऐसी पुस्तक है जिस से भारतीय इतिहास का सर ऊँचा हो जाता है । विदेशी सम्यता से प्रभावित हुए लोगों के लिये यह पुस्तक पथ प्रदर्शक से कम नहीं ।

### सासाहिक 'इन्डिपैन्डेंट' नागपुर

इस पुस्तक के लेखक ने जिस खोज से इस पुस्तक को लिखा है इसका दूसरा उदाहरण देना शक्ति से बाहर है । उन्होंने ३७३ उन पुस्तकों का हवाला दिया जो सब की संचिदेशियों की लिखी हुई है । इस से पाठक अनुमान लगा सकते हैं कि उन्होंने कितने सहज पुस्तकें पढ़ कर, कितना समानपात्र करके हवाला दिया उन ३७३ पुस्तकों का हवाला दिया जिन के लेखकों ने भारत को अपना गुरु माना । इस पुस्तक के पहले संस्करण के भूमिका लेखक हैं देशभक्त छाक सत्यापाल जी ।

*List of Books Prepared by Devinder Singh M. A.*

1. *The Travels of Fa-hien.* (399-411 A. D.), or Record of the Buddhist Kingdoms. Retranslated by Giles H. A. 1623 P. 66 Cambridge at the University Press P. U. L.

2. *Bernier Travels in the Mogul Empire.* Constabler's Oriental. Miscellany of original and selected publications. Westminister-Archibald Constable and Company Ltd P. U. L. 2 Cop. 497

3. *Ancient India as described by Megasthenes and Arrian* being a translation of the fragments of the *Indika* of Megasthenes collected by Prof. C. W. Bawden and of the first part of the *Indica* of Arrian by M. A. N. J. W.

Calcutta. Chatterjee, Chatterjee & Co. 15 College Square, 1926 P. 227 P. U. L

4. *Mandelso's Travels in Western India* (A.D. 1638-9) by Commissariat. M. S. Humphrey Milford. Oxford University Press 1931, P. 113 P. U. L.

5. *Ralph Fitch England's Pioneer to India and Burma, his companions and contemporaries with his remarkable narrative old in his own words* by J. Horace Ryley London, T. Fisher Unwin Paternoster Square 1899 P. 264 P. U. L

6. *Early Travels in India 1593-1619* Edited by Foster, William Humphrey Milford; Oxford University Press 1921 P. 351 P. U. L.

7. *Travels in India* by Jean Baptiste Tavernier Baron of aubonne Translated from the original French Edition of 1676 with a Biographical sketch of the author, notes, appendices, etc. by V Ball 2V

London Macmillers & Co. 1889 P. 420 P. U. L.

8. *The Travels of Lietra Della Valle in India*, from the old English Translation of 1664 by G. Havers; 2V, Edited with a life of the author, an introduction and notes by Edward Grey London Printed for the Hakluyt Society 4 Lincoln's in Fields. W.C. 1882 P. 192 P. U. L

9. *The first Englishmen in India, Letters and narrative of sundry Elizabethans written by themselves and edited with an Introduction and notes by J. Courtenay LOCKE*

Published by George Routledge & Sons Ltd, Broadway House,

Carter Lane, London 1930 P. 239 P. U. L.

10 Akbar and the Jesuits

Translated from the 'Histoire' of Father Pierredn Farric. S.F., with an introduction of G. H. Payne with 8 Plates 12/6 net.

(NOT EXAMINED)

11 Travels in Asia & Africa IBN BATTUTA, 1324-54 Translated, from the Arabic, selected and edited by H.A.R. Gibb with an introduction with 8 Plates 15/- net

Routledge London 1929 P. 398 P. U. L.

12 Jahangir and the Jesuits. Translated from the original of Fernao Guerreiro. S.F. with an introduction by G.H. Payne with 4 Plates 12/6 net

( NOT EXAMINED ) -

12 Jahangir and the Jesuits with an account of the Travels of Benedict Goes and the Mission to Pegu. From the Relations of father Fernao Guerreiro. S. Z. Translated by G. H. Payne Published by George Routledge and Sons Ltd Broadway House, Carter Lane, London 1930 P. 287 P. U. L.

13 Travels in India, Ceylon and Burma by Captain Basil Hall Edited and selected with an Introduction, by Professor H. G. Robinson Routledge & Sons London Broadway House P. 271 P. L. 1931 Broadway Travellers series.

14 The embassy of Sir Thomas Roe to India in 1615-19 as narrated in his Journal and correspondence. Edited by Sir William Foster Oxford University Press, London, Humphry Milford 1926 P. 532 P. U. L.

15 Megasthenes en de Indische Maatschappij Timmer; B C, J. H. J. Paris 1930 P. 323 P. U. L.

16 Histoire de La Vie de Hiouen-Jhsang et de ses voyages dans L. Inde, Julien, P. S. Pasis a L' imprimerie imperiale 1858 P. 472 P. U. L.

17. Ancient India as described in Classical literature Translated and copiously annotated by M'Grindle J W Westminister, Archibald Constable & Co. 1801 P. 226 P. U. L

18 Voyage of Nearchus; from the Indus to the Euphrates by

Vincent William, London 1797 P 530 p. u. L.

9 Storia Do Mogor or Mogul India 1653-1708 by Manucci Niccolao. Translated with introduction and notes by William Irvine 2V. 1907 P. 171. p. u. L.

20 The Jesuits and the Great Mogul by Sir Edward Maclagan London, Burns oates & Washbourne 1932, P. 435 p. u. L.

21 The Commentary of father Manserrate, S.J. on his Journey to the court of Akbar, Translated from the original Latin by J. S. Hoyland 1922

Humphrey Milford Oxford University Press P. 220, p.u.L.

22 Storia Do Mogor or Mogul India 1653, 1708 by Niccolao Manucci translated with introduction and notes by William Irvine V. And London John Murray, albemarle Street- Published for the Government of India 1907 P. 509 p. u. L.

23 Alberuni Ka Bharat By Sant Ram B.A Indian Press Paryag of 2V. 1ed 1917. Indian Press Allahabad Dr. Edward C. Sachan, Professor in Royal University of Berlin Elliot History of India p. u. L. Page 474.

(Kitab abluc-ran Mohd Iben Ahmed Al-beruni fee Tebqiq Mal-nind Man Maqula Fee-ul-Akal o Mazdula)

24 Itsingh Ki Bharat Yarta. Sant Ram B.A. The Indian Press Allahabad 1925 P. 349 p. u. L.

1) Chavannes- Memoire Compose a l'epoque de la grande dynastie J'ang surles religieux eminents qui allerent chercher la lois-ansles Paysd' accident, Par. I-tsing. Traduit en Francais Par. Edward Chavannes Paris. 1894

2) Methode pour dechiffrer et transcrire les Noms danscrits qui se rencontrent dans les Livres Chinois, Par Stanislas Julies Paris. 1861

3) The Sacred Book of the East, translated by various Oriental Scholars and edited by F. MAX MULLER Clarendess Press, Oxford.

25 Hu Insang Ka Bharat Bhraman Huiussaing by Thakur Parshad Sharma Indian Press Allahabad 1929 P. 768 p. u. L.

26 Suyena Cvanga by Jagan Mohan Verma Hindi Pustak Agency. Harrison Road Calcutta 1980 Hindu year P 254 p.u.L.

27 Maria Samatraje Ka Itihas. By Satya Kanti W. 1925. Hindustan  
Yeog, Indian Press Allahabad, P. 717 p. u. L.

28 Chini Yatri. Sung Yun Ka Yatra Uivarni by Jagan Mohan  
Verma Indian Press Allahabad 1977 H. Y. P. 55 p. u. L.

29 Ancient account of India and China by two Mohammedan  
Travellers By Renaudt- E. London, St. Martins-Lane 1783 P. 260  
p. u. L.

30 Relation Des Voyages Dans L'Inde et A' En Chine. Reis-  
nand. M. 2V. Paris 1845 P. 154 p. u. L.

31 Voyage D'Ibn Battuta, Public Par La Society Asiatic,  
Paris, 1874 V5. P iv. 438 p. u. L.

32 Alberuni's India and account of the religious, Philosophy,  
Literature, Geography, Chronology, Astronomy, Customs,  
Laws and Astrology of India by Sachan, E. C. 2V. London 1888 P.  
441 p. u. L.

33 Die Reise des Arabers Ibn Battuta durch Indien und China  
Mzik, H. V. Hamburg 1911 P. 490 p. u. L.

34 Al-beruni. Hassan Barni Sayad Dara-ul-Nuzar Pres-  
Lucknow 1915 P. 150 p. u. L.

35 Burneirs Travel by More and M. Hasan 2V. N. D. P 490  
p. u. L.

36 Travels of Ibn Battuta. Urdu Mohammed Hussain Khan  
Sahib 1895 Rafi-i-aham Press Lahore p. u. L. P. 500 2V.

37 European Adventures of Northern India 1785 to 1849 by  
C. Grey edited by H. L. O. Garrett, Lahore, 1929 P. 361 p. L.

38 Vasco De Gama and his successors 1460-1580 by K G. Jayne  
Essex Street London 1910 P 325 p. u. L.

39 Journal of the first voyage of Vasco De Gama 1497-1499  
tr & ed by Ravenstein London 1998 P. 250 p. u. L.

40 Record of Buddhistic Kingdoms being an account by the  
Chinese Mink-Fa-Hien translated and annotated by Legge James  
Oxford, 1930 P. 123 p. u. L.

41 Voyage to the East Indies by Gusee 2V, London 1772 P.  
343 p. u. L.

42 New account of East India and Persia, in eight letters by  
Fraser John, London 1C98 P 427 p. u. L.

43 Memoirs sur les contrées accidentales, traduits du Sanscrit en chinois, en L' An 648 Par Hionen-Tsang, by Julien, S. Paris 1857. P. 493 p. u. L. V2.

44 Buddhist Records of the Western World, translated from the Chinese of Huen Tsiung by Beau, Samnal V2. vols in the Trübner & Co, London 1884 P. vi 240 p. u. L.

45 On Yuan Chwang's Travels in India Oriental Translation Fund New Series Vol XIV & XV by 2 vols. watters, Thomas, Royal Asiatic Society London 1904 P. 401, 357 p. u. L.

46 Die erste Dens-cho Handelsfahrt Nach Indien 1505108 Von (by) Hummerich, Franz München and Berlin 1922 P. 150 p. u. L.

47 Travels in India, During the years 1780, 1781, 1782 and 1783 by Hodges; William, London, 1794, P. 157 p. u. L.

48 Travels of Sig Pietro Della Valle a noble Roman into West India and Arabia Deserta. in which the several countries, together with the customes, maners Traictique and ritos both religious and civil, of those Oriental Princes and natives and faithfully described on familiar letters to his friend Signior Mari Schipano, London Printed by T. Maccock, for Honery Herringman; 1665, P. 180 p. u. L.

49 Tieffenthaler's Beschreibung von Hindustan 3 Vols Berlin 1785. P. iv 370 p. u. L.

50 Ancient Geography of India, The Buddhist Period including the campaigns of, Alexander and the travels of Hine-Tsang by Courcier, Alexander, Trübner & Co. London, 1871 P. 689. p. u. L.

51 Journals in India by Jean-Baptiste Travernier Baron of Aubonne by Ball second edition by Crooke William 2 Vols. Oxford University Press 1925 P. iv 335 p. u. L.

52 Generals Beschrijvinge van Indien, vyb de onde Schrijvers, onde dae huyden daeghsche benaminge. Twist; John, Amstelredam, 1648 P. 94 p. u. L.

53 Ond ennieun East-Indien by Valentyn V5 Amsterdam 1726 P. u. L.

54 Voyages and Travels to India Ceylon, the Red Sea, Abyssinia, and Egypt, in the years, 1802, 1803, 1804, 1805 and 1806 by Valentia, George, Viseaunt 4 Vols London, 1811 P. 439 p. u. L.

55 Travels of Monsieur de Jhevenot into the Levant Turkey.  
In three parts London. 1637. P. 144 Vol Part only p. u. L.

56 Six voyages of John Baptista Javernier, London 1678. P. 1  
book 15-214 Rub Phillips, J.

57 Journey overland to India. Partly by a route never gone  
before any European by CAMPBELL, Denald, Cullen and ccs,  
London. 1705. P. 181 p. u. L.

58 Voyage from England to India, in the year 1754.....  
Ives Edward and Charles Dilly London, 1773 P. 506 p. u. L.

59 India in the fifteenth century, being a collection of  
voyages to India .....

R. H. MAJOR Hakluyt Society London 1852 p. u. L.

60 Voyages of Sir James Lancaster. Kt: to the East Indies,  
with abstracts of Journals of voyages to the East Indies,  
during the seventeenth century, preserved in the India Office; and  
the voyage of Captain John Knight (1606) to seek the North west  
Passage. Edited by Clements R. Markham London; Hakluyt  
Society, 1877 P. 314 p. u. L.

61 Voyage to the East India ..... by Fra Poolino  
Da San Bartolomeo translated from the German by William Johnson  
London; 1800 P. 478 p. u. L.

62 Ancient accounts of India and China by two Mohammedon  
Travellers, who went to these parts in the 9th century; Translated  
from the Arabic by Eusebius RENAUDOT. London 1733 P. 260  
p. u. L.

63 Voyages and Travels of the Ambassadors .....  
where are added the travels of John Albert de Mandelsoo,  
containing a particulars Description of Indostan, the Mogul's Em-  
pire ..... in Book III written originally by Adam Olearius  
2nd Ed London. 1669. P. 232

64 General History and collection of voyages and travels,  
arranged in systematic order:- by Kerr; Robert William Blackwood  
Edinburgh and T. Caddell, London. 1824, 18 Vol. P. 512. p. u. L.

65 Travels through Arabia and other countries in the East  
Performed by Niebuhr M. translated into English by Robert Heron  
Vol. II Dublin; 1792 P. V. I. 368-482 p. w. L;

66 Travels of Peter Mundy; in Europe and Asia 1608-1667 Vol

II. Travels in Asia, 1628-1634-second series, Edited by Temple R. C. Hakluyt Society London; 1914 P. 437 p. u. L.

67 ALBERUNI'S India and account of the religious philosophy, Literature, Geography Chronology.. Astronomy Customs, Laws and astrology of India East by Sehan A. C. 2 Vols. Regn Paul French, Trubner & Co. London 1910 1 Vol. P. 408. 11 Vol. P. 431 p. s. L.

68 Travels of Mirza Abu Jaleb Khan in Asia Africa and Europe during the years 1799 to 1803 written by himself in the Persian Language. Translated by Charles Stewart V2. and Ed London 1814 P. iv 312. p. u. L.

69 Three voyages of Vasco De Gama and his victoryality translated from the Portuguese with notes and an introduction by Stanley H. G. J. Hakluyt Society London, 1869 P. 430, p. u. L.

70 Travels of Indovico di varthema; A. D. 1503 to 1508, translated from the original Otalian Edition of 1510, with a preface by Jones, J. W. and edited with notes and an introduction by Badger G. P. Hakluyt Society London 1863 P 105 to 288

71 Book of Sec Marco Polo. the venetian; concerning the Kingdoms and Marvels of the East tr. by Yule, H. 2V. 2nd Ed. Nev. John Murray London 1875. P. 1 Vol. 444 p. u. L. 1st Ed. 1871.

72 General Collection of the best and most interesting voyages and travels in all parts of the world by John Pinkerton, V. 8 only deals with Indian all in 17 vols. London; 1811 P. 8 V. 776. p. u. L.

73 McGriddle's ancient India as described by Ptolemy a facsimile Reprint; edited with an introduction, notes and an additional map by Sm Sastri.

Chakraverty, Chaitorjee & Co., Calcutta, 1927. P. 431 p. s. L.

74 Voyage to East India observed by Edward Terry, London 1772 P. 511 p. s. L.

75 Inineratio voyage of the schipvaert Van Jan Huyghen Van Linschoten; near coast of the Portugaels Indien 1579-1592 2 Vols. Linschoten, Vereeniging 1910. 1 Vol. P. 228 p. u. L. Linschoten; J. HV.

76 Voyage of John Huyghen Van Linschoten to the East Indies from the old English translation of 1598 2 Vols.

1 Vol. Edited by Burnell; A. C.

11 Vol. Edited by Tiele, P.A.

Hakluyt Society London.

1851 Vol P. 507 p. v. L.

77 Voyage of FRANCIS PYRARD of Laval, to the East Indies, the Maldives, the Malabar and Brazil Translated into English from the 3rd French Edition of 1619 by Grey Albert, and edited by Bell H. C. P. 2 Vols V2 in 2 parts Hakluyt Society London 1856 1 Vol P. 452 p. v. L

78 Wonders of the East by Friar Jordanus..... translated from the Latin Original..... by Yule. Henry. Hakluyt Society London 1863 P. 15 p. v. L.

79 Travel and adventures of the Turkish Admiral Sidi Ali Reis in India during the years 1553-1556 translated from the Turkish, with notes by A. Vomberry Luzad & Co., London 1869 P. 120. p. v. L.

80 Sir Marco Polo, notes and addendum to Sir Henry Yule's later containing the results of recent research and discovery by Henri Cordier John Muyrav etc. Send in 1920 P. 161 p. v. L.

81 The noble and famous Travels of Marco Polo together with the travels of Nicolo contiedited from the Elizabethan of John Froissart by N. M. Penzer 1929 Argonaut Press London P. 381 p. v. L.

82 Travels of Marco Polo translated into English from the text D. Nicolai I. F. by Aldo Ricci, with an introduction and Index by J. Ross. Routledge & Sons London 1931 P. 469 p. v. L.

83 Travels of Marco Polo a venetian, in the thirteenth century during his option, by that early traveller of remarkable places a listing in the Eastern parts of the world translated from the Italian, with notes by William Marsden, London 1818 P. 781 p. v. L.

84 Journey overland to India partly by a route never gone before by any European, by Donald Campbell, 3 parts in 1 Vol. Cullen & Co. London 1795 3rd part P. 881 p. v. L.

85 ARRIANI ANABASIS et Indica, ex optimo codice parisiensi emendavit et varietatis ejus Libri Retulit. Fr. Dubner, .... Parisis, 1646 in parts p. v. L.

86 Arrian with a English Translation by H. Hobson Book-I-IV London 1929 P. 419 p. v. L.

87 Arrian nicomedensis Scripta Minoru..... by Alfredus E. Lipsiae. 1885 P. 155 p. v. L.

88 Magesthenes Ka Bharatvarsh Varnhan translated by Ram Chaud Shakal Historical series No III Tara Printing Works, Benares 1906 p. v. P 138

89 Saleman Sodagar Ki Yatra Vivarnhan. Ed. by R. B. Gauri Shankar Hira Chaud Obha and written by Mahech Parshad Sadhu, Allahbad Kashi Nagri Parcharni Sabha 1978 Bikarmi P. 120, 2, 1.

90 Chini Yatra TAHIN Ka Yatra Vivarnh by Gagan Mohan Verma Allahbad, Kashi Nagri Parcharni Sabha 1976 Bikarmi P. 123 p. L.

91 Doctor Bernaler Ki Bharat Yatra by Babu Ganga Parshad Gupta, Kashi or Allahbad 2, Vol 1910 P. IV 117 p. L.

92 Chini Ki Yatra by Gagan Mohan Verma Allahabad Nagri Parcharak Sabha 1927 Bikarmi P. 55 v. L.

93 Travels of HIUN TSIANG Eis Chini Syah ka safar nama jo agresi sai tarjama kia gaia. Punjab Religious Book Society, Anarkali, Lahore, P. 110 1909 p. L.

94 'Aina Azmat Hind-Hissa awal, Hindustan ki hadim kahanian; Unani Sayahon ki sabani.) Mayghasthanies aur Arian kai safar namon ka khulasa us Mulk Raj Sharma, Lahore, 1913 P. L. P. 120

95 Arab aur Hind kai takrirat yani Maulana Sayad Sulaiman Sanib fudwi ki takrirain jo 23 March 1929 ko Hindustan aka ai kai sunne kee gain. Allahbad, Hindustan Qadimi P. 402 P. L.

96. Aibaran by Sayad Hassan Barni Muslim. University Press Aligarh 2nd Ed. 1127 P. 256 p. L.

97 Tarikh Hind kai az san Westi main mashraqi aur iysadi halat Alama Abdulah Yusaf Ali C. I. E. kee takrirain jo 2, 3 March 1928 ko Hindustani aademi, Allahbad kai samne kee gain, Indian Press Allahabad 1928 P. 114 p. L.

98 Ancient Geography of India, The Buddhist Period, including the campaigns of Alexander and the travels of Heuen - Thsang by CUNNINGHAM Alexander Trubner & Co., London 1871 P 589. P. C. 2 Cop.

99 Ancient India as described by Megasthenes and Arrian being a translation of the fragments of the Indika of Megasthenes collected by Dr. Schwanbeck, and of the first part of the Indika of Arrian by J. W. Mecrinde Trubner & Co. 1877: London P 223 P.L.

100 Ancient India as described in classical Literature, being a collection of Greek and Latin Texts relating to India extracted from Herodotus, Strabo..... .... Translated and copiously annotated by Mecrinde W.

Archibald Constable & Co., Westminster 1901 P. 226 P.L.

101 Ancient India, As described by Ktesias the Knidian, being a translation of the abridgement of his "Indika" by Phalois and of the fragment of that work preserved in other writers by Mecrinde, J. W. Trubner & Co., London 1882. P. 104 P. L.

102. The commerce and nauigatrin of the Erythraean Sea, being a translation of the periplos maris Erythraei by an anonymous by Mecrinde J. W. Trubner & Co., 1879. London, P. 228. P.L.

103. Ancient India, as described by Ptolemy..... .... by Mecrinde J. W. Trubner & Co., London 1885. P. 373. P. L.

104. Mecrinde's Ancient India as Described by Ptolemy, a facsimile Reprint edited by SUNDER NATH Majumdar C, Chatterjee & Co., Calcutta. 1927. P. 431 P. L.

105. Cunningham's Ancient Geography of India, edited with introduction and rates by SUNDER NATH Majumdar, C, Chatterjee & Co. Calcutta. 1924. P. 770. P. L.

106. Imperial Gazetteer of India all in 26 vols. 25th index and 26th maps. New Edition published under the authority of his majestie's secretary of state for India in council clarendon Press Oxford 1909. P. L. Mention is made nearly of all the important travellers that visited India in early days.

107. Gates of India being an historical narrative by Doldich Sir Thomas macmillan & Co, London 1910. P. 55. P. L.

108. Commentaries of the Great AFONSO DALBOQUERQUE, second viceroy of India translated from the Portuguese Edition of 1771 with notes and introduction by walter De Gray Birch. Hakluyt Society London. 1875 four volumes. vi. P. 256, iv. Vols. P. L.

109. India in the fifteenth century, being a collection of narratives of voyages to India ..... Edited with an introduction by R. H. Major Hakluyt Society London. 1837 P. L.

110. India and Jambu Island showing changes in Boundries and river courses of India and Burmah from Pauranic, Greek, Buddhist, Chinese, and Western Traveller's accounts by Amar Nath Das, 5th Edition Book Compruy, Caloutta. 1931 P. 343, P. L.

111. Notes in the ancient Geography of Gandhara. (A commentary in a chapter of Hiuan Tsang.)

A. Fouche translated by H. Hargreaves,

Government of India, Caloutta. 1915. P. 29. P. L.

112. Diary of William Hedges During his agency in Bengal as well as on his voyage out and return overland (1681-1687). Translated by R Barlow and illustrated by Henry Yule. 3 Vols. Hakluyt Society, London. 1887. P. 1 Vol. 205 P. L.

113. Travels of Pietro Della Valle in India, from the old English Translation of 1664 by G. Havers 2. Vols. Ed. Edward Grey Hakluyt Society London 1892, iv. P. 192. P. L.

114. Voyage to East India..... Terry Edward. London 1777. P. 511. P. L.

115. Voyage to the East-Indies; began in 1750..... Gross J. H. 2 Vols. P. 343. 1766. London. P. L.

116 Record of Budhist kingdoms, being an account by the Chinese monk FA-Hien of his travols in India and search of the Budhist Books of disciplines, translated and annotated with a coroan recension of the chinoso text, by LEGGE JAMES Charenden Press Oxford 1886. P. 128 P. L.

117. Travels of Fah-Hian and Sung-Yun, Buddhist Pilgrims from China to India (400 A. D. and 518 A. D. ) translated from the Chinese by SAMUEL BEAL London. Trubner & Co., 1869. P. 208. P. L.

118. Pilgrimage of FA-HIAN from the French Edition of the Foo Konki, Calcutta, 1848. P. 373 p. L.

119. Life of Hiuen-Tsiang, by the Shamans Hwai Li and 'Yen' Tsung, with a preface containing an account of the works of I-Tsing, by BEAL. Samuel. Trabner & Co. London. 1888 P. 218. p. L.

120. Early Travels in India being reprints of rare and curious narratives of old travellers in India, in the sixteenth and seventeenth centuries.  
R. Lepage & Co., Calcutta. 1864. P. 228. p. L.

121. Travels in India in the Seventeenth century, by Dr. John Fryer, Trabner & Co., London 1873. P. 474 p. L.

122. Narrative of the extra ordinary adventures and sufferings by Shipwreck & Imprisonment of DONALD CAMPBELL. London, 1786 P. 276. p. L.

123. Travels in India a hundred years ago, with a visit to the United States.  
Twining Thomas Nec Ilvaine & Co., London, 1898. P. 529. p. L.

124. Travels in the Mogul Empire by Francis Bernier, translated from the French by Irving Brock 2 Vols. 1826. London, Williams Pickering. Vol. 1. P. 340. p. L.

125. Voyage in the Indian Ocean & to Bengal, undertaken in the years 1789 and 1790.....2 Vols Translated, from the French of L. DE GRANDPRE London, 1803. P. 273. p. L.

126. Travels in the Mogul Empire A. P. 1656-1668. by Francis Bernier. Translated, in the basis of Irving Brock's version and annotated by Archibald Constable 1891. Seconded revised by Aninent A. Smith. Humphrey Milford Oxford University Press, London. 1914. P. 494. p. L.

127. Memoir of a map of Hindustan, of the Mogul Empire. ....by James Rennell. London, 1787. P. 284. p. L. 3rd Ed. 1793. p. L.

128. Travels in India by Jean Baptiste TAVERNIER Baron of Aubonne: translated from the original French Edition of 1676, with a biographical sketch of the Author notes, Appendices, by V.

Bal (second edition edited by William Crooke 2 Vols. 1 Vol. P. 335. Oxford University Press, P. L.

129. Six travels of John BAPTISTA TAVERNIER, Baron of Aubonne, through Turkey and Persia to the Indies, during the space of Forty years. Second part describing India and the Isles Adjacent made English by F. P. London, 1681 P. 15, 214, p. L.

130. Description Historique et Geographique De L' Inde 3 Vols. by TIEFFENTHALL (i. P. J. and others, Berlin 1788, P. 1 Vol. 45 p. L.

131. True and exact description of the most celebrated East-India coasts of Malabar and Coromandel as also of the isle of Ceylon ..... .... ... by Philip Baldaens Amsterdam, 1672. B. V. 3rd P. 503-901. P. L.

132. Analysis of one hundred voyages to and from India, China, ... ... ... by Henry Wise, Norie & Co., London, 1830. P. 120. p. L.

133. Globe Trotter in India, two hundred years ago, by Michael Macmillan, Swan Sonnenchein & Co London, 1895. P. 214 p. L.

134. India by Pierre Loti Clifford's inn London 1913. P. 283 p. L.

135. European travellers in India... .... ... by OATEN, E. F. Trubner & Co., London, 1909 P. 274. p. L.

136. Periplus of the Erythraean Sea, travel and trade in the Indian Ocean by a merchant of the first century, translated from the Greek, and annotated by SCHOFF; W. H. Longmans, Green & Co., New York 1912. 223. p. L.

137. Early English Adventures in the East by Arnold WRIGHT, London, 1917. 331. p. L.

138. Pioneers in India by HARRY JOHNSTON Blackie & Sons, London N. D. P. 320. p. L.

139. Jahangir's India the Remonstrantie of Francisco Pelsaert, translated from the Dutch by W. H. Moreland & P. Geyl, W. Heffer & Sons, Cambridge 1925, P. 44. p. L.



118. Pilgrimage of FA-HIAN from the French Edition of the Foo Koneki, Calcutta, 1848, P. 373 p. L.

119. Life of Hien-Tsiang, by the Shamans Hwai Li and Yen' Tsung, with a preface containing an account of the works of I-Tsing, by BEAL Samuel. Trübner & Co. London, 1898 P. 218 p. L.

120. Early Travels in India being reprints of rare and curious narratives of old travellers in India, in the sixteenth and seventeenth centuries.  
R. Lepage & Co., Calcutta, 1864, P. 228, p. L.

121. Travels in India in the Seventeenth century, by Dr. John Fryer, Trübner & Co., London 1873, P. 474 p. L.

122. Narrative of the extra ordinary adventures and sufferings by Shipwreck & Imprisonment of DONALED CAMPBELL, London, 1756 P. 276, P. L.

123. Travels in India a hundred years ago, with a visit to the United states, Twining Thomas Mac Ilvaine & Co., London, 1893, P. 519, p. L.

124. Travels in the Mogul Empire by Francis Bernier, translated from the French by Irving Brock 2 Vols. 1826, London, Williams Pickering, Vol. 1, P. 340, p. L.

125. Voyage in the Indian Ocean & to Bengal, undertaken in the years 1789 and 1790.....2 Vols Translated, from the French of L. DE GRANDPRE London, 1803, P. 273, p. L.

126. Travels in the Mogul Empire A. P. 1656-1668, by Francis Bernier. Translated in the basis of Irving Brock's version and annotated by Archibald constable 1891. Seconded revised by Alirent A. Smith. Humphrey Milford Oxford University Press, London, 1914, P. 494, p. L.

127. Memoir of a map of Hindustan, of the Mogul Empire.....by James Rennell, London, 1787, P. 294, p. L. 3rd Ed. 1794, p. L.

128. Travels in India by Jean Baptiste TAVERNIER Baron of Aubonne: translated from the original French Edition of 1676, with a biographical sketch of the Author notes, Appendices, by V.

Ballsecond edition edited by William Crooke 2 Vol., 1 Vol. P. 335. Oxford University Press, p. L.

129. Six travels of John BAPTISTA TAVERNIER. Baron of Aboane, through Turkey and Persia to the Indies, during the space of Forty years. Second part describing India and the Isles Adjacent made English by F. P. London, 1681 P. 15, 214. p. L.

130. Description Historique et Geographique De l' Inde 3 Vols. by THIEFFENTHAL R P. J. and others, Berlin 1788. P. 1 Vol. 45 p. L.

131. True and exact description of the most celebrated East-India coasts of Malabar and Coromandel as also of the isle of Ceylon ... ... ... ...by Philip Baldaens Ansterdam, 1672. R. V. 3rd P. 503-901. p. L.

132. Analysis of one hundred voyages to and from India, China, ... ... ... ...by Henry Wise, Norie & Co., London, 1839. P. 120. p. L.

133. Globe Trotter in India, two hundred years ago, by Michael Macmillan, Swan Sonnenschein & Co. London, 1895. P. 214 p. L.

134. India by Pierre Loti Clifford's inn London 1913. P. 283 p. L.

135. European travellers in India... ... ... ...by OATEN, E. F. Trübner & Co., London, 1909 P. 274. p. L.

136. Periplus of the Erythraean Sea, travel and trade in the Indian Ocean by a merchant of the first century, translated from the Greek, and annotated by SCHOFF; W. H. Loagmans, Green & Co., New York 1912. 223. p. L.

137. Early English Adventures in the East by Arnold WRIGHT, London, 1917. 331. p. L.

138. Pioneers in India by HARRY JOHNSTON Blackie & Sons, London N. D. P. 320. p. L.

139. Jahangir's India the Remonstrantie of Francisco Pelsaert, translated from the Dutch by W. H. Moreland & P. Geyl; W. Heffer & Sons, Cambridge 1925. P. 88. p. L.

## List of Books Consulted



1. Indis: A bird's eye view- *Earl of Ronaldshay* P.C.G.C.B.I.C.C.B.
2. Bharat Shakti- *Sir John Woodroffe*.
3. India Impressions & Suggestions- *J. Keir Hardie* M.P.
4. Delhi: Its Story & Buildings- *H. Sharp* C.S.I.C.I.B.
5. Tevernier Travels- *Calarmount J. Daniel*.
6. Travels in the Mughal Empire- *François Bernier* M.D. Translated by *Archibald Constable*.
7. Commentary of Father Monserrate S.J.- Translated by *J. Hoyland* M.A.
8. Foot falls of Indian History- Sister Nivedita (Margaret Noble).
9. India in Conflict- *P.N.F. Young* M.A. & *Agnes & Ferrers*.
10. Is India Civilized? - *Sir John Woodroffe*.
11. Alberoni's India- Edited by *Dr. Edward C. Sachan*.
12. India: Its Character- *J. A. Chapman*.
13. India: The New Phase- *Sir Stanely Reed & P.R. Gadiel* C.S.I.C.I.B.
14. India Insistents- *Sir Harcourt Butler*.
15. India: Old & New- *F. Washburn Hopkins* M.A.P.H.B.
16. Voyages & Travels of Sir John.
17. Report of a tour through the Bengal Province- *J. D. Beglar* M.A.
18. India under free lances- *H. G. Keene* M. G. C. I. M.
19. A trip Round the world- *W. S. Caine* M.P.
20. Akbar and the Jesuits- Translated by *C. Payne*.
21. Chow-chow- *By the Vis Countess Folk Land*.
22. Letters written during the mutiny- *Field Marshal Fred Roberts*.
23. Tevernier Travels in India.
24. Topes & Turban- *Lient Col. H. A. Newell* I.A.F.C.B.C.B.
25. Intercourse between India and the western world- by *H. G. Rawlinson* M.H.I.E.S.
26. The Great Temples- *The Christian Literature Society*.
27. Letters on India- *Maria Graham*.
28. इतिहास की भारत यात्रा- *Sant Ram* B.A.

29. A Civilian's wife in India Vol I. - *Mr. Roberts miss King.*  
 30. Ram and Homer- *Arthur Litle.*  
 31. The other side of the Lantern- *Sir Frederick Steen Bart.*  
 32. Scenes and thoughts in foreign land- *Charles Terry.*  
 33. General Gazetteer & Geographic dictionary- *R. Brock, M.A.*  
**34. सुनसान सोदागर—महेशप्रसाद**  
 35. The Travels of Mateo Polo the Venetian- *Thomas Wright M.A. LL.D.*  
 36. Voyage to the East India Vol I.  
 37. Nationalism in Hindu Culture- *Dr. R.K. Mukerji M.A. Ph.D.*  
 38. A Biad's eye view of India: past is the foundation for India's future- *Dr. Anna Bassett.*  
 39. Land of the Veda- *Rev Peter Percival.*  
 40. Aryan Race- *Charles Morris.*  
 41. Modern India and the Indians- *Moins Villiers D.C.L.*  
 42. Scenes & Characters from Indian History.  
 43. Indian in Transition.  
 44. Rambles & Recollections in India. 45. History of Hindustan.  
 46. Original Sanskrit Text- *Jaimini.* 47. Naked Faqir-  
 48. Digest of Jushunni. 49. The People of India their many names.  
 50. Modern Review. 51. Indian Review.  
**52. नायी प्रचारणी पत्रिका । 53. गङ्गा का विज्ञान ।**  
 54. Chamber's Encyclopaedia. 55. History of India.  
 56. History of Hindustan. 57. Murry's History of India.  
 58. Elliot's History of India. 59. Encyclopaedia Britannica.  
**60 उद्यन (वगला मासिक पत्र)**  
 61. Theogony of the Hindus. 62. India: what can it teaches us.  
**63. बौद्धियर की भारत यत्रा**  
 64. Reform pamphlet. 65. Bishop Heber's Journal.  
 66. The Arya (*Magazine*)  
**67. इन्द्र विजय ।**  
 68. Ancient geography of India. 69. Early History of India.  
 70. The Bible in India. 71. Tod's Rajasthan.  
**72. मनुस्मृति 73. सूर्य सिद्धान्त**  
 74. The Land of the Vedas. 75. History of the world.

76. Asiatic Journal. 77. Superiority of the Vedic religion,  
 78. Thoughts of the past and future of India, 79. Indian Spectre  
 80. Historical researches. 81. What India wants.  
 82. Modern review. 83. Unhappy India.  
 84. Sublimity of the Vedas.  
 85. Indian pre-historic and pro-historic antiquities.  
 86. Princep's Essays on Indian Antiquities.  
 87. Art of the Creation.  
 88. The Principles of Origin of Brahman.  
 89. Mythology of the Hindus. 90. History of Sanskrit literature.  
 91. A History of India. 92. India Old & New.  
 93. An English man defends Mother India. 94. Indian Wisdom.  
 95. History of the Sikhs. 96. Works of Sri Shankara Charya.  
 97. India Insistent. 98. Book of Joshua.  
 99. Short Studies on great Subjects.  
 100. Journal of the Bihar and Orissa research Society:  
 101. History of the Fine Arts in India and Ceylon.  
 102. Indian Castes. 103. Weber's Indian Literature (Translation)  
 104. Ibston-sences report-1916 A. D.  
 105. Annals & antiquities of Rajasthan. 106. Hindu Superiority.  
 107. A Vision of India. 108. Hindu Manners. 109. Wake up India.

## 110. जातक प्रस्तुति

111. Vedic India. 112. General Gazetteer & geographical Dictionary  
 113. Indian People. 114. Indian Antiquary.  
 115. India: what can it teaches us? 116. Marco Polo.  
 117. The Oodh Gazetteer. 118. Strabo.  
 119. Scenes and Characters from Indian History.  
 120. Modern India. 121. India past and present.  
 122. Indian Rayat. 123. Poverty & unbritish rule in India.  
 124. Bombay Champion. 125. Philosophy of History.  
 126. Mill's History of India.  
 127. People of India: their many merits by May who have known  
     them.  
 128. Marsh man's History of India.

126. India for Indian and for England.  
 130. Elphinston's History of India. 131. Indian review.  
 132. History of Central India. 133. Indian Epic poetry.  
 134. Report of the Asiatic Society of Bengal.  
 135. India in Conflicts. 136. School History of India.  
 137. Aryan race. 138. Indian inscription.  
 139. History of antiquity. 140. Survey report of India.  
 141. Cole-man's mythology of the Hindus. 142. Ibid.  
 143. Buddhist India. 144. Foster's early travels in India.  
 145. Village government in British India.  
 146. Towards Home Rule. 147. Account of Kingdom of Kabul.  
 148. Report of the Select Committee of the House of Commons.  
 149. Historical Sketches of the South of India.  
 150. Theosophist teaching. 151. History of Marathas.  
 152. Ancient Indian Education.  
 153. Buddhist records of the western world. 154. Pioneers of progress.  
 155. A bird's eye view of India's past as the foundation of Indian  
     future. 156. Ideal of East. 157. Science of Language.  
 158. History of Burma. 159. Indian Sculpture and painting.  
 160. Description of Java. 161. Military Science. 162. India in Greece.  
 163. Heern's Asiatic nations. 164. Egyptian Religion.  
 165. Hang's Essays on the Parsees. 166. History of the Conquest of  
     the Mexico. 167. Celtic literature. 168. Diet of Justice.  
 169. Ancient & mediaeval India. 170. Maxmuller's Rigveda.  
 171. Religion & Philosophy. 172. India's Past. 173. Art of Creation.  
 174. Roy's Mahabharat. 175. Wilson's theatre of the Hindus.  
 176. Essay's on Sanskrit Literature. 177. Imperial Gazetteer.  
 178. Sanitary records 1898. 179. Weber's Indian Literature.  
 180. History Mathematics. 181. Hindu Chemistry.  
 182. Essays on Sanskrit Literature. 183. New India.  
 184. Wireless Telegraphy. 185. Expansion of England.  
 186. Scenes and thoughts in foreign land.  
 187. Ancient Architecture of Hindustan. 188. The great Temples.  
 189. History of Fine Art in India. 190. A trip round the world.  
 191. Native states of India. 192. Music of the Ancients.  
 193. Cambridge History of India. 194. Bombay City Gazetteer.  
 195. Journal of the Royal Asiatic Society.

196. History of Aryan rule in India.  
 197. Town planning in Ancient India 198. Prosperous India.  
 199. India and the British. 203. A new geography.  
 201. The Soil. 202. महाभारत 203. रामायण  
 204. अर्थ शास्त्र 205 पृथ्वीराज रासव—कौटिल्य  
 206 तारीख हिन्दू—लाल लाजपतराय 207. अशोक-जयचन्द्र  
 208 जब अंप्रेज नहीं आये थे ! 209. सङ्गीत शास्त्र  
 210 मङ्गीत मक्करन्द 211. शुक्र नीनि 212. सिद्धांत शिरोमणि  
 213. उपनिषद् 214. भृत्यहरि शतक 215. पञ्ज तत्र  
 216 हिनोपदेश 217. शकुन्तला 218 मृच्छ केटिक  
 219. विक्रमीवशी 220 राम चरित्र 221. मालती माधव  
 222. मुद्राराज्ञम 223 रघुवंश 224. शिशुपाल वध  
 225. कुमारसभव 226. किरातार्जुनीय 227. नलोदय  
 228. भट्ट काव्य 229 नल दमयन्ती 230 नैषध चरित्र  
 231. विश्वाल भारत (मासिक पत्र) 232. विश्वभित्र (मा०प०)  
 233. भारती (बंगला) 234 विश्व-वन्धु ।

इनके अतिरिक्त साथ की दूसरी सूची की भी कुछ पुस्तकों में भवायता ली गई है। पुस्तकों की यह सूची मेरे मित्र मरदार देवेन्द्रमिह एम० ए० ने सेयार की थी।



# विश्व-गुरु भारत

## गौरव-गीत

ऐ स्वाके हिन्द तेरी अज्ञमत में क्या गुमां है ।  
 दरियाएँ फैजे कुदरत तेरे लिए रवां है ॥  
 तेरी जर्मी से नूरे हुस्ने अजल अयां है ।  
 अज्ञः रे ज्वेबो जीनत क्या आै इज्जोशां है ॥  
 हर सुबह है व खिदमत खुरशीदे पुरजिया की ।  
 किरनों से गूँथता है चोटी हिमालिया की ॥  
 इस स्वाके दिलनशी से चश्मे हुये हैं जारी ।  
 चीनो अरब में जिनसे होती थी आवारो ॥  
 सारे जहां पे जब था वहशत का अब तारी ।  
 चश्मो चिरगे आजम थी सरजर्मी हमारी ॥  
 शमा अदब न थी जब यूनां की अंजुमन में ।  
 तावां था मेहरे बैनिस इस वादिए कुहन में ॥

गौतम ने आवह दी इस मावदे कुहन को ।

सरमद ने इस जमीं पर सदके किया वतन को ॥

अकब्र ने जाय उल्फत वर्खा इस अंजुमन को ।

मंजा लहू से अपने राता ने इस चमन को ॥

सब सूर बीर अपने इस खाक में निहां हैं ।

द्वे हुये खंडहर हैं या उनकी हाड़ियां हैं ॥

दोतारो दर मे अब तक उनका असर अयां है ।

अपनी रगों में अब तक उनका लहू रवां है ॥

अब तक अमर में डूरी नाकूस की फुगां हैं ।

फ़िरदौसे गोश अब तक कैफ़ियते जमां हैं ॥

कश्मीर से अयां हैं जब्न का रंग अब तक ।

शौकन से बह रहा है दरियाए गंग अब तक ॥

—चकवस्त



## स्वर्गभूमि भारत

गायन्त्र देवाः किं गीतकानि,  
धन्यास्तु ये भारतभूमि भागे ।  
स्वर्गा पकार्त्य च हेतुमूलं,  
भवन्ति भूयः पुरुषाः सुर-वात् ॥

—त्रिष्णु पुराण

एक पाश्चात्य पंडित बतलाते हैं कि “भारत को साधारणतः संसार के लोग एक देश समझते हैं ।,, १ “भारत संसार का संक्षेप है ।” २ उत्तर में पर्वतराज हिमालय मस्तक ऊँचा किए खड़ा है । इतिहास एलिफंस्टन के शब्दों में—इसकी प्राकृतिक छटा एक बार नेत्रों में पैठकर सदैव के लिये अपना अमिट स्मारक छोड़ जाती है ।” ३ एफ. आस्ट्रिजर नामक जर्मन पर्यटक कहता है—‘हिमालय के तुषार-मण्डित स्वर्ण शिखर से कल्पोल कर बहने वाली गंगा और यमुना, भारतीयों को अमर-संगीत सुनाती हुई उसकी शस्य-संपन्न भूमि को स्वर्गोपम बना रही है, सीमाओं पर लहराने वाले समुद्र उसके गौरवगीत गा रहे हैं । शरद, ग्रीष्म और गुलाबी जाड़े के मनोहर रंगीन दिन और कल्पना को जागृत करने वाली रातें संसार में अन्यत्र कहाँ सुलभ हैं !’ ४

1. “India is commonly thought and spoken of as a single country, but this is not true, India is rather a collection of countries.”

2. Chamber's encyclopaedia, Page, 337

3. History of India, Page, 181

4. Frenz Ostringer, a German traveller still touring in India

इतिहासकार टामस मोरिस महोदय लिखते हैं—‘एक ही समय दो ऋतुओं के आविभाव की विलक्षणता एवं विशालता, बनों का सौरभ, सुस्वादु मनोहारी फल, सुन्दर जलवायु वाली भूमि का विशाल कोप, शिल्प-निर्मित वस्तुओं के विभिन्न नमूने, भारत को अत्यन्त पुरातन काल से ही उपलब्ध हैं। इसकी विलक्षणता के अजूबे और आत्मप्रसन्नता के साधन दार्शनिकों की कल्पना को जाग्रत करने वाले विषय हैं।’<sup>५</sup> इतिहासवेता मरे कहते हैं—‘भारत पाश्चात्य जगत् की कल्पना में सदैव से सुषमा-सम्पन्न, विशाल-हेम हीरों की प्रभा से जगमगाता, भीनी-भीनी सुन्दर सुगंधि से सुरभित रहा है। + + + वसुन्धरा के पृष्ठ-तल पर भारत एक अनूठा देश है। इसकी रंग विरंगी प्राकृतिक शोभा की विभूति, भूमि की बहु भूल्य उत्पत्ति, कठिनता से किसी दूसरे देश को सुलभ होगी।’<sup>६</sup>

चौदहवीं सदी के इतिहासकार अब्दुल्ला वस्सफ के मुंह से भारत की भव्यता का गीत सुनिए—‘समस्त लेखकों के कथनानुसार भारत पृथ्वी का एक अत्यन्त मनोरम भू भाग का एक रमणीयतम स्थान है। इसके रजकण वायु से विशुद्ध और वायु स्वयं पवित्रता से भी अधिक पुनीत है। इसके चित्ताकर्षक मैदान स्वर्ग-सदन की समता करते हैं।’<sup>७</sup> बर्लिन विश्वविद्यालय के प्रोफेसर वान ग्लिम्फेट ने ( Von Glimpheth ) विश्वकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर को एक पत्र में लिखा था—‘जीवन में एक बार भारत-यात्रा कर, उसके आध्यात्मिक वायुमण्डल में सांस लेने की प्रवल आकांक्षा है। यदि यह सम्भव हो सका तो मेरे जीवन

5. History of Hindustan, Page 8,

6. Maroy's history of India, page, I

7. Elliot's history of India, Vol III page 28 and 29

की सर्वमहान् अभिलाषा पूर्ण होगी । क्योंकि वहां के आदिम एवं विशाल निर्भर में मैं विवेक-तत्त्व का पान करूँगा ।” मृत्यु शन्या पर लेटी हुई महीयसी महिला एनी बैमेण्ट ने अपनी अन्तिम इच्छा प्रकट की थी—‘मैं फिर इसी भारत-भूमि में ज्ञानाणो होकर पैदा होऊँ ।’<sup>8</sup> इ० ट्रिटेनिका के अन्यकार का कहना है—‘भारत अत्यन्त प्राचीन काल से ही पृथ्वी पर प्रतिष्ठित एवं अत्यन्त उपकृत देश रहा है । क्या कला कौशल और कथा प्रकृति प्रदत्त, दोनों ही प्रकार की उत्तमोत्तम उत्पत्ति से यह मालामाल है ।’<sup>9</sup> फ्रैंच विद्वान् क्रोफर के शन्दों में—‘अगर इस भूमण्डल पर ऐसा कोई महान देश है जो मानव जाति के आदिम-स्थान और ज्ञान दाता होने का गौरव रखता है तो वह निस्सन्देह भारतवर्ष है ।’

स्वीडश काएट जर्नालिनी मुक्तकण्ठ से स्वीकार करते हैं कि—‘भारत की प्रत्येक वस्तु अद्भुत, महान और विलक्षण है । दुर्भीम्य कवचधारी शूरमाओं से लेकर काशी-मंदिरों के पुजारी ब्राह्मणों तक, भयंकर मराठों से लेकर हाथियों पर सौर करने वाले नवाबों तक, अमेजन के केहरी संवित जंगलों से बायाडेर (Bayeder) के उपासना-स्थानों तक, प्रकृति स्वयं इस यशस्वी भूमि में विविध प्रकार के रंगीन वस्त्रों से सुसज्जित हो कर कीडाये करती हैं । देखिये, दक्षिणोत्तर सीमा वाले इसके प्रचुर-पुष्प-फल, मानसून के बवण्डर, हिमालय की हिम-मण्डित चोटियां और मरु की शुष्कता, दृष्टिपात्र कीजिये, हिन्दूस्तान के विस्तीर्ण मैदान और ऊंचे पर्वतों की चोटियों के प्राकृतिक दृश्य की ओर, इन सब से वह कर उसके अनन्त काल के इतिहास ८. उदयन, कार्तिक १३४० बंग ।

9. Encyclopaedia Britannica page 446,

एवं अनुसन्धान काव्यों को ।” १० वेदज्ञ मैक्समूलर की सम्मानि है ‘अगर मुझ से प्रकृति-प्रदत्त संपत्ति, शक्ति और सौन्दर्य में मर्मोंत्कृष्ट देश या भूमण्डल पर स्वर्ग खोजने के लिए कहा जाय तो मैं भारत की ओर संकेत करूँगा ।’ ११ इसी पुस्तक में दूसरे स्थान पर आप कहते हैं—‘यदि कोई मुझ से यह बात पूछे कि वह देश कौन और कहां है, जहां पर मनुष्यों ने इतनी मानसिक उन्नति की है वे उत्तमोत्तम गुणों की वृद्धि कर सकते हों, जहां मानव सम्बन्धी गूढ़-विषयों पर विचार किया गया हो और जहां उनके हळ्क करने वाले पैदा हुए हों, तो मैं यही उत्तर दूँगा कि वह देश भारतवर्ष है ।’ आनेवेल जस्टिस सर ज्ञान उड़रुफी लिखते हैं कि—प्राचीन भारत अत्यन्त शानदार था । १२ ध्यान-शील होने पर भी उसने कर्मवीरों को जन्म दिया जो शूर सैनिक और राजनीतिक विस्थात हुए । भारतीय इतिहास के अनुशीलन से प्रकट होता है कि इसने भान्ति मान्ति के मानव-चरित्रों को उत्पन्न किया है ।’ १३ इटली रायल एकाडेमी के वाइस प्रेसी-डेस्ट हिज़ एक्सलेन्सी कार्लो फार्मोची और रायल एकाडेमी के सदस्य हिज़ एक्सलेन्सी गुइस पहुँसा ने अभी तिब्बत और नैपाल का अध्ययन किया था: आप कहते हैं—“हम नैपाल को देखकर सुख हो गए । यही इस समय भारत में एक ऐसा देश है जिसे देख कर हम उसकी हजारों वर्ष पूर्व की उन्नत सभ्यता का अनुमान लगा सकते हैं ।”

प्रकृति ने इस महान् देश में समृद्धि परिपूर्णता और वैभव के जितने सामाज एकत्रित कर दिये हैं वे किसी अन्य देश को

10. Theogeny of the Hindus, Page 446.

11. India, what can it teaches us,

12. Is India civilized ?

कहां नसीब ? प्रसिद्ध अंगरेज यात्री और लेखक जेम्स मिल ने कश्मीर के गौरव लौट सुनकर कहा था—‘ऐ कश्मीर ! मैं तुझे देखना चाहता हूँ !’ फांसीसी यात्री बनियर इस प्रकृति-कीड़ा भूमि को देख कर कहता है—कश्मीर ‘मुझे बहुत पसन्द है। इस मुन्द्रता और मनोहरता के विषय में आज तक जो कुछ मैंने अनुमान किया था, उससे भी बढ़कर उसे पाया। यह देश अनुपम है। संसार का कोई देश सुन्दरता में इस की समता नहीं कर सकता।’ १३ एकवेटिल जुपेरन यात्री महाराष्ट्र के सम्बन्ध में लिखता है—‘जब मैंने मरहठों के देश में प्रवेश किया तो मुझे ऐसा प्रतीत हुआ मानों स्वर्ण-युग के सरल और आनन्दमय प्रदेश में पहुंच गया हूँ। वहां प्रकृति में अब भी कोई परिवर्तन नहीं हुआ था।’ १४ सर जान मालकम नाना फरनवीस के समय महाराष्ट्र को देख कर आश्चर्य प्रकट करते हुए बतलाते हैं—‘मुझे ऐसे देशों को देखने का कभी अवसर नहीं मिला, जहां इतनी अच्छी खेती हो और खाद्य सामग्री तथा व्यापार की वस्तुएं इतनी प्रचुर मात्रा में उत्पन्न की जाती हों।’ १५ विशप हीबर ने अवध के सम्बन्ध में भी ऐसा ही लिखा है। १६

विश्व के साधारण यात्री से लेकर सम्राट तक, छोटे से लेखक से लेकर बड़े से बड़े विद्वान् दार्शनिकों तक, सभी इस भव्य भूमि को देख कर कुछ समय के लिये विस्मय-विसुग्य बन चुके हैं। लार्ड मेकाले ‘बंगाल’ को पूर्वीय देशों का ‘नन्दन विपिन’

13. Travels in the Mugal Empire

और, बनियर की भारत यात्रा भाग ४, पृष्ठ ५०।

14. Gentle man's Magazine. 1762 A, D. Page. 376

15. Reform Pamphlet.

16. See, Bishop Heber's journal vol. II.

बतलाते हैं, तो डाक्टर लीटनर कहते हैं इसे 'सूर्य का देश'। बावर इमें 'बुद्धिमानों का सम्पन्न देश, कहता है, तो लुटेरा महमूद बतलाता है 'विहित स्वर्ग' ! विरुद्धात प्रांसीसी पीयरर लोटी (Pieraor loti वडी अद्वा भर्कि से बेदों की इस भूमि को नमस्कार करता है—“उस प्राचीन भारत को, जिसकी मैं सन्तान हूँ, जो पंश्वर्य कला कौशल और दर्शन में सर्वोच्च था, मैं अद्वा के साथ नमस्कार करता हूँ ।” ७

कुछ लोग विना सोचे-विचारे तर्क-वितर्क करने लगते हैं कि भारतवर्ष में वृद्धिश राज्य स्थापित होने के पश्चात जातीयता का विकास हुआ, यह यात निवान्त धोधी और निराधार है। भारत अनादि काल सं धर्म प्रधान देश रहा है और राजनीति इसकी संस्कृति का एक अंग। यदि हम विशाल भारत में फैले हुए हिन्दू तीर्थों, बौद्ध विहारों, और शङ्कराचार्य के मठों पर विवेकदृष्टि से विचार करें, तो हमें मालूम हो जायगा कि इन के मूल में जातीय संगठन एवं राष्ट्रीय एकता का कितना जबर्दस्त सिद्धान्त काम कर रहा है। सर हेनरीमैन के शब्दों में राष्ट्रीय भावों की उत्पत्ति सब से पहले भारतवर्ष ही में पाई जाती है। यहीं से यह भाव पश्चिम की ओर आए। ८

धार्मिक एकता ही जातीय एकता है, तीर्थ स्थानों की उत्पत्ति इसी एकता का मूल है। पुराण का श्लोक साक्षी है—

महेन्द्रो मलयः सद्यः, श्रुतिमानृतः पर्वतः ।

विन्धयश्च पारि पत्रश्च, सप्तैते कुल पर्वतः ॥

प्रातः काल आंख खुलते ही भारतीय अपने विशाल देश को स्मरण कर लेता है। किसी भी जल स्तोत्र में स्नान करने वाला

व्यक्ति भारतीय सरिताओं के सानिध्य की कामना करता है । १८ इस में अधिक भारत के धर्मगत पेक्ष्य का और क्या प्रमान हो सकता है । १९ डॉक्टर राधाकुमार मुखोपाध्याय भी इसी भावना का समर्थन करते हैं और स्वर्गीय विदुपी महिला डॉ वीसेट ने भी भारत की एकता को स्वीकार करते हुए मुखोपाध्याय महोदय का जवादस्त शब्दों में अनुमोदन किया है । २०

पुरानन काल में भारत मुख्यता दो भागों में बँटा था । २१ पूर्वीय और पश्चिमीय । सिन्धु नदी इन दोनों की विभाजक रेखा मानी जाती थी । पूर्वीय भारत की पूर्वी सीमा, फारस सांस्कृतिक रक्तसागर तक पश्चिम सीमा थी । २२ आज प्राचीन भारत की भौगोलिक सीमाओं को निश्चित करना एकान्त कठिन है । चृहत्संहिता, इन्द्र-विजय, अर्थ-शास्त्र (कौटिल्य) और शुक्रनीति आदि के आधार पर कहना पड़ता है कि विशाल देश की सीमाएं भूमरण्डल की सीमाएं थीं । आज भी भारतीय अपने धर्मिक संकल्प में जम्बूद्वीप (एशिया) का स्मरण कर लेते हैं । पेकिंग (चीन) विश्वविद्यालय परिषद् के सभापति श्री लियांगचिचाव के शब्दों में 'उस समय भारतवर्ष उन्नति के उच्च शिखर पर विराज-अग्नोच्चा मथुरा गया, काशी काञ्ची अवन्तिका ।

पुरी द्वारवति चैव सप्नैता मोक्ष दायिका ॥

\*गगे च यमुने चैव गोदाकरी सरस्त्री ।

नर्मदे सिन्धु कावेरी जलेस्मिन् सञ्चिधिकुरु ॥

18. Nationalism in Hindu culture, see also, India a bird's eyeview.

19. इन्द्रिविजय, पृ० ५०

20. उत्तया सत्य आर्या सरसोरिन्द्र भारतः, चर्णं चित्र रथा वधीः-  
ऋग्वेद । इन्द्र-विजय पृ० ५१

मान था। उस युग में इस में उदार आदर्शों, और महापुरुषों के उत्पन्न करने की शक्ति थी।

महाभारत में भारत का आकार त्रिकोण बतलाया गया है। विद्वान् कर्निंघम भद्रोदय ने भी अपने भूगोल में इसी का समर्थन किया है।<sup>२१</sup> इसका आधुनिक त्रिभुक्तल ११६ करोड़ एकड़ है। इस हित्रिसे भारत जर्मनी से सात गुना, जापान से ग्यारह गुना, प्रेट हृटन से १५ गुना और इंग्लैण्ड से १२ गुना है। आबादी ३५,८६,८७६ है। जन संख्या के हिसाब से भी त्रिटिस द्वीप के आठ गुने से भी यह बड़ा है।<sup>२२</sup>

इस बृहतर भारत में २३८३३०६१२ हिन्दू, ४३०६४४२ सिक्ख, ५४६१७४४ ईसाई, १२०५२३५ जैन, १०६६ पारसी, २०४८४ यहूदी, ७७७४३६८८ मुसलमान और ८७०४८८६ अन्य मतावलम्बी निवास करते हैं। यहां हिन्दी भाषा बोलने वालों की संख्या ६६७१५०००, बंगला ५६२८४०००, तेलगू २३६०१०००, मराठी १८७६८०००, तामिल १८७८०००, कानाडी १०३७४०००, राजस्थानी १८६८१०००, पंजाबी १६२३४०००, उडिया १०१४३००० और गुजराती बोलने वालों की संख्या ६५५२००० है।

इसके अतिरिक्त यहां पर हर प्रकार का जलवायु, बनस्पतियां तथा फल-फूल इत्यादि पाये जाते हैं। इन विभिन्नताओं को सामने रखते हुए भौगोलिक विज्ञान के प्रमाणिक विद्वान् चिशिल्म का विचार है, कि प्राकृतिक बनावट में भारत के टक्कर का संसार में दूसरा देश नहीं।

21. Ancient geography of India

22. माल्थस के अनुसार यदि ज्ञान पान की सुविधा हो तो प्रत्येक देश की जन संख्या प्रति पच्चीस वर्ष<sup>२३</sup> दूनी हो जाती है। सन् १६१६ में यहां की जनसंख्या ३१ करोड़ थी।

भारत के इन मूद्दम विचारों का मनन करने वाला प्रसिद्ध इतिहासक्वाविन्सेन्ट स्मिथ वल्लाता है कि भारत अपनी भौगोलिक स्थिति द्वारा पूर्ण सुरक्षित और एकता प्राप्त देश है। इसी सत्यता को मर्हवर्टरिसले भी व्यक्त करते हैं—“द्युपि वाहा प्रकार से भारतवर्ष में धर्म, भाषा, सामाजिक आचार-विचार आदि की अनेकता प्रतीत होती है, तथापि इन सब की आधारभूत एकता को सुगमता से देखा जासकता है।” रीनिं रिवाजों, भाषाओं और प्रथाओं के आधार पर जातीयता की एकता पर सन्देह करना अदूरदर्शिता है। भारत की जातीय एकता यूरोप की रेखाओं पर नहीं, अतः उसका मनन भी भारतीय दृष्टिकोण से होना चाहिये। भारत की सभ्यता के मूल में एकता है, संस्कृति में एकता है, धर्मों में एकता है और भावनाओं में भी है एकत्य। विद्वान् स्मिथ की भी सम्मति सुनिये—

“भारतवर्ष की भौगोलिक सीमा पर समुद्र या पहाड़ है। एशिया के अन्य देशों से वह विलक्ष्य अलग है। इन कारणों से वह एक देश है, और समस्त देश के लिए उपयुक्त और आवश्यक नाम है, भारतवर्ष। यहां (भारत में) एक भिन्न प्रकार की सभ्यता है, जिस के कारण यह संसार के सब देशों से अलग है। यह भारतीय सभ्यता भारतवर्ष के अन्तर्गत सब प्रान्तों में प्रायः एक सी पाई जाती है। इस लिए हम समस्त भारतवर्ष को संसार की राजनैतिक, समाजिक और मानसिक उन्नति के इतिहास में एक देश कह सकते हैं।”<sup>१२३</sup>

लक्ष्मी की लीला-स्थली, सरस्वती की क्रीड़ा-भूमि और सभ्यता की जननी भारत-भूमि के सामने नतमस्तक होकर सुप्रसिद्ध विद्वान् जैकोलियट कहता है—‘ऐ प्राचीन भारत भूमि, मानवता

का पालना, तुम्हें नमस्कार है ! पूजनीय कार्य-क्रम-धारी, नमस्कार ! प्रेम, विश्वास और विज्ञान के आचार्य (भारत) ! हम तुम्हारे अतीत समुत्थान को पश्चिम के भविष्य में नमस्कार करते हैं ।’

‘तुम्हारी उत्कृष्ट प्राकृतिक भाषा को समझने के लिए, सान्ध्य समीरण से इमली और वट-वृक्षों के पर्ण समूह की कानाफूसी को जानने के लिए, मैं तुम्हारे रहस्यपूर्ण जंगलों में रहा हूँ । उन्होंने मेरी आत्मा को तीन जादू भरे शब्द बतलाए हैं—ज्यूस (Zeus) ब्रह्म और जिहोवा (Jehova) ।’

‘संक्षेप में भारत का अध्ययन, रुच्चे रूप में मानवता का अध्ययन है । अभाग्यवश विना इस रहस्य पूर्ण देश में रहे’ इसके रस्मोरिवाज से पूर्ण परिचित हुए और सब से अधिक इस की जीवित भाषा संस्कृत का पूर्ण परिज्ञान प्राप्त किये विना इस के गौरव का अनुमन्त्यान करना कठिन है । यूरोप में परिमार्जित ज्ञान के सहारे प्राचीन भारतवर्ष में बैठना कठिन है ।’<sup>२४</sup> भारत भू-मरड़ल का भार्य है, विश्व का भूषण है । इतिहासकार ए वासक के शब्दों में ‘स्वर्ग भी इसकी समता का नहीं ।’<sup>२५</sup>

24. The Bible in India—Jacoliat's Views.

25.“If it is asserted that paradise is in India be not surprised because parvati itself is not comparable to it.”

# प्राचीनता

ऋषिहिंयर्जा अस्येक ईशान ओजसा—ऋग्वेद

विश्व ब्रह्माण्ड की ओर यदि हम गम्भीर हृषि डालें, तत्त्व-वेता की आंखों से उसे देखने का प्रयत्न करें तो पता लगेगा कि भारत ही एक ऐसा सुमस्पन्द देश था जहां नाम मात्र के परिअम से लोगों की जीवन आवश्यकताएं वड़ी आसानी से पूरी हो जाती थीं। जलवायु भी अनुकूल था यही कारण है कि संसार के रङ्गमन्त्र पर सब से पहले इसी देश ने ज्ञान-विद्यान की गुतिथयों को मुलभाया था।

ऊंचे से ऊंचे पहाड़, नीची से नीची भूमि, हैं अतुण, प्रकृति की अवस्थाओं की यह विषमता: शक्ति को उत्तेजित करने का दूमरा साधन है। संसार में भारत के धर्म गुरु बनने का एक यह भी रहस्य है, सर्वप्रथम ज्ञानमार्तण्ड के भारतीय आकाश पर आविभूत होने का यह राज है।

जिस समय विश्व का मानचित्र विल्युत भुंधला था उस समय भारत भूमि पर सभ्यता का सूर्य अपनी किरणें छिटका रहा था। इसका प्रमाण है सृष्टि रचना का ड्रितिहास। कर्नल जेम्स टाड नत-मस्तक होकर स्वीकार करते हैं कि 'आर्यवर्त' के अतिरिक्त अन्य किसी देश से सृष्टि का हिसाब नहीं पाया जाता, इससे आदि सृष्टि यहीं हुई इसमें सन्देह नहीं।”<sup>†</sup> वास्तव में उत्पत्ति प्रलय का हिसाब ही सभ्यता की प्राचीनता को बतलाने वाले बड़े मार्के का प्रमाण है। चैलिंगन्स की सभ्यता दुनिया में बहुत पुरानी सभ्यता जाती है इसी के उदर से निकल कर आधु-

<sup>†</sup> Tod's Rajasthan.

निक पाश्चात्य सभ्यता इधर उधर उब्ल कूद मचा रही है। उन लोगों के विचार से पृथ्वी की उत्पत्ति २० लाख वर्ष पूर्व हुई थी। चैलिन्स के समकक्ष मिश्री Egyptians) इस विषय में मौन हैं। अस्तु प्राचीन बैब्लोनिया (Babylonia) से पृथ्वे देखना उचित है किन्तु “यथा नामः तथा गुणः” के अनुसार वहां पृथ्वी की आयु केवल ५ लाख वर्ष ही मानी जाती है। ईरानियों ने तो इसे बटा कर १२००० वर्ष ही रखा है। मध्य कालीन योगोपियन विद्वानों की कल्पना ६००० वर्ष तक ही पहुंच कर कुरिट होगई! ऐसी अवस्था में इतने लम्बे चौड़े हिसाब का लेखा बूढ़े भारत के सिवाय और कौन दे सकता है। मनुस्मृति<sup>१</sup> के अनुसार सम्बत् १६६० विक्रमी में सृष्टि को हुये १६७२४४०२४ वर्ष बीते। इसका समर्थन भास्काचार्य के सूर्यसिद्धान्त द्वारा भी होता है मूर्य-सिद्धान्त में इसका व्यौरा इस भान्ति अद्वित है<sup>२</sup> ७१ चतुर्युंगियों का एक मन्वन्तर होता है और एक सतयुग के समान इसके अन्त में सन्धि बतलाई गई है। सन्धि सहित ऐसे ही १४ मन्वन्तर होते हैं और सतयुग की भाँति कल्प के अन्त में १५ सन्धियां होती हैं। इस प्रकार सहस्र महायुग तक परमेश्वर सृष्टि को स्थिर रखता है। इसी का नाम ब्रह्मा का दिन या कल्प है। ब्रह्मा की रात्रि की भी यही अवधि है।” २ इस विवेचना से यह बात स्पष्ट हो गई कि ऋषियों ने इसके १४ विभाग मन्वन्तर किये और फिर इन्हें ११ भागों (चतुर्युंगियों) में विभाजित किया।

यहां पर युग और सूर्य सिद्धान्त दोनों के अनुसार इसकी गणना की जाती है, किन्तु इस बात को दर्ढ़ित गत रखना आवश्यक है। मनु० अ० १ श्लोक ६८ से ८० तक।

२ सूर्य सिद्धान्त, मध्याधिकार, श्लोक १७ से २० तक।

यह कहे हैं, कि कलियुग से दुगुनी अवधि पर द्वापर की तीगुनी त्रेता की और चौगुनी सत्युग की होती है।

प्रथम विधि	द्वितीय विधि
नाम युग वर्ष	नाम युग वर्ष
१ सत्युग १८२८०००	७१ चतुर्वीं अवधा १ मन्वन्तर ३०६८२००००
२ त्रेता १२६६०००	१४ मन्वन्तर (६६४ महायुग) ४२६४०८००००
३ द्वापर ८६४०००	सन्धि २५६२००००
४ कर्त्त्युग ४३२०००	
एक चतुर्वीं गो ( महायुग ४३२०००० )	१ कल्प (सहस्र महायुग) अथवा १ब्रह्मदिन ४३२०००००००

भारतीय गणना के अनुसार सृष्टि की आयु ४३२००००००० वर्ष है! ३ मिस्टर हाल्डेड सरीखे पार्श्चात्य पंडित भी भारतीय सृष्टि गणना को देख कर कहते हैं 'इस प्राचीनता के सामने तो मूसा की सृष्टि अभी कल की मालूम पड़ती है, अमरीकन विदुपी ब्लैंडेस्ट की भी सिर झुकाए आर्य गणना के सुस्पष्ट हिसाब को स्वीकार करती हैं।' ४ पार्श्चात्य पंडित वाल्टर रेले ने भी चिर-अनुसन्धान के पश्चात अपनी सम्मति इन शब्दों में प्रकट की है" जल प्रलय के अनन्तर भारतवर्ष में ही प्रथम वृक्षलता आदि की उत्पत्ति, और मनुष्यों की वस्ती बसी थी।' ५ कप्तान

3. x "General period of creation and destruction is 4,320000,000 years," The Land of the vedas.

4. See, Secret Doctrine Vol. II Page. 69.

5. History of the world,

ट्रावयर भी इस बात से इनकार नहीं करते' कि श्रेष्ठस्टेट्स ( Great States ) की सम्मता हमसे कम से कम ३ हजार वर्ष पहले की है, किन्तु उसमें भी आगे रामायण के नायक राम को हम देखते हैं।<sup>६</sup> स्वीडशकांट जार्नल्स्टर्जन बतलाते हैं कि आर्यवर्त के बल हिन्दू धर्म का ही पालन नहीं प्रत्युत संसार की सम्मता का आदिम भरडार है।<sup>७</sup>

भाषा-तत्त्व-विज्ञान विशारद मिठी टी० जे, किनेडी कहते हैं—'जिन की भाषा में इतने पहले ऐसे परिमार्जित विचार प्राप्त होते हैं, उनकी सम्मता स्पष्ट रूप से उतनी प्राचीन है।

किसी जाति की सम्मता का प्रतिविम्ब, और प्राचीनता की कस्तौटी है उसका साहित्य ! इसी का अनुशीलन कर विद्वान वी० डी० ब्राउन इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं—'निष्पक्ष मस्तिष्क में सतर्क निरक्षण कर यह मानना पड़ेगा कि भारत साहित्य और परमार्थ विद्या में समस्त विश्व का पिता है।'<sup>८</sup> योरोपियन विद्वान विक्टर कुजिन ( Victore Cousin ) के भी उद्वारों का अवलोकन कीजिये—'हम ने ध्यान पूर्वक पूर्व के दार्शनिक एवं काव्य ग्रन्थों का अवलोकन किया है और इन में सब से अधिक भारत का, जिसके विचार योरोप में फैलने आरम्भ हुए थे। उन के अन्दर गम्भीर सत्यता है। .....हम उस प्राच्य जगत् को मानवता का पालना और उच्च दर्शन की जननी जन्मभूमि पाते हैं।'<sup>९</sup>

भारत की यात्रा करने वाले रोम ( इटली ) के संस्कृत प्रोफेसर

6. Asiatic journal, 1841.

7. Theogony of the Hindus, page. 168

9. Superiority of Vedic Religion.

10 Thoughts on the past and future India.

काउन्ट एन्जीली डी गूलीआरनेटिस (Count Angelo de Guelphis) भारत का उद्यागाया करते हुए लिखते हैं कि यह देश अपनी प्राचीनता, सभ्यता और उस से भी अधिक अपनी स्थानों, बुद्धिमान और मुन्द्र निवासियों के लिये सुप्रसिद्ध है।<sup>11</sup> प्रोफेसर हीरन भी भारत की प्राचीनता और महत्त्व को स्वो कार करते हुए कहते हैं—‘भारत ज्ञान का वह उत्पत्ति स्थान है, जहां से न पैशेया के ही शेष भाग ने आपत्तु समस्त पश्चात्य जगत् ने अपने ज्ञान एवं धर्म को प्राप्त किया है।’<sup>12</sup>

भारत की सभ्यता कितनी पुरानी है, विश्व के बड़े २ विद्वान गणिन भी इसकी उत्पत्ति तिथि नहीं निकाल सके। सुयोग्य विद्वान पद्येटक अलनेरुनी, ( १०३० ई० ) लिखता है कि जल प्रज्वल ( Deluge ) अथात् नृष्टि के नौ सौ वर्ष पश्चात् मिश्र में एक हिन्दू सम्भाट राज्य करता था।<sup>13</sup>

कांट जार्नल्स्टजनो महोदय ने यूनानी राजदूत द्वारा खोजी हुई पाट तीपुत्र की राजवंशावली से पता लगाया है, कि चंद्रगुप्त तक यहां १५३ राजाओं ने राज्य किया, जिनका शासनकाल ६४५७ वर्ष था। इस गणना से भारतीय सम्भाट डायोनेसिस का समय ईसा से ७००० वर्ष पूर्व होता है।<sup>14</sup> कहने का आशह यह है कि भरत के प्रथम सत्राट की राज्यरोहन तिथि अथवा इस तपोभूमि पर वाल-रवि की किरणों का दर्शन आज तक कोई भी न कर सका और करता भी कैसे ! कारण, मेजर डी० ग्रहमपोल ( D. Graham Pole ) के शब्दों में सुनिये ‘यह भारत’ उस

11. Indian Spectator, Nov. 1871 See also, ‘ Travels in India’

12. Historical Researches Vol. II Page 34

13. Alberuni’s India Vol. I Page 407

14. Theology of the Hindus page 45-

समय सम्य और सुशिक्षित था जब हमारे पूर्वज बल्कल (Wood) की—सूर्य की आदि कालीन—पौशाक में इधर उधर दौड़ रहे थे।”<sup>१५</sup> १२ अप्रैल १८१७ ई० को अमरीकन लंचन कल्व में प्रीमीयर ( Premier ) ने अपने व्याख्यान को समाप्त करते हुए बतलाया था कि ‘मिस्टर लायडर्जार्ड द्वारा भाषण में बतलाई गई समस्त जातियां और हमारे शासक अप्रेज भी, विश्वाजंट पालामस्टन ( Palmerston ) के शब्दों में जब अद्वैर वर्वर अवस्था में थे, उस समय भारत अपनी सम्भ्यता के उच्च शिखरपर आमीन था।’<sup>१६</sup> सुप्रसिद्ध योरोपियन विद्वान काल ब्रुक भी स्वीकार करते हैं कि ‘इस देश से ज्ञान और सम्भ्यता की ज्योति पहले यूनान में गई, और फिर वहां से रोम और समस्त योरोप में फैली’।

भारत के भूतपूर्व वाइसराय मारकिवस आफ रिपन इसके सम्बन्ध में लिखते हैं—‘हम यहां पर जिन प्राचीन पुस्तकों के मध्य में हैं, उनके पास उनकी अपनी सम्भ्यता, कला और साहित्य है।’<sup>१७</sup> अंगेशब्देव शास्त्री के सम्बन्ध में लिखते हुए एक अमरीकन पत्र इस तपोभूमि भारत की सराहना करता है—‘वह (भारत) प्राचीन काल में ज्ञानवान और बुद्धिमान था जबकि योरोप के लोग जंगली थे और अमरीका का तो किसी को ख्याल भी न था।’<sup>१८</sup>

विश्व के रंगमंच पर मिश्र की सम्भ्यता भी बहुत पुरानी है

15. Modern Review for June, 1934.

16. Modern Review for June 1934.

17. What India wants, page 128.

19. Speeches of Marquis of Ripon in India.

19. Hopkins Enterprise, Nov. 13.

इसी को सामने रख कर विद्वान् थार्टन महोदय अपना फैसला देते हैं—‘जब नील नदी की धाटी पर तुच्छता का दृष्टिपात करने वाले पिनामिडों की सृष्टि नहीं हुई थी, जब योगोपियन सम्यता का पालना समझे जाने वाले यूनान और रोम नितान्त असम्यथे, तब भारतवर्ष धन और वैभव का धाम था । वहां चतुर्दिक् व्यवसाय-विशारदों की वस्तियां वसी थीं और भूमि पर उनका परिव्रमण अद्वित था । किसानों की मेहन्त को प्रतिवर्ष प्रकृति वहुमूल्य धन-धान्य से पुरस्कृत करती थी । कारीगरों का चमत्कार-पूर्ण भवनों के निर्माण कुशलता की समता आज सहस्रों वर्ष की प्रमारित सम्यता में भी नहीं की जा सकती...भारतवर्ष की प्राचीन स्थिरता अवश्य ही असाधारण रूप से महत्व पूर्ण रही होगी ।’ २०

भारतीय सम्यता की प्राचीनता संसार के लिये एक आंख फाड़ कर देखने वाली अद्भुत चीज़ है । मेक्सिलर के शब्दों में प्राचीन वंश विनीष्ट हुए, परिवारों में तबाही आई, नये साम्राज्यों की नींव पड़ी, किन्तु इन डाक्कमण्डों और हलचलों से हिन्दुओं के आन्तरिक जीवन में परिवर्तन नहीं हुआ । वर्षा की बौद्धारे आईं और चली गईं किन्तु वे ओटस-पत्र सदृश्य ( *Otus* ) सहिष्णु, शान्त और विश्वास पूर्ण ही रहे ।’ २१ वास्तव में देखते देखते कितनी ही जातियां दुनिया के स्टेज पर काली घटाओं की भान्ति उमड़ी और न जाने किस गहरे गर्त में गिरकर गायब हो गईं किन्तु डाक्टर इकवाल के शब्दों में हम कह सकते हैं कि—

कुछ बात है ऐसी कि हस्ती मिट्टी नहीं हमारी,

सदियों से रहा है दुश्मन दौरे जमां हमारा ।

भारतीय प्राचीनता की विलक्षणता ही उसके इस भूंचाल में भी गुरु गम्भीर बनकर खड़े रहने का कारण है। विशाल वसुन्धरा इसकी जन्मपुत्री है, जिस पर आज पचासों मन रेत जम गई है। किमी भी संसार के कोने में पहुंच कर, भूगर्भ की तलाशी लीजिये कोई न कोई युगों की पुरानी अद्भुत बात आप को मालूम हो जायेगी। मिस्टर आर० वी० फूट ने एक बार इसके अंचल को टटोल कर न जाने किस युग के दूटे फूटे बर्तन प्राप्त किये थे। उनके सम्बन्ध में आप लिखते हैं 'इन में से अधिकांश बहुत अच्छे किस्म के और सुन्दर पालिश किये हुए हैं, ये उच्च श्रेणी के व्यक्तियों के अवश्य होंगे!' २२ इतिहासज्ञ एलिफन्स्टन कहते हैं कि आज तक संसार में जितने प्राचीन सिक्के प्राप्त हुए हैं वह भारतवासियों के हैं। इतिहास के विद्वान प्रिसप बतलाते हैं कि हिन्दुओं में विनियम व्यवहार प्रचलित था और धातु के सिक्कों का भी प्रयोग होता था २३ २४

कहने का आशय यह है कि जिस जाति के इतिहास की गणना वर्षों और सदियों में नहीं युग और महायुगों में की जाती थी, फिर उन जातियों की सम्यता के साथ इनकी तुलना ही कैसी, जो हजार और लाख से अंगे गिनना ही नहीं जानती। हिन्दुओं की सम्यता संसार की सबसे आदिम सम्यता है। स्वीडन काउंट के शब्दों में 'विश्व-मण्डल की कोई भी जाति सम्यता और धर्म की प्राचीनता में हिन्दुओं से समता नहीं कर सकती ।' २४

२२. India's prehistoric and prehistoric antiquities, page 100

२३. Princep's essays on Antiquities, Page 223.

२४. Theogony of the Hindus, Page 50.

# धर्म

यतेऽन्युदथ निःश्रेयन सिद्धिःशद्भर्मा-वैशेषिक दर्शन ।

धर्म सभ्यता की उत्तम कसौटी और राष्ट्र की स्थिति का माप दाएँ है । भारतीय धर्म ही सृष्टि का आदिम धर्म है । इंगलैण्ड के प्रासिद्ध दार्शनिक पड़वर्ड का एंटर जो कई बार भारतकी यात्रा कर चुके हैं, लिखते हैं—प्राचीन काल से लेकर शोपनहार और हिट-मैन तक वेद में जो बीज रूप से विचार दिये हैं वे ही विचार प्रत्येक धर्म और दर्शन शास्त्र के प्रेरक सिद्ध हुए हैं ।<sup>१</sup> भारतियों के धर्म ग्रन्थों को उलट डालिये, कहीं भी हिन्दू धर्म पद न मिलेगा क्योंकि वह तो सृष्टि आविज्ञान का परिणाम है । डॉक्टर ब्राउन स्वीकार करते हैं कि भारत संसार के साहित्य और परमार्थ ज्ञान का आचार्य है ।<sup>२</sup> मिस्टर हावल भी यही वत्तलाते हैं कि हिन्दू धर्म एक पुराना और अलौकिक धर्म है । इनके ग्रन्थों में ईश्वरीय ज्ञान और मौलिक सिद्धान्तों के नियम एक नैतिक निष्चय तक मिलते हैं ।<sup>३</sup>

## एकेश्वरवाद—

प्राचीन भारतीय धर्म अन्तर्गतमा में स्वातन्त्र का प्रकाश कर मानव समाज को ईश्वर के साथ एकाहम स्थापित करने की परम-पुनीत शिक्षा देता है । वह उद्विग्न, अशान्त व्याकुल मानवों के मस्तक पर एक ईश्वर की अराधना का लेप लगा कर सुख शांति

1. *Art of Creation, page 7.*

2. *Superiority of Vedic Religion.*

3. *The Principle of Origin of Brahman.*

का अनुभव करता है। पादरी वार्ड की भी इस विषय में समर्पित मुन लीजिये—‘वह सत्य है कि हिन्दू परमात्मा के एकत्व पर विश्वास रखते हैं। वे यह भी मानते हैं कि ईश्वर सर्वशक्तिमान सर्वज्ञ, अजर अमर है।’ चाल्स काल्पनैन भी हिन्दू धर्म का अध्ययन कर इसी निष्कर्ष पर पहुंचे हैं—‘विश्व का सृजनहार, पालनकर्ता, प्रलयहार, अजन्मा और अज्ञेय, ईश्वर है, जिसका वर्गान वेदों और हिन्दूधर्म के ग्रन्थोंमें मिलता है।’<sup>४</sup> कर्नल केनेडी कहते हैं—कि प्रत्येक हिन्दू जिसका अपने धर्म से जग भी परिचय है वह परमात्मा को स्वीकार कर उसके एकत्व में अवश्य विश्वास करता है<sup>५</sup> अमरीकन महिला हीलर विलाक्स भी वेदोंमें वतनाई गई एक ईश्वर की उपासना पर अपना पूर्ण विश्वास प्रकट करती है।<sup>६</sup> विद्वान कालव्रक की भी यही राय है कि ‘धर्म शास्त्रों पर आवित प्राचीन हिन्दू धर्म एक ईश्वरवाद का प्रतिपादक था।’<sup>७</sup>

संस्कृत साहित्य के प्रकाशद परिषद जनरीस्टजनरी वेदों के कुछ उद्धरण देकर लिखते हैं—‘वस्तुतः इन अत्यन्त उत्कृष्ट भावों में हमें यह विश्वास हुए बिना नहीं रह सकता कि वेदों में एक ईश्वर का प्रतिपादन है जो सर्वशक्तिमान्, स्वयम्भू, जगत का प्रकाशक तथा स्वामी है।’<sup>८</sup> वेदज्ञ मोक्षमूलर का कथन है—‘इम सूक्ते में एक ईश्वरवाद का भाव इतने सपष्ट और प्रबल रूप से प्रकट किया गया है कि हमें आयों के नैसर्गिक ईश्वरवाद

४. Mythology of the Vedas.

५. Asiatic Researches Vol VII. Page 385.

६. Theogony of the Hindus Page 58.

७. “हरस्यगर्भः समर्तनाम् भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।” शूरग्वेद

इन्कार करने हुए सङ्कोच करना पड़ेगा ।” ९ अब आनुनिक इतिहासमें एच० एल० ओ० गैरेट आई० ई० एस० की जवान में भी मुन लीजिए—प्राचीन आर्य बहुत बड़े धार्मिक थे । धर्म उनके जीवन का प्रबलतम अंग था । प्रकृति के समस्त मुन्द्र पदार्थ—मूर्य, चन्द्र, उपा वडी वडी सरिताएं और ऊंची पर्वत मालाओं के बैं प्रशंसक थे । + + + उनका विश्वास था कि सब का स्वामी एक ईश्वर ही है ।” आपने इसके प्रमाण में एक वेद मंत्र का अनुवाद भी उद्धृत किया ।” १०

## देवी देवता—

वैदिक सनातनधर्म का प्रवान तत्व एक ईश्वरवाद है । देवी-देवताओं की उपासना अर्वैदिक है । इन के सम्बन्ध में डाक्टर एफ० वाशवन्नै कहते हैं—‘इस विषय में भारत ने वडी मुन्द्रता से वैदानिक अन्वेषण किया है । जब रोम और यूनान मुद्रा देवताओं के अज्ञायब्दर बने हुए थे, तब भारत एक स्वर्गीय जन्मुशाला था, जहां अब भी जीवित देवता मिलते हैं ।’ ११ प्रोफेसर मिलर इस गुरुथी को इस भावि सुलभाते हैं—‘देवता प्रसिद्ध तीन भिन्न २ विभागों में विभाजित हैं, इन वर्गों में परस्पर कभी सम्मिश्रण नहीं होता । यह तीन वर्ग, पृथ्वी, आकाश और स्वर्ग हैं । प्रत्येक वर्ग में ग्यारह ग्यारह देवता हैं, जो मूक प्रकृति के प्रतिनिधि हैं, किन्तु वास्तव में देवताओं की इस कल्पना के अन्तस्तल में एक ब्रह्म की भावना बड़े प्रबल वेग से वह रही है ।

९. History of Sanskrit Literature, Page 268

10. He who has given us life, who is our maker, who knows all places, He is one, although he bears the name of many gods  
( A History of India, Page 14,15.)

11 India Old and New, Page 92.

प्रोफेटर व्हन्नमीकील्ड कहते हैं कि अन्त में इन देवताओं का स्तोप होकर एक परमात्मा ही रह जाता है, यह इस धर्म की विशेषता है।”<sup>१२</sup> इन्द्र, मित्र, वरुणा, ब्रह्मा, और महेश आदि उस एक हैश्वर के ही सम्बोधन हैं, देवी—देवता नहीं। विद्वान् अनेस्ट उड़ ने इस विषय का अच्छा अध्ययन किया है। आपकी राय में ‘हिन्दूओं की दृष्टि में एक ही परमेश्वर है।’ इस सत्यता को श्रुगवेद में “—क यदि विश्वा बहुया वदन्ति” इत्यादि मन्त्रों द्वारा प्रकट किया गया है।”<sup>१३</sup>

## मूर्तिपूजा—

प्रतिमा पूजन<sup>१४</sup> का आविभवि किस कालि में हुआ, इस सम्बन्ध में निश्चय स्तुप से कुछ भी नहीं कहा जा सकता। डॉक्टर स्टीन का अनुमान है कि मीनांडर (१५० वर्ष ई० पू०) काल में इसकी नींव पड़ी होगी। मिस्टर फौचर भी मूर्तिपूजा का दोषों यूनानियों को ठहराता है। प्रोफेसर भोनियर विलियम्स भी इस सम्बन्ध में किसी निश्चित निष्कर्ष पर नहीं पहुंचे। आपका कहना है कि ‘मनुसन्नति-रचना-काल में मूर्तिपूजा का आस्तित्व था, इस में बड़ा सन्देह है।’<sup>१५</sup> श्री रङ्गम द्वारा प्रकाशित ‘निगुण मानस पूजा’ से मूर्ति खण्डन सिद्ध होता है।

12. Religion of the Vedas.

13. An English man regards towards mother India.

14. Indian Wisdom. Page 266.

15. ग्रान्चन काल में पञ्च देवों का भी किन्हीं भन्धों में वर्णन मिलता है। एक अन्वेषक विद्वान् के मत से वे देवता क्रमशः अग्नि, वायु, आकाश और पृथ्वी थे। इनके अधीश्वर की संज्ञा थी शिव। अग्नि, देव का मन्दिर अग्नि, वायु का कान, वार्णी का मुख और पृथ्वी का मन्दिर नाक थी। इन चारों

पूर्णस्यावहनं कुप्र, मर्वा वारस्यचामनम् ।

स्वच्छस्य पाद्यमर्थ्यच शुद्धस्याचमनंकुपः ॥ ७ ६

सारांश, जर्मन दार्शनिक शलगल के शब्दों में सुनिये-‘इस से इन्कार नहीं किया जा सकता, कि प्राचीन भारतीयों को ईश्वर का सच्चा ज्ञान था । इस विषय में उनके लेख स्पष्ट, प्रेममय और उत्कृष्ट भावों से भरपूर हैं ।’<sup>१७</sup>

## वैज्ञानिक धर्म—

जो धर्म गर्भी से बाहर आने के साथ ही अपने अनुयाइयों के कान में भय का मंत्र फूंक देता है, उस धर्म के समाजिक जीवन का सुसंगठित होना एकांत कठिन है ! विशाल प्राचीन भारतीय धर्म मनुष्य को विकाश मार्ग दिखलाकर, आशा और आनन्द का सन्देश सुनाकर, कर्मक्षेत्र में अप्रसर होने में लिये प्रोत्साहित करता है । यही इतनी उथल-पुथल और कांतियों में इसके पर्वत की भाँति अचल रहने का कारण है । मेजर कर्निघम के शब्दों में—‘पूर्व में दर्शन और धर्म का जितना घनिष्ठ सम्बन्ध रहा है, उतना सम्भय ग्रीक और आधुनिक योरूप में नहीं ।’<sup>१८</sup> भारतीय धर्म की ओर इशारा करते हुए रावर्टरिसले बतलाते हैं—‘वही धर्म, जो दर्शन और बुद्धि, दोनों के आधार पर स्थिर है पृथ्वी

देवों के स्वामी अर्थात् महादेव का मन्दिर मस्तिष्क ( Brain ) है । क्याक्ष ज्ञान का स्थान है । इस लिए यहां रहने वाले महादेव को कपाली भी कहते हैं । समस्त-संसार का चिन्तन स्थान और शिव या महादेव के निवास स्थान मस्तिष्क को शिवालय भी कहते हैं ।

16. Works of Shiri Shankera Charya Vol, 18.

17. Wisdom of the Ancient Indians.

18. History of the Sikhs, Page 342.

पर अपनी जड़ जमा नकता है । १९ श्रीमती एंनीविसेन्ट ने भी प्राण्ड थियेटर कलकत्ता में व्याख्यान देते हुए बतलाया था, कि भाग्न धर्म की जननी है । इस में विज्ञान और धर्म का पूर्ण समन्वय है और यही हिन्दू धर्म है । भारत ही पुनः संसार की आध्यात्मिक माता के पद को सुशोभित करेगा । हिन्दू धर्म किनना वैद्वानिक एवं न्याय संगत है, आनंदवल जस्टिस उड्हफी की ज्ञानी मुनिये—‘प्रत्येक स्थिति में भारत के प्रधान धार्मिक विचार और दार्शनिक भाव अमर हैं ।’ आगे चल कर आप कहते हैं कि भाग्न ने शिक्षा दी है कि विश्व ईश्वर है । + + + नैतिकता मानवता का कानून है ।... यही उस की उच्च सम्यता का प्रमाण है, जो कि भारत में ही नहीं भमन्त संसार में फल लाता है । उस के कर्म भूमि होने का दावा न्याय संगत है । हमें उदारता एवं स्वर्नंत्रता-पूर्वक देखने पर ज्ञात होगा कि वास्तव में कोई दूसरा धर्म नहीं जिसने न्याय और तर्क से जीवन और आत्मा की व्याख्या की हो ।<sup>२०</sup>

जिन्होंने इसका अध्ययन किया है और इसके आधारभूत सिद्धान्तों तक पहुंचे हैं, जिन में कि परमात्मा और पूर्ण जगत का सादृश्य है । वही इसे जान सकते हैं, दूसरे नहीं ।<sup>२०</sup>

जिस धर्म में विचार शीलता और मजहब का विरोध होता है, बुद्धि और तर्क का सहारा लेना गुनाह समझा जाता है, वह धर्म अधिक काल तक प्रिय नहीं रह सकता । देखिये मिं० जे० ए० लांग लैएंड ईसाई धर्म के विषय में क्या कहते हैं—‘दर्शन और धर्म आज एक दूसरे के विरुद्ध हैं, स्वर्गीय आदेशों और हमारे विद्वानों

की विज्ञाओं में वैषम्य है ।<sup>21</sup> पाद्वारी कालिनसो किस निर्भीकता से बतलाते हैं—‘मैं प्रतिवाद की परवाह नहीं करता । वर्तमान काल में जीनेसिस पुस्तक में नौचियान (Noachian) की वास्तविकता पर विश्वास न करने वाले हैरान हैं ।’<sup>22</sup> एक दूसरे अंग्रेज परिणत की भी शिकायत सुन लीजिये—‘धर्म पुस्तक (Gospel) की इतिहास सत्यता पर आधुनिक योरूप को सन्देह है ।’<sup>23</sup>

प्राचीन भारतीय धर्म ही संसार के रंगभड़च पर एक ऐसा धर्म है जहां बुद्धि, दर्शन और विज्ञान का सुन्दर समन्वय मिलता है। भारतीय वैदिक धर्म में भेद-भावना का भी नाम नहीं। दुनिया को छाती से लगा लेना इसकी प्रथान भावना है। भारत के भूतपूर्व वायमराय लार्ड इरविन के शब्दों में—‘इतिहास में विजेताओं को धर्म और विजित करने के दृष्टांत मिलते हैं, किन्तु वास्तव में जैसा हिन्दू धर्म में मिलता है वैसा अन्यत्र कहीं नहीं । नई शक्तियों के आगमन के समय उसने अपना अद्भुत पराक्रम दिखलाते हुये, एक ऐसी स्थिति उपस्थित की, जिसने सहज में नये आक्रमणकारियों को अपने रूप में परिष्यत कर लिया । अपने में मिला लेने की यह महान और अपार शक्ति सचमुच दृसरे धर्मों के लिए एक उदाहरण है ।’ संयुक्त प्रान्त के भूतपूर्व गवर्नर भी इसी लिए भारत-धर्म का लोहा मानते हुये लिखते हैं—‘अब भी धर्म भारतियों के जीवन का आदि अन्त—अ(Alpha) और झ (Omega) है ।’<sup>24</sup>

21. Religious scepticism and unbelief.

22. Book of Joshua Vol. II, Preface.

23. Short Studies on great Subjects Vol. I Page 278.

<sup>†</sup> India Insolent, Page, 21.

प्राचीन भारतीय धर्म ही सर्व श्रेष्ठ धर्म है। यह हमारे दैनिक जीवन का, आचरणों का, व्यवस्थापक है। सम्पन्नता में यह हमारा मंत्रज्ञरु, विपन्नता में शान्ति दायक, चिन्ताओं के पारावार में सहायक, भय में रक्षक और शोकमें सांत्वना देने वाला मित्र है। संमार के सभी सम्प्रदाय इसी स्रोत का एक २ विन्दु लेकर विकसित हुए हैं। अभी हाल में नोटविच नामक रूसी यात्री को निवान के एक मठ में ईसा ( Christ ) की एक हस्त लिखित जीवनी मिली है। उस से पता चलता है कि ईसा ने भारत में जगन्नाथपुरी, राजगृह तथा काशी आदि स्थानों का भ्रमण करते हुए अन्यथन किया था। ईसाइयों की वाइविल, ईसा के स्वयं बतलाये हुए प्रमङ्गों, उनके प्रेम पात्र शिष्य सैंटजान के 'गास्पेल-इपिस्टल्स' और 'रिवीलेशन' आदि स्पष्ट रूपेण प्रकट होता है कि ईसा ने पैलस्टाइन देश में हमारे अद्वैत सिद्धांन्त के प्रचार का पूरा प्रयत्न किया था। किन्तु दुरायही द्वैतवादियों ने इष्ट हो कर तत्कालीन रोमन सरकार द्वारा उन्हें सूली दिलवा दी।

ईसाईयर्म प्रन्थों के निम्न वाक्यों से भी हमारी इस बात की भली भाँति पुष्टि होती है।

'Ye are Gods.'

[ 'तुम सब ईश्वर हो ।'

'The kingdom of God  
is within you.'

{ 'समस्त विश्व ही ईश्वर है ।'

मिस्टर जी मालवर्थ सी० आई० ई० ने ईस्ट इण्डियन ऐसोसियेशन में व्याख्यान देते हुए बतलाया था कि हमारे धार्मिक प्रन्थों का मूल स्रोत वही ( वेद ) प्रतीत होते हैं । २४

विद्वान् जैकोलियट भी मुक्त कण्ठ से स्वीकार करते हैं कि 'वर्तमान मानव समुदाय ने उसी एक मूलस्थान से दार्शनिक और धार्मिक प्रकाश प्राप्त किया है।'<sup>२४</sup> प्रोफेसर ब्लूमीफील्ड भी यही कहते हैं कि हमारा वंश आर्य जाति के उन पर्वतों के साथ अदृष्ट शृंखला में वंधा है, जिन्होंने सूर्य के उदय और अस्त होते समय, धड़कते हृदय से वेद मंत्रों को सुनता था। . . हम स्वभाव से ही आर्य हैं—इडोयोगोपियन हैं, सेमिटिक नहीं। हमारे अध्यात्मिक सजातीय भारतमें मिलते हैं न कि मैसोपुटीमिया में।<sup>२५</sup>

यह हुई ईसाई धर्म की व्युत्पत्ति, अब इस इस्लाम धर्म की भी दास्तान सुनिये। विख्यात मुस्लिम इतिहासज्ञ मोहम्मद सिन खफी कहता है—'हम भारत में पारिंयन धर्म का सच्चा स्रोत पाते हैं।'<sup>२६</sup>

एक इतिहासज्ञ की राय है कि प्राचीन काल में आर्य लोग दक्षिणी समुद्र के किनारे लोहित सागर (Red Sea) होकर पश्चिम देशों में जाते थे। उन्हीं के साथ एक शैव ब्राह्मण ने अरब में जाकर शिवोपासना का प्रचार किया था। देशकाल के अनुसार उसने वहां एक शिवालय की भी स्थापना की थी, जो वर्तपान समय में 'काबा शरीफ' कहलाता है। उसके अन्दर एक हृष्कच लम्बी अण्डाकार प्रतिमा भी है। अरबी लोग इसे हजरत इत्राहीम निर्मित बतलाते हैं। अरबी भाषा में शब्द के पहले 'अलिफ' और 'लाम' के प्रयोग करने का नियम है। अस्तु ब्राह्मण का 'अलब्राह्मण' और बिगड़ते २ 'अत्राहम' (Ibrahim) बन गया। कुरान में यह 'इत्राहीम' और बाइबिल में 'अत्राहम' के हृप में उच्चारण किया जाता है।

22 The Bible in India.

26. Religion of the Vedas.

27- Asiatic Review, Vol. I Page, 292

## धर्मविस्तार—

इतिहासकार जनर्स्टजर्ना॑ बतलाते हैं कि चाल्डीयांस ( Chaldeans ) वेदोलियन और कोलिव्स ने अपना धर्म और सभ्यता भारत से प्रदूषा की है। आगे चलकर आप यह भी सिद्ध करते हैं कि प्राचीन इंगलैंड के ट्रूडव्स ( Truids ) बुद्ध धर्माच्यलम्बी थे। + + × बुद्ध मन नील नदी तक पहुंचा था। मिस्रियां ( Egyptians ) के धर्म ग्रन्थों में भी बुद्ध का नाम बोद्ध ( Bodh ) आया है। २५ कर्तल टाड भी समस्त वेबीलोनिया और असीरिया में हिन्दू रसमोरिवाज के फैलने का समर्थन करते हैं और उनके स्मारकों पर नूरों देवता के चिन्हों का पाया जाना बतलाते हैं। २६

बुद्ध धर्म के सम्बन्ध में स्वीडश कांट का कहना है, कि यह भारत से इथोपिया, मिश्र चीन, कोरिया और तिब्बत की ओर बड़ा और चाल्डीया ( Chaldea ) फोइनिशिया ( Phoenicia ) प्लेस्टाइन, कोलिव्स ग्रीक, रोम गाल ( Gaul ) और श्रिटेन तक फैलगया। आप यह भी बतलाते हैं कि 'स्कन्डनेविया ( स्वीडन और नार्वे )' की प्राचीन धर्म पुस्तक इड्डा का आधार देव है। २७ चीनी यात्री फाहियान भी बतलाता है कि तत्कालीन चीनी तुर्किस्तान में बुद्धमत प्रचलित था। एक अन्य पर्यटक कहता है कि 'बलग्व ( Fo-Ho )' में एक नगर 'छोटा राजगृह' के नाम में विश्वान था। जिस में १०० विहार और ३००० बौद्ध हीनयान सिद्धान्त के अनुयायी थे। २८ इतिहासकार एक स्वर

२४. Theogony Of the Hindus.

२५. Tod's Rajasthani Vol. 1, Page 602.

२६. See, Theogony of the Hindus.

२७. Journal of the Behar and Orissa research Society, vol. III, P. 456

ने स्वीकार करते हैं कि पांचवी और दशवीं शताब्दी के मध्य में समस्त संमार में आवे से अधिक संख्या के बल वौद्ध मतावलम्बियों की थी। वौद्ध धर्म भी वैदिक धर्म का एक अंग ही है। मिस्टर बौसेन्टस्मिथ की जवानी सुनिये—“इसा से ५०० वर्ष पहले फैलने वाले जैन और वौद्ध धर्म हिन्दू धर्म के फिकें थे।”<sup>32</sup> भारत पधारने वाला अलबेरनी भी वौद्धों को हिन्दूओं का निकट सम्बन्धी बतलाता हुआ लिखता है—‘प्राचीन काल में खुरासन, पर्शिया, ईराक, और सिरिया का सीमाप्रांत वौद्ध मतावलम्बी था।’<sup>33</sup>

इस समस्त विवेचन से यह बात विदित होती है कि एक दिन सारा संसार वैदिक धर्म की धज्जा के नीचे एकत्रित होकर इस तपोभूमि भारत के सामने सिर झुकाया करता था। उसी शुभ कल्याणकारी बेला का स्मरण कर आनंदबल जस्टिस सर उड़ फी कहते हैं—‘समस्त संस्कृतियों का आधार, समस्त राष्ट्रीयता का निर्भाता धर्म है। यह जीवन रूपी महान् वृक्ष की जड़ और तना है जिसकी अनेक शाखाओं में से दर्शन, कला, ज्ञान और सौन्दर्य प्रधान है। ईश्वर करे महान् एवं विलक्षण प्राचीन भारतीय जीवन आज पुनः उठ खड़ा हो।’<sup>34</sup>

32 History of the Fine Arts in India and Ceylon Page 9.

33 Alberuni's India Vol. I, page 21.

34 Bhataat Shakti.

## सामाजिक संगठन

महतापवन् । मह नौ भुवकन् । महर्वीर्य करवावहै ।  
तेजस्विना वर्धीतमस्तु । मा विद्विषावहै ।

—तैत्तिरीयोपनिषद्

सामाजिक संगठन की आधार शिला पर जातीय जीवन के भव्य-भवन का निर्माण होता है। राष्ट्र भी इसी व्यवस्था के अनुसार बनते और विगड़ते रहते हैं। अस्तु देश अथवा जाति के अर्तान का स्पष्ट चिन्त्र उसकी सामाजिक व्यवस्था के दर्पण में साफ़ रहिगोचर होता है।

विशाल विश्व परिवर्तनशील है। यही नियम राष्ट्र और जाति पर भी लागू है। किसी पाश्चात्य परिवर्तन के शब्दों में—। 'स्थिर न रहना ही मानव स्वभाव है। उसे उन्नत या अवनत होना ही पड़ेगा। 'प्राचीन बृहत्तर भारत की ओर सुड़ कर देखने से हम को इस वात पर बहुत कुछ पता लग जाता है कि भारत का अतीत कितना विशाल एवं प्रशसनीय था ! समस्त राष्ट्र एकता की रस्सी में बंध था। सांप्रदायिकता के भज्भट न थे, और न ही थे जाति पाति के भेदभाव। उत्तिहासज्ञ वीवर महोदय इस सम्बन्ध में बतलाते हैं कि 'यहां जाति रचना के चिन्ह न थे, लोग परस्पर मिल कर रहते थे।' १ वेदज्ञ मैक्समूलर भी जाति पाति पर विचार करते हुए प्रमाणों द्वारा सिद्ध करते हैं,—, जातियां जैसी की आज कल प्रचलित हैं वैदिक कालीन धर्म का अंग हैं या नहीं ? इसका

“Man can not remain stationary, he must either improve or impare.”

उत्तर निश्चयात्मक रूप से 'नहीं' ही है।<sup>२</sup>

इतिहास लेखक एच० एल० ओ० गैरट भी मुक्तकठ से स्वीकार करते हैं कि, प्राचीनतम काल में भारत में पुर्तीनी जाति पांति न थी।<sup>३</sup> मंयुक्तप्रान्त के भूतपूर्व गवर्नर वटलर महोदय भी इसी का समर्थन करते हुए लिखते हैं—प्राचीन वेदों में जाति पांति का कोई हप्तान्त नहीं है।<sup>४</sup>

### वर्णव्यवस्था—

आवश्यकता आविष्कार की जनर्ता है। यही सिद्धान्त भारतीय ममाज व्यवस्था में काम करता रहा है। भारतीय इतिहास वेत्ता प्रामीमी विद्वान मिस्टर एम्. सिन्ट के शब्दों में 'प्राचीन आद्यों को जिन परिस्थितियों के संघर्ष में आना पड़ा और उन्हें अनुकूल बनाने के लिये जो व्यवस्था की गई थी उसी का नाम है वर्णव्यवस्था।'<sup>५</sup> योगीराज कृष्ण ने भी गीता में यही कहा है।<sup>६</sup> मिस्टर मुअर भी भारत का हवाला देकर बतलाते हैं—जाति पांति का भेदभाव नहीं था, ब्रह्म की यह सृष्टि सर्व प्रथम ब्राह्मण ( Brahmanic ) थी इसके पश्चात् मनुष्यों के कर्मनुसार ही वर्णव्यवास्था का जन्म हुआ।<sup>७</sup> 'वर्णव्यवस्था' का जन्म कर्मनुसार हुआ था जो बाद में जन्मजात बन गया।<sup>८</sup>—यह हैं जी० ए० काथेन० एम्. ए. आई. ई. एस्. के विचार।

2. Mammuller's chips from a German work shop Vol, II Page 38.

3. A History of India, Page 14.

4. Indian Insistent Page 22.

2 Indian Castes.

6. "चानुर्वर्ण्यं मया सृष्टं गुणं कर्म विभागशः।"

7 Sanskrit Texts,

8 A History of India, Page 31.

वाम्नव में मानव शास्त्र, शरीर शास्त्र और विज्ञान की दृष्टि से ही भारतीय तत्त्वज्ञानियों ने वह व्यवधा रची थी। इतिहासज्ञ नेम्फोल्ड का मत है—‘कर्म केवल कर्म की नींव पर भारतीय वर्णों की व्यवस्था हुई।’ लेस्टनेट गवर्नर मरडेन्जिल और सेंसर कमिशनर ड्रेस्टन महोदय ने इस विषय की विस्तृत योजना करते हुए जाति पांति को मध्यकालीन युग की वृद्धि बतलाई है। पाश्चात्य विद्वान् हर्वर्ट रिसले ने भारत की जातियां नामक पुस्तक में लिखा है—‘किसी जाति का उच्च या निम्न पद इस बात पर अवलम्बित था कि जाति जो व्यवसाय करती है वह सभ्यता की किस श्रेणी का है।’ ‘कर्म प्रधान विश्व करि राखा।’—यही हिन्दू वर्णव्यवस्था का मूल था। कर्नल अल्काट महोदय की जवानी मुन लीजिये—जैसा कि आज लोग कहते हैं कि जातीय दीवारें अपरिवर्तनशील हैं, पहले ऐसा नहीं था। लोगों को सामाजिक क्षेत्र में उत्थान करने या पतन के गत में गिरने की स्वतंत्रता थी। तत्कालीन जाति बन्धन अत्यन्त उदार थे। व्यास देव महर्षि बने, विश्वामित्र ब्रह्मऋषि कहलाए, और सूतजी ने धर्मपदेश का उच्चपद प्राप्त किया।

बाथेन (Bathen) महोदय भी इसकी पुष्टीकरण करते हैं—‘पहले एक ब्राह्मण का पुत्र ब्राह्मण होने का दावा नहीं कर सकता था जब तक उसके कर्म उच्चतम न हों। उसके कर्म यदि निम्न हुए तो वह शूद्र माना जाता था।’ यही बात इतिहासज्ञ गैरट की जबानी भी मुनिप—‘यदि तीन उच्च वर्णों में से कोई भी व्यक्ति अपने कर्तव्य पालन में समर्थ न होता तो वह शूद्र श्रेणी में पतित कर दिया जाता था। आरम्भ में शूद्रों की स्थिति सदैव स्थाई न थी, वे मुश्वर का उपयोग कर ऊंचा उठ कर उच्च वर्णों में

प्रवेश करने थे । इस देश के इतिहास में अनेकों प्रमाण ऐसे मिलते हैं, जिनमें गुण कर्मों के अनुसार मनुष्य एक जाति से दूसरी जाति में पहुंचे हैं और फिर उस अवस्था में वे शूद्र नहीं रहे । ११

१४ सितम्बर सन् १८८१ ई० को वर्लिन (जर्मनी) के अन्तर्जातीय सम्मेलन में पढ़े हुए निवन्ध से पता लगता है कि ऐतरेय 'ब्राह्मण' मनुस्मृति, और अष्टाध्यायी द्वारा यह मालूम होता है कि एक शूद्र ब्राह्मण और ब्राह्मण अपने कर्मानुसार शूद्र बन सकता है, 'जवाल' जो बाद में सत्यकाम कहलाये थे उन्हें विद्वान् लेखक ने अपने एक प्रमाणस्प में उद्युत किया था । १२ यूनानी राजदूत मेगस्थनीज भी इसी भत का प्रतिपादन करता है कि—'किसी भी जाति का हिन्दू ब्राह्मण बन सकता है ।' १३

राजस्थानके प्रख्यात इतिहास लेखक कर्नल जे० टाइ महोदय भी राजपृत इतिहास के आधार पर इसी का पुष्टिकरण करते हैं— प्राचीन काल मे सूर्य चन्द्र वंशियों में पारिवारिक पुरोहित परम्परागत नहीं होते थे, प्रत्युत यह एक पैशा था । १४ इन विदेशी विद्वानों के जोरदार प्रमाणों से यह बात सिद्ध होती है कि राष्ट्र का प्रत्येक व्यक्ति उस की सेवा में लगा हुआ था, जिस के किंवद्दन योग्य था ।

विद्वानों को मिलाने और सत्कर्मियों को ऊंचा उठाने की प्रथा तो अब तक भारतवर्ष में प्रचलित थी । लेजिस्लेटिव ऐसेम्बली के सदस्य इतिहासवेत्ता हरिबिलास शारदा एफ० आर० एम० एल० महोदय लिखते हैं कि इसा की बारहवीं शताब्दी में

११. 'Paper on sanskrit as living Language.'

१२. शूद्रोपि शील सम्पन्नो गुणवान् ब्राह्मणो भवेत् ।

ब्राह्मणोपि कियाहीनः शूद्रान् प्रत्यक्षरो भवेत् ॥ महाभारत

१३. Annals and antiquities of Rajasthan,

बंगाल के राजा बल्लालसेन ने कैवतों के एक समुदाय को उंचा उठा कर दूसरे को पतित कर दिया था । मत्तरहवीं शताब्दी में राजपूताना के महारावल छमरसिंह (जैसलमीर) ने उन भाटी राजपूतों को जो कि मुसलमान बन गये थे पुनः जाति में सम्मिलित कर लिया था । <sup>१३</sup>

### अस्पृश्यता—

वर्तमान काल में प्रचलित अस्पृश्यता मनुस्मृति काल तक भारत के स्वप्न और कल्पना से बाहर की बात थी । जिस हिन्दू जाति ने कितनी ही बाहर से आने वाली जातियों को अपने में मिला लिया, जिसमें संसार को अपना कुटुम्ब बनाने की अद्भुत क्षमता और एकत्र स्थापित करने की महत आकांक्षा थी, वह अपने ही अंग को सदा के लिए अद्वृत ठहरा दे, यह बात बुद्धि अझीकार नहीं करती । <sup>१४</sup>

अब जरा इसी दास्तान को पादरी एफ० डी० मोरिस के मुंह से सुनिये—कोई भी शूद्र किसी अर्थ में भी पराधीन नहीं और न कभी रहे हैं । प्रीक लोग भारतवर्ष में समस्त वर्णों को स्वतंत्र नागरिक रूप में पाकर आश्चर्य चकित रह गये थे । <sup>१५</sup> सन् १८८८ की प्रकाशित एक पुस्तक से वर्तमात छुआद्वृत के गढ़ मद्रास की तत्कालीन अवस्था पर अच्छा प्रकाश पड़ता है । गानतंस एण्ड सन एक कुंए का चित्र दे कर इस प्रकार वर्णन करते हैं—‘जल को ब्राह्मण पवित्र समझते हैं । उनका मत है कि वह किसी के स्पर्श से अशुद्ध नहीं होता । इस लिए वे शूद्रों में

१४. India Superiority, Page 31.

१५ अब निजः परो देवि गणना लघु चेत्तम्,

उदारवरितनान्तु वयुधंव कुटुम्बकम् ।

१६ The Religion of the world. Page 43

साथ एक ही कुंए में नहाने, कपड़े धोने और उसका जल पीने में आपनि नहीं करते । <sup>१०</sup> पर्यटक अलवेच्ची बतलाता है—‘चारों वर्ग वाले इकट्ठे रहते और एक दूसरे के हाथ का खाते पीते थे ।’ <sup>११</sup>

इन समस्त उदाहरणों से साफ प्रकट है कि अस्पृश्यता का मूल्रपात भारत में कुछ शतब्दियों पूर्व ही हुआ। इनिहास अपने को दोहराता है, यह सिद्धान्त यदि अटल है तो वर्तमान शताब्दी के अन्त के साथ साथ इस विना सिर पर के कुचाकूत का भी अन्त हो जाना चाहिये। विशाल हिन्दू धर्म ऊंच नीच का भंड भाव नहीं मिखाता, फिर घृणा करके कोई पाप का भागी कैसे बन सकता है। योगीराज कृष्ण के शब्दों में—

विद्या विनय सम्पन्नं ब्राह्मणे गवि हस्तिनि ।

शुनि चैव श्वपके च परिडताः समदर्शिनः । <sup>१२</sup>

प्राचीन वर्णव्यवस्था के स्म्बन्ध में मिस्टर सिड्नी लो महोदय की सम्मति कितनी विचार पूर्ण है—‘इस में सन्देह नहीं कि शतब्दियों से राजनीतिक धर्मों और प्राकृतिक तूफानों में भी भारतीय समाज के सुसंगठित रहने एवं उस की सारयुक्त दृढ़ता का मूल कारण यही है। + + यह प्रत्येक मनुष्य को अपने स्थान पर उसका कैरियर, Career ) पेशा और सामाजिक

17. Indian Microcosm.

18. Alberuni's India Vol. I. Page 101

19. विद्वान्, ब्राह्मण, गाय, हाथी, कुत्ता और चरडाल को परिडत समान दृष्टि में देखने हैं। गोता ! हिन्दू धर्म की विशालता का विवेचन करते हुए सन् १८१२ में भारत-दर्शन करने वाले मोनियर विलयमस् महोदय सुकत काठ में स्वीकार करते हैं कि दूसरों को अपने में मिलाने और हज़म कर जाने के कारण वह धर्म समस्त भारत में फैल गया।

सहानुभूति की गरिधि प्रस्तुत करता है। यह इसे यावज्जीवन सामाजिक इर्पा के घुन और अपूर्णभावनाओं से सुरक्षित रखता है। + + + वर्णव्यवस्था हिन्दुओं के लिए उनका क्लब, व्यापारिक परिपद, उपयोगी संस्था और परोपकारी समाज है।<sup>20</sup> एवं हुवोड़स जैसा परद्विरात्मैषी मिशनरी भी वर्णव्यवस्था की सुकृत कंठ से प्रशंसा करता है।<sup>21</sup> रंवरण्ड पीटर पर्सिवल का कथन है—‘हिन्दू जाति की बहुत बड़ी विशेषता है उस की वर्णव्यवस्था।’<sup>22</sup> इतिहासवेत्ता गैरट स्वीकार करते हैं कि ‘इस के द्वारा समाज की बहुत बड़ी सेवा हुई है।’<sup>23</sup> सर हेनरीकाटेन का भी विचार है कि इसके द्वारा अतीत में अत्यावश्यक सेवायें हुईं और अब तक भी हिन्दू समाज शान्ति दृढ़ता और नियन्त्रण को संभाले हैं।<sup>24</sup> यह बात निर्विवाद है कि यदि आज नियमित राजसत्ता का प्राचीन वर्णव्यवस्था के साथ मेल हो जाय तो राम-राज्य की आदर्श व्यवस्था को उत्पन्न होते विलम्ब न लगे।

### आश्रम व्यवस्था

प्राचीन हिन्दूओं के सामाजिक संगठन की दूसरी खूबी थी आश्रमव्यवस्था। इसमें मानव शरीर और स्वाभावकी आवश्यकताओं का पूरा र. विचार था, साथ ही इस में जीवन के आदर्शों और अन्तिम उद्देश्यों को, चौली दामन की भाँति जकड़ दिय गया था। प्राचीन आश्रम व्यवस्थाके अनुसार मानव जीवनकी अवधि

20 A vision of India.

21. Hindu Manners.

22. The Land of the Vedas. Page 34.

23. A History of India Page 31.

24. The System of Castes.

मोटे तौर पर सौ.वर्ष मान ली गई थी। प्रथम पांच वर्ष बीतने पर लड़के का उपनयन संस्कार होता था। इतिहासज्ञ गैरट आई, ११० एस० कहते हैं कि प्रथम आश्रम (ब्रह्मचर्य) में बालक का विद्यार्थी होना आवश्यक था। इस काल में वह गुरु के चरणोंमें, घर से पृथक रहकर विद्योपार्जन करता था। इस समय भिक्षान्न का सादा आहार कर और ब्रह्मचार्य ब्रत का पालन कर अगामी जीवन की तैयारी करना ही उस का उद्देश्य होता था।

दूसरा 'गृहस्थाश्रम' के अनुसार प्रत्येक हिन्दू शिक्षा समाप्ति के पश्चात विवाह कर सांसारिक जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में निरत होता था। यह वह जीवन था जिसमें उसे विद्यार्थियों के भोजन का प्रवन्ध करना, दीन दुखियों की सहायता करना, सन्यासियों की आवश्यकता को पूरा करना और जीविकोपार्जन करना पड़ता था। जो भाव ब्रह्मचर्याश्रम से गुरु के प्रति होता था इस आश्रम में वह विस्तृत होकर देश और समाज के प्रति हो जाता था। मुहस्थाश्रम में कुछ तो काम की सिद्धि होती थी और कुछ उसे अपने को दमन भी करना पड़ता था क्योंकि एक पत्ति ब्रत और एक पतित्रत साधारण बात नहीं। विद्वान वार्थन के शब्दों में 'वे एक ही विवाह कर सकते थे।'<sup>१२५</sup>

तीसरा आश्रम बानप्रस्थ था। गैरट साहब कहते हैं—इस आश्रम में सगे-सन्वन्धियों को छोड़ कर बन में निवास करना पड़ता था ताकि सांसारिक इच्छाएं उनकी शान्ति को भंग न कर सकें।

लार्ड रोनाल्ड्से कवीन्द्ररवीन्द्रके शब्दों में कहते हैं कि हमारे प्राचीन नाटकों की उत्कट मानव प्रवृत्तियों का जन्म भी यहीं हुआ था। लार्ड महोदय यह भी बतलाते हैं कि प्राचीन भारतीय

जीवन इन जंगलों में बहुत कुछ सम्बन्धित था । २६ निसन्देह मंसार का विकास विजली में जगमगाते महलों से नहीं हुआ है, किन्तु भारतीय सभ्यता का पाठ संसार में विरक्त ऋषियों ने तपोवन की कटियां से ही शुरू किया था ।

अन्तिम आश्रम था सन्यस्त विद्वान् गैरट वनलातं हैं कि 'इम अवस्था में हिन्दू अपने मन को ईश्वर में लगा कर जीवन-वन्धन में विमुक्त हो कर अनन्त में लीन होने का प्रयत्न करतं थे ।' २७ यह प्राचीन हिन्दुओं के जीवन का वह काल था, जब वे समस्त मानवता के कल्याण का चिन्तन करते थे । सारा संसार उन का कुटुम्ब होता था और भुवन-त्रय स्वदेश ।

## विवाह—

विवाह प्रणाली सामाजिक संगठन की उत्तमता और गृस्थाश्रम की विशालता की एक उत्तम कस्टोटी है। भारतीय वैवाहिक प्रणाली का विवरण श्रीमती डॉक्टर ऐनीविसेंट महोदया की ज्ञानी सुनिये:—‘भूमण्डल की किसी जाति में विवाह संस्कार का महत्व ऐसा गम्भीर, ऐसा पवित्र नहीं जैसा कि प्राचीन आर्य प्रन्थोंमें पाया जाता है।’<sup>३</sup> अन्तजातीय विवाह भारतीय सामाजिक उदारता का एक सुन्दर प्रमाण है। महाभारत काल में शान्ति और सत्यवति, भीम और हितम्भी, बौद्ध काल में चरणाल कन्या जम्बावती और राजा वासुदेव<sup>४</sup> हिन्दू काल में चन्द्रगुप्त और संल्यूकस-कन्या के विवाह जाति-पांति सम्बन्धी उदारता के ज्वलन्त प्रमाण हैं। हर्ष कालीन इतिहास भी इसी का अनुमोदन

26. See, India, a birds eye view Page, 187, 188.

27. A History of India Page 20.

## 28. wake up India.

करता है। ३० इवस्टन सेंसर रिपोर्ट का अध्ययन भी हमें इसी तिष्कर्प पर पहुंचता है।

अन्त योनि विवाह भारतीय समाज में वर्ज्य नहीं था, यह बात आज प्रत्येक विद्वान् ने मुक्त करण से स्वीकार कर ली है। अस्तु इसके औचित्य पर कुछ लिखना अनावश्यक है।

वहु विवाह भी भारतवर्ष में धर्मनुकूल नहीं था। इसे प्रसिद्ध परिदृष्टि में कहानल्ड ने 'वैदिक विषयानुक्रमणिका पृष्ठ ४१८' में स्पष्ट रूप में स्वीकार किया है कि 'समाज में एक ही विवाह का नियम था। वहु विवाह था आवश्य पर केवल अपवाद रूप में और वह भी उच्च श्रेणी के लोगों में।' रागोजन महाशय भी इसी का समर्थन करते हुए लिखते हैं—'उस समय वहु विवाह की प्रथा समाज में न थी, यदि कहीं रही भी हो तो केवल सम्पन्न एवं राजकुलों में। वहुपति प्रथा का तो नाम भी न था' ३१।

हिन्दुओं की प्राचीन सामाजिक स्थिति का चित्रण करते हुए लाहौर गवर्णर्मेंट कालेज के इतिहास प्रोफेसर गैरट कहते हैं—'लड़कियों का विवाह पूर्ण वयस्क होने पर होता था। उन्हें स्वयं अपना पति निर्वाचित करने की आज्ञा थी' ३२ प्रसिद्ध पाश्चात्य परिदृष्ट जै० यंग की जबानी भी हिन्दू विवाह की महत्ता का वर्णन सुन लीजिये—'यह एक अश्चर्य की बात है कि यहां विवाह का सारा प्रबन्ध माता पिता करते हैं। बहुत से भारतीय घरों में वैवाहिक जीवन अत्यन्त उच्च सर्वोंग पूर्ण और उदाहरणीय होता है, इसका कारण विवाह कालीन धर्म शास्त्र की वैवाहिक ३० नापि तान्वय मित्रद्वे सीरिणो दास गोपका।

शदाण्याम्य मीषां तु भुक्त्वान्नं नैव दुष्यति ॥ व्यासस्मृति

31. Vedic India, Page 378.

32. A History of India, Page 14.

शिक्षायें हैं। यह अतिशयोक्ति न होगी कि साधारणतया पति अपनी पत्नी के साथ अत्याधिक वंधे होते हैं और अधिकांश में स्त्रियां अपने पतियों के प्रति अपने उच्च कर्तव्य का पालन करती हैं।<sup>33</sup>

पश्यट्क टेवरनिर व्रतलाता हैं कि वैवाहिक जीवन में हिन्दू प्रायः अपनी पत्नियों के प्रति सच्चे होते हैं। व्यभिचार उनमें बहुत ही कम है और गुदा मैथुन (Sodomy) का तो नाम ही मैने नहीं सुना।<sup>34</sup> मारिया माला की सम्मति है—‘भारत में पत्नी प्रेम का वह विषय है जो मृत्यु के बाद पति का साहचर्य नहीं क्षोड़ना चाहती।’<sup>35</sup> डाक्टर आर० ब्रूक्स० एम० डी० की जवानी भी सुनिये—‘इनके रस्मों रिवाज उदार हैं। उन्हें धार्मिक रूप से शिक्षा दी जाती है कि विवाह करना प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य है।’ केवल वही लोग इस से विमुक्त हो सकते हैं जिन की इच्छां ईश्वरोपासना में जीवन व्यतीत करने की है।<sup>36</sup>

प्राचीन काल में सामाजिक संगठन की एक आदर्श व्यवस्था थी। विदेशों में भी केंट और प्लेटो ने इसी आधार पर अपनी सामाजिक रचनाएं की हैं किन्तु अस्त्र और नकल में जितना अन्तर आ सकता है वह स्पष्ट है। प्राचीन काल में हिन्दू समाज के सुख-शान्ति-सम्पन्न होने का प्रधान श्रेय इसी उत्तम व्यवस्था को प्राप्त है। प्रोफेसर हार्टन भी हिन्दुओं की प्राचीन सामाजिक स्थिति की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए लिखते हैं—‘प्राचीन हिन्दुओं के सम.न उच्च श्रेणी का सामाजिक संगठन संसार के

<sup>33</sup> Indian People.

<sup>34</sup> Taverniers travels, in India Page 437.

<sup>35</sup> Letters of India, Page 319.

<sup>36</sup> General gazetteer and geographical Dictionary, page 431,

मामाजिक इतिहास में कहीं भी सुलभ नहीं, यह शास्त्रों और वैज्ञानिक तत्वों के आधार पर अवलम्बित है। यदि इसके अनुरूप व्यवहार किया जाये तो समाज में बहुत कुछ सुख-शान्ति की वृद्धि हो सकती है।

चाल्स टेरे भी इस आदर्श व्यवस्था की प्रशंसा करते हुए लिखते हैं—‘हिन्दू लोगों की कौदुम्बिक सम्मिलित प्रथा में लोग मर कर ही एक दूसरे से जुदा होते हैं।’<sup>३७</sup>

## आचार

“आचार हीनं न पुनर्नित वेदः।”

विकास का पौदा सदाचार की समतल भूमि पर ही पनपता और बढ़ता है। योरुप का प्रसिद्ध विद्वान् व्लेको लिए कि जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए परिमार्जित चरित्र की एकान्त आवश्यकता है। इसी लिए समाज की महत्ता और राष्ट्र के बढ़प्पन का मापदण्ड चरित्र ही रखता गया है। उदारता, गंभीरता, विद्वता, स्वदनशीलता, बीरता, साहस, स्वच्छता, परोपकार ईमानदारी, दया और दान किसी भी दृष्टि से प्राचीन भारतीय हिन्दुओं का चरित्र उलट-पुलट कर देख लीजिये—अनुकरणीय होगा।

राम सा पितृ भक्त, लक्ष्मण सा भाई, कृष्ण सा कर्मचार कर्ण सा दानी, भीष्म सा दृढ़ प्रतिज्ञा, हरिश्चन्द्र सा सत्य-वक्ता भीम सा योद्धा, अर्जुन सा धनुर्यर, विद्वर सा महात्मा, रघु सा प्रजा पालक और चाणक्य सा नीतिज्ञ दुर्निया ने आज तक देखा

ही नहीं । गान्धारी मी पनित्रता, सावित्री मी सति, उमिला मी सहनशील और लक्ष्मीवाई मी वीर महिलाएँ और किस देश में पैदा हुई हैं ? जिनने आदर्श चरित्रवान् प्राणी भारत मां की गोद में पले हैं, उन का सहस्रांश भी तो अवशिष्ट समार के इतिहास में नहीं मिलता ।

सत्यता चरित्र का प्रधान गुण है । भारतीय सदैव से अपनी सत्य-प्रियता के लिए प्रसिद्ध हैं । ईसा के ३०२ वर्ष पूर्व भारत में पश्चात्तने वाला यूनानी राजदूत मेगस्थानीज लिखता है—‘उस काल के हिन्दू प्रायः सत्यवादी और शुद्धाचारी थे, न भूठ बोलते थे और न मद्य पान करते थे । उनको एक दूसरे की सत्यता और पुण्यशीलता पर यहां तक भरोसा एवं विश्वास था कि कोई व्यक्ति घरों में ताले न लगाता था । उनकी सभी प्रतिज्ञायें मान्विक होती थीं । लिखने की आवश्यकता न थी ।’<sup>१</sup>

दूसरी शताब्दी का इतिहासकार एरिन वत्तलाता है—‘कभी किसी भारतीय को असत्य आपण करते हुए नहीं पाया गया ।’<sup>२</sup>

स्याम सम्राट का सम्बन्धी स्यू० वी० भारत से २३१ ई० में लौट कर सम्राट को सूचित करता है—‘भारतीय सच्चे और विश्वास पात्र हैं ।’<sup>३</sup>

चौथी शताब्दी का योरोपियन एफ० जार्डनस वत्तलाता है—‘भारतीय व्यवहार में सच्चे और न्याय में प्रसिद्ध हैं ।’<sup>४</sup>

४०५ ई० का चीनी यात्री फाहियान भारत भ्रमण के पश्चात अपनी सम्मति इन शब्दों में प्रकट करता है—‘समस्त देश में

1. History of India.

2. Iulic, Cap. XII, 6 also see Indian Antiquary.

3 India, what can it teach us? Page 55.

4 Marco Polo Vol II, Page 351.

कोई किसी जीव को नहीं मारता, मदिरा नहीं पीता और न लहसुन प्याज खाता हैं ! मण्डी के पान कसाइयों की ढुकाने और शराब खाने भी नहीं होते ! दातव्य संस्थायें यहां पर अग-शित हैं ।<sup>५</sup> ६०५ में भारत आने वाला चीनी राजदूत फाइ-चू (Fei-tu) कहता है—‘वे व्यवहार में सच्चे और धर्म सम्बन्धी शपथों पर विश्वास करते हैं ।’<sup>६</sup>

हर्ष कालीन हिन्दुओं का चरित्र चीनी पश्यट्टक हुणम्यांग की जबानी सुनिये—‘ब्राह्मण अपने सिद्धान्तों के अनुसार आचरण करते हैं और अपनी संस्करणत पवित्रता की ढड़ रूप से रक्षा करते हुए संयम पूर्वक जीवन व्यतीत करते हैं । वे अपनी सरलता और ईमानदारी के लिये प्रसिद्ध हैं ।’

६१३ ई. में भारत पधारने वाला चीनी विद्वान इ-त्सिग हिन्दुओं के प्रति अपने यह विचार प्रकट करता है—‘ये सब लोग अपने उज्ज्वल चरित्र के लिये समान रूप में प्रसिद्ध हैं, अपने पूर्वजों के बराबर हैं और ऋषियों के चरण चिन्हों का अनुसरण करने के लिये उत्सुक हैं ।’<sup>७</sup>

आठवीं शताब्दी का भारत दर्शक मुलेमान कहता है—‘हिन्दू सबे और धार्मिक होते थे ।’<sup>८</sup>

१६३० ई. में भारत पधारने वाला अलवी नी लिखता है—‘प्राचीन भारतीय बड़े उदार और सच्चे थे ।’<sup>९</sup>

११ वीं शताब्दी के प्रख्यात भूगोल पण्डित इड्रूसी के शब्दों

5. History of India.

6. India; what can it teach us ? page 975.

7. इ-त्सिग की भारत यात्रा पृ० २८२

8. मुलेमान सौदागर।

9. Alberuni's India, Vol. 1

में भी भारतीयों के चरित्र को सुनिये—‘वे (हिन्दू) स्वभावतः न्याय प्रिय होते हैं, जिसे कि वे अपने कायाँ से भी प्रदर्शित करते हैं! मद् विश्वास ईमानदारी और प्रतिज्ञाओं की विश्वस्ता में वे विस्त्रित हैं। यही कारण है कि चारों ओर के लोग उनके देश में प्रकृति होते हैं।’<sup>१०</sup>

तेहरवीं शताब्दी का यात्री मार्कों पोलो सूचित करता है—‘तुम्हें जानना चाहिए, कि यह ब्राह्मण संसार के सर्वोत्तम व्यापारी और मच्चे हैं। ये दुनिया में किसी भी वात के लिये भूठ नहीं बोलेंगे।’<sup>११</sup>

१६ वीं शताब्दी के इतिहासकार अब्दुलफजल का कथन है—‘हिन्दू लोग सत्य के प्रशंसक और व्यवहारिक जीवन में सत्यशील होते हैं।’<sup>१२</sup>

जिन हिन्दुओं ने आचार शास्त्र का निर्माण किया था, जो सत्य में ही जय समझते थे, उनके आचार पर कोई उंगली कैसे उठा सकता था। इसकी तेहरवीं शताब्दी के इतिहासकार जमां का हवाला देकर शमसुदीन लिखता है कि ‘हिन्दू धोखे और अत्याचार से अलग थे।’<sup>१३</sup>

यह तो हुई यात्रियों और इतिहासकारों की राय अब जरा शास्त्र समुदाय के मुंह से भी कुछ सुनिये—कर्नल स्लीमैन कहते हैं कि मेरे सामने बहुत से मामले उपस्थित हुए जिनमें मनुष्य की जायदाद स्वतन्त्रा और जीवन उनके एक असत्य भाषण पर निर्भर था किन्तु उन्होंने भूठ बोलने से इनकार कर दिया।”

10. Elliot's History of India Vol 1 Page 83.

11. Marco Polo Vol II Page 350.

12. Tod's Rajasthan Vol 1 Page 648.

13. India; what can it teach us ? Page 575.

प्रोफेसर मैक्समूलर को पूरा निश्चय है कि 'कभी किसी ने उन पर (हिन्दुओं) असत्यता का दोष नहीं लगाया।' १४ पार्लियामेंट के भूतपूर्व सदस्य जै० कें० हार्डी का कहना है—'मैं वहां के लोग (भारतीयों) में हितमिल गया। उनके साथ रहा और सर्वत्र उन्हें विश्वास पात्र और प्रेमी पाया।' १५ अवध के भूतपूर्व-स्टेलेमेंट कमिशनर मिस्टर बीनेट ने १८६५ में लिखा था—'यूनानियों ने भारतीयों को जैसा ईमानदार ईसा से दो शताब्दी पूर्व चिनित किया था, अवध और पटना में वे आज भी वैसे ही हैं।' १६ स्टावो कहता है—'हिन्दू इतने ईमानदार हैं कि न अपने दूरवाजों पर ताला लगाने की आवश्यकता पड़ती है और न किसी इकरार के लिये दस्तावेज की।' १७

### निर्भीकता-साहस—

निर्भीकता मानव जीवन का वह मोती है, जिसका रंग कभी फोका पड़ता ही नहीं। सफ़ज़ताको तो यह दासी बनाकर रखता है भारत सरकार के ऊंचे अधिकारी, आक्सफोड विश्वविद्यालय के भूतपूर्व संस्कृत प्रोफेसर हेरिस एच० विल्सन बतलाते हैं—'निर्भीकता भारतीयों के चरित्र की विश्व विश्रुत विशेषता है।' तेहरवीं शताब्दी का इतिहासकार 'जमां' का हवाला देकर शमशुहीन लिखता है—'वे (हिन्दू) मरने जीने से नहीं डरते।' १८ अंग्रेज राजदूत सरटामसरो की जवान से भी कुछ हिन्दुओं की हिम्मत

14. India: what can it teach us ? Page 57.

15. India, impressions, and suggestions. Page 126.

16. The Oudh Gazetteer For 1877 'Page 7, 8.

17. Stabro, Lib X V. Page. 488. .

18. India, What can it teach us, Page, 55,

का हाल मुनिये—‘वे, वह लोग हैं जो रास्ते में खड़े शेर से भय नहीं खाते।’<sup>१९</sup>

### आत्मसम्मान—

आन पर जान की बाजी लगाना तो हिन्दुओं के बांये हाथ का खेल है। अकबर के समय भारत यात्रा करने वाला फादर मार्मेरट बतलाता है—‘मुसलमान कहते हैं, कि मरना कैसे चाहिये—यह राजपूत ( Rajput and Rati ) जानते हैं।’<sup>२०</sup> संसार प्रसिद्ध यूनानी, प्लेटो की निगाह से भी हिन्दूओं के आत्मसम्मान और हृदय में दृढ़कर वाली स्वदेश प्रेम की आग को देख लीजिये वह लिखता है—सब्बान ( Sabbas ) नामक क्षत्रिय नरेश को विद्रोह के लिये प्रोत्साहिन करने के अपराध में, चलते समय मिकल्दर ने दस हिन्दू दार्शनिकों को बन्दी बनाया था। उनमें से एक दार्शनिक से उस ने प्रश्न किया—

‘किस बात ( कौल ) पर आपने सब्बास को बगावत ( Revolt ) करने के लिये भड़काया था ?’

‘कोई दूसरी नहीं, यही की उन्हें या तो जीना चाहिये या सम्मान पूर्वक मरजाना।’

सृत्यु सरिता के तट पर बैठे हुए भारतीय दार्शनिक का यह उन्नर था।<sup>२१</sup> फ्रेंड इंडिया ( Friend India ) के सुयोग्य सम्मादक जेम्स रेट्लेज का कथन है—‘वे अपमान के सामने विपत्तियों को सहन करने के लिये तैयार रहते हैं।’<sup>२२</sup>

19. The People of India.

20. Commentary of fate of Monserrate, Page 93

21. Scenes and Characters from Indian History Page, 15,

22. India Past and Present,

## सहनशीलता—

चौथाई शताब्दी तक निरन्तर वेसगोसामान लड़ना और मुँह में उफन निकालना, जिन्दा दिवार में चुन जाना और मिर न झुकाना, छाती पर दानादन गोलियाँ सहना और मुँह पर मन्द मुस्कराहट का दौड़ते रहना—किसने महनशीलता को इस से अधिक सीने में लगाया है ? भारत के भूतपूर्व वायसराय नाथव्रक कहते हैं—भारतीय आपत्तियों का मुकाबला करने में धैर्यशाली है ।”<sup>२३</sup> दस्तवई के पुराने (१८७७ से ८० ई०) गवर्नर मर रिचार्ड टेम्पुल वार्ट उनके स्वभाव में ही सहाय्याता बतलाते हैं। डाकटर फेरवर्न ने १८६८ ई० में व्याख्यान देते हुए बतलाया था कि हिन्दुओं की शिष्टता और तीव्र बुद्धि सर्वत्र हृदय को स्पर्शी करती है। प्रतिप्रा, कृपा, सम्मान और धैर्य जिसके द्वारा वे अप्रिय एवं प्रतिकूल वातों को भी सहन कर लेते हैं, सराहनीय हैं।”<sup>२४</sup> विद्वान डिगवी कहते हैं—‘भारतीय स्त्री पुरुषों की सहनशीलता आश्चर्यजनक है।’<sup>२५</sup>

## दान—

दूसरों के लिये जीना और मरना, यह पूर्व कालीन हिन्दुओं का मुख्य उद्देश्य था। आज भी हिन्दुओं में यह पद “तब तक ही जीवो भजो दीवो परे न धोम” बड़े गर्व के साथ कहा जाता है। हिन्दू कालेज कलकत्ता के भूतपूर्व प्रीनिसपल जेस्स केर (jame - Kerr) ने सन् १८६५ ई० में कहा था—‘वे लोग जातपात के भेदभाव को भुलाकर गरीबों को दान देते हैं।’<sup>२६</sup> नीब्यूहर

23. Native opinion, Bombay August, 20 1899.

24. India, May 26, 1899.

25. Indian Problem for English Consideration.

26. India and its People, Page 32

( Nebuhr ) बनलाना है कि हिन्दू-सज्जन, अमी और गुरुओं होते हैं, कदाचित् मानव समाज में वे ही एक ऐसे लोग हैं जो मानवता को सब से कम ज्ञाति पहुंचाते हैं ।' बंगाल के भूतपूर्व लेन्ड गवर्नर की सम्मति है कि 'वे ( हिन्दू ) समस्त मानवता के प्रति दया-दान का भाव रखते हैं ।' १

### विद्वता—

'शत्रु और मित्र दोनों ही स्वीकार करते हैं कि हिन्दू विद्वता की दृष्टि से संसार में अद्वितीय हैं ।' २ यह है पार्लियामेंट के प्रमिद्र मद्रास्य मिस्टर हार्डी की सम्मति ! सर विलियम वीडडेर बर्न बाट एम० पी० की सम्मति सुनिये—भारतीय गांव राजनीतिक परिवर्तनों में भी शताव्दियों तक भजवूत गढ़ बने रहे, वे घरेलू सादगी और सामाजिक गुणों के भण्डार थे । इस लिये कोई आश्चर्य की बात नहीं, कि इन पूर्वकालीन संस्थाओं में जो प्राकृतिक सामाजिक और अपने ढंगकी अनूठी है इतिहासज्ञ और दार्शनिक प्रेम पूर्वक रहे हैं । ये स्वावलंबी, उद्योगी, शांतिप्रिय, शब्द ( हिन्दू ) के सदृश्य में संरक्षक थे । ३ किसी देश की वास्तविक परिस्थिति के दर्पण होते हैं, उसके देहात, क्योंकि राष्ट्र के इस भाग में संसार की तेज हवायें जरा देर से पहुंचा करती हैं; किन्तु भारतीय गांव अनादि काल से ही सुसभ्य चले आ रहे हैं । अब जनरल जी० वी० ग्रांड जेकब की जवानी सुनिये—'वहां लाखों विचारशील एवं दूरदर्शी व्यक्ति हैं । इतनी जबरदस्त संख्या में ऐसे अच्छे और सचे मनुष्यों को पाने की

27. Modern India. Page 12

28. India Impressions and Suggestions Page, 43

29. India Bayat,

आशा हम स्वयं अपने देश के सुशिक्षित समुदाय में भी नहीं रखते ।<sup>३०</sup>

शत्रु भी जिसके चरित्र पर मुराद हो जायें, पर छिद्रान्वेषी भी जिसकी सदाचार प्रभा में पड़ कर चौंथिया जायें—ऐसा हिन्दुओं का आचरण है। जिसके प्रमाणों का सहारा लेकर अमेरिकन मिस मियो ने 'मदर इंडिया' में अपने हृदय की कल्पकालिमा पोती है, वही मिशनरी एवं डुवोइस भी हिन्दुओं के विशाल ज्ञान पर चकित होकर कुछ कहे विना नहीं रहता—'वे प्राचीन काल से विद्या प्राप्त करते चले आ रहे हैं, और ब्राह्मण तो सदैव से इसके भण्डार ही रहे हैं।'<sup>३१</sup> एक योरोपियन यात्री घतलाता है—स्वास्थ्य की ओर उनकी विशेष रुचि थी जहां तक पूर्वीय तस्व-ज्ञान का सम्बन्ध है वे बड़े विद्वान् समझे जाते हैं।<sup>३२</sup>

### कृतज्ञता—

दूसरे के उपकारों को भूल जाना—हिन्दुओं के अन्दर एक गुरुतम अपराध समझा जाता है। सर चार्ल्स फौवर्स, इसका समर्थन करते हुए लिखते हैं—'कृतज्ञता उनके जीवन का आदर्श वाक्य है।'<sup>३३</sup> भारत के भूतपूर्व वायसराय लार्ड नार्थेंश भी स्वीकार करते हैं कि भारतीय बड़े कृतज्ञ होते हैं।

### आतिथ्य सत्कार—

जर्मन यात्री फ्रेज आस्ट्रिजर कहता है—स्वयं भूखे रह कर

30. People of India, Page 29.

31. Unhappy India.

32. Poverty and Unbritish rule in India.

33. Bombay Champion, June, 1899

आये हुए अनिथि को स्विलाना भारतीय हिन्दूओं का ही काम है।<sup>34</sup> एनेन्टल इ पेरन नामक यात्री बतलाता है—‘लोगों में आति थ्य सत्कार का भाव बहुत है। मित्रों, पड़ोसियों और अपरिचितों का सामान रूप से स्वागत किया जाता है।’<sup>35</sup> मिस्टर वार्ड भी यही कहते हैं कि पारस्परिक व्यवहार और वातचीत में हिन्दुओं का स्थान संमान की अत्यन्त आदरशील जातियों में है।

### आध्यात्मिकता—

विश्व के पथ-प्रदर्शन की योग्यता भारतीयों की आध्यात्मिकता का ही परिणाम है। मिस्टर वरनफ का विचार है—‘भारतीय यह जानि है, जो आध्यात्मिक-दातव्य-सम्पन्न है, उनके पास विलक्षण चानुरी, तीक्षण तुद्धि प्रकृति प्रदत्त है। जर्मन पण्डित फँडरिक वान शीलगल की मम्पति है—‘भारतीयों को ईश्वर के सच्चे स्वरूप का ज्ञान था, इससे इनकार नहीं किया जा सकता। प्रोफेसर डनूमीर्फाल्ड के विचारों को देखिये—‘भारत में इतिहास के आसम्भ से ही धार्मिक संस्थाएँ हैं। इनका यहां की जनता के चरित्र पर इतना अधिक प्रभाव है जितना अन्यत्र कहीं दृष्टि गोचर नहीं होता।’<sup>36</sup> जेम्स करै के शब्दों में ‘वे (हिन्दू संसार भर में सब से अधिक धार्मिक व्यक्ति हैं।’<sup>37</sup> फ्रांसीसी यात्री जी० वी० टेवरनियर कहता है—प्राकृतिक नियम उन्हें नैतिक शिक्षा देते हैं।<sup>38</sup> दीनबन्धु सी० एफ० एड्यूज की राय है

34 Gentle man's magazine for 1762 a.d.

35 Religion of the Vedos, page, 45

36 People of India, Page, 32.

37 Taverniers travels in India, Page, 437.

कि पूर्व जगन् पाश्चात्य जगन् में भौतिक सम्पत्ति में अपेक्षाकृत नियंत्रण भने ही हो किन्तु उसने अपने अन्तर्जीवन का बहुमूल्य माती नहीं खोया ।<sup>३५</sup>

### व्यक्तिगत चरित्र—

भारत और पाश्चात्य देशों में एक बहुत बड़ा अन्तर यह है कि वहा प्रत्येक व्यक्ति के आचार के दो विभाग किये जाते हैं। पठिलक और प्राईवेट, किन्तु यहां बाहर भीतर एक सा ही होता है। आचरण एक है, चाहे उसे सार्वजनिक सभाओं में देखें या घर की कोठरी में। भारतीयों के चरित्र में ऐसी बातें नहीं, वह तो खग सोना है, किसी भी आग में ढाल दीजिये, कान्तिमान बनकर निकलेगा। हीगल स्वीकार करते हैं—‘प्राच्य संसार में मदाचार के भाव और बाह्य नियमों में भेद नहीं।’<sup>३६</sup> हिन्दुओं के धरंलू और सार्वजनिक जीवन में सदैव एक समान रहने वाले आचार की ओर संकेत करते हुए इम्पीरियल पुस्तकालय कलकत्ता के अध्यक्ष जें० ए० चापमैन लिखते हैं—‘राष्ट्र का चरित्र उसके निवासियों का चरित्र है, उसका निरीक्षण नगनावस्था में ही हो सकता है। (अर्थात् जब बाहर भीतर सामने हो) मनुष्य कैसे प्यार और धृणा करता है, परिश्रम और आराम, पूजा, मरना और जीना, यही सब आचरण में देखने की बातें हैं।’<sup>३७</sup> अस्तु

38. विन्दुसार ने सेल्युक्स को एक बार यूनानी शराब का नमूना भेजने के लिये लिखा था। सेल्युक्स ने यह कहते हुए कि मैं वडे प्रसन्नता से शराब भेज रहा हूँ लिखा था—“दुःख है कि यूनानियों का दार्शनिकों से यह व्यापार योग्य नहीं।—Muller, Frag. Hist. Græce Vol. IV, Page 4B1

उस हाइ में हिन्दुओं के चरित्र की परीक्षा करनी चाहिये । भारत सरकार के प्रथम गवर्नर जनरल वारेन हेस्टिंग्ज़ ने पार्लियामेंट की कमेटी के सामने गवाही देते हुए कहा था—‘हिन्दू भद्र शुभेच्छु, प्रेमी, वकादार और कृतव्य होते हैं । मानवी विकारों की नीच प्रवृत्तियों से दूर रहते हैं । रेवेण्ड टी० मोरिस के शब्दों में—‘कौटुम्बिक जीवन में वे (हिन्दू) कोमल और प्रेमी होते हैं ।’<sup>१</sup> मिस्टर जी० मरसर का २६ वर्षीय अनुभव भी सुनिये—‘वे स्वभाव में विनम्र व्यवहार में परिष्कृत और घरेलू जीवन में प्रेमी तथा कृपालु हैं ।’<sup>२</sup>

एत नार्यनुक भारत के भूतपूर्व वायसराय की हाइ से भारतीय अपने सम्बन्धियों के साथ स्नेह का व्यवहार करते हैं और आँड़े ममय में उनकी हर प्रकार की सहायता करते हैं । कांट० ५० डी० ग्लूवरनेटिस (इटली) का कथन है ‘वे माता पिता के आज्ञाकारी और अपने बच्चों के लिये स्नेही होते हैं ।’<sup>३</sup> भारत के भूतपूर्व सेन्सेज कमिशनर जे० ५० वेनेस महोदय लिखते हैं—‘हिन्दू कुटुम्ब में छोटों का बड़ों के प्रति व्यवहार उदाहरणीय है । अब जरा आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के भूतपूर्व योग्यतम प्रोफेसर विल्सन की हाइ से हिन्दूओं के आचार को देखिये—‘मैंने हिन्दुओं को सर्व निर्भीक, परिश्रमशील, खुशमिजाज समझदार और ईमानदार पाया है । मद्यपान और वेकायदगी इनमें नहीं । अन्यत्र आप लिखते हैं—‘हिन्दू सम्म्य, समझदार, स्वतन्त्रता प्रिय और स्वाभिमानी होते हैं । उनको संसार के किसी भी देश से सुसम्भय कहा जा सकता है ।’<sup>४</sup>

१. History of Hindustan Vol. II, Page. 4.

२. Haussard's debt, 8—April, 1813

३. India for the Indians and for England.

४. Mill's History of India, Vol. I

## स्वच्छता—

हिन्दुओं की स्वच्छता संसार में आदर्श है। अनेकों यात्रियों ने इस की मुक्त कंठ से प्रशंसा भी की है। बम्बई के भूतपूर्वी गवर्नर परिस्टन भी कहते हैं—‘हिन्दुओं की स्वच्छता लोक प्रसिद्ध है।’<sup>45</sup>

## आहार—

प्राच्य एवं पाश्चात्य विद्वान एक मत होकर मानते हैं कि भोजन के अनुकूल ही मानव शरीर बनता है, और उसी के अनुमार उत्पन्न होते हैं विचार। जस्टिस डड़स्फी के शब्दों में ‘भारत के अधिकांश निवासी शाकाहारी हैं।’<sup>46</sup> बङ्गाल मनुष्य गणना के विशेषज्ञों ने मुक्त कंठ से स्वीकार किया है कि भोजन और रहन सहन की पवित्रता ही हिन्दुओं के सुन्दर स्वास्थ्य का कारण है। नीबूहर महोदय भी मानते हैं—‘कदाचित भारतीय नियम विद्यायकों ने स्वास्थ्य के विचार से ही भोजन में मांस का निषेध किया है। आयों के आहार की तालिका में इनिहासज्ज गैरट चार चीजें गिनते हैं, गेहूँ, चावल दूध और फल।’<sup>47</sup>

## शारीरिक गठन—

आचार विचार और रहन सहन का शारीरिक बनावट पर काफी प्रभाव पड़ता है। कहावत है—‘मन के अनुभार ही तन बनता है। इस सम्बन्ध में सर क्रिस्टिन पेरे की राय सुनिये—‘हिन्दू मानव

45. History of India, Page, 202,

46. Bhakti Shakti.

47. A, History of India, Page, 14.

जाति की स्वत्वप्रवान जातियों में से हैं।<sup>४८</sup> मिस्टर आर्मी कहते हैं—एक भी जाति दुनिया में गुजराती बनियों से अधिक सुन्दर नहीं।<sup>४९</sup> एक दूसरे अंग्रेज विद्वान बतलाते हैं कि हिन्दुओं का शरीर प्रशंसनात्मक रूप से सुडौल एवं सुन्दर होता है।<sup>५०</sup> अब हिन्दुओं के कटूर विरोथी मिस्टर मिल की निगाह में भी उन्हें देख लेना चाजिव है—‘हिन्दुओं के शरीर में अद्भुत फुर्ती होती है, केवल गिरहवाजी और कलावाजी की ऐठन में नहीं, इसमें तो वे संवार की भी जातियों में वाजी ले जाते हैं। चलने और दौड़ने में भी अधिक नहीं तो वे स्वस्थ्य और सुगठित जातियों के बराबर छवश्य हैं।<sup>५१</sup>

जिन हिन्दुओं ने ससार को चलना फिरना, उठना बैठना, और बोलना चालना तक सिखाया था, दुनिया में उनके चरित्र के सामने टहरने की शक्ति किसमें हो सकती है? दृष्टा के भूतपूर्व गवर्नर मर वट नर बनलाते हैं कि ‘भारतीय मेहनती और ईमानदार होते हैं।<sup>५२</sup> आज भी चरित्र वल में भारतीय अन्य देशों की अपेक्षा कितने बढ़े चढ़े हैं, सर लीपेन० एच० प्रीफिल के०

४८. People of India. Also see, Bird's eye View of India.

४९. Chamber's Encyclopaedia. Page 539

५०. Mill's India. Vol I, Page, 478

५१. सर द्वारकार्ड बट्टर स्वगांय प० मोतीकान्न नेहरू की मित्रता का इस भरते हुए कहने हैं कि उन्हांने जिन समय कानून तौड़ा मेने उनकी गिरफ्तारी की आज्ञा दी फिर भी हमारे बीच में कोई मनोमालिन्य नहीं हुआ। पगिडत जी ने कहना मेजा की “ये दे मैं अच्छी तरह मे अपना कानून जानता होता तो ६ मास के बजाए उन्हें १८ मास के बीच मजा देता।” यह है भारतीयों की निर्भकता एवं स्वतं वादिता का नमूना। India Insistent Page, 16, 17

सी० एस० आई की जवानी सुन लीजिये—‘मीधे सादे ईमानदार हृदय वाले, यह नहीं जानते कि तुलनात्मक हर्षिंश से देखने पर हम (भारतीय) नैतिकता में अंग्रेजों की अपेक्षा बहुत ऊँचे हैं। वे उद्योगी, सहनशील, संयमी और धार्मिक हैं। उनमें शराबी बहुत कम हैं। कोई निकलेंगा भी तो वह होगा अंग्रेज, शराबी स्त्री का तो पता ही नहीं।’<sup>५२</sup> सन् १८५३ ई० कामन्स की सिलेक्ट कमेटी के सामने गवाही देते हुए सर जी० बी० ग्लार्क ने कहा था ‘दूसरे अधिकांश देशों की अपेक्षा वे ऊँचे हैं। जनरल जान त्रिगत कहते हैं—‘मेरे परिचित जो बहुत दिनों तक भारत में रह चुके हैं, योरोप की यात्रा करने के बाद दिनों दिन भारतीयों की अधिक सराहना करते हैं। प्रोफेसर मोनियर विलियम्स भी स्वीकार करते हैं कि ‘हिन्दुओं की अपेक्षा अधिक धार्मिक और अपने साधारण कर्तव्यों को धैर्य के साथ पालन करने वाले व्यक्ति मुझे योरोप में नहीं मिले।’<sup>५३</sup> सर मुनरो भी यही बतलाते हैं कि हिन्दूस्तानी योस्पियन से सभ्यता में कम नहीं! मिसेज आर० एम० किंग भी कुछ दिनों पति के साथ भारत में रह कर बतला गई है—‘भारतीयों के स्वभाव में विनयशीलता और आत्मनियन्त्रण बड़े मार्कों का है।’<sup>५४</sup> दुनिया दूसरों पर शासन करना जानती है किन्तु आनेवेल जस्टिस सर जान उड़रफी ने लिखा है कि प्रचीन भारतीयों ने सफलता पूर्वक अपने ऊपर शासन किया है।<sup>५५</sup> अन्त में मिस्टर जे० बी० नाईट भारतीयों के चरित्र की प्रशंसा करते हुए पक्षपात धूर्ण टीका टिपणी करने

५२. People of India.

५३. Modern India and the Indians. Page 88, 128

५४. A civilian's wife in India, Vol I, Page, 146

५५. See, Is India Civilized ?

वालों को चुनौती देते हैं कि वे उनके और पलिफन्स्टन, लारेम, निकोल्सन, मुनरो, टाड आदि भारतीय अतिथियों के प्रमाणों का खण्डन करें। जो कह गये हैं कि 'भारतीयों से परिचित होता उन्हें प्यार करना है।'<sup>५६</sup>

आज भी भारत मां की गोद में ऐसे अभूतपूर्व चरित्रवान खेल रहे हैं जिनको देख कर, मुन कर दुनियां दांतों तले उंगली दबाती है अपने को अच्छा कहने वाले और अपने मुंह मियां पिट्ठू बनते वालों की संख्या संसार में कम नहीं, किन्तु चरित्रवान कौन है।

अच्छा वही है, जिसको अच्छा कहे जाना।

## वीरता

—०—०—

अमित्रियो मरुनो विश्वकृष्य आ त्वेषमुग्रमव इमहे वयम् ।

ते स्वानिनो रुद्रिया वर्णनिणिंजः सिंहा न हेषकतवः सुदानवः ॥

ऋ. ३२३४॥

वीरता इस भूमि का अपना वीज है, साहस इस उजड़े हुए सुमनोद्यान का ही सुरभित पुष्प और आन के लिये जान देना प्राचीन हिन्दुओं की पुरानी आदत। जिनकी धनुषष्ठार से जगत का कोना र कांप उठता था, जिनके भ्रू भङ्ग से करोड़ों की किस-मन डगमगाने लगती थी, जिनकी कृपा कटाक्ष से संसार के भाग्य खुल जाते थे—ऐसे विश्व विश्वात वीरों को उत्पन्न करने वाली यह वृद्ध भारत मां ही है।

आदम का पुल बांध कर लड़ा तक रावण की खबर लेने वाले राम, लड़कपन से ही शूरमाओं से जोर आजमाई करने वाले कृष्ण, वाणी से पतंग छिपाने वाले भीष्म, अमरीका तक आर्यों की विजय-वैजन्ती फहराने वाले अजुँन, इसी मां की छातियों का दूध पीकर पज्जे थे । आर्थर लिली कहते हैं—‘शस्त्र धारी राम संसार के इतिहास में विलक्षण वेजोड़ है ।’<sup>१</sup> इतिहास मार्शमैन के शब्दों में राजा सगर महावली था, उसी के नाम पर सुन्दर सागर कहलाता है ।<sup>२</sup>

शौर्य और साहस भारतीयों की बपौती है, दूसरा कोई इसका दावा ही कैसे कर सकता है ! कर्नल जेम्स ठाड़ कहते हैं कि यूतानियों की शक्ति का देवता हरि-कुल-ईश (Hercules) और अपालौ (Apollo) भारत के राम और कृष्ण हैं ।<sup>३</sup>

वीरता और दया का चौली-दामन का सम्बन्ध है । उसका सुन्दर समन्वय इतिहास के पृष्ठों प्रचण्ड मार्तण्ड के समान चमकने वाले महाराणा संग्रामसिंह के चरित्र में देखिये । महाराणा ने मालवा के सम्राट महमूद को परास्त कर बन्दी बनाया । फरिश्ता का इतिहासकार लिखता है—‘महाराणा ने स्वयं अपने हाथों उसकी परिचर्या की, घावों पर पट्टियां बांधी और स्वस्थ होने पर एक हजार राजपूतों के संरक्षण में बहुत कुछ उपहार देकर उसके दंश को भिजवा दिया ।’<sup>४</sup> ५२८ ई० में हूणजाति के आक्रमणकारी मेहरगुल को मराठ-सम्राट बालादित्य ने विजय कर कैद कर लिया । वीरार्थ ने हाथ में आये शिकार को हत्या नहीं

1, Rama and Homer. Page, 151.

2, marsh man's History of India,

3, See, Tod's Rajasthan. Vol. I.

4, Briggs Ferishta Vol IV. Page, 263-266,

की प्रत्युत सम्मान पूर्वक उसे घर वापिस कर दिया ।<sup>५</sup> कर्त्ता टाड कहने हैं—‘हम योरूप के इतिहास में ऐसे उत्साह और मर्वस्व गवां देने वाली उदारता के लिये जिसने मृत्यु और गंश दोनों को समुद्दल कर दिया, व्यर्थ दूँढ़ते हैं ।’<sup>६</sup>

गौरी, गजतवी, गुलाम, लोदी, खिलजी, तुगलक, मुगल, किंतने ही नूकानी बादलों की भान्ति कड़के और अन्तहित हो गये । आज संमार में उनका पता नहीं, कीर्ति के आकाश में उनकी प्रभा नहीं किन्तु वप्पा रावल की सन्तानें आज भी उसके सिंहासन पर बर्तमान हैं, वीरता की प्रतिमूर्ति, आज का पुतला, प्रताप आज भी हिन्दू दृढ़यों पर शासक कर रहा है । देश के दीवाने प्रताप का कार्य समाप्त होने से पूर्ण ही जीवन का अवसान होने लगा, रहस्यमर्थी आंखों ने अन्तिम बार मेवाड़ और डस्की कोपड़ियों को देखा—भविष्य धुंथला था । मरण शील दीर के मुख पर चिन्ता के रूप में चमक उठी ! टाड महोदय बनलाते हैं जब उपस्थित वीरों ने स्वदेश को स्वतन्त्र कर मुख की नीद मोने की प्रतिज्ञाएँ कीं तब कहीं प्रताप की आत्मा सन्तुष्ट हुई और उन्होंने मुख की अन्तिम सांस ली ।<sup>७</sup>

शत्रु भी यावज्जीवन मित्र की भाँति जिसकी कीर्ति का गान करते रहे, वह भारतीय प्रताप का चरित्र था । अबदुलगहीम खान खाना के शब्दों में सुनिये—

अम रहमा रहसो धरा, लिम जार्मा खुरमाण ।

अमर विनम्र आपरे, निहचै रहमी राण ॥

यही सब कुछ देख-सुन कर कलकत्ते के पुराने पादरी आर०

Col. Smith's early History of India.

6. Tod's Rajasthan, Vol. I, Page 197

7. Tod's Rajasthan Vol. I, Page 649

हीवर ने लिखा था—वे (हिन्दू) बहुत ऊँची हिमत वाले बहा-  
दुर हैं।<sup>8</sup> जयमल और फत्ता की बीरता की याद दुश्मन अक-  
बर के मुंह में भी मिला करती थी। आगरे के किले का अमर-  
सिंह दरवाजा और बीर राठौर का घौड़ा आज भी पुकार पुकार  
कर बतला रहा है कि अकेला राजपूत किस प्रकार सल्तनत के  
चूर पांचढ़े ढीले कर सकता है। मिस्टर बेली फ्रेसर के मुंह से  
राठौरी कारनामे सुनिये—‘यदि हम अप्रितम आदेश बीरता,  
विश्वस्ता और निर्भीक आत्मानुराग के चिन्ह दूँढ़ना चाहें तो  
हमको राजपूतों की शूरता और विशेषतः राठौरों की ओर मुड़ना  
पड़ेगा, यहां पर हमको दृढ़वीरत्व के वे प्रमाण मिलेंगे जिन से  
किसी देश अथवा काल के शूर सैनिक बाजी नहीं ले जा  
सकते।’<sup>9</sup>

एफ० बर्नियर० एम० डी० बतलाता है कि राजपूत युद्ध से  
मुड़ने की अपेक्षा रणस्थल में ही प्राण सम्पर्ण करना श्रेयस्कर  
समझते हैं।<sup>10</sup>

बीर दुर्गादास के सम्बन्ध में लेफिटनेंट जनरल हिजहाईनेस  
प्रतापसिंह ने अपने आनंद चरित्र में लिखा है—कई बार औरंग-  
जेब ने दुर्गादास को कहा कि यहि तुम अपने स्वामी अजीतसिंह  
को हमारे सिपुंद कर दोगे तो हम तुम्हें सारे मारवाड़ का राजा  
बना देंगे, परन्तु दुर्गादास एक सच्चा क्षत्रिय था, उसे कोई प्रलो-  
भन विचक्षित न कर सका। दुर्गादास जब तक जिये उन्होंने  
अपना शरीर और अपनी आत्मा देश तथा स्वामी के हितचितन

8. In his for the Indians and for England.

9. Military memoirs of Colonel J. Skinner. Vol, Page 89,90

10. Travels in the Mugal Empire.

में अर्पित की। आज भी मारवाड़ उनका इन शब्दों में समरण करता है:—

जननी चुन ऐमो जने, जैसो दुर्गादास ।

बांध मुंडामो गत्रियो, विन थम्मै आकाशा ।”

किसी पाश्चात्य पण्डित ने लिखा है—“उन (ज्ञात्रियों) की पैतृक शिक्षा का महत्व इस प्रसिद्ध युक्ति से भली भान्ति समझ में आ सकता है—‘अपनी माता का दूध न लजाना’ ।” कर्नल टाड बीर श्रेष्ठ दुर्गादास के प्रति अद्वाज्ञाटी चहाते हुए कहते हैं—“ + + + उसके कृत्य निरन्तर प्रशंसनीय सिद्धांत हैं, सूक्ष्म धोड़ पर सवार, बृद्ध किन्तु बीरत्व में शराबोर,—उनका यह चित्र राजपूत स्वदेश भक्तों की चित्रावली में प्रिय है ।” १३ जयर्सिंह हस्मीर आदि असंख्य राजपूत दुर्देव की काली घटनाओं में सदैव विजली की भाँति चमकते रहे। अब राठोर सरदार मुकन्द की कहानी भी राजपूताने के भूतपूर्व पोलिटिकल ऐजन्ट की जवानी सुनिये—राठोर सरदार के किसी स्पष्ट उन्नर को अपमानजनक समझ कर औरंगजेब ने उन्हें निःशस्त्र शेर के समीप कटघर में पुसने की आज्ञा दी। निर्भीक निहत्था राठोर शेर के समीप पहुंच कर उसे ललकारते हुए बोला:—

‘ऐ मियां (औरंगजेब) के शेर ! जसवन्त के शेर का सामना कर ।’

शेर ऐसे विलक्षण सम्बोधन का आदी न था। वह चौंक पड़ा आगन्तुक की ओर देखा, गर्दन नीची कर ली और मुड़ गया।

11. “X X The importance of his parental instruction can not be better illustrated than in this, ever recurritating smile—“make thy mother's milk resplendent,

12. Tod's Rajasthan Vol II, Page, 82

‘तुमने देखा’ राजपूत चिङ्गाकर कहने लगा, ‘इसमें मेरा मुकाबिला करने का साहस नहीं, और यह सबे राजपूत के आचार विरुद्ध है कि वह उस शत्रु पर आक्रमण करे जिसमें सामना करने का साहम नहीं।’

अत्याचारी औरंगजेब आश्चर्य चकित हो कर उस का प्रशंसक बन गया और उसे उपहार भेंट करते हुए पूछा कि क्या उसके कोई सन्तान है, जिसे वह अपने इस पराक्रम की वसीयत कर सके ?

‘हम वचे कैसे पैदा कर सकते हैं, जब तुम हमको हमारी स्त्रियों से दूर अटक पार रखते हो।’—यह मुकुल्द का उत्तर था।

टाड साहब कहते हैं, इससे स्पष्ट है कि राठौर और भय, परस्पर एक दूसरे से अपरिचित थे।<sup>१३</sup> राजस्थान के रोम-रोम में शूरवीरों की कीर्ति कहानियां चित्रित हैं। पूरे २४ वर्ष तक उनका सर्तक निरीक्षण के पश्चात जै० टाड महोदय इन शब्दों में अपना निर्णय देते हैं:—‘राजस्थान में कोई छोटा सा राज्य भी ऐसा नहीं जिसमें धर्मपोली जैसी रणभूमि न हो और शायद ही कोई ऐसा नगर मिले जहां लिथोडिस जैसा बीर पुरुष उत्पन्न न हुआ हो।’

आदर्श बीरता का अन्यन्त्र दूँडना समय गंवाना है। भारत भूमि की रेणु को उठा कर इसका चित्र देख लीजिये, प्रत्येक कग्गा और पत्थर में गौरवान्ति अतीत का मूक समारक मिलेगा। मिस्टर विल्सन के स्वर में स्वर मिलाकर भूतपूर्व पार्लियामेन्ट के सदस्य मिस्टर हाडी कहते हैं—‘निर्भीकता भारतीय आचरण का एक विश्व-विख्यात गुण है। महाराष्ट्र के सरी के आचरण पर मुख होकर बर्नियर लिखता है—‘शिवाजी बीर और साहसी पुरुष हैं, मरने जीने से जरा भी नहीं डरते।’ एच० एल० ओ०

गैरेट आई० ई० प्स० बतलाते हैं कि इन्होंने कभी व्यर्थ का रक्षणात नहीं किया और न ही किया दीन दुश्मियों पर अत्याचार।<sup>14</sup>

राजस्थान का इतिहास लेखक कहता है कि इंगलैण्ड के स्माट क्वयर डो० लाईन (Coeur de lion) इतनी मुदत तक आस्ट्रिया की तंग कोठरी में कैद न रहते यदि राजपूत उनकी प्रजा हाते।<sup>15</sup> हिन्दू वीरता की दाद देता हुआ इतिहासक्ति इन्हें सालिखना है—‘हिन्दू लोग मरने जीने की परवाह नहीं करते।’ भारतीयों के साथ लोदा लेने वाले यूनानियों की सम्मति है ‘हिन्दू अत्यन्त वीर जाति है।’<sup>16</sup>

भारत की मिट्टी और पानी में वीरता कूट-कूट कर भर्ग गई है। आज भी आप यू० पी० की गोचर भूमि से निकल जाइयं पशुओं के पीछे दौड़ने वाले कृष्णों के कृष्ण-काय भालक बड़ी मस्ती के साथ गति हुए दिखलाई पड़ेगे:—

बरह वरस कूकुर जीव, त्यारह वरसे जिये सयार ।

वर्ष अग्ररह छत्रा जीवि, अर्गे जीवि को धिक्कार ॥

राम-कृष्ण की कह कीड़ा भूमि, आलहा और उदयसिंह की यह जननी, राणा वंनीमाधव और पेशवा नानाराव की यह रङ्ग-स्थली आज भी अपनी छाती में वीर-स्मृतियों को छुपाये पड़ी हैं।

भारत के चित्र को उठाइये, छोटे से नेपाल का रङ्ग, अन्य देशी राज्यों की भाँति पीला नहीं हरा दिखाई पड़ेगा। नेपाल के इस भाँति आज तक उद्योग खड़े रहने का कारण है, अमरसिंह और बलभद्रसिंह जैसी वीर आत्माओं की मौत से हाथापाई करने

14, A, History of India Page. 214

15, Tod's Rajasthan, Vol. I. Page. 161.

16, Elphinston, a History of India.

बाती स्वदेश सेवा की लग्न ! अवध के भूतपूर्व सेटिलमण्ट क्रमिशनर बीनेट बतलाते हैं कि ब्राह्मण और राजपूतों का साहस घेंटरेट है । १७ मेजर जनरल बने स्वीकार करते हैं कि भारतियों ने शत्रु और मित्र दोनों ही रूपों में अपने को बहादुर सैनिक मानित कर दिया है । १८

अब जरा आधुनिक भारतियों की बीरता का कुछ हाल मिल महोदय कृत इतिहास की एक टिप्पणी में देखिये,—‘बादशाह की १५ वीं और १६ वीं सेना के जो योरुपियन, सेना के आगे थे, उन्होंने आगे बढ़ने से इन्कार कर दिया, अफसरों की बार २ प्रार्थना और डर-धमकी का भी उनके हृदय पर कुछ प्रभाव न पड़ा । तब तो १८वीं और १९वीं हिन्दुस्तानी सेना के सिपाही आगे बुलाये गये । वे बीरता पूर्वक किला उड़ाने के लिए आगे बढ़े ।’ १९

यहां पर बीरता के वर्गीकरण का विचार क्षोड़ कर इतना ही कहना पर्याप्त है कि जहां लम्बी लम्बी वेतन लेने वाले अंग्रेजों की हिम्मत चख्वा हो गई, वहां हिन्दुस्तानियों के ही बाहुबल ने काम दिया था । भारतपुर के विराव में बीर जाटों ने बहादुरी के जो दांव-पेंच दिखलाये थे उन्हें थार्टन साहव के भारतीय गजेटियर में लिखी हुई गुरु गंभीर भाषा में देखिये—‘सन् १८०५ प्रथम घिराव के अवसर पर ब्रिटिश सेना के हिन्दुस्तानी सिपाही यह कहते थे कि हमने शङ्ख-चक्र-गदा-पद्म पीताम्बर वंशी धारी पवित्रात्मा (कृष्ण) को भरतपुर नगर की रक्षा करते देखा

17. See Oudh gazetteer for 1877. Page 7.

18. People of India.

19. Mill's History of India VI. VI, Page 426.

था ।' २० थार्टन साहब के इस स्पष्टीकरण का आशय युद्ध भी हो किन्तु इस विवाद में अंग्रेजों का बुरी तरह पराजित होना जाट वीरों की बहादुरी का उल्लंघन उदाहरण है, जिससे कभी भी इन्कार नहीं किया जा सकता ।

जाटों के सम्बन्ध में राजपूताने में आज तक मशहूर है—

आठ किरंगा नौ गैरा, नड़ैं, जाट के दो छोरा ।

आज भी भारत की प्राचीन राजपूती वीरता का स्मरण करते हुए प० मेंकी लिखते हैं—‘वे ही राजपूत जो चन्द्र और सूर्य के वंशवर कहे जाते हैं और जो अग्निकुल से उत्पन्न हुए हैं, अब अपनी जाति विषयक उत्साहवर्यक कहानियों को भूल सा गये हैं । मूर्खता एवं विलाम्पि प्रियता के कारण ऐसे अकर्मण्य वन गये हैं कि जब उनके पूर्वजों की धर्मयुक्त वीरता, वुद्धिभृता पूर्ण व्यवहारिक दंश प्रेम, प्राचीन सभ्यता तथा उदार हृदयता का स्मरण आता है तो दुःख होता है ।' २१

इस पृथ्वी तल पर वीरता प्राचीन हिन्दुओं का शृंगार थी, वीरों के भुज-बल से ही भारत ने अमर-ख्याति प्राप्त की थी । भारत का सुवृस्व भले ही चला जाय किन्तु इस की आदर्श वीरता जननी जन्म भूमि का पलला न छोड़े, यही कामना है ।

20 In 1803, during the first siege some of the native soldiers in the British service declared that they distinctly saw the town defended by that divinity; dressed in yellow garments, and armed with his peculiar weapons, the bow, mace, couch and pipe.

21. The Nations of India.

# स्त्रियों की स्थिति

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः ।

—मनुस्मृति

इटली के महापुरुष मेजनी ने लिखा है कि किसी 'गांठ या समाज के उत्थान की सब में बड़ी परव्य है उम देश या समाज में महिलाओं की स्थिति । जिस देश में स्त्रियों की सामाजिक एवं पारिवारिक अवस्था उल्लत है, वह देश अवश्य सभ्य है ।'" भारतीय हिन्दू समाज में आदिकाल से ही महिलाओं का स्थान बहुत ऊँचा चला आ रहा है, जो कि इस देश की उन्नत सभ्यता का एक अत्यन्त मान्य प्रमाण है ।

प्रोफेसर एच० एच० विल्सन मुक्तकरण से स्वीकार करते हैं कि—'प्राचीन काल में किसी भी जाति के अन्दर स्त्रियों का इतना सम्मान नहीं था जितना के हिन्दुओं में ।'<sup>1</sup> मिसेज लूसी भी अपने एक लेख में इसी बात का समर्थन करती है—'वैदिक काल में भारतीय स्त्रियों की संस्कृति उच्चतम थी । कुछ ने तो अद्वितीय तक प्राप्त कर लिया था । ..... वेदों तक में उन्हें वरावरी का स्थान दिया गया है ।'<sup>2</sup> मनु महाराज के समव भी स्त्रियों का स्थान निश्चित करने के लिए आप ने कतिपय मनुस्मृति के श्लोकों का अनुवाद तक उद्धृत किया है ।

1. Mill's history of India Vol 11. Page 51.

साम्राज्ञी शशुरे भवे साम्राज्ञी शवश्रश्वो भव

नानांदरि साम्राज्ञी भव साम्राज्ञी अधिदेवपु ॥—अथर्वाद

"इहे रत्न हव्ये काव्ये चन्द्रे ज्योतेऽदिति, सरस्वती महि विश्रुति ।"

शोचन्ति जामयो यत्रविनश्यत्याशु नकुनम् ।

न शोचन्ति तु यत्रैता वर्धते ताङ्गसर्वं दा ॥३

इतिहासक्रं रोगोजिन महाशय का कहना है कि—‘वैदिक काल के पञ्चाय निवासी आयों में महिलाओं का अत्यन्त सम्माननीय एवं उच्चतम स्थान था । समाज में पर्ति के समान ही उनका भी आदर होता था ।’<sup>४</sup> एवं डुबोइस के समान द्वेष दर्शक मिशनरी भी स्त्रीकार करता है—‘जन समूह में उनका बड़ा आदर होता है । जिससन्देह उनका आदर छेड़द्वाड़ और मजाक पूर्ण नहीं, जैसा हम लोगों में होता है, जो हमारे स्त्री पुरुषों के लिये लज्जा की वात है । इसके अतिरिक्त उन्हें जन समूह में किनी प्रकार के अपमान का भय नहीं रहता । कोई स्त्री जहां चाहे जा सकती है । . . . जिस मकान में केवल स्त्रियां ही रहती हैं, वह देवस्थान तुल्य माना जाता है । अत्यन्त निर्लेज गुण्डे तक उनके चिरुद्ध आचरण करने का कभी स्वप्न में भी ग्रयाल तक नहीं करते ।’ सरु एड्सेर भारतीयों के सम्बन्ध में अपनी सम्मानित प्रकट करते हुए प्रशंसा करते हैं—‘वे (भारतीय) भली स्त्रियों के प्रति, चाहे वे योरोपियन हों या भारतीय, वीरता पूर्ण सम्मान प्रकट करते हैं ।’<sup>५</sup> ‘शतपथ’ आज भी पुंकार पुकार कर कह रहा है कि ‘स्त्री लक्ष्मी स्वरूप है उसका अपमान करने वाला लक्ष्मी विहीन हो जाता है ।’<sup>६</sup>

### विद्वता—

प्राचीन स्त्री शिक्षा<sup>७</sup> के सम्बन्ध में श्रीमती डॉक्टर एनी

3 Indian Review—April, 1919.

4 Vedic India.

5. Unhappy India.

6. स्त्रीवृं एव यत श्री, नैव तत् स्यान्, स्त्रियं धन्ति ।’

7. पुरां कल्पे तु नारिणां मौज्जी चन्धनमिष्यते ।

विमेन्ट महोदया लिखती हैं—पूर्व काल में वालिकाये उपनयन मंस्कार की अधिकारिणी थीं। वे वेद पढ़ सकती थीं, गायत्री का जाप कर सकती थीं।<sup>१</sup>

श्रीमती लूमी० एस० बतलाती हैं—‘वह ( लीलावती ) १२ वीं शताब्दी में एक महान गणितज्ञा हो गई हैं। कदाचित प्राचीन भाष्ट का एक सुप्रसिद्ध महिला गार्गी थीं। जिन्होंने एक दार्शनिक प्रन्थ लिखा और याज्ञवल्क्य सर्विखे विद्वान से वाद विवाद किया। यह भी स्गरणीय धात है कि अंगे जी भाषा में प्रथम कविता ( Poetry of merit ) लिखने वाली भागतीय महिला तोमुदत्त थीं।’ ‘देश दर्शन’ के विद्वान लेखक ने इस विषय में किसी पाश्चात्य पंडित को कुछ पंक्तियां उद्धृत की हैं। उनका आशय है कि—‘उम महान उन्नति के समय स्त्रियां पुरुषों के बगवर पढ़ी लिखी हुआ करती थीं और उनकी शिक्षा पुरुषों के समान बड़े ऊँचे दर्जे की होती थी।’<sup>२</sup> वह कौन सा ज्ञान-विज्ञान है जिसमें कदम रख कर भारतीय महिलाओं ने कमाल हासिल नहीं किया? गान्धारी, सावित्री, मैत्रेयी, सीता, अक्षा, दुर्गा, भारती, खशा, इन्दुलेखा, विद्या जीजी सरीखी भारतीय महिलाएँ किसी भी देश में गौरवान्वित बना सकती हैं।

## विवाह—

विवाह के सम्बन्ध में भी उन्हें पूर्ण स्वतन्त्रता प्राप्त थी। श्रीमती एर्नीविसैट बतलाती हैं—‘वैदिक काल में स्त्रियों विवाह करने के लिए विवश नहीं की जाती थीं। मानसिक और धार्मिक

अध्ययन च वदानां सावित्री वचनं तथा ॥ सत्यार्थ विवेक

8. Wake up India, Page 55.

कन्याऽप्येवं पालनीया शिर्दणीयाऽतिथल्ततः ।

योग्यतानुसार वे बालब्रह्मारियों रह सकती थीं । मोक्ष प्राप्ति के लिये सन्धार लेकर ब्रह्म द्वान प्राप्त कर सकती थीं ।’ ०

मिसेज लूसी कुछ ही काल पूर्व का वर्णन करते हुए लिखती हैं—‘अंची श्रेणियों में बहुत पीछे तक राजकुमारियां स्वतन्त्रता पूर्वक स्वयंस्वर में अपना पति वर्ती रही हैं ।’ १३

## पर्दा—

जिस राष्ट्र एवं समाज में स्त्रियों ने इतना विकाश किया हो वहां पदे का प्रश्न कैसा ? चीनी यात्री, ह्यूनसांग के लेखों से स्पष्ट है कि बालादित्य की राजमाता उनके जाने पर उनसे सुन्नत मुझा मिली थीं । विदुपी राज्य श्री ने स्वयं यात्री से वार्तालाप किया था और राज्य प्रबन्ध में भी अपने भाई का हाथ बटाया करती थीं । १४

अद्यूजेद यात्री ने राजदरवारों में पुरुषों के साथ स्त्रियों का उल्लेख किया है । कर्नल टाड महोदय अपने चिर अनुभव को कितने जोरदार शब्दों में व्यक्त करते हैं—‘राजपूत महिलाएं जिस स्वतन्त्रा, सम्मान और सुख का उपभोग करती हैं, मैं किसी भी अवस्था में उनकी इस दशा को ‘रैद’ नहीं कह सकता ।’ १५ मिसेज लूसी महोदया भी इसी मत का समर्थन करती हुई कहती हैं—‘वे पदे में नहीं रहती थीं प्रत्युत समाज में स्वतन्त्रता के साथ आती जाती थीं ।.....प्राचीन अयोध्या में ऊचे घरानों की स्त्रियां

10. *Wake up India*

11. सिर्ना वाली पृथुषटुके या देवता ममि स्वसा ।

जुगस्वं हृव्य माहां प्रजां देवी दिदिद्विनः ॥ यजुर्वेद ३४-१०

12. *Scenes & character of Indian history, Page.*

13. *Tod's Rajasthan.*

का भी रंगमंच पर आना अनुचित नहीं समझा जाता था । उन समस्त बातों से पता चलता है कि स्त्रियां उस काल में किस मूलन्त्रता के साथ रहा करती थी ।<sup>१४</sup> एच० जी० रीलीविन्सन एम० ए० आई० ई० एस० का कहना है—‘हिन्दुओं में पढ़ें की प्रथा का जन्म मुसलमान काल में हुआ है ।’<sup>१५</sup>

### अधिकार—

कुछ लोग जिन्हें हिन्दू कानून का पता नहीं, समाज की आन्तरिक स्थिति का ज्ञान नहीं और न ही है उनके कौटुम्बिक जीवन के आननद का अनुभव, वे प्रायः इस बात को लेकर कटाक्ष करते हैं कि हिन्दुओं की पैतृक सम्पत्ति में लड़कियों का बहुत कम अधिकार है । जो लोग हिन्दू समाज की आन्तरिक अवस्था में मुपरिचित हैं, उन्हें पता है कि एक हिन्दू बहन अपने भाई से अपने भरणा पोषण, विवाह व्यय एवं समस्त शुभ कार्यों और त्योहारों पर उपहार प्राप्त करने की पूर्ण अधिकारिशी है—पिता से भाई भले ही उत्तराधिकार में कौड़ी की सम्पत्ति न प्राप्त करे । मां का सन्तान पर कानूनी और नैतिक इतना जर्दीस्त अधिकार है कि शायद ही संसार के किसी समाज में ऐसा हो ।

केवल पुनियां और बहिनें, ही नहीं उनकी सन्तान और सम्बन्धी भी पितृगृह से पारिवारिक उत्सवों और त्योहारों पर उपहार प्राप्त करने का पूर्ण अधिकार रखते हैं—मिस्टर जे० यंग के शब्दों में—हिन्दुओं के पारस्परिक सम्बन्ध की गांठे बहुत मजबूत होती हैं, जब परिवार का कोई भी व्यक्ति अच्छी अवस्था में होता है तो वह अपने कुटुम्बियों की सहायता करता है । + X

14 Indian Review, for April, 1919 A.D.

15 Intercourse between India and the western world, Page, 90.

यह गुण अमीर गरीब दोनों में सामान रूप से पाया जाता है।<sup>15</sup>

प्रोफेसर विल्सन के शब्दों में—‘सम्पत्ति में इन्हें पूरा अधिकार प्राप्त है।’ आगे चल कर आप बतलाते हैं—‘उत्तराधिकारी पुरुष की अनुपस्थिति में विधवा को आजीवन अधिकार है, उस के पश्चात् लड़की को। यह कहना कि हिन्दू स्त्रियों को जायदाद में अधिकार नहीं—स्त्रियों से बहुत दूर की बात है।’<sup>16</sup> हिन्दू कौटुम्बिक जीवन इतना उदार एवं प्रशस्त है कि एक बार भी उस के संसर्ग में आने वाला व्यक्ति अनन्त काल तक के लिए उस में बन्ध जाता है।

स्त्री पर मुक्तिलित पुण्य से भी आघात न करो यदि उस ने सैकड़ों अपग्राध भी किये हों।<sup>17</sup>—यह हिन्दू शास्त्रकारों का आदेश है। कर्नल टाड महोदय का विचार है कि इस से सुकोमल भाव आज किसी ने भी नारी जाति के प्रति प्रशित नहीं किये। लाहौर गवर्नर्मेण्ट कलेज के प्रथम प्रिस्पिल और उसके पश्चात पञ्चाव शिक्षा विभाग के मर्बोच्च अधिकारी डॉक्टर लीटनर महोदय कहते हैं—‘वे अपनी स्त्रियों के प्रति जो आदर और पवित्र प्रेम प्रदिशत करते हैं उस का बाह्य रूप भी हमें योरुप में नहीं मिलता।’ स्त्रियां अनादि काल से भारत में समाज का मरम्स्थान मानी जाती हैं, यही कारण था कि इस देश ने संसार में असाधारण उन्नति की थी। सर जान फडरीक टेब्ज वार्ट बतलाता है—‘किसी जाति के आनन्द का आदर्श और प्रसन्नता का माप दण्ड विशेषतः स्त्रियों पर निर्भर करता है।’<sup>18</sup> इस

16. People of India.

17. Mill's history of India.

18. तवदूर्धनं किशुद्धात्मा नष्ट कोर्प करिष्यति ।—रामायण

19. The other side of Lantern Page 40

कसौटी पर कसने के बाद प्राचीन हिन्दू ही संसार की समस्त जातियों में सुन्दरी प्रमाणित होते हैं। पर्यटक अलंबननी भी लिखता है—वे (हिन्दू) समस्त मामलों और सलाह मशवरे में अपनी स्त्रियों की सम्मति लेते हैं।<sup>२०</sup> प्राचीन जर्मन या फ्रांडेनेवियों की भाँति राजपूत हर एक काम में अपनी स्त्री से मत्ताह लेते।<sup>२१</sup> और उन के नाम के साथ देवी का विशेषण लगाते हैं।<sup>२२</sup> मिस्टर रागोजन महोदय के शब्दों में आधुनिक जातियों के सर्व प्रिय जीवनचर्या भी उस आदर्श से बहुत पीछे रह जाती है जिस का इस प्रकार जंगली कहे जाने वाले हमारे पूर्वजों (आयों) ने निर्मान किया था।<sup>२३</sup>

२०. Albertini's India, Vol, 1, Page. 181.

२१. Annals of Rajasthan, Vol, I Page 634.

२२. Vedic India.

# स्त्रियों का आचार



धीरध्वनिभिरलं ते नरद, में मालिको गर्भः ।

उन्मद वारण युद्ध्य, जठरं में समच्छवत्तिः ॥

—कृष्ण.

## शौर्य—

भारत में पराक्रम और पौरुष केवल पुरुषों के ही वांट में न आया था, नारियां भी साहस और वीरता में उन्हीं के अतुरुप थीं, विदुला का राजकुमार संजय को युद्ध के लिये प्रोत्साहित करना, कुन्ती का व्राद्यरण पुत्र के स्थान पर भीम को बकराज्ञस वध के लिये भेजना, और कंकई का दशाथ को रणक्षेत्र में सहायता देना, भारतीय महिलाओं की अतुल वीरता के अद्वितीय उदाहरण हैं ।

किरणमयी का कटार लेकर अकवर की छाती पर सवार होना, कुतुबुद्दीन ऐचक का कूरमदेवी को पीठ दिखाकर भागना ।<sup>1</sup> रानी दुर्गावती की स्वतन्त्रता को हड्डप करने के लिये मुगलों का हाथ लपकाना, इतिहास प्रसिद्ध है । इतिहासज्ञ 'फरिशता' लिखता है कि—'दुर्गावती ने घमसान युद्ध किया और घायल हुई । युद्ध-भूमि से मुंह मोड़ना अपमान समझ कर रानी ने रणक्षेत्र में अपना काम अपने हाथों तमाम कर लिया ।<sup>2</sup>

तारा की तलवार, पद्मनि का कम्पनकारी जौहर, पन्ना धाय का लोहमर्षक बलिदान, आज भी भारतीयों के शरीर में विद्युत

1 Tod's Rajasthani,

2 Tyl - Rajasthani, Vol 1 Page. 642.

का संचार कर देता है। इतिहासज्ञ कर्नल जेम्स टाड के शब्दों में—‘किसी भी जाति के इतिहास में राजपूत महिलाओं की भान्ति अनुराग एवं देशभक्ति के इतने अधिक और ज्वलन्त उदाहरण नहीं मिल सकते। पत्नी और माता दोनों ही रूपों में भारतीय महिलाएँ’ विश्व इतिहास के पृष्ठों पर चमक रही हैं। पति-पुत्र को युद्ध में भेजने के लिये अपने हाथों से सजाना, उनके प्रेम एवं वात्सल्य का ऊंचा आदर्श है। रण से विमुख होना,—मां का दृध लजाना—इससे अधिक दाहक अपमानजनक बात, उनके लिये दूसरी नहीं। फ्रांसीसी यात्री वर्नियर अपनी आंखों देखी बात बतलाता है—‘मैं उस भयानक स्वागत का व्यान किये विना नहीं रह सकता।’<sup>3</sup> जैसा राना की लड़की ने अपने पति का किया था। उसने सुना कि उसके पति ने पर्याप्त साहस से युद्ध किया और कंवल चार पांच सौ मनुष्यों के अवशेष रहने पर, शत्रु को रोकने के योग्य शक्ति के अभाव से युद्ध क्षेत्र से बापस लौट आया। राजकुमारी सहानुभूति प्रदर्शन के लिये किसी के स्थान पर महल के फाटक बन्द करवा दिये और कहा ‘उसका पति—राना का दामाद—इतनी गिरी आत्मा का नहीं हो सकता। इस घटना से यह प्रकट होता है कि इस देश की महिलाओं को अपने मान, प्रतिष्ठा और स्वाभिमान का कितना ध्यान है। उनका हृदय कितना सजीव है। मैं ऐसे और भी दृष्टान्त दे सकता हूँ क्योंकि मैंने बहुत सी स्त्रियों को अपने पतियों के साथ चिता में जलकर मरते हुए देखा है।’<sup>4</sup>

वूंदी के महलों में ‘राव’ के रणक्षेत्र में निधन होने की खबर फैल गई, महारानी ने चिल्हा कर पूछा—क्या वह अकेला ही

3. Tod's Rajasthan, Vol. 1 Page, 613.

4. Travels in the Mugal Empire.

चल वसा ? राजस्थान के प्रसिद्ध इतिहासज्ञ कर्नल जेम्स टाड कहते हैं—‘राजमाता ने स्वयं उत्तर दिया’-कभी नहीं, वह वज्र जिसने इन छातियों का दूध पिया है, रणक्षेत्र से कभी अंकल प्रस्थान नहीं कर सकता । (अर्थात् सहस्रों को मार कर मरेगा) रानी का मस्तक गर्व से ऊँचा हो गया, उनकी छातियों से दूर वह निकला ।<sup>५</sup>

भारत के जलवायु और भारतीय महिलाओं की छातियों के ही दूध का प्रभाव था कि राजपूत अपने शत्रुओं की संख्या नहीं, अपितु वडी उत्सुकता के साथ उनका पता पूछा करते थे ।

भारतीय स्त्रियों के सम्बन्ध में लिखते हुए श्रीमती लूसी ; वत्साती हैं कि भांसी की महारानी लचमीबाई और अहिल्याबाई भारतके महानतम शासकों में से थी । सर जान मालकम वत्साते हैं—‘गम्भीरता पूर्वक इनके चरित्र पर दृष्टियात करने से प्रतीत होता है कि वह एक अत्यन्त पवित्र और आदर्श शासक थीं। उनके जीवन से यह उदाहरण और शिक्षा मिलती है कि मतुष्य को अपने सांसारिक कर्तव्यों का पालन करते समय किस प्रकार उनके लिये अपने को ईश्वर के समक्ष उत्तरदायी समझता चाहिये ।<sup>६</sup>

इतिहास लेखक टी० जेम्स लिखते हैं कि भूमण्डल के इतिहास में बनाफर बन्धु (आलहा उदयसिंह) की माता देवला के समान बीरत्व और सज्जनता का दूसरा उदाहरण शायद ही और कही मिले ।

अभी हाल की बात है—जर्मन यात्री एफ० आस्ट्रोजर ने कुछ

5. Tod's Rajasthan, Vol. II, Page, 48

6. Indian Review, for April 1819. A. D

C. History of Central India Vol. 1.

प्रामीण भारतीय महिलाओं को देख कर कहा था—सहभार्म ( Partner-Ship ) के सिद्धान्त को पूर्ण रूप से निर्वाह करने वाली स्त्रियां यहां के अतिरिक्त अन्यत्र नहीं मिल सकतीं । इनकी महत्तमता और स्नेहमयी गोद में उछल कूद कर उठने वाले वालक ही युगान्तर उपस्थित कर सकते हैं ।”

## साधारण चरित्र—

अब भारतीय महिलाओं के चरित्र सम्बन्धी अन्य गुणों को भी देखना उचित है । सर एफ० टी० वार्ट के शब्दों में ‘भारतीय नारियां सब’ प्रथम अपनी शानदार हिम्मत का दावा कर सकती हैं । + + + नवयोवना महिलाएं और लड़कियां मुन्द्र सदाचारिणी और मलउन्न होती हैं ।”<sup>७</sup>

सर लेपेल० एच० ग्रिफिन आई० सी० एस० लिखते हैं—‘भारत में शराब पीने वाली स्त्रियों का पता ही न था ।’<sup>८</sup> भारतीय स्त्रियों के सम्बन्ध में जी० ए० चापमैन का भी विचार सुनिए—‘साधारणतया भारतीय स्त्रियां पुरुषों से अधिक शुद्ध कार्यकुशल और निपुण होती हैं ।’<sup>९</sup>

प्रसन्न मन स्वस्थ शरीर में रहता है । अस्तु भारतीय महिलाओं की शारीरिक अवस्था से भी यत्किञ्चित परिचय प्राप्त करना असंगत न होगा । सुप्रसिद्ध इतिहासवेता सी० एच० पेनी बतलाता है—‘मालाबार की स्त्रियां साधारणतः और नायर संभ्रदाय की विशेषतया स्वरूपान होती हैं ।’<sup>१०</sup> सन् १९६५ ई० का यात्री

7 The other side of the Lantern, Page 48.

8 People of India.

9 India its character, Page 51.

10 Scenes and character of Indian History Page 35.

जैम्स फोवर्स लिखता है—‘हिन्दू स्त्रियों से बढ़कर कोई भी मं सफाई का ध्यान नहीं रखती। वे अपनी म्वच्छता, कोमलता और आकर्षण का हर प्रकार से ध्यान रखती है। वे अपने लम्बे लम्बे वालों को जवाहिरात और पुष्पहारों से सजाती हैं और आभूषण पहनती हैं।’<sup>11</sup> ?

सर फ्रिस्काइन पेरे भी भारतीय महिलाओं की सुन्दरता का गुणगारण करते हुए इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि संसार में किसी भी देश की स्त्रियां सुन्दरता में उनका सामना नहीं कर सकती।<sup>12</sup> मुलेमान सौदागर का कथन है कि गुरुज (गुजरात) की स्त्रियां सारे भारत की स्त्रियों से अधिक सुन्दर होती हैं।<sup>13</sup> प्राचीन संस्कृति कवि माव भी इसका भर्त्ता भान्ति समर्थन करते हैं—

परम्परसर्थिपरार्थहपा; पैरस्त्रियो यत्र विधाय देवा।

धीर्न्मिन्द्रं ग्राम धुगालू नैक वर्षोर्पमा वच्यमली ममार्ज॥<sup>14</sup>

पालियामेण्ट के प्रसिद्ध सदस्य मिस्टर केर वडाल के सौन्दर्य का गुणगान करते हुए उनके धुंधराले वालों की विशेष प्रशंसा करते हैं।<sup>15</sup> कहने का आशय यह है कि वीरता, सुन्दरता, साहस मुकाई, योरयता, सभ्य शृंगार, सदाचार, जिस दृष्टि से चाहें आप भारतीय नारियों के दर्शन करलें, कहीं भी ऊंगली उठाने की जगह न मिलेगी। कविवर विद्योगी हरि के शब्दों में संसार यही कहेगा—

अपने ही बन आपनी, रखन हारियां लाज।

धनि, आरज-कुल-नारियां, जग-नारितु-सरनाज॥

11. *Memories*, see also *the Peoples of India*.

12. See, *Bird's eye view of India*.

13. मुलेमान सौदागर, पृष्ठ ५४

14. शिशुपाल वध, श्लोक ५८ पृष्ठ ८२

15. See, *India impressions and Suggestions*.

इन विश्व-विश्रुत महिलाओंके की गोदी में खेलने वाले बच्चों के सम्बन्ध में भी, भारत भाग्य विधाता, लार्ड की पदवी को टुकराने वाले अस्वर्वद के भूतपूर्व गवर्नर मार्डेंट स्टुअर्ट एलिफन्टन की जवानी भी दो शब्द सुन लीजिए—‘हिन्दु बच्चे योरुपियन बच्चों की अपेक्षाकृत बहुत तेज और निपुण होते हैं।’<sup>१५</sup>

‘मौहै न नारि नारि के रूपा’ की उक्ति का खण्डन भी मिस मेरी स्काट के शब्दों में सुन लीजिये—‘सीता स्त्रीत्व का वह मधुरतम आदर्श, जिसका मैंने कभी अध्ययन किया है।’ सरमो-नियर विलियमस सरीखे विद्वान भी सुक्त कंठ से स्वीकार करते हैं—‘वास्तव में साधारणतया हिन्दू पत्नी विवाह सम्बन्धी वफादारी का पूर्ण आदर्श है।’<sup>१६</sup> विशाल संसार में किसी भी और हष्टि डालिये भारतीय नारियों के आदर्श चरित्र की समता करने वाला दूसरा उदाहरण न मिलेगा।

<sup>१५</sup> एक बार राजस्थान के किसी समन्न घराने के लड़के को उसके रसिक विश्व-गुरु महोदय सुस्करा २ कर—‘मृग नयनी के नयन मैं मयन अयन मन होय।’ की व्याख्या बताता रहे थे। यह भनक कहीं लड़के की चत्राणी माना के कान में पड़ी। उसने परिचारिका से घरेडत जी के पास कहता मेजा कि मेरे लड़म को ऐसे नहीं किन्तु ऐसे दोहे पढ़ावें और समझावें:—

सेढे उमर कोटरो, दो बाही अब यट्ट।

जाने बेहू’ भाईए, आथ करी बे भट्ट  
अर्थात् “उमरकोट के सीढ़ा (राजपूत) ने ऐसी यट्ट (तलवार) चढ़ाई जिस से दैरीके दो टुकड़े बराबर २ होगान् जैसे दो भाई पैतृक आय (धन) की नोन कर बराबर २ दो भागों में बांट लेते हैं।”

# स्वदेश प्रेम

—

जननी जन्म भूमिश्च स्वर्गादिपि गरीयमी ।

भारत धर्म प्रधान देश है और गायु भक्ति उसका प्रधान अङ्ग । स्वदेश सेवा यहां ईश्वरोपासना ममभी जाती है । धर्म और देश ये ही दो भारतीयों के वलिदान के उत्कृष्ट हेतु हैं । योगीराज कुण्डा ने गीता में कहा है कि स्वदेश सेवा के लिए अपने को मिथि देना ही वलिदान की पराकाष्ठा है ।<sup>1</sup>

‘स्वदेश’ आयों में सदैव विद्युत का संचार करता रहा है । मंसार त्यागी ‘दधीच’ भी स्वदेश पर संकट का नाम सुनते ही व्यग्र हो उठता है । देश द्वोहियों के दमन के लिये अपनी हड्डियां<sup>2</sup> तक मातृ भूमि की भेरण कर देता है । डाक्टर एनि विसेन्ट कहती हैं,—‘ग्रीष्मीय भावनाओं से यह भूमि मालामाल है । राष्ट्रीयता और पक्ता की जड़ें यहां बहुत गहरे तक पहुंची हैं ।<sup>3</sup>

## कृतज्ञता—

राष्ट्रीयता का प्रथम सोपान है कृतज्ञता, भारतीय इसमें कितने बढ़े चढ़े हैं सर चाल्स फोर्बस की जबानी सुन लीजिए—‘कृतज्ञता उनका (भारतीयों) जातीय सिद्धान्त है । वे एक आधात भूल सकते हैं, किन्तु दूसरे की कृपा कभी नहीं । यह मैं २२ वर्ष उनके साथ और २८ वर्ष उनसे पृथक रहने के बाद कह रहा हूँ ।’<sup>3</sup>

जिस देश ने उपकार का मनन करना—कृतज्ञता, महापाप

1. “हतो वा प्राप्यसि स्वर्गं, जित्वा मोक्षसे महीम् ।”

2. See, A Bird's eye view of Indian past.

3. Bombay champion; June 25, 1899.

प्रभका जाता हो, फिर वहाँ के सुन्दर नमीर में मांस लेने वाले जम्बू-श्यामला भूमि में विचरने वाले, उसके पानी और अन्न से उन्नें वाने प्राणी स्वदेश भक्त न हों— अमम्भव है। मौत विभिन्निका जिन्हें भयभीत नहीं कर सकी, विपत्तियाँ जिन्हें विचलित करने में व्यर्थ मानित हुईं, बुद्धावस्था जिन्हें जीर्णा न कर पाई, उनमें थे प्राचीन भारत भक्त, जिनके बल पर यह सद्ग्राहियों तक उद्ग्रीष्य सवड़ा गहा। याक्षी अलयेन्नी कहता है—‘उनका गार्षीय चत्रित्र अद्भुत है। उसकी जड़े गहराई तक उनके अन्दर जम गई हैं। हिन्दुओं का विश्वास है कि संसार में सर्वोत्कृष्ट उनका देश है। उनकी जाति के समान दूसरी जाति नहीं, उनके सम्राट में अच्छा दूसरा सम्राट नहीं और न ही उनके धर्म से बढ़कर है दूसरा धर्म !’<sup>४</sup> इससे सुन्दर स्वदेश भक्ति का दृमरण उदाहरण और कहाँ मिल सकता है। ‘जो अपनो है भलो’—यहीं तो गायु का सन्देह हुआ करता है।

राजपूती हृदय में धधकते वाली स्वदेश प्रेम की आग कितनी नीत्र थी, इतिहास के थमसिटर को लेकर मापने वाले कर्जल टाड संप्रिण—स्वदेश का जाम राजपूतों के मस्तिष्क में एक जादू का असर पैदा कर देता है।<sup>५</sup>

जिस देश ने खिला पिला कर इतना बड़ा किया है, जिसकी आती का दृथ (अन्न-जल) रक्त बन कर धमनियों में दौड़ रहा है, आड़े समय में उसकी आन रक्ता पर प्राण चढ़ा देने का पाठ भारतीय वचे भी स्मरण रखते थे। इतिहासवेत्ता उठती जवानी बाने गोरा और चादल के सम्बन्ध में लिखता है—‘सम्मान और स्वदेश भक्ति की उत्तम भावना से प्रेरित होकर उन्हों ने अपने

<sup>4</sup> Alberuni's India Vol. I Page 22.

<sup>5</sup> Tod's Rajasthan Vol. II page 429.

जीवन को न्योक्तावर कर दिया, अपने सरदार के लिए राज के लिए और अपने स्वदेश के लिए।”<sup>६</sup>

भारतीय स्वदेश प्रेम की जलती हुई ज्योति को देखना है तो मानृभूमि के पूजारी, स्वाधीनता के अनन्य उपासक प्रताप का स्मरण करतो ! नौथाई शताब्दी तक धास की रोटियाँ और तालाब के पानी पर जीवन धारणा कर असंख्य मुगल सेना व आठों याम लोहा चबाने वाले प्रताप को देखो । प्रताप, देश और जाति का प्रताप, भारत का दुलारा प्रताप, स्वदेश प्रेम का वेदना का सजीव चित्र था । कर्नल टाड अकबर और प्रताप के द्वन्द्युद्धों की समता के लिए विश्वविजयी नैपोलियन के युद्ध इतिहास को चुनौती देते हैं ।

मुगलों का नाम उठ गया, उनके शक्तिशाली साम्राज्य का काल गटक गया किन्तु राजपूतों के कलेजे का गर्म लहू और भी हल्दीघाटी की छाती पर चमक रहा है । प्रताप के अव्यर्थ प्रदर्शों से मिस्रके बाले शत्रुओं की आहे अब भी हवा में सांय-सांय कर रही है । राजस्थान का अनुभवी इतिहास लेखक अंग्रेज सूचित करता है—‘अरबली पर्वत में कोई ऐसा दर्रा नहीं जिसमें प्रताप की शानदार विजय और उससे भी ज्यादा देदीप्यमान पराजय का कोई चित्र अद्वित न हो ।.....किसी भी राष्ट्र को ऐसी वीरता का सौभाग्य प्राप्त नहीं ।’<sup>७</sup> यह है देश भक्ति की शम पर जल मरने वाले भारतीय परचानों का चित्र । भारत जननी की गोद अनादि काल से ऐसे ही सपूतों से भरी रही है ।

स्वदेश प्रेम, भारतीयों की नसों में रक्त के साथ दौड़ता है, उनका कोई भी कार्य ऐसा नहीं जिस में स्वदेश सेवा का उद्देश्य

लिपा न हो । पी० एन० एफ० यंग, एम० ए० कहते हैं—‘प्रत्येक भारतीय प्रश्न का हल है राष्ट्रीयता की कुञ्जी ।’<sup>8</sup> भारत के गोरख मूर्यको जब कभी मंथां ने ढाँपने का उद्योग किया, उस समय डूसका स्वदेश प्रेम प्रचलित रूप में सामने आया है । बहुत दिन हुए, स्वदेश पर सङ्कट की घटायें उमड़ी थीं और उनको छिन्न भिन्न करने के लिए दक्षिण की पहाड़ियों पर एक अभूतपूर्व ज्योति ने शिवा के रूप में जगमगा कर महाराष्ट्र ही में नहीं समस्त देश में आननद का आलोक छिटका दिया था । उन्हीं शिवाजी के सम्बन्ध में डॉक्टर ऐनीविसेन्ट कहती है कि शिवाजी का उद्देश्य था राष्ट्रीयता का निर्माण करना, उसे एकता के सूत्र में बांध कर स्वदेश भक्ति की भावना को जागृत करना । सर हार्ट कोर्ट बतलाते हैं कि वह महान शिवाजी राष्ट्र वीर था जिसे हिन्दुओं ने अद्वै देवत्व का सा सम्मान दिया ।<sup>9</sup>

भारतीयों का स्वदेश प्रेम, दुख दुर्देव और विपत्ति की दुर्योग मर्यार रजनी में, धर्म के साथ निस्वार्थ भाव से राष्ट्र साधना के आदर्श का उज्ज्वल आलोक विकीर्ण करता रहा है । उसके माधुर्य का स्वाद प्राणों को हथेली पर लेकर ढौड़ने वाले भारतीयों के अतिरिक्त किसी ने चखा ही नहीं । अपने जीवन का बहुत बड़ा खाग भारत में व्यतीत करने वाले रेवेंट टामसमोरिस की राय है—‘वे (हिन्दु) जितनी अन्यासक्ति अपने पूर्व पुरुषों की संस्थाओं में रखते हैं उससे कम जलता हुआ प्रेम उनके अपने स्वदेश के प्रति नहीं होता ।’<sup>10</sup> मेजर जनरल सर डब्ल्यू० एच० स्लीमैन का भी अमुभव सुनिये—सार्वजनिक भावना (Public spirit)

8. India in Conflicts Page 23.

9. India Insistant Page 63

10. History of Hindustan Vol. II Page 4.

का आश्रय यदि प्रत्येक का वह स्वभाव होता है जिस से कि कह अपने मुख और सामग्री को नावंजनिक हित के लिए निश्चाकु कर देता है, शायद संसार में कहीं भी ऐसे व्यक्ति न मिलेंगे जिन के अन्दर भारतीयों में अधिक यह भावना मौजूद हो। वे अपने पूर्व पुनर्जनों के धर्म, अपने स्वत्व और राष्ट्रीय स्वतन्त्रता की रक्षा के लिए, अनेक प्रलोभनों के आने पर भी, सृत्यु का हड्डता ने मुकावला कर, प्रियतम वस्तुओं का बलिदान कर, सदियों तक इन बहादुरों ने युद्ध जारी रखा। ' वोलिये, सुदूर दिलों में भी वीरत्व की आग जलाने वाला स्वदेश प्रेम का यह इतिहास भारत को छोड़कर और कहां मिलेगा !

राष्ट्रीयता के बीज ने भारत की रक्त प्लावित धरती में ही परवरिश पाकर संसार को स्वदेश प्रेम का सुस्वादु चखाया था। मई सन् १९१० ई० में सर हर्वर्ट रिसले की रायल परियाटिक सोसाइटी के भोज में दी हुई वृत्तता को पढ़िये। नग हेनरी मैन के शब्दों को उधर करते हुए आपने कहा था कि—'राष्ट्रीयता के उत्पन्नि संसार में सब से पहले भारतवर्ष में हुई थी। वहां से यह परिवर्मन की ओर आये।' आज भी मां के लाडले लाल मौत के मामने खड़े होकर बड़े गर्व से गाया करते हैं—

—'दैन हैं हम किन्तु रक्ते मान ह ।

भव्य भारत वर्ष की मन्त्रान है ॥'

स्वदेश प्रेम की आग अकेले पुरुषों के हृदय में धधकती हो। यह बान नहीं, भारतीय महिलाओं ने भी आड़े समय पर स्वदेश का ऋण आने पाइयों में चुकाया है। स्वदेश प्रेम से उन्मत हो कर रणाङ्गण में देश द्वार्हियों का रक्त पीने वाली भारतीय रण-चिंडियां, आन-बान के लिए ज्वाल मालाओं को छाती से लगाने

जानी मनियां, उस बीर भूमि के अतिरिक्त और कहाँ मिल सकती हैं, लक्ष्मी, कर्गावती, महामाया और पद्मावती की पुनीत रात्रि ने भारत भूमि को किननी उर्वरा बना दिया है। कांट हरमान कहते हैं—‘बीरना शुरुना और मग्ने की ऐसी उत्सुकता मंमार में दूसरी जगह नहीं मिलती। यहीं जयभल की बीर पत्ति ने उसके कन्धे से कन्धा जोड़ कर मुगल सम्राट अकबर से युद्ध किया था।’<sup>१</sup> मिसंज रैमजे मैकडानल ने भारत भ्रमण के पश्चात इंगनैरड जाकर वापिस किया था—‘भारतवर्ष की महिलाओं में आत्मसम्मान की भावना पुरुषों की अपेक्षा कहीं ऊंची है।’

भारत के देशने २ कितनी ही जातियां इन दुनियां के बाग में गिल गिलाती हुई आईं और कराल काल का एक भी आधान बद्रीशत न कर सकने के कारण विलीन हो गईं। किन्तु मदियों से जमाने की चाटें भेलने वाला भारत आज भी संसार में किसी से कम नहीं, इसका यहीं कारण है—‘उज्वल राष्ट्रीयता और स्वदेश को स्वर्ग से भी बढ़कर समझने वाला जलता देश प्रेम ! रावल (जैसलमीर) का स्वदेश प्रेम पश्चिमी राजपूत रियासतों के पोलिटिकल एंजन्ट कर्नल जैम्स टाउ को जवानी सुनिये—जन्म भूमि मां हैं और उसे हानि पहुंचाने वाला प्रत्येक राजपूत उसका शत्रु है।’<sup>२</sup>

१. *See Annals and Antiquities of Rajastan Vol. II Page 40.*

२. *Tod's Rajasthan Vol. II Page 26.*

## शासन व्यवस्था

न मे स्तेनो जनपदे, न कद्यो न मध्यः ।  
तानाहिताग्निर्ना विद्वान्, न च स्वैर्णा स्वैरिणी कुतः ॥

उपनिषद्

तपोभूमि भारत के प्राचीन प्रन्थों का अनुशीलन करने से पता चलता है कि अत्यन्त प्राचीन काल में आयों का शासन विधान अराजक था । मानव हृदय एक दूसरे के प्रति करुणा एवं सदानुभूति से आप्ज्ञावित थे । सभी प्राणी अग्नि, वायु, सूर्य और चन्द्र किरणों तथा जल की भान्ति वसुन्वरा एवं प्रकृति के समस्त द्वातन्त्र्यों का उपर्योग करने के लिये समाज स्पृष्ट से अधिकारी थे । 'महाभारत' में स्पष्ट रूप से इसका उल्लेख किया गया है:—  
“आरम्भ में न राज्य था और न कोई राजा, न दण्ड विधान था और न कोई दण्ड देने वाला । प्रजा धर्म पूर्णक एक दूसरे की रक्षा करती थी ।” १ यह आयों के स्तिष्ठक से निकली हुई स्वर्गीय एवं आदर्श शासन पद्धति थी । जब भारत की जनता केवल धर्म द्वारा ही शासित होती थी । ऐल विश्व विद्यालय के डाक्टर एफ० वाशवन्ह हॉपकिंस ने भी इस बात को किसी अंश से स्वीकार किया है । २

शनैः शनैः समाज का विस्तार बढ़ा । सज्जनों में से कुछ असज्जन भी निकले, लोगों में स्वार्थपरता की भावनायें भी जगीं कुछ लोग दूसरों के मुँह से रोटी का टुकड़ा छीनने के लिये भी नैव राज्यं न राजासीच दगड़ो न च दरिडकः ।

धर्मेणाव प्रजाः सर्वा रचतिस्म परस्परम् ॥”—महाभारत० शा०

हाथ बढ़ाने को नैयार होने लगे । समाज ने ऐसे दुराचारियों के लिये 'वहिष्कार' अथवा असहयोग की व्यवस्था दी ।<sup>३</sup>

वहिष्कार का यह नियम समाज में बहुत दिनों तक सफल न रह सका । इसे पर्याप्त न समझ कर लोगों ने वहिष्कार के साथ माथ कुछ दण्ड की भी व्यवस्था की, जो भारत वर्ष में बहुत दिनों तक किसी न किसी रप में प्रचलित रही और आज भी है । ६१३ ई० में भारत पधारने वाला चीनी पर्यटक इंसिंग लिखता है—“भारत में जो लोग नीचतम अपराधी समझे जाते हैं, उनके शरीर में गोवर लीप कर उन्हें उजाड़ में निकाल दिया जाता है क्योंकि वे मनुष्य समाज से वहिष्कृत होते हैं ।”<sup>४</sup>

किर भी यह अशांति कम न हुई । निदान लोगों को प्रजापति की आवश्यकता पड़ी किन्तु पहले तो कोई भी राजत्वके गुरु-तम भार को सहन करने के लिये समुदाय न हुआ ।<sup>५</sup> अन्त में कुछ सुयोग्य, साहसी, इस सेवा के लिये आये और राज्य व्यवस्था का ग्रोगरोश हुआ ।

### प्रजातंत्र—

लार्ड रोनाल्डशे कौटिल्य अर्थशास्त्र का हवाला देते हुये लिखते हैं कि कौटिल्य ने इस बात को बिल्कुल स्पष्ट कर दिया है कि उस समय सम्राट प्रजा के सेवक समझे जाते थे ।<sup>६</sup> उन का

३ “वाक् ग्रूरो दण्ड पुरुषो यश्चस्यात्वार जायिकाः,

यः परस्वमथदायात्याज्यां तस्ता दंशा इति ।

नमन समयं कृत्वा समये नावतस्थिरे ।”

<sup>४</sup> इ-सिंग की भारत यात्रा, पृ० २१०

५ “विभोग्मि कर्मणः पापा द्राज्यं हि सृशदुस्तरम्, विशेषतौ ममुष्येषु मिष्या-व तंशु नित्यदा ।”

निर्वाचित प्रजा के प्रतिनिधियों द्वारा होता था । ग्रो० गेल डेविड्सन ने इस बात को प्रमाणित करने के लिये स्पष्ट रूप से लिखा है कि संस्कृत के 'राजन' शब्द का ठीक बही अर्थ है जो कि प्रोक के आरकन और रोमन के काउंसल ( Council ) शब्दों का । वेदों में भी यही वर्तनाया गया है कि "हे राजा ! राज्यकार्य सञ्चालन के लिये प्रजा तुझे निर्वाचित करती है ।" लेफ्टीनेन्ट कर्नल मार्क विल्कस भारतीय नागरिक प्रजातन्त्र शासन की विवेचना करते हुये कहते हैं कि समस्त भारत इन छोटे प्रजातंत्रों का एक विस्तृत स्वतंत्र है ।

दुर्गयही मिस्टर भिल को भी यह बात स्वीकार करनी ही पड़ी "—प्राचीन संस्थाओं और नियमों का निरीक्षण करने के पश्चात उन में प्रजातन्त्र के कीटाणु प्राप्त हुये ।" इस भांति प्रजा द्वारा निर्वाचित राजा एक व्यवस्थापिका सभा का प्रतिनिधि होता था जो उक्त परिषद के द्वारा राष्ट्ररक्षा और राज्य व्यवस्था करता था । राजा का राज्यभिरेक और महाभिरेक भी होता था । महाभिरेक के अनुसार राजा को कड़ी शपथ लेनी पड़ती थी । वह कहता था कि यदि मैं राष्ट्र को हानि पहुंचाऊं तो मेरे जीवन के गुम कर्म, मेरा परलोक एवं सन्तान सभी नष्ट हो जायें । भारत में प्रजातन्त्र की ये भावनायें कितनी प्रवल थीं, महाभारत काल में कुरु के निर्वाचन, रामायण काल में प्रजा की अनुभाव से राम राज्यभिरेक की तैयारी और चुद्ध काल में महाराज हर्ष का नवाचन इसके जीते जागते उदाहरण हैं । महाराजा रणजीतसिंह के पूर्व पंजाब का शासनविधान प्रजातंत्र था । प्रसिद्ध इतिहासक्ति विश्वो वृगुना राज्या त्वामिमाः प्रतिशः पञ्च देवी ।

वर्षमें राष्ट्रस्य कुदी श्रवस्व ततोन उर्गौ विवाक्त वसुनी ॥

स्मिथ कहते हैं कि पंजाब, पूर्वी राजपूताना और मालवा के अधिकांश भागों में ऐसी जातियां रहती थीं, जिन में प्रजातन्त्र राज्य-संस्थायें स्थापित थीं।<sup>९</sup> ऐशियाटिक सोसाइटी के प्रधान हानेल ने जैन मत पर व्याख्यान देते हुये बतलाया था—“पटने से २७ मील दूर वर्तमान बकसर ही प्राचीन वैशाली नगरी है। अतीत काल में यह वैशाली वीतिया और कुन्दन नामक गांवों में विभाजित थीं। इस राज्य संस्था को हम अल्पजनिक प्रजातन्त्र कह सकते हैं। राज्य प्रबन्ध करने के लिये एक सभा भी थी। सभापति को ही राजा की पदवी दी जाती थी।”<sup>१०</sup>

### राजतंत्र

इसके बाद धीरे २ जनता एक व्यक्ति को अपना स्वामी बनाकर, उसे राष्ट्र भक्ति की प्रतिष्ठाएँ लेकर विशेष अधिकार एवं सुविधाएँ देने लगी, क्रमशः यह व्यवस्था विगड़ कर राजा वंशपरम्परागत होने लगे। किन्तु प्रजातन्त्र की भावनाएँ कभी भी भारत की उर्वरा भूमि से निर्मूल नहीं हुईं। राष्ट्रोह सदैव परमात्मा से द्रोह करना समझा जाता था। प्रजानुरक्षन और प्रजा पालन ही ‘राजा’ का अर्थ था।<sup>११</sup> शुक्राचार्य ने राजाओं के गुणों का इस प्रकार वर्णन किया है—“राजा विद्वानों में शरचन्द्र के समान शीतल, शत्रुओं में ग्रीष्म-मार्तण्ड के समान प्रचण्ड और प्रजा में वसन्त ऋतु के समान सुहावना रहे।”<sup>१२</sup> भारत में राज्यधिकार

९. Early History of India.

१०. Bengal Asiatic Society Proceeding. 1885, Page, 40

११. भास्त्रभारत ० शा ० प० अ० ६६

१२. विद्यावत्सु शरचन्द्रो निदाधाकों द्विपत्सु च

प्रजासु च वसन्ताकं इव स्यादत्र विधो नृप।—शुक्र जीति

वस्तुतः एक धरोहर माने जाते थे। उच्छ्वस्त्रल होने पर राजा को उनमें हाथ धोना पड़ता था। लोकमत का राज सत्ता पर किनते प्रवल प्रभाव था, महाभारत का पन्ना पन्ना इसका साक्षी है। सरज्जान उड़ख़फ़ी बतलाने हैं—“जो लोग यह कहते हैं कि भारतीय स्वायत्त शासन जानते ही नहीं, वे स्वयं इस विषय में कुछ नहीं समझते। हिन्दू सत्राद स्वेच्छाचारी नहीं होते थे, उनकी इच्छा सर्व साधारण के उतने ही आधीन थी जितनी अन्य लोगों की।” यही कारण है कि वे प्रजा की अद्वा भक्ति के पात्र थे। संसार की यात्रा करने वाले सर जान मानडिविले (Sir J Maundeville) के ० टी० लगभग १३३१ ई. में भारत पधारे थे ! आप लिखते हैं कि तोगों का विचार है कि वह (राजा) पवित्र और कृपालु है।

अपनी प्रतिज्ञाओं से पराज्ञमुख हो कर कोई भी राजा इस भारत भूमि में चिरकाल तक टिक नहीं सका, अत्याचार की ओर झुकना और अधिकार से हाथ धोना—यह क्रियाएँ यहाँ साथ २ हुआ करती थीं। अत्याचारी वेगु और खनिनेत्र की कथा पंचम वेद महाभारत के पृष्ठों पर आज भी चमक रही है।<sup>13</sup> सेहरगुल के बय की बात आज भी भारतीय इतिहास में इसका ज्वलन्त प्रमाण है। सृष्टकटिक नाटक का राजा पालक निर्पराधी आर्यक को कैद करने के अपराध में ही राज्युचित किया

11. Is India Civilized?

14. Voyages and travels of sir John P. III.

15. See India old and new,

15. तं प्रजासु विश्वर्णाणां रागदेष वशानुगम् ।

मन्त्र पृ०: कुर्वैर्ज्ञ्यः ऋषिः ऋद्वादिनः ॥—शा० पर्व

खनिनेत्रस्तु विश्वन्तो जिता राज्यम कर्मकम् ।

नश कद्य कितु राज्यं नेत्वा रज्यन्ते तं प्रजाः ॥ अ० पर्व

मथा था । मथ का महा पराक्रमी सम्राट अपनी उच्छ्रुत्यलता के ही कारण चाणक्य के कोपानल में सपरिवार भस्मी भूत हुआ था ।<sup>16</sup> यही कारण है कि दुनिया भारतीय शासन व्यवस्था को अज भी सगहती है । इतिहासवेत्ता चार्ल्स मोरिस की ट्रिट में अतीत की इस भलक की भाँकी कर लीजिये—‘समस्त मानवीय संस्थाओं के इतिहास में प्राचीन आर्यों का राजनीतिक मङ्गठन अत्यन्त मनोरंजक था ।<sup>17</sup> प्राचीन इतिहासवेत्ता ऐरियन प्रशंसात्मक हंग से बतलाता है कि प्रत्येक भारतीय स्वतन्त्र था ।<sup>18</sup>

### व्यवस्थापिका सभायें—

आज राज्य पद्धति के अनेकों रूपों का उदय हुआ, संसार में भी इमकी उपयोगिता एवं महत्ता को आंखें काढ़ कर देखा किन्तु आज का प्रजातन्त्र प्राचीन भारत के राजतंत्र का पासंग भी तो नहीं । रामायण काल में राम को युवराज बनाने के लिये राजा दशरथ जनता से पुकार २ कर कह रहे हैं—“जो पवित्र यह नोग नंका, करो हर्ष हिय रामदिं टीका ।” महाभारत में भीष्म पितामह सत्तात्मक राज्य की अलोचना करते हुए युधिष्ठिर के सामने एक व्यवस्थापिका सभा ( Assembly ) के सम्बन्ध में विवेचन करते हुए कहते हैं—इस सभा में ४ आयुर्वेदाचार्य, विचारशील प्रगल्भ स्नातक, ४ शुद्ध दृदय वाले ब्राह्मण, ८ युद्ध विद्या-निपुण क्षत्री, ११ धन-शालि सम्पन्न वैश्य और एक उन्नतमना अष्टुगुण युक्त अधेड़ सूत हो ।<sup>19</sup> प्राचीन राज्य प्रबन्ध का विवेचन करते हुए प्रोफ़ेसर मैक्स डंकर महोदय बतलाते हैं—‘सम्राट प्रत्येक ग्राम

16. School history of India,

17. Aryan race Page, 158

18. India ch. X, See also, Eliphantes's India Page, 239

19. महाभारत । शान्ति पर्व, अ० १५

में एक आँफिमर नियुक्त करता था जिसे 'पति' कहते थे, दस या बीम गांवों को जिले के रूप में सुसंगठित कर एक दूसरा आफमर नियुक्त किया जाता था । ऐसे पांच अथवा दस जिलों के समूह को कैन्टन (Canton) कहते थे जिस में १०० जनसंघ सम्मिलिन होते थे । ऐसे १० कैन्टन जिस में एक हजार गांव होते थे जिनका अधिकारी गवर्नर (Governor) कहलाता था । जिले के ओवरसियर के अधिकार में सिपाही रहते थे जिनसे वह शान्ति स्थापन करता था । यह प्राचीन काल की शासन व्यवस्था है ।<sup>२०</sup> प्रोफेसर एच० जी० रालीविन्सन चंद्रगुप्त मौर्य के शासन सुप्रबन्ध का वर्णन करते हुए लिखते हैं—नगर और प्रामाणी की व्यवस्था प्राणाली का सीधा-सादा, द्यालु लोकव्यवहार, तथा प्राचीन प्रवन्ध के विविध कर्तव्य हमें आवृनिक कालीन मिथिल मर्विस का स्मरण दिलाते हैं ।<sup>२१</sup>

प्लेटो का तत्कालीन वर्णन और यूनानी राजवृत्त में गस्थनीज का विशाद विवेचन हमारी आंखों के सामने ईसा से सैकड़ों वर्ष पहिले का वह शासन चित्र पेश करता है जिसमें व्यवस्थापिका सभाओं एवं प्रजा के प्रतिनिधित्व का वह उच्चल स्व. प. मिलता है जिसका समुन्नत, सुसम्भय कहलाने वाले बीसवीं सदी के संसार में भी पता नहीं ।<sup>२२</sup> दक्षिण भारत में मुद्रान्तकम् स्टेन के पास उत्तरामूल नामक गांव में पाये गये लेखों से पता चलता है कि वहां के गांव और कस्बों के लोग प्रतिनिधि शासन, का ईसा की ६ वीं शताब्दी में भी उपभोग करते थे ।<sup>२३</sup> ताज़े लेखों

<sup>20</sup> History of Antiquity Vol, IV, Page, 215 See also शुक्र तीति

<sup>21</sup> Intercourse between India and the Western world, Page, 56

<sup>22</sup> See plutarch, vit Har 62,

<sup>23</sup> India inscription, Vol, III, Page, 9.

द्वारा भी यह मालूम हुआ है कि ६ वीं और दसवीं शताब्दी में दक्षिण भारत में ऐसी शासन व्यवस्थाएँ भली भान्ति प्रचलित थीं। जनता को अपने प्रतिनिधि चुनने की पूरी सुविधा थी। प्रत्येक हल्के से प्रतिनिधि चुने जाते थे। चुनाव टिकटों अथवा आभुनिक परिचयों (Slip) द्वारा होता था, जिसमें वोटरों की वोमता के सम्बन्ध में पूरा २ ध्यान रखा जाता था।<sup>२४</sup>

कहाँ तक कहा जाय मुसलमानों की भी नीति प्रतिनिधि राज्य की ममर्थक थी।<sup>२५</sup> भारतवर्ष में, जैसा कि कुछ इतिहास से अनभिज्ञ व्यक्ति कल्पना किया करते हैं, कभी भी राजा की जबान कानून नहीं थी। लार्ड रोनाल्डशे सरीखे सुयोग विद्वान भी स्वीकार करते हैं—‘यह कल्पना करने की गुंजाइश नहीं कि भारतीयों में राज व्यवस्था सम्बन्धी गुणों की पर्याप्त उदारता नहीं थी। अगर हम डाक्टर आर० के० मुकर्जी की विवेचना को स्वीकार करें, तो वे (भारतीय) प्राचीन काल में केन्द्रीय शासन की उत्तम प्रणाली को जानते थे और उनके अन्दर मिलकर कार्य करने की उत्तम योग्यता मौजूद थी। अन्त में आप लिखते हैं कि कई शताब्दियों पूर्व भारत में इस प्रणाली ने बहुत उन्नति की थी।<sup>२६</sup>

## कानून

कानून राज्य व्यवस्था की एक उत्तम कसोटी है। लार्ड रोनाल्डशे कहते हैं कि ईसा से तीन शताब्दी पूर्व, कौटिल्य अर्थशास्त्र में भी पहले भारत में राजनीति, विज्ञान के विद्वानों का एक प्रिय

<sup>24</sup> See Arch. Survey report of India for 1904-02. Page, 132-136

22. आइन अकवरी

<sup>25</sup> India, A bird's eye view Page, 122-126,

विषय था ।<sup>२७</sup> मिस्टर हालांड की सम्मति है 'प्राचीन ब्राह्मणों द्वारा निर्मित प्रन्थों की अपेक्षा पुगने और स्पष्ट प्रन्थ संमार में नहीं ।<sup>२८</sup> सर डब्ल्यू जोन्स के शब्दों में मनु का कानून मोलन (Solo) और लार्ड कुरगस (Lycurgus) से भी पुराना है ।<sup>२९</sup> वाईविल इन इण्डिया (Bible in India) का लेखक स्पष्ट स्प से लिखता है कि मनु की आवार शिला पर मिथ्री रोमन, फारसी और यूनानी कानूनों की रचना हुई है और उसका ही प्रभाव आये दिन योहृप में भी अतुभव किया जाता है । प्रोफेसर विलम्ब कहते हैं—'एक कानून प्रन्थ जिसमें पारस्परिक सम्बन्धों की इतनी विशद व्याख्या हो, उसी नमय निर्मित किया जा सकता है जब सामाजिक संगठन अपनी उन्नतव्यस्था में हो ।<sup>३०</sup> पफ० डब्ल्यू० हापकिन्स, प्रोफेसर एल विश्विद्यालय वनानांत हैं—'मनु से पहले भी यहां बहुत से कानून निर्माता हुए हैं । इन में पहले मूत्र और वेदों में भी यह नियम हैं । अस्तु यह मालूम होता है कि मनु कानून वनान वाले अत्यन्त पुरातन आर्य नहीं थे ।<sup>३१</sup> हिन्दुओं के विशाल साहित्य में एक दो नहीं अनेकों न्याय और राजनीति सम्बन्धी प्रन्थ आज भी मौजूद हैं । शुक्र नीति, काम-न्द्रकी नीति, नीति वाक्यमृत, विदुर नीति, बार्दासपत्य सूत्र आदि, आज भी इनका अध्ययन एवं मनन कर पाश्चात्य सुसभ्य संसार ने बहुत कुछ सीखा है और सीखेगा । किसी विद्वान ने

२७. India A bird's eye view Page 185 See also the Agganna Suttanta of the Digha, Nikaya,

२८. Code of Hindu law. see also Sublimity of the vedas,

२९. Haughton's institutes of Hindu law Page, X

३०. Mill's India, Vol. II Page, 262,

३१. India old and new, 208

इतिक पत्र 'फार्वंड' में एक योग्यता पूर्ण लेख कर निष्ठ किया है कि आज्ञ उपयोग हीने वाले मिविल सर्विस के कानून, पेशन, दुष्यां, और प्रावीडेन्ट फंड आदि की समस्त व्यवस्थाओं का विशद विवेचन शुक्रनीति में न जाने कव किया जा चुका है । ३३ विद्वन कानून में हिन्दू न्याय विधान के सम्बन्ध में अपना यह अभिप्राय व्यक्त करते हैं—कानून ग्रन्थ के लिए जैसी गम्भीर भाषा की आवश्यता है, मनुस्मृति उमी गम्भीर और उदार भाषा में लिखी गई है । उसके सामने हमारा सिर आदर से नह हो जाता है । इश्वर को छोड़ कर वाकी समस्त नियम निर्माण करते समय, इसमें बहुत स्वतन्त्रता से काम लिया गया है । इसमें न्याय-निर्मम नरणों की ऐसी व्यवर ली गई है कि देखते ही बनता है । ३४ इस्टर मारिया प्राची हिन्दुओं की कानूनी पुस्तकों के सम्बन्ध में अपना मत प्रकट करते हैं—'इनमें बहुत से ऐसे कानून हैं जिनसे प्रकट होता है कि उनका शासन विधान कितना बुद्धिमत्तापूर्ण एवं माननीय था, वे हमें प्राचीन भारतीय शासन व्यवस्था का एक उच्च विचार देते हैं । ३५ डाक्टर रावर्टसन कहते हैं—'मनुस्मृति अत्यन्त महल्व पूर्ण ग्रन्थ है, इसका विवेचन अत्यन्त सूक्ष्म बुद्धि से किया गया है । इस लिए इसका निर्णय सर्वकाल, समस्त विश्व के मानने योग्य है । जिस ग्रन्तान न्याय के उच्चतम तत्त्व पर इस धर्म शास्त्र का निर्माण किया गया है, और जो समाज इसका मानने वाला है, उसे अवश्य ही पूर्ण वैभव-सम्पन्न और सुवर्ण हुआ होना चाहिये । इसमें कुछ वातें ऐसी हैं जिनकी कल्पना भी पाश्चात्यों के लिए संभव नहीं । मनुस्मृति देख कर

३२. See Forward—Jan 1614.

३३. Cole's mythology of the Hindus Page, 8

३४. Letter to India Page, 90

ही हिन्दू समाज की श्रेष्ठता स्वीकार करनी पड़ती है। इस कानून की रचना अत्यन्त प्राचीन काल में हुई थी, यह जानकर मैं चकित हो जाता हूँ।<sup>३५</sup> हिन्दुओं के साक्षी कानून (Hindu law of evidence) के सम्बन्ध में मद्रास के भूतपूर्व कानूनिक स्टैटस सर थामस स्टैट ज ने लिखा है—प्रत्येक अंग्रेज वक्ता को इसके अध्ययन से लाभ तो होवेगा किन्तु साथ ही आत्म और आदर का अनुभव हुए बिना न रहेगा।

हिन्दू कानून कितना स्पष्ट सुन्दर और सम्पूर्ण है, इसके पाठकों ने बड़े २ कानून परिवर्त और पाश्चात्य विद्वानों की ही से देखलिया अब कुछ थोड़ा बहुत पक्षों एवं स्काइन आहे, मैं एस की जवानी सुन लीजिये + 'जिन विचारों पर आज' हम गर्व करते हैं, उनका श्रेय पुरातन प्रकाश को ही है। इतिहास वडे जोरों से साक्षी देता है कि हिन्दू राजनीति प्रत कारसियों द्वारा अनूहित होकर योस्प की भाषणों में भाषान्तर हुए। न्यायमूर्ति नौशेरवां के विख्यातन्याय का एक मात्र श्रेय उन अप्रचेता देश को ही है। उनका मंत्री इसी भूमि से न्याय का पक्ष पढ़ कर गया था।

पहला मुसलमान कारसी यात्री सुलेमान सौदागर लिखत है कि 'भारत में यदि कोई पुरुष किसी स्त्री को भगा ले जाता वा जबर्दस्ती उसके साथ मुंह काला करता है अथवा चोरी कर है तो उसे मृत्यु दण्ड की सजा दी जाती है।'<sup>३६</sup> लगभग स १०३० ई० का पर्यटक अलबेर्नी भी भारतीय न्याय नियमों के विवेचन करता है—'उनके सिद्धान्त द्या एवं परहेजगारी'

अवलम्बित हैं, वे किसी भी अवस्था में किसी का वध नहीं करते।” १० इतने पर भी कुछ दुराप्रह पञ्चपाती इतिहास लेखक हिन्दू नियमों को कड़े बतलाते हैं। वास्तव में हिन्दू कानून की भाँति उदार नियम संसार में चराग लेकर दूं ढने से भी न मिलेंगे उनकी सी आदर्श व्यवस्था आज इतिहास के पुराने पृष्ठों से बाहर नहीं मिलती। प्राचीन नियमों का निरीक्षण करने के पश्चात कोई भी समझदार उन पर कड़ाई का दोप नहीं लगा सकता है। उन नियमों को कार्य स्प में परिणात करने वाले अवश्य न्यायपथ से राई रक्ति भी हटना सर्वव्यापी सर्वेश्वर के सामने दोपी होना समझते थे। यही कारण है कि वे अपराधों के प्रकृत स्प को देखकर दण्ड की आयोजना किया करते थे।

जुद्र इतिहासकार, ‘चोर को प्राणदण्ड देने की व्यवस्था सुन कर, उसे कठोर और अमानुषिक बतला कर चिल्ला उठते हैं, किन्तु वे सम्राट चन्द्रगुप्त के इस विधान की आलोचना करते समय में गस्थनीज की इस रिपोर्ट को बिलकुल भूल जाते हैं कि तत्कालीन भारत में चोरों का नामोनिशान भी न था, लोग अपने घरों में ताला तक नहीं लगाते थे। बहुत दिन नहीं हुए, नवम्बर सन् १८४२ ई० में कालीकट के बन्दरगाह पर उत्तरने वाला कमालुहीन अब्दुलरज्जाक अपनी आंखों देखी बात बतलाता है—इस राज्य में ऐसा न्याय है कि वडे २ मालदार व्यापारी अपने माल भरे जहाज यहां पर उतारते और सड़कों तथा बाजारों में रख कर बिना किसी को साँचे अथवा रक्षक नियुक्त किये एक मुदत के लिए छोड़ कर चले जाते हैं। ११ लार्ड रोनाल्डशे कौटिल्य का हवाला देते हुए लिखते हैं कि यदि सम्राट प्रजा के खोये हुए धन का पता न

37. Alburinie India, Vol. II. page 161

38. Scenes and Character from Indian History. Page.55

लगा सके तो उसके नुकसान की पूर्ति उसको अपनी जेव से करनी चाहिए।<sup>१५५</sup>—आधुनिक काल में माल अमवाव की कौन कहे, नौजवान लड़के लड़कियां तक गायब होते और अधिकारी सुंह मटका कर चुप हो जाते हैं,—उस चन्द्रगुप्त काल की कल्पना भी की जा सकती है।

यह आदर्श नियम और अवस्था केवल भारत ही में नहीं उसके सुन्दर उपनिवेशों में भी उसी तत्परता से पालन किये जाते थे। आयों के उपनिवेश जावा में कलिंग नामक राज्य था, वहाँ ६१४ ई० में सिसा नाम की एक नारी सिहासनानड़ हुई। उसने प्रजा का पुत्रवन् पालन किया, चोरी का शब्द केवल कोप में रह गया। सुमात्रा में वसे हुए अरबों के सरदार ने परीक्षा के लिए कलिङ्ग राज्य की सीमा में थेहियों से भरी अशफी रख दी। तीन वर्ष तक जहाँ की तहाँ पड़ी रही। एक दिन राजकुमार के पैर में टकरा कर अपने स्थान से अलग जा पड़ी। स्थान से थेली के हटने की बात रानी को मानूम हुई, उसने दण्ड स्वरूप राजकुमार के पैर का अंगूठा कटवा दिया।<sup>१५६</sup> यह है भारतीय न्याय की उज्जवल किन्तु तीक्ष्णधार। आज के शासक और राजनीतिज्ञ इसे कठोर नहीं कठोरतम भले ही कहलें किन्तु ऐसी सुव्यस्था उनकी आंखें जन्म जन्मान्तर में भी नहीं देख सकती। मिस्टर मारिया प्राह्ल हिन्दू साहित्य का अध्ययन कर अपनी मम्मति इन प्रकार प्रकट करते हैं—‘हम हिन्दुओं के प्राचीन ग्रन्थों में सर्वत्र उस पवित्रता और गम्भीर नीतिकता के स्वयं सिद्ध सिद्धान्तों को पाते हैं जिनका आधार है मानवीय प्रकृति.....

30. India. A girl's eye view Page, 171 The Agonya <sup>†</sup> of the  
Digitized by srujanika.

जनके कानून स्वयं कपट और दम्भ के भावी दण्ड का विधान कर देते हैं।<sup>४१</sup> यही कारण है कि सर एम० मोनियर विलियम्स के० सी० आई० ई० को सन् १८८७ ई० में लिखना पड़ा था—  
‘वोक्सियनों की अपेक्षाकृत भारतीयों में अपराधों की संख्या कम है।<sup>४२</sup> मिस्टर जे० यंग महोदय भी मार्फिल महोदय के कोप से १८६६ ई० के आंकड़ों को उद्धृत कर कहते हैं कि अन्य देशों अपेक्षाकृत भारत में अपराधों की संख्या बहुत कम है।

इदेया का मत्ता प्रति लान्व पैद्ये—

किनने ही योरुपीय देशों में १०० से २३० तक

इंगलैन्ड और वेल्स ६०

भारत में केवल ३८।<sup>४३</sup>

आज गई गुजरी अवस्था में भी भारतीयों के इस सदाचार का कारण है, इस तरोंभूमि का प्रताप और उसके पूर्वजों के रक्त की वच्चीखुची लाली का प्रभाव। सन् १८५३ ई० में बम्बई के गवर्नर जी० वी० ग्लैर्किं ने सिलेक्ट कमेटी के सामने गवाही देते हुए बतलाया था कि उच्च वर्गीय हिन्दू में ऊचे दर्जे की और निम्न श्रेणी वालों में भी प्रशंसनीय नैतिकता मोजूद है। आप योरुप के अधिकांश देशों की अपेक्षा यहां अनैतिकता और गरीबी कम पायेंगे।<sup>४४</sup> राष्ट्र की स्मृद्धि एवं सदाचार का एक मात्र आश्रय कानून उत्तमता पर निर्भर है, क्योंकि कानून ही जनता के समग्र जीवन का नियमन और नियंत्रण करते हैं।

कानून की उत्तमता और आदर्श व्यवस्था का इससे सुन्दर

४१ Letters on India. Page, 87

४२ Modern India and the Indians,

४३ The people of India. Page 13.

४४. The People of India Page, 48

प्रमाण और दूसरा क्या हो सकता है कि भारतीयों ने कभी विदेशियों को भी गुलाम नहीं बताया ।<sup>४५</sup> मेगास्थनीज हैरान रह गया कि संसार प्रचांलत गुलामी की प्रथा, जो कि रोम और यूनान में भी जारी है, उसका यहां कहाँ भी पता नहीं ।<sup>४६</sup> भीख मांगना तो यहां बहुत बड़ा पाप समझा जाता था । चार्ल्स ट्रे नामक अंग्रेज पर्यटक ( १८४८ ) में लिखता है—‘एक दिन बाजार में एक हिन्दू भिखरिमांगा मेरे पास आया, वह उन लोगों में से था जिन्होंने कभी किसी के आगे हाथ नीचा नहीं किया ।’<sup>४७</sup> सर मोनियर विलियम्स डी० सी० एल० ( १८१५ ) लै० कर्नल एम० विलियम्स के दक्षिणी भारत सम्बन्धी ५० वर्ष पूर्वके अनुभवों का हवाला देकर कहते हैं—‘यहां कुछ धार्मिक भिन्नताओं के अतिरिक्त कोई भी भीख मांगने वाला न था !.....विशेष अवसरों और धार्मिक मेलों पर नर्बदा के किनारे लाखों आदमी एकत्रित होते थे, कोई लड़ाई भगड़ा, कोई अशानित न थी और न ही था कोई शराबी ।’<sup>४८</sup>

यह था भारतीयों की समृद्धि व्यवस्था का नमूना, उदार नियमों का नतीजा । इन्हीं की छत्र छाया में चल कर भारत ने सम्प्रदान और स्वर्गीय सुख के बहु दिन देखे हैं जिनकी कल्पना पाश्चात्य संसार के लिये अलादीन के चिराग से कम विस्मय जनक नहीं ।

४५. Hindu Superiority,

४६. Intercourse between India and the western world, Page, 58

४७. Scenes and thought in foreign lands.

४८. Modern India and the Indians, PP, 50—51 and also see memoir of the zilla Brooch, Page, 103

# भूमि कर

—

पाश्चात्य अर्थ नीतिज्ञों में रिकाडौं ने सर्व प्रथम भूमिकर नमस्या पर विचार किया था । अन्य समस्त अर्थनीतिज्ञों ने न्यू-नाथिक उसीका अनुसरण किया है । उसका कहना है—‘भूमिकर भूमि की उपज का वह अंश है जो भूस्वामी को भूमि की मौलिक और अक्षय शक्ति से काम लेने के बदले में दिया जाता है ।’<sup>१९</sup> १ किन्तु सभ्य भारत के सुनहरे अतीत में कभी ऐसे ऊट-पटांग नियमों का समावेश नहीं हुआ था । यहां पर तो अग्नि, जल और वायु के समान सभी भूमि से बगाबर लाभ उठाने के अधिकारी थे । यहां प्रजा ने अपनी रक्षा के लिए राजा का निर्वाचन करते समय साफ २ कह दिया था कि ‘हम आपके कोष के लिए पशु और धातु का पचासवां तथा धान्य का दशांश देते रहेंगे ।’<sup>२०</sup>

उपरोक्त अवतरणों द्वारा भली भांति स्पष्ट हो गया कि भारत के भू-कर विधान का उच्च आदर्श पाश्चात्यों के कल्पना लोक से कोसों दूर रहा है, पाश्चात्य संसार ने बगुन्धरा—राष्ट्र और समाज की सम्पत्ति, भूमि को अपनी वपौती मानकर भू-कर का सिक्का घिला दिया किन्तु भारत में यह कर प्रजा राजा को अपने सुख-

१९ “Rent is that portion of the earth which is paid to the landlords for use of the original and indestructible powers of the soil,

२० “तम व्रवन्प्रजा मा भैः कर्तृनेनो गमिष्यति  
पश्चात्यामधियं चाशद्विरणस्य तथैवच ।  
धान्यस्य दशमं भागं दास्यामः कोषवर्द्धम्,  
पं च धर्मं चरिष्यन्ति प्रजा रोजा सुरक्षिताः ॥”

शान्ति और रक्षा के लिये देती थी । भूमि को उपयोग में लाने के लिए नहीं । रक्षा का भार ज्यों र गुरुतर होता गया कर भी उसे अनुपात से बढ़ाता गया । यह कह कर महाभारत काल में दशांन से बढ़कर पष्टांश हो गया और इसका नाम पड़ा 'बलि' । इस सम्बन्ध में व्यास जी युविष्ठिर से कहते हैं—‘पष्टांश बलि किंका भी जो राज राष्ट्र की रक्षा नहीं करता, वह प्रजापाप के चतुर्थी का भागी होता है ।’<sup>५१</sup> कदाचित यह कहने की आवश्यकता नहीं कि यह 'बलि' भी रक्षा के बढ़ाने वी जाती थी, भूमि जोतने के लिये नहीं क्योंकि वह राष्ट्र की सम्पत्ति समझी जाती थी । प्रोफे-सर एफ० बाशबर्न हाँपकिन्स भी स्वीकार करते हैं—‘गांव की ज़मीन सांक में हुआ करती थी ।’<sup>५२</sup> भूमि किसी की डेकेदारी या पुश्तैर्नी जायदाद न थी । मिं गीस डेविड्स की पुस्तक से भी इसी का समर्थन होता है, जिसे आपने बुद्ध काल के सम्बन्ध में लिखा है—‘सब लोग स्वतन्त्र थे, न ज़िमीदार थे न भिखारी मर्दसायारण मज़दूरी लेकर काम करने में अपना महान अपमान समझते थे, केवल आपत्ति आने पर ही वे ऐसा करते थे ।’<sup>५३</sup>

कर की यह व्यवस्था मौर्यकाल तक वैसी ही रही । इतिहास-वीसेंट स्मिथ के अनुसार मौर्यकाल में कर बढ़ कर चतुर्थीश पा था किन्तु प्रसिद्ध भारतीय इतिहासज्ञ लां लाजपत राय ने पष्टांग ही माना है ।<sup>५४</sup> कौटिल्य अर्थ शास्त्र से भी स्मिथ ने भ्रमपूर्ण मानूम होता है, क्योंकि चाणक्य ने चतुर्थीशकर ग्राम वनि षड् भाग यो राष्ट्र नभि रचनि,

नेगुल्मानि नपार्ण चतुर्थेन भूमिपः ।’

<sup>51</sup> old and new. Page 226. <sup>52</sup> also, Abdur Rehman, 575  
of India

ये, नारील लिन्ड प्रथम भाग

मेन के लिये राजा को प्रजा से याचना करने की व्यवस्था उस नमय की है जबकि राष्ट्र आपत्ति व्रस्त हो। एफ० डब्ल्यु बैपॉकेस मद्दाद्य के अन्वेषणातुसार—‘सप्राट धान्य का घटांश और स्वरूप लेने थे।’<sup>114</sup> चीनी यात्री ह्यूनस्यांग और फ़ाहियान भी अपने यात्रावर्णनों में कर के हल्के होने का उल्लेख करते हैं। मुमलम न काल से पूर्व पृथ्वी राज दिग्बिज नामक प्रेनिहासिक काश्य के अवलोकन से पता चलता है कि कुछ हिन्दू राजा उस नमय तक भी दर्शांश ही कर स्वरूप ग्रहन किया करते थे।

गणतानि गन्यु पदनानि वापिका—

गमरमाः प्रपाश्य दधती वनुं धर,

दिननामकस्य जगदेवतज्जयो-

प्याद्युनाध्युते दशम भाग दृश्यताम्।

मुगाल सप्राट अकबर कुछ काल तक तो चतुर्थीश या तृतीयांश का धान्य रूप में ही वसूल करता रहा किन्तु उसके अर्थं मंत्री टोडरमल की नई व्यवस्था बनने पर यह कर नक्कद रूपयों के रूप में वसूल होने लगा। आज इस दुर्घल देश के कन्यों पर कर का कितना करारा बोझ है, सभी अनुभव कर रहे हैं फिर कहने की आवश्यकता ही क्या?

## राज्य विस्तार

जिस जाति ने बायु की तरङ्गों पर बैठ कर जल की लहरों पर सवार होकर संसार की छाती पर अपना सिक्का जमाया हो, दुनिया के एक ओर से दूसरे ओर तक उपनिवेश बसाये हो, आज पराधीनता के पिंजरे में पालनू पक्षी की भाँति टैंटै करने वाले उत्तराधिकाकरी पूर्वजों की राज्य सीमा का ठीक ठीक चित्र केंद्र स्थीर सकते हैं ! फिर भी, अपने बल पर न सही पराये पौरुष ही पर कुछ प्रयत्न करना आवश्यक है ।

विद्वान् चार्लस मोरिस बतलाते हैं—‘इतिहास की आदिम अवस्था में आयों के साम्राज्य का इतना विस्तार था कि कुछ भाग के अतिरिक्त समस्त योरुप और सम्भवतः उत्तरी रूस का पर्याप्त साम्राज्य, तथा एशिया में एशिया माइनर, काकेशिया, मीांड्या, पर्शिया, भारत और मध्यवर्ती भकटीरिया तक समविष्ट था ।<sup>56</sup> डाक्टर आर० ब्रुक एम० डी० भी हिन्दुस्तान की सीमाओं के साथ लगभग समस्त एशिया के देशों का नाम ले लेते हैं ।<sup>57</sup> मर डब्ल्यू जॉन इथोपिया को हिन्दुस्तान का उपनिवेश बतलाते हैं ।<sup>58</sup> कर्नल जेम्प टाड ने स्कंडेनेविया की भूमि पर भारतीय बदुकुल के कंडे का पता हूँढ़ निकाला है ।<sup>59</sup> जिस्टर कॉलमैन कहते हैं कि जमीन यात्री, वैज्ञानिक बी० हम्बोल्ड, हिन्दुओं के प्राचीन स्थानों का अमीरका में पता लगाकर वापस आये हैं। सुलेमान सौदागर राष्ट्र कूट घंशी किसी वक्त्वभ उपाधि धारी राजा के

56. Aryan Race Page, 291.

57. The general gazetteer and geographical Dictionary Page. 474

58. Asiatic Researches. Vol I. Page 426

59. Tod's Rajasthan. Vol I. Page, 529.

राज्य विस्तार का वर्णन करता हुआ लिखता है,—‘बलहरा के गङ्गा की भूमि का श्रीगणेश समुद्र के किनारे से होता है जो ज़ोकन के नाम से विख्यात है। इसका राज्य चीन की भूमि से मिलता है। इसका राज्य जमीन की ज़िद्दा ( ढीप ) पर है।’<sup>६०</sup> इतिहासज्ञ एच० जी० रालीविंसन आई० ई० एस० असीग्रियन राज्य के दो प्रान्तों, एराकोसिया और गिड्रोसिया (Arachosia and Gedrosia) का चन्द्रगुप्त के साम्राज्य में शामिल होना दरलाते हैं।<sup>६१</sup> ममुद्रगुप्त के प्रताप से प्रकृष्टित होकर कितने विदेशी राजाओं ने उसकी सेवा में उपहार समाप्ति किये थे, आज भी भारतीय विद्यार्थी भूले भटके इसका समरण कर लेते हैं। कहने का आशय यह है कि कभी भारत की ओर गङ्गना पर ममार दौड़ पड़ता था, इसके राज्य की सीमायें विस्तृत बसुन्धरा की रेखाएँ समझी जाती थीं। ऐत्रेय ब्राह्मण स्पष्ट शब्दों से बतला रहा है कि मग्नाट सुदास ने समस्त विश्व में विजय दुःदुभी बजाई थी।<sup>६२</sup> कर्नल टाइ ने जैसलमीर के पुराने पोथों को उलट कर पता लगाया है कि इस्लाम के चक्रपाल से पूर्व यदु का राज्य समरकंद से गजनी तक फैला हुआ था।<sup>६३</sup> चित्तौड़ के बप्पा की तलवार ने खुरासान तक दौड़ लगाई थी। बाबर गजनी के इतिहास में लिखता है—“यहां इस्लाम के प्रारम्भकाल में हिन्दुओं का राज्य था। वह उस घटना का भी उल्लेख करता है जब हिन्दू के राय ने सुवुक्तगीन को गजनी में घेर लिया था और सुवुक्तगीन ने चरमों में गोमांस छुड़वाकर अपना पिंड बचाया था।

60. सुरेमान सौदागर पृष्ठ ५१-५२

61. Intercourse between India and the western world.

62. महाभारत। सभा पर्व अ० ५१

63. Tod's Rajasthan, Vol. II, Page 231, 222.

महाराज युथिपिर के अभिषेक पर चौल, पांड्य, कम्भोज ( अफगानिस्तान ) यवन (फारस) चीन, काश्मीर, रोमक (रोम), अज्ञ, बज्ज, कलिङ्ग, ताम्रलिप्र ( लङ्गा ), हिमालय ( तिब्बत ), अफ्रीका और कितने ही वर्वर देशों के गाजा कर लेकर इन्द्रप्रस्थ आये थे । यह घटना इस बात की द्योतक है कि भारत का राज्य एक दिन समस्त भूमण्डल पर विस्तृत था ।

### राजनीतिक एकता—

कुछ पक्षपाती इतिहासकारों का मत है कि भारतवर्ष ने कभी राजनीतिक एकता प्राप्त नहीं की । सर ओस्वाल्ड ने इंग्लैन्ड में भाषण देते हुए कहा था कि भारत में २५० विभिन्न भाषाएं बोली जाती हैं.....धार्मिक विचारों से भी काफी अन्तर है । इसकी आलोचना करते हुए मेजर डी० ग्राहापूल महाशय पूछते हैं कि इंग्लैण्ड में कितनी भाषाएं बोली जाती हैं ? ४६ आपकी शुभ सम्मति के अनुसार इतने बड़े देश में इतनी भाषाओं और धर्मों का होना कोई बड़ा दोष नहीं ! डाक्टर एनीविसेन्ट महोदया ने भी प्रो० राधाकुमार मुक्तजी का हवाला देकर यह बात मुन्तकंठ से स्वीकार की है कि भारत में बुनियादी एकता मौजूद है । धार्मिक साहित्य के अनुसार भारत एक राष्ट्र है । ” ६५ प्रसिद्ध ऐतिहासक विसेन्ट स्मिथ ने चन्द्रगुप्त के राज्य विस्तार का वर्णन करते हुए लिखा है—‘दो हजार साल से भी अधिक पूर्व भारत के प्रथम सम्राट ने उस वैज्ञानिक सीमा को प्राप्त किया था, जिसके लिए उसने ब्रिटिश चत्तराधिकारी व्यथ में आहे भरते हैं और जिसको मुगल बादशाहों ने भी कभी पूर्णता के साथ नहीं प्राप्त किया । अन्यत्र पाश्चात्य इतिहास परिषद लिखता है कि अशोक और

मुद्रणम् काल में भारत ने एकता राजनीतिक एकता प्राप्त करली थी।<sup>१६</sup> प्रसिद्ध विद्वान् पत्र जी, वेल्स की सम्मति में समस्त डाक्टोर्स के असंख्य विजावाचों और चक्रवर्ती सम्राटों में केवल अशोक। मौर्य ही ऐसा वोग्य है कि उसकी गणना संसार के (महापुरुषों में की जा सके) कैट्टेन वेब के कथनानुसार महागण। उदयपुर का राज्य वशं संसार में सब से पुराना है।

राजनीति दर्शन का प्रकारण परिष्ट प्रतिष्ठित बतलाता है कि जिस ग्रन्थ की अनसंख्या खूब फली फूली होगी वह कभी कुछवस्थाओं में नहीं रह सकता। इस भाष पर भी भारतीय शासन व्यवस्था को कसता आनंद यक्ति त्रितीय होता है। स्टीसीयास (Cetesiās) लिखता है—‘वे (हिन्दू) संख्या में इतने अधिक थे जितना दूसरे समस्त राष्ट्र मिलकर भी नहीं।<sup>१७</sup> प्रोफेसर डंकर कहते हैं कि भारत समस्त राष्ट्रों से महानतम देश है।<sup>१८</sup> पाठ्लीपुत्र के सम्बन्ध में मैगस्थनीज का विचार है कि वह हुनिथा में सब से अधिक मजबूत नगर है।<sup>१९</sup> स्ट्रोबो की राय है कि यूक्राटाइड्स (Eukratides) १००० शहरों का स्वामी हैं जो कि हाई डास्पेस (Hydaspes) और हाई फैसिस पञ्जाब के बीच में बसे हैं। अप्रेज यात्री फोस्टर (१६१२ १६ गुजरात की राजधानी अहमदाबाद का वर्णन करते हुए लिखता है—‘यह चारों ओर मजबूत दिवारों से घिरा है और इतना बड़ा है जितना कि लन्दन।<sup>२०</sup> दब्ल्यू० एस० काइन एम० पी० १८१८-८८) लिखते हैं—वनारस

१६. Early History of India, Page, 6,

१७. History of antiquity, Vol I Page 18

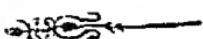
१८. Historical Researches, Vol, II Page, 220

१९. Intercourse between India and the western world

२० Foster's early travels in India, Page, 206

स्वर्गद्वार है।<sup>71</sup> अकबर कालीन अंग्रेज यात्री फादर मानमर्ट स्थान २ पर भारत की सम्पन्नता का चित्रण करता हुआ मथुरा के सम्बन्ध में लिखता है कि मथुरा एक विशाल और भली भान्ति आवाद नगर है इसकी शानदार इमारतें बहुत सुन्दर हैं। ग्वालियर को तो देखकर एक स्थान पर वह हैरान ही रह गया।<sup>72</sup> प्राचीन इतिहास कार ऐरियन स्वीकार करता है कि भारतवर्ष की आवादी बहुत अधिक हैं और शहरों की संख्या का तो अन्दाज़ा लगाना ही कठिन है।

## ग्राम्य शासन व्यवस्था



किसी राष्ट्र के सुख शान्ति और प्रसन्नता का प्रधान कारण है उसकी शासन पद्धति। भारत जिस सुशासन में पला और फला फूला था, उस व्यवस्था का वर्णन करते हुए विद्वान् मोनियर विलियम्स डी० सी० एल० इस भान्ति करते हैं—‘संसार का कोई भी ऐसा भू भाग नहीं जहां की जनता ने राष्ट्र की जनसंख्या को सामूहिक रूप से सुसंगठित कर स्वशासन की ऐसी स्वतन्त्रा प्राप्त की हो जैसी की भारतवर्ष में पाई जाती है। इसका ग्राम्य संगठन शुद्ध स्वराज्य के आधार पर हुआ था जिसका मूल था सामयिक विधान।<sup>73</sup> + मनु के हिन्दु ला से स्पष्ट हैं कि भारत में नियमित ग्राम्य शासन विधान, ईसा से कई शताब्दियों में पूर्व, इसके अनेक भागों में प्रचलित था।<sup>74</sup> वह बुद्ध काल था।

71 A trip round the world.

72 Commentary of Father Monier-Williams. Page, 93

73. Modern India and the Indians. Page 89-90

डाक्टर टोम डब्ल्यू रीजडेविड की लेखनी द्वारा उसका कुछ आभास मिलता है। आप लिखते हैं—‘बोद्ध धर्म के प्रादुर्भाव के समय, राजतन्त्र शासन से भारतीय अपराचित थे।... भारत वर्ष के उस भाग में भी जो बुद्धमत के प्रभाव में पहले आया था, चार प्रजातन्त्र राज्यों के बीच से एक सत्तत्विक राज्य था। उस समय देश में यह प्रवृत्ति थी कि छोटे २ प्रजा सत्तत्विक राज्य इन एक सत्तात्मक राज्यों में सम्मिलित हो जाते थे।’<sup>१२</sup>

इस प्रणाली का विवेचन करते हुए सर एम० विलियम्स महोदय लिखते हैं—‘एक हजार गांवों के प्रधान अधिकारी को ग्रामाधिपति कहते थे जो सम्राट से सम्बंधित था। इसके अधीन १०० गांवों का अधिकारी होता था। उन गांवों के समूह को ज़िला या परगना कहते हैं। इनके अधीन प्रत्येक गांव का प्रधान होता था। ऐसी अवस्था मनुकाल से भी बहुत पूर्व प्रचलित थी, किन्तु भूमि की मलकियत और अधिकार के नियम भारत में भिन्न थे।’<sup>१३</sup>

“भूमि अधिकार की विभिन्नताओं से स्पष्ट है कि गांव का प्रधान या मुखिया राज्यका कर्मचारी या लगान एकत्रित करने का एजेंट नहीं होता था और न उसके लिए राज्य से कोई सम्बन्ध रखता ही आवश्यक हीता था, फिर भी ग्रामाधिपति के लिए गंभीर और प्रभावशाली होना आवश्यक था। वास्तव में वह ग्राम्य जनता द्वारा अपने कुछ विशेष गुणों के कारण निर्वाचित किया जाता था। उसको अपने हल्के में कुछ स्वतन्त्र अधिकार भी प्राप्त थे। डस बात का ध्यान रखना चाहिये कि उसको उम पंचायत का कौसिल से मिलकर काम करना पड़ता था जिस का कि कह प्रधान था। भारत में हर गांव और कस्बे में पंचायते

होती थीं जो योरुपियन म्यूनिसपिल बोर्डों से बहुत कुछ मिलती जुलती थीं ।”

“वास्तव में पंचायत सारत का प्राचीन विधान है ।... भारत में एक आम कहावत है “पंच परमेश्वर” ।<sup>75</sup> ग्राम्य शासन समितियों के सम्बन्ध में कुछ और मार्क की बातें लार्ड रोनाल्ड्स की जवानी सुनिये । गांव की कौंसिल (पंचायत के पंचों की बाबत आप बतलाते हैं—“उस (पंचायत) में ऐसे व्यक्ति हुआ करते थे जिनकी आर्थिक स्थिती के साथ साथ नैतिक योग्यता और एक सीमा तक कानूनी एवं धार्मिक ज्ञान भी अवश्य होता था । गांव हल्कों में बटे होते थे और उस कौंसिल (पंचायत) के अन्तर्गत अनेक सब (Sub) कमेटियां हुआ करती थीं ।”<sup>76</sup>

पंचायतों की प्रवन्धन व्यवस्था का वर्णन करते हुए मिस्टर जे० मालथाई लिखते हैं कि हर गांव में एक पाठशाला होती थी, जिस को माफी जमीन मिली रहती थी ।<sup>77</sup> लार्ड रोना डेश बतलाते हैं कि इस प्राचीन शासन व्यवस्था में लोग सार्वजनिक कार्यों के लिये दान भी दिया करते थे । दीवानी और फौजदारी के मुकदमों का भी यह लोग फैसला कर दिया करते थे ।<sup>78</sup> मिस्टर टामस मुनरो, गवर्नर मद्रास के शब्दों में अंग्रेजी शानस से पूर्व का चित्र मिस्टर जे० के० हार्डी एम० पी० इस भान्ति खेचते हैं—यदि उत्तम कृपि प्रणाली, अद्वितीय कला कौशल सुविधा और सुख-सामग्री पैदा करने की योग्यता, पड़ना, लिखना सिखाने को प्रत्येक गांव में स्कूल आविष्यस्तकार और दान प्रणाली तथा

75. Modern India and the Indians. Page, 40, 41, 42, 43.

76. India a bird's eye view Page 135, 136.

77. Village government in Birtish India Page. 21

78. Ind a a bird's eye view Page, 174

मवौपरि स्त्रियों के प्रति विश्वास एवं सम्मानपूर्ण व्यवहार जो कि मम्भता का एक व्यापक चिन्ह है, देखता है तो हिन्दू योह-पियनों से कम नहीं। १० देखिए गर्वमैण्ट के उच्च अधिकारी भी भारतीय प्राम्यशासन की उत्तमता को स्वीकार करते हुए लिखते हैं। + + + गांव के आन्तरिक प्रबन्ध गांव की पंचायतों के हाथ में थे, और प्रजा का अधिकार था कि वह अपनी आवश्यकता के अनुसार अपने रीति रिवाज बदल लिया करें। ११

एलिफ्लस्टन महोदयके भी इतिहासक अनुसन्धान और अनुवाम का सार देखिए—‘भारत में प्राम्य पंचायतों के ऐसे चिन्ह चाव भी पाये जाते हैं जिनसे यह ज्ञात होता है कि भारतवर्ष में भी अफगानिस्तान के समान संस्थाएं थीं। शताब्दियों के अत्याचार और अशान्ति के बाद भी मध्य भारत के गांवों में धूमते हुए उन की उत्तम दशा देख कर, यात्री के चित्त में उत्पन्न हुए आशर्चर्य के भावों का ये ही चिन्ह (प्राम्य पञ्चायते) समाधान करते हैं। १२

गांवोंकी इस उत्तमदशा की व्याख्या बर्वई प्रान्तमें रहने वाले लेफ्टीनेन्ट कर्नल एम० विलियम्स की भी ज्ञानी सुनिए—‘कर्नल ने एक दो ही नहीं अनेकों गांवों का परिप्रेमण कर लिखा है। अपरचितों का आतिथ्य सत्कार बड़ी सावधानी से होता था। बिना सङ्काच के दान दिया जाता था + + असमर्थ और रोगियों की सेवा गांव के आन्तरिक प्रबन्ध द्वारा होती थी। सर्वत्र पारस्परिक विश्वास काम करता था, रूपये के लेन देन में लिखा पढ़ी की जल्दत न थी। किसान लगान देकर रसीद नहीं लेते थे। रुपया पैसा और अन्य बहुमूल्य बस्तुएं लोग एक दूसरे

79. *Local impressions and suggestions* Page, 5, 6

80. *Towards home rule.*

81. *Account of the kingdom of Kabul* Vol, I. Page. 334

की याददाश्तों पर ही नोट जमाकर देते थे, अन्य किसी जमानत की जहरत न थी। विशेष अवसर पर नमदा के किनारे मेले होने थे लाखों आदमी उनमें इकट्ठा होते, किन्तु कभी कोई भगड़ा वर्खड़ा नहीं होता था।<sup>१२</sup>

सुप्रसिद्ध अंग्रेज डितिहास विसेंट स्मिथ भी इस मुव्यवस्था के सम्बन्ध में लिखते हैं—‘पश्चान्तक के शिलालेख प्राम्य-संस्था त्रिज्ञामुच्चों के लिये मनोरंजक हैं। उनमें इस विषय का पूरा विवरण है कि गांवों का स्थायी शासन, प्रबन्ध और न्याय प्रामीण पंचायतों और समितियों द्वारा किस भांति नियमित रूप में सम्पादित होता था। इन्हें राज्य की ओर से पूर्ण स्वत्व प्राप्त रहते थे। यह दुख को बात है कि स्थानीय शासन की ऐसी उत्तम रीति, जो प्राचीन काल में सर्व प्रिय होने के कारण भारत में सर्वत्र प्रचलित थी, शताव्दियों से लुप्त हो गई है। संसार की वर्तमान गजसन्नायें यदि ऐसी उत्तम स्थानीय शासन की रीति प्रचलित कर सकें तो अपना बड़ा सौभाग्य समर्भेंगी।’<sup>१३</sup>

सर चार्ल्स मिट्काफ़ प्रतिनिधि संस्थाओं के सम्बन्ध में कहते हैं—‘प्राम्य समितियाँ छोटे प्रजा तन्त्र हैं। उनकी आनश्य-कतार्यें उनके अपने पास हैं। और वे किसी भी विदेशी जाति के प्रभाव से स्वतंत्र हैं। वे स्थायी प्रतीत होती हैं, वहाँ, जहाँ कि सब कुछ अस्थि है। वन्शों के बाद वंश बदले, क्रान्तियों पर क्रान्तियाँ हुईं। पठान, सुगूल, मरहट्टा, सिक्किम और त्रिटिश शासक बने किन्तु वेसे ही रहीं।’<sup>१४</sup> लेफ्टीनेन्ट कर्नल मार्क

१२. Memoir of the zilla of Broach, 103

१३. Early history of India, Page 114 to 119;

१४. Report of the select committee of the house of commons  
Vol. III, Page 33

विलिक्स के शब्दों में-समस्त भारत ऐसी छोटी छोटी प्रजातन्त्र संस्थाओं का समूह है।<sup>८५</sup>

इस की अठारवीं शताब्दी के अन्त तक इस देश में इन पंचायतों का कुछ न कुछ अभाव अवशेष था। इसी लिए भारत आज की अपेक्षा समुद्दिशाली और शान्ति सम्पन्न था। पंचायत शासन व्यवस्था भारत की आदिम प्रणाली है। आधुनिक पाश्चात्य संसार ने केन्द्रीय शासन व्यवस्था म्यूनिसिपल और डिस्ट्रिक्ट बोर्डों की नींव इसी के आधार पर स्थापित की है। श्रीमती डाक्टर एनीविसेन्ट बललाली हैं कि ऐंग्लो सैक्सन ग्राम्य शासन ( Anglo Saxon village Govt ) का आधार भारत की पंचायत व्यवस्था है।<sup>८६</sup> सौर्य शासन काल में भी म्यूनिसिपली का सुप्रबन्ध और प्रजापति निधित्व का आदर्श माने हुए इतिहासकार परिणत स्थित के शब्दों में पढ़िये—‘राजधानी पाटलीपुत्र नगर प्रबन्ध एक म्यूनिसिपल कमेटी के आधीन था। इसमें २० सदस्य थे। यह सुख मंत्री मंडल ( War Cabinet ) के समान छँ बोर्डों ( उपसमितियों ) में विभाजित थी। ये बोर्ड और सरकारी पञ्चायतों के सरकारी रूप थे। भारतवर्ष की प्रत्येक जाति, सम्प्रदाय और व्यवसाय में प्राचीन काल से पञ्चायतों द्वारा ही आन्तरिक और स्थानीय प्रबन्ध करने की विधि चली आती है।’<sup>८७</sup>

इन प्रमाणों की मौजूदगी में कदाचित यह कहने की आवश्यकता नहीं कि पाश्चात्य जगत ने अपने शासन-विधान का ढांचा भारत की प्राचीन शासन व्यवस्था को ही देख कर लाया है।

85 Historical Sketches of the south of India Vol, 1 Page 119

86 See, Theoso; hist teaching. Page, 224-234

87. Early history of India. Page, 124-125

लेकिन किर यह साधारण सी आंवा में क्यों डगमगाने लगता है। इसीलिये, कि नींव में छूटनीति ( Diplomacy ) का सीमेन्ट लगाया गया है।

## यात्रियों की दृष्टि

देशवासियों की मन्त्रिता और उनका सदाचार भी शासन व्यवस्था का एक आदर्श है किन्तु उसका चित्रण पुस्तक में पृथक प्रकरण में किया जा चुका है। यहां हम भारतीय शासन पद्धतिका अवलोकन एवं राष्ट्र का दिग्दर्शन समय २ पर इस देश में पश्चारने वाले यात्रियों द्वारा करायेंगे। इसके २०३ वर्ष पूर्व भारत पश्चारने वाला यूनानी राजदूत मेगास्थनीज लिखता है कि पाटलीपुत्र की व्यवस्था के लिए ही कमेटियां बनी हैं। राज्य में जगह २ सड़कें हैं, प्रत्येक मील पर दूरी बताने वाले पत्थर गढ़े हैं। सड़कों का प्रबन्ध एक विभाग के अधिकार में है। पाटलीपुत्र के बाजार मालामाल हैं। लोगों को माल अवश्यक की रक्षा की विशेष आवश्यकता नहीं पड़ती। लोगों का विचार है कि यहां अकाल नहीं पड़ा...।

प्रथम चीनी पर्यटक फ़ाहियान जिसने ४१३ई० में भारत भ्रमण किया था, प्रजा की सम्पन्नता, स्वतन्त्रता, और प्रसन्नता की प्रशंसा करते हुए लिखता है 'कोई भी जीवधारी की हिंसा नहीं करता, शराब नहीं पीता और न ही खाता है प्याज़ और लहूसन। दातव्य संस्थाएं बहुत हैं। सड़कें सुरक्षित और उनके किनारे पथिकाश्रम ( Rest houses ) बने हैं। राजधानी में एक अस्पताल है जहां से ओपिधियां मुक्त मिलती हैं।' भारतीय पशु नहीं बेचते।

दूसरा चीनी यात्री युनस्यांग देश की सृद्धता एवं प्रजा की अमन्तता का वर्णन करते हुए सम्राट हर्ष की दो ऐसन्वितियों का ज्ञान कि प्रयाग और कन्नोज में हुई थीं चित्रण करता है—‘प्रयाग की परिषद में ५ वर्ष का एकत्रित कोष खाली होगया... अपना नाज दान कर हर्ष कहता है कि मैं भविष्य में भी अपने भाइयों के सहायतार्थ धन एकत्रित कर सकूँ । ..इस परिषद में ८८ राज्यों के आदीश्वर और ५ लाख विद्वान एकत्रित हुये थे । ८८ शमन हुईली (Shunam Hurei L.) वत्साता है कि हर्ष ने कुछ पहनने के लिए अपनी वहन से लिया था । वास्तव में प्रजाहित साधन के लिये राव से रंक बन जाना भारतीय सम्राटों का ही काम था ।

चीनी विद्वान जिसने ६७३ ई० में भारत परित्रिमा की थी, इसके सम्बन्ध में आंखों देखी गवाही देता है—‘सब लोग अपने इज्वल चरित्र के लिये समान रूप से प्रसिद्ध हैं, प्राचीनों के बराबर हैं और ऋषियों के चरण चिन्हों का अनुसरण करने के लिए उत्सुक हैं ।’ + + आर्य का अर्थ है श्रेष्ठ और प्रदेश का अर्थ है देश । आर्य देश परिचम (पंजाब, युक्तप्रान्त आदि) का नाम है क्योंकि वहाँ श्रेष्ठ चरित्र के मनुष्य क्रमशः प्रगट होते हैं और सभी लोग इस नाम से उस देश की प्रशंसा करते हैं । ८० +

पहला मुसलमान यात्री फारस का सौदागर कहता है—यहाँ मुझे कोई ऐसा मनुष्य नहीं दिखाई पड़ा जिसने मुसलमानी धर्म

५. Scenes and character of Indian history: Page 40 12

90 इत्सिंग की भारत यात्रा पृष्ठ २८८, १४४,

इसका यह अर्थ नहीं कि विन्ध्यांचल के उस और दंगात विहार एवं उड़ीसा में अयोध्या एवं असम्ब्र तोग रहते थे । किन्तु इस यात्री का जहाँ के लोगों से अधिक परिचय हुआ है वहाँ का वर्णन किया है ।

प्रहण किया हो अथवा जो अर्बों भाषा बोलता हो ।” भावद ( भारतीय राज्य ) और चीन राज्य में परस्पर दृत आया जाय करते हैं किन्तु चीनियों को भावद से भय रहता है ।” बलहरा भारतवर्ष में सबसे बड़ा राजा है । + + वही सब भारतीय राजाओं की अपेक्षा अर्बों से अधिक प्रेम भाव रखता है और इर्मा के समान इसके राज्य वाले भी । + + इस राज्य में दृश्य बहुत है । १३ डाक्टर ऐनीविसेंट महोदया प्रथम अंग्रेज यात्री शिरवोर्न कहे पाणी का उल्लेख करती हैं जिसे इङ्ग्लैंड के सम्राट अल्फ्रेड ने भेजा था । उसने बड़े आराम से टटर ई० में भारत आकर इस देश के दर्शन किये । इतिहासकारों ने लिया है कि वह अपने साथ वे शानदार विदेशी पौदे और जवाहरात इङ्ग्लैंड लेकर वापस आया जिसे कि वह देश प्रचुरता से उत्पन्न करता है । १४ नवम्बर मन १४४२ में भारत आने वाला पर्शियन राजदूत कमालु-दट्टीन अबदुलरज्जाक प्रसिद्ध दक्षिणी हिन्दू राज्य बीजापुर के सम्बन्ध में अपना मन्तव्य प्रकाशित करता है—यहां के शासक का जिस राज्य पर अधिकार है वह आस्ट्रिया ( Austria ) से बहुत बड़ा है । विजयनगर शहर ऐसा है जिस की समता का दूसरा स्थान समस्त संसार में न आँखों ने देखा है और न कानों से सुना है । -- + — बाजार बड़त लम्बे चौडे हैं...प्रत्येक माल के व्यापारी अलग अलग हैं, उनकी दुकानें एक दूसरे के निकट हैं जोहरी हीरा जवाहिर मातियों आदि को सुल्लमखुल्ला बाजार में बेचते हैं । उस आकर्षक त्रे में जहां कि सम्राट का महल है भांति भांति के फवारे हैं । प्यारी सुन्दर नालियां कटे पत्थरों की बनी हैं । पत्थर पालिश किये हुये चिकने हैं ।... यह देश भली भांति ११ सुलेमान सौदागर पृष्ठ, ८५, ८७, ८९, ९८,

आवाद है जिसका ठीक अनुमान लगना भी असम्भव है। सभाट के कोष में तहखाने बने हुए हैं जो गलाए सोने से भरे हैं। देश निवासी, अमीर गरीब सभी जे वर पहनते हैं ।”<sup>९३</sup> तत्कालीन इतिहास से पता चलता है कि उस समय विदेशों से भारत के राज्यों में वरावर दूत आया जाया करते थे। ऐतिहासिज्ञ सी०एच० पेनी ( C. H Payne ) १५वीं और १६वीं शताब्दियों में आने वालयों की सम्मतियां उद्धृत करते हैं जिन्होंने क्षेत्रफल और मम्पत्रता की दृष्टि से विजयनगर को विलक्षण बतलाया है। कुछ एक की निगाह से --‘शान और सृष्टिता में कोई भी पाश्चात्य राज्यानी इसकी समता नहीं कर सकती ।’<sup>९४</sup>

विश्व की यात्रा करने वाला सर जान मानडीवली ( Sir Joan Maundeoille ) सन् १३३१ में भारत देखने के पश्चात् अपने विचार प्रकट करता है—‘प्रत्येक द्वीप में बहुत से शहर और कस्बे हैं और जनसंख्या असंख्य है ।’<sup>९५</sup> डाम मैनुअल ( Dom Manuel ) सम्राट पुर्तगल का भेजा हुआ वास्कोडीगामा इस विशाल देश को मालामाल देख कर चकित हो लिखता है कि यहां की स्त्रियां सोने की हँसलियां गर्दन में, कितने ही कड़े हाथों में जवाहिरात से जड़ी हुई अंगूठियां और छल्ले पहनती हैं। तमाम आदमी सुशील एवं विनम्र हैं ।’<sup>९६</sup> लंगड़े तेमूर के पोते का राज दूत अब्दुलरियाज ने १४४२ई० में दक्षिण भारत का भ्रमण कर अपनी सम्मति प्रकट की थी। --‘खानदेश का राज्य इस समय बड़ा ही सृष्टिशाली राज्य है। नदियों के तट पर स्थान २ पर

९३. Scenes and characters from Indian history. Page 43, 57, 63.

९४. Scenes and characters from Indian history Page 43

९५. Voyage and travels of Sir John. Page, 111

९६. Scenes and characters from Indian history, Page 85

पत्थर के अनेक सुन्दर घाट बने हुये थे, जिनके कारण खेतों की मींचाई बड़ी सुगमता से हो सकता है। घाटों की बजावट इम देश की कला और निवासियों की योग्यता का उदलत्त प्रमाण है। १५ वीं शताब्दी के सध्य में मोहम्मद तुशलक के अव्यवस्थित एवं अगान्तिम राज्य में आनेवाला विदेशी यात्री इनवतूता के अनेक बड़े र. शहरों का जिक्र करता हुआ लिखता है कि अगजक्ता और अशान्ति के काज में भी देश की उत्ती अच्छी अवस्था है तो शान्ति और सुशासन के सध्य में न मालूम यह कितनी उन्नतावस्था में रहा होगा? मन १५२० ई० में देश की सुसम्मानवस्था का चिन्हण करने वाले इैलियन यात्री आंखों का भी अनुभव देख लीजिये—गंगा का किनारा सुन्दर मनोहर दाम वर्गीयों से भरा पड़ा है, अच्छे नगर बसे हैं। भाजिया नगर तो सोने चांदी से भरा पड़ा है। मोलहवीं शताब्दी का योहपियन पठ्यंटक द्वारा दोग खस्माना को एक सुदृढ़ उपजाऊ एवं सुन्दर भूमि पर बसा हुआ नगर बतलाता है जिस में फ्लोएडर्स ( हालौरड की भाँति सब देशों के व्यापारी तथा कारीगर रहते हैं। सीजर प्रेडरिक और द्वारा देमा पारचाल्य दर्शकों ने भी इसी यात्री का समर्थन किया है। ॥६॥ लगभग १०३० ई० में भारत पधारने वाले विदेशी यात्री भी इस देश के खुशहाली और कमाल के वर्णन में वृद्ध प्रन्थ ही रच डाला है। ॥७॥

५. फ़दर मेडरी हू जारिस भी पूर्व का सब ने इडा केन्द्र बनाया है।

यात्री विक्रियम एफ ( 1609--11 ) इस गजरात का बाजार कह कर सम्बाधित किया है। कर्नल डाड इसका हिन्दू और शुद्ध नाम खस्मानी बनाते हैं। Akbar and the Jesuits, Page. 284,

६. Poverty and an British rule in India. "India Reforms"

७. See, Alberuni's India, Vol I and II.

इतिहासज्ञ मुव्वर टीपू सुलतान की शासन व्यवस्था की ओर इगारा करते हुए कहते हैं—‘जब कोई व्यक्ति किसी अद्वात देश की यात्रा करता है और उसमें उत्तम कृपि, व्यापारियों की गुंजान दस्ता, नए नगर और उनकी उन्नती तथा वहां हुआ व्यापार देख कर वह मालूम कर लेता है कि यहां की प्रजा सुखी और शासन पद्धति के अनुकूल हैं।’ अब चौदोर्वीं सदी के भारत की अवस्था का वर्णन जरा त्रिटिश शासक एलफिन्स्टन की जवानी मुन्नलीजिए ( १३५१-१३६४ )—‘प्रजा सुखी थी, लोगों के घर मुन्दर थे, भाजो असदाव की कमी न थी। + शेरशाह ने बंगाल से सिन्धु नदी के निकट पश्चिमी रोहितास तक ४ मास यात्रा की लम्बी मद्दक वनवार्ड थी, उसके प्रत्येक पड़ाव पर एक सराय और प्रत्येक डैड मील पर एक कुचां था।... सड़कों के दोनों तरफ यात्रियों की छाया के लिए उसने बृक्षों की पंक्तियां लगवाई थीं।’ ६६ भारत में मुगल साम्राज्य के संस्थापक बावर भी भारत को धनी और उच्कोटि का देश बतला कर कारीगरों की चालुरी पर आश्चर्य प्रकट करता है। फादर पी० डी० जारिस अकबर कालीन भारत के विषय में लिखता है—‘देश का अधिकांश भाग फलों से भरा पड़ा है, जीवन की सभी आवश्यक वस्तुएं प्रचुरता से उत्पन्न होती हैं। इन प्रान्तों की सम्पत्ति, औपिध, मसालों, मोतियों, सूती एवं सुनहरी कपड़ों ( जर्री, कमरुवाब आदि ), ऊन, रेशम, कालीन, मध्यमल और धातु की वस्तुओं एवं अन्य वह मूल्य चीजों के विस्तृत व्यापार से बढ़ गई हैं।’ ६७ इतिहासकार एलफिन्स्टन यह भी बतलाते हैं कि अकबर ने लड़कों को चौदह वर्ष और लड़कियों का बारह वर्ष की अवस्था से पूर्ण विवाह करने की सखत मनाई।

करदी थी कुर्वानी में मारे जाने वाले जानवरों का वध भी गोक दिया था । हिन्दू धर्म के विरुद्ध उसने विधवाओं को अपना दूसरा विवाह करने की भी आज्ञा दे दी थी । १०१ जहांगीर शामन सुव्यवस्था की कुछ दास्तान, १६२३ ई० इटैलियन यात्री के सुन्ह में भी सुन लीजिए । प्राय सभी शान के साथ जिन्दगी विताते हैं क्योंकि राजा अपनी प्रजा को भूमि शिकायतों पर दखण्ड नहीं देता और उन्हें शान के साथ अमीरों की भाँति रहता देख कर किसी वस्तु से वर्चित नहीं करता । १०२ न्याय की सुनहरी जंजीर इतिहास के पृष्ठों पर जहांगीर की न्याय प्रियता का सुन्दर नमूना है । सर टामस रो सन् १६१५ ई० में सम्राट शाहजहां से छावनी में मिला वह बतलाता है कि कम से कम दो एकड़ भूमि सोने और चान्दी के कामदार कपड़ों, कालीनों आदि से ढकी थी, जिसका मूल्य सोने और जवाहिरातों से जड़ी हुई मख्यमल के बराबर होता है । इस विपुल सम्पत्ति को देख कर सर टामस सुनरा हैरान रह गया । फ्रांसीसी पर्यटक फ्रान्सिकीस वर्नियर एम० डी० आश्चर्य चकित होकर कहता है कि मुझे सन्देह है इतनी सम्पत्ति अन्य किसी सम्राट के पास भी हो सकती है । १०३ टेबरनियर फ्रांसीसी यात्री हैरान है कि 'उसका अपनी प्रजा पर शासन राजा की भाँति नहीं प्रत्युत एक बड़े परिवार पर उदार हृदय पिता की भान्ति है' अन्यत्र फ्रान्सीसी यात्री बतलाता है कि भारत भूमि में काफी सोना चान्दी और जवाहिरात गढ़े हैं । वह आसाम राज्य के धनियों की शिकायत करता हुआ बतलाता है कि लगभग सभी अपने कोय को अपनी जिन्दगी ही में जमीन के अन्दर गाढ़ देते हैं ।" यात्री

101. Elphinstone's History Vol. I. Page 280

102. Reform Pamphlet. Page 12,

103. Travels in the Mugal Empire, Page, 123.

एक हिन्दू बनारस विद्वान का भी जिक्र करता है जिसे शाहजहां ने २ हजार रुपया पेन्शन दी थी । १०४

अब जग महाराष्ट्र की ओर आइये ! विद्वान सी० एच० पेनी बतलाता है कि शिवाजी ने अपने राज्याधिकार की जड़ बड़ी मजबूती से जमाई और अपनी शासन व्यवस्था एवं सेना का नये और योग्यता पूर्ण ढंग से सुसङ्गठन किया । संसार उनकी स्थिति के सम्बन्ध में अंधकार में न रहे, उन्होंने शाही दर्जा और सुविधाएं प्राप्त की थीं । ६ जून सन १६६४ ई० में सर्वसाधारण में गंधर्व (रायगढ़) के किले में बड़ी आन बान और शान से उनका राज्यभिपेक हुआ था । मिस्टर आक्सिडन (Henry-Oxiuden) जो सन्धिके लिये कम्मनीकी ओर से भेजे गए थे, ने स्वयं देखा है । १०५ भारतयात्री विद्वान मोरियामाहम जो १८१० ई० में पूजा पहुंचे थे ने लिखा है कि राज्यभिपेक हुआ, इनके नामका सिक्का ढला और इस समय से उस साहसी की शक्तिके साथ सम्राट का अधिकार सम्मलित कर दिया गया । यद्यपि उनका १६८० ई० में उनका स्वर्गरोहण हुआ किन्तु स्फूर्ति जो उन्होंने भरदी थी ... उनके पश्चात भी ७० वर्ष तक समस्त भारत और दक्षिण में फैली रही । १०६

सितारा में बने हुए शिवाजी के महल के विषय में विसार्कोटेस फाक लैंड कहती है कि वह छोटा महल सुन्दर प्रकाशमान और एक छोटे तालाब से चारों ओर घिरा था । भवन का अन्दरूनी भाग नीचे से उपर तक शानदार और चमकीला था ।..... आखिरकार हम इसके अन्दर एक सरोवर के तट पर पहुंची जो

104, Tarveiner's travel, Page, 205, 341

105, Scenes and character from Indian History,

106, Letters on India, Page, 187

चारों ओर से आलोकमय था । मुझे मालूम हुआ कि मैं एक जाति के महत्व में हूँ । १०० सुविरुद्धात महाराष्ट्र के सरी द्वारा सुशामित देश का १८०३ ई० में सरज्ञान मालकम ने निरक्षण किया था, उसी सम्बन्ध में कमटी आफ कामन्स के सामने बयान देते हुए आप कहते हैं—‘सन १८०३ ई० में डयूक आफ वैलिंगटन के साथ मुझे दक्षिण महाराष्ट्र देश का सुअवसर प्राप्त हुआ । उस प्रदेश के समान उपजाऊ भूमि की भान्ति भान्ति की पेदावार तथा व्यापारिक सम्पत्ति मुझे अन्य किसी दूसरे देश में आज तक दे ने को नहीं मिली । यहां विशेषता मैं कृष्ण नदी तट की ओर सङ्केन करता हूँ । पेशवा ओं को राजधानी पूना एक अत्यन्त स्मृदिशाली और उत्तरी व्यापारिक शहर है । एकोर्टल छु पेरन नामक यात्री के मुंह में महाराष्ट्र के अतीत का हाल सुनिए—‘जब मैं ने मरहटों के देश में प्रवेश किया तो मुझे ऐसा प्रतीत हुआ, मानों मैं स्वर्णयुग के सरल और आननदय प्रदेश में पहुँच गया हूँ । बहां प्रकृति में अब भी कोई परिवर्तन नहीं हुआ था, युद्ध और अकाल का किसी को पता ही न था । लोग प्रसन्न चित्त और पुरुषार्थी और खूब स्वस्थ्य थे । अतिथि सत्कार की भावनाएँ चारों ओर मौजूद थीं । मित्रों पड़ोसियों और अपरिचितों का समान रूप से प्रत्येक स्थान पर स्वागत किया जाता था १०० मालकम होदय मध्य भारत के इतिहास (प्रथम खण्ड) में अहिल्या वाई के सम्बन्ध में अपने विचार इस भान्ति व्यक्त करते हैं—‘अपने राज्य के आन्तरिक प्रबन्ध में अहिल्यावाई की सफलता अद्भुत थी । उसके राज्य को वाहरी आक्रमणों से जो मुक्ति और निश्चिन्तता प्राप्त की थी उसकी अपेक्षा देश की निर्विकल्प आन्तरिक शान्ति

अधिक उल्लेखनीय है।..... उसके समकालीन भारतीय नरेश उसके राज्य पर चढ़ाई करना अथवा किसी दूसरे के द्वारा उसके राज्य पर आक्रमण होते देखकर रक्षा के लिये न दौड़ पड़ना महापाप समझते थे। पेशवाओं से लेकर निजाम और टीपू सुल्तान तक उसे उसी अद्वा और आदर की दृष्टि से देखते थे। हिन्दू तथा मुसलमान दोनों एक साथ मिलकर ईश्वर से उसकी चिरायु और अभ्युदय के लिये प्रार्थना करते थे।

वरार प्रदेश के सम्बन्ध में एक अन्य यात्री के अनुभव का अनुशीलन कीजिये—‘इस प्रदेश की यात्रा में हमें जो आनन्द मिला है, वर्णन की अपेक्षा उसकी कल्पना ही आसान है। इस प्रदेश में महाराष्ट्र सरकार के सुशासन के कारण यात्रा में हमारे माथे हर प्रकार का आदर पूर्ण व्यवहार हुआ। अन्न काफी यात्रा में बड़त मस्ते मूल्य पर मिला जो कि यहाँ की उपजाऊ जमीन में उत्पन्न होता था। सड़कों की ओर ध्यान न दिया जावे पर यहाँ में इतना माल बाहर जाता था कि करीब एक लाख बैल उस के दोने में लगे रहते थे।’<sup>१०६</sup> पेशवाओं के शासन काल का कहना ही क्या। प्राएटडफ इतिहासज्ञ के अनुसार ‘गरीबों की अमीरों, और निर्बलों की अत्याचारियों से रक्षा करने तथा तत्कालीन समाज की आज्ञानुसार सचक साथ समानता का व्यवहार करने के लिए प्रसिद्ध थे।...नाना लैश (१) पेशवा के जमाने को सारे महाराष्ट्र के किसान अब तक आशीर्वाद देते हैं।’<sup>११०</sup>

भारतीय शासन काल में बंगाल की अवस्था का भी वर्णन पाश्चात्य चिद्वान हालचैल की जवानी सुन लीजिए। इस प्रान्त में प्राचीन भारतीय शासन की सुन्दरता, पवित्रता, धार्मिकता,

109. जब अंग्रेज नहीं आये थे, पृष्ठ ५२ See also Asiatick annual

चारों और से आलोकमय था । मुझे मालूम हुआ कि मैं एक जाति के महल में हूँ । १०३ मुविख्यात महाराष्ट्र के सरी द्वारा सुशासित देश का १८०३ ई० में सरजान मालकम ने निरिक्षण किया था, उसी सम्बन्ध में कमेटी आफ कामन्स के सामने व्यान देते हुए आप कहते हैं—‘सन १८०३ ई० में डयूक आफ वैरिंगटन के साथ मुझे दिक्षिण महाराष्ट्र देश का सुअवसर प्राप्त हुआ । उस प्रदेश के समान उपजाऊ भूमि की भान्ति भान्ति की पेदावार तथा व्यापारिक सम्पत्ति मुझे अन्य किसी दूसरे देश में आज तक देने को नहीं मिली । यहां विशेषता में कृष्ण नदी तट की ओर सङ्केन करता हूँ । पेशवाओं को राजधानी पूना एक अत्यन्त स्मृदिशाली और उत्तरील व्यापारिक शहर है । एकोटल छु पेरन नामक यात्री के मुंह से महाराष्ट्र के अतीत का हाल सुनिए—‘जब मैं ने मरहटों के देश में प्रवेश किया तो मुझे ऐसा प्रतीत हुआ, मानों में स्वर्णयुग के सरल और आनन्दय प्रदेश में पहुंच गया हूँ । वहां प्रकृति में अब भी कोई परिवर्तन नहीं हुआ था, युद्ध और अकाल का किसी को पता ही न था । लोग प्रसन्न चित्त और पुरुषार्थी और खूब स्वस्थ्य थे । अतिथि सत्कार की भावनाएं चारों ओर मौजूद थीं । मित्रों पड़ोसियों और अपरिचितों का समाज रूप से प्रत्येक स्थान पर स्वागत किया जाता था १०४ मालकमहोदय मध्य भारत के झाँतिहास (प्रथम खण्ड) में अहिल्या वार्ड के सम्बन्ध में अपने विचार इस भान्ति व्यक्त करते हैं—‘अपने राज्य के आन्तरिक प्रबन्ध में अहिल्यावार्ड की सफलता अद्भुत थी । उसके राज्य को वाहरी आक्रमणों से जो मुक्ति और निश्चिन्तता प्राप्त की थी उसकी अपेक्षा देश की निर्विव्ल आन्तरिक शान्ति

अधिक उल्लेखनीय है।..... उसके समकालीन भारतीय नरेश उसके राज्य पर चढ़ाई करना अथवा किसी दूसरे के हारा उसके राज्य पर आक्रमण होते देखकर रक्षा के लिये न दौड़ पड़ना महापाप समझते थे। पेशवाओं से लेकर निजाम और टीपू सुल्तान तक उसे उसी श्रद्धा और आदर की विधि से देखते थे। हिन्दू तथा मुसलमान दोनों एक साथ मिलकर ईश्वर से उसकी चिरायु और अभ्युदय के लिये प्रार्थना करते थे।

वरार प्रदेश के सम्बन्ध में एक अन्य यात्री के अनुभव का अनुशीलन कीजिये—‘इस प्रदेश की यात्रा में हमें जो आनन्द मिला है, वर्णन की अपेक्षा उसकी कल्पना ही आसान है। इस प्रदेश में महाराष्ट्र सरकार के सुशासन के कारण यात्रा में हमारे साथ हर प्रकार का आदर पूर्ण व्यवहार हुआ। अन्न काफी यात्रा में बहुत सम्मेलन पर मिला जो कि यहां की उपजाऊ जमीन में उत्पन्न होता था। सड़कों की ओर ध्यान न दिया जावे पर यहां से इतना माल बाहर जाता था कि फरीब एक लाख बैल उस के ढोने में लगे रहते थे।’<sup>१०६</sup> पेशवाओं के शासन काल का कहना ही क्या। ग्राएटडफ़ इतिहासज्ञ के अनुसार ‘गरीबों की अमीरों, और निर्वलों की अत्याचारियों से रक्षा करने तथा तत्कालीन समाज की आज्ञानुसार सचके साथ समानता का व्यवहार करने के लिए प्रसिद्ध थे।... नाना लैश (१) पेशवा के जमाने को सारे महाराष्ट्र के किसान अब तक आशीर्वाद देते हैं।’<sup>१०७</sup>

भारतीय शासन काल में बंगाल की अवस्था का भी वर्णन पाश्चात्य विद्वान हालचैल की जबानी सुन लीजिए।<sup>१</sup> इस प्रान्त में प्राचीन भारतीय शासन की सुन्दरता, पवित्रता, धार्मिकता,

109. जब अंग्रेज नहीं आये थे, पृष्ठ ५२ See also Asiatick annual

नियमिता, निष्पक्षता और प्रवन्ध की कठोरता के चिन्ह अभी तक पाये जाते हैं। यहां के लोगों की सम्पत्ति और स्वतन्त्रता सुरक्षित है। यहां खुली अथवा इकी दुक्की लूटमार और डंकेनी का नाम भी नहीं सुना जाता, मुसाफिरों की रक्षा को सरकार अपना कर्तव्य समझती है, उनके पास कोई कीमती माल हो या न हो। उनकी रक्षा और ठहरने का उत्तरादायित्व भी इन्हीं सिपाहियों पर होता है। एक मंजिल के सिपाही दूसरी मंजिल पर पर पहुंच कर मुसाफिर को आदर पूर्वक वहां के सिपाहियों के हत्राले कर देते हैं। वे सिपाही, पिछले सिपाहियों के व्यवहार के विषय में कुछ पूछ ताछ कर और मुसाफिर तथा उसके समान का अपनी रक्षा में लेने का दायित्वा देकर, पहले सिपाहियों को छुट्टी दे देते हैं। यह प्रमाणपत्र पहली मंजिल के अफसरों के पास पहुंचता जो इसकी सूचना नियमित रूप से राजा को दे देते थे। सफर में मुसाफिर को खाने, पीने, स्वारी और माल असवाव की दुलाई का खर्च कुछ नहीं देना पड़ता! ..इस प्रान्त में यदि किसी की रुपये पैसों की थैली या अन्य कोई कीमती चीज खो जाती है, तो पाने वाला उसे नजदीक के पेड़ पर टांग देता है और पास की पुलिस चौकी में इसकी सूचना कर देता है। चौकी की पुलिस ढोल पीटवा कर उस की सूचना सर्व साधारण में करवा देती है। १११

आचरणहीन अलीवदीखां के दुरुगुणों को स्वीकार करते हुए इतिहास लेखक स्टुअर्ट उसकी शासन प्रणाली का इस भान्ति वर्णन करते हैं। + + + उस समय समृद्धि शांति और व्यवस्था का सर्वत्र साम्राज्य था। प्रान्त के किसी सुदूरस्थ कोने से

किमी कहर और वागी जिमीदारी के कभी कभी हो साने वाले बलवंत को छोड़ कर प्रजा की गहरी और सार्वभौम शान्ति में कभी विन पड़ता ही नहीं था । क्लाइव कहता है कि यह ऐसा देश है जो अपने स्वामियों को संसार में सब से अधिक सम्पत्ति शाली बनाए बिना नहीं रह सकता ।<sup>१२</sup>

प्रजा के मानस मन्दिर में प्रवेश करने के लिये मस्तक को किनवा झुकाना चाहिये, यह बात भारतीय सन्नाट सिंहासनारूढ़ होने ही सीख लेते थे । उस लिये हिन्दू लोग राजा को देवतुल्य और गजभक्ति को धर्म स्वरूप मानते थे । प्राचीन भारत की आदर्श और सुख-शान्ति का यही रहस्य था । आईये राजपूती द्वन्द्व-द्वाया में कुछ देर विश्राम करने वाले ह्वाइट महोदय की भी कुछ सुन लीजिये । यहाँ के तेजस्वी स्वाश्रमी किसानों को देख कर यही प्रतीत होता कि राज्य में उनके अधिकारों और स्वतों का अधिक ख्याल रखा जाता है ।... १८१० में अंग्रेजी सेना ने टेहरी राज्य में दो मास तक विश्राम किया था । उस प्रदेश में सुद्धि और सम्पन्नावस्था को देखकर सारी सेना आश्चर्यान्वर्त हो गई थी ।<sup>१३</sup> अतीत कालीन अवध की नववादी पर भी एक हृषि डालते चलिये । आपने उस नगरी के प्रायः अधिकांश दुकानदरों को प्रातः काल यह कहते सुना होगा “जिस का न मौला, उसे दे आसुफदौता” । किन्तु यहाँ प्रमाणिक पुरुष पादरी हीबर के अवध पर भी निगाह डाल लीजिये । यहाँ पर हमने सर्वंत्र सभ्य और स्वभाव के मनुष्य देखे ।.. हमारा आतिथ्यसत्कार तो उन्होंने इतना अच्छा किया, और इतना अधिक स्थान हमें मिला जितना ज्ञन्दन में विदेशियों को भी सुशक्ति मिला होगा । यहाँ 112. जब अंग्रेज नहीं आये थे, पृ० ३६, ४० 113. जब अंग्रेज नहीं आये थे, पृ० ५२, ५६

के वर्तमान शासक साहित्य और तत्व ज्ञान के प्रेरणा हैं।” मानुष अलीखां स्वयं एक बुद्धिमान और गुणी आदमी थे। व्यापार इंग्रजों और उनकी विशेष रुचि थी और उसके सञ्चालन की भी पर्याप्त कुशलता प्राप्त कर चुके थे। उन्हें जीवन के सन्ध्या काल में अमर व्यवश मद्यपान की इज्जत पड़ गई थी। फिर भी उनके आर्थिक प्रदेश की भूमि उर्वरा, जनसंख्या ६० लाख कोष में २० लाख रुपया नकद, अर्थविभाग मुविख्यात और किसान मन्तुष्ट थे। दिखाने के लिये कुछ पुलिस के अतिरिक्त कोई फौज बगैर भी न थी। प्रत्येक ओर दृष्टिपात करने से मालूम होता था कि शासन सुव्यवस्था के कारण प्रजा सुखी और मालामाल है।<sup>112</sup>

भारतीय शासन व्यवस्था कितनी सुन्दर थी, इसका एक मात्र प्रमाण है, प्राचीन विश्व के विस्तृत अङ्ग में कल्पोल करने वाला उनका असीम साम्राज्य। प्राचीन भारत दुनिया के साथ कष्ट नीति (Diplo macy) से काम नहीं लेते थे, यह कारण कि एक दिन संसार के लिये वे उपयोगी ही नहीं किन्तु प्रिया भी थे। आज भी उनके अन्दर से शासन व्यवस्था का वह भाव विलकृत तिरोहित नहीं हो गया। एक छोटे राज्य में सुव्यवस्था स्थापित करने की योर्यता राजनीतिज्ञता का बेसा ही प्रमाण है जैसा कि किसी बड़े राज्य की प्रबन्ध कुशलता। इस सिद्धान्त का अनुसोदन करते हुए सर फ्रेडरिक मैक्समूलर महोदय ने भावानगर के प्रधान आमात्य गौरीशङ्कर उद्यशङ्कर ओमा के सम्बन्ध में जो विचार व्यक्त किये हैं, उनका भी अबलोकन कीजिये—‘इन शब्दों में जीवनभर के कार्य का दिग्दर्शन मात्र ही सम्भव है। हम यदि इस भारतीय राजनीतिज्ञ के प्रत्येक कार्य का निरीक्षण करें तो हमें बड़े २ देशों में भी थोड़े ही प्रधान मंत्री दीख पहुँचे जिन्होंने

नें कठिन कार्य को दाथ में ले कर इतनी योग्यता, निर्भिकता और सफलता के साथ पूरा किया हो। पार्लियामेंट के शिखर पर लगी हुई घड़ी घड़ी व्यवधि जेवी घड़ी की अपेक्षा जोर से बजती है, पर दोनों की मशीनें एक सी हैं और दोनों के स्प्रिंग को एक माही काम करना पड़ता है। डिजरायनी और लैडस्टर्न जैसे मनुष्य भी यदि इन भारतीय राजनीतिज्ञों की स्थिति में होते तो भी इन विद्यार्थियों के शासन में इन से अधिक न जान पड़ते।... विस्मार्क ने यदि जर्मनी का निर्माण किया है तो मैं कहता हूँ कि गोरीशंकर ने किया है भावानगर का।<sup>115</sup> सर जान सारैं से ने १८६८ ई० में कहा था कि 'भारतीयों को अपने मामलात में व्यवस्था करने की पूर्ण योग्यता है।'<sup>116</sup>

आमाम के भूतपूर्व चीफ कमिशनर हेनरी जी० एस० काटन अपने चिरकालीन अनुभव प्रकट करते हैं—'देशवासियों में अपने लोगों में शासन और न्याय की सुयोग्य व्यवस्था करने की कुशलता मौजूद है,—यह निर्विवाद है।'<sup>117</sup> सुयोग्य पोलीटिकल एजेंट विलीयम डिग्वी सी० आई० ई० कहते हैं—'भारतीय अक्वर कालमें जैसे थे आज भी वैसेही हैं। उनकी योग्यता कम नहीं हुई। उनकी मस्तिष्क शक्ति उतनी ही विशाल है जितनी की उनकी व्यवस्था की कुशलता, जो अब तक भी फेल नहीं हुई। यह वे दिन प्रमाणित करते हैं।'<sup>118</sup> इङ्लैण्ड के लार्ड चांसलर ने १८६३ ई० में भारतीय न्यायधीशों के सम्बन्ध में बतलाया था मैं ने कुछ वर्षों तक भारतीय मुकदमों की प्रीवाकौसिल की जुड़ी-शूल कमेटी के सामने बकालत की है। मुझे भारतीय जजों की

115. Towards Home rule.

116. What India wants,

117. "India," Sept, 8, 1899.

118. India for the Indians and for England 1885, a. d.

उस प्रणाली के अवलोकन करने का पर्याप्त अवसर मिला है, जो कर्तव्य पालन उन्होंने दीवानी के मुकहमों से किया था। मुझे यह कहते जरा भी संकोच नहीं होता, और मैं जानता हूँ कि यह तत्कालीन जन्मों की भी सम्मति थी कि भारतीय जन्मों के फ़ैसले अप्रेज न्यायशीशों की तुलना में अधिक प्रियकर है। १९७  
भूतपूर्व सेक्टरी आफ स्टेट सर स्टाफोर्ड ने १८६७ में हाइकम आक्रमन को बतलाया था कि यह कहना कि भारतीयों में पर्याप्त राजनीति का पाइडव्ह्य और योग्यता नहीं, एकान्त असम्भव है। १९८

भारतीय शासन सुव्यवस्था का सुरीला राग इसकी सोभ्य शैतल सुखद छाया में बैठ कर बड़े २ विदेशी विद्वान और आस-सुद्र वसुन्धरा का मंथन करने असख्य यात्री तक अलाप चुके हैं। इसके प्राचीन आदर्श शासन प्रवन्ध का एक सीधा साधा प्रमाण यही है कि लगभग दो अरब वर्ष। के जीवन में यहाँ केवल एक क्रान्ति हुई और वह महाभारत का युद्ध। भारत में असंख्य आक्रमणकारी आये, कितने ही बंशों ने बेतना की भान्ति यहाँ के बायु मण्डल में अपने को विस्तृत किया किन्तु आंसू की तरह गिर कर अपना अस्तित्व तक खो गये। शक्ति के मामने स्वभाविक दीनता प्रदर्शित करने का बीज विधाता ने भारतीयों के रक्त में मिलाया ही नहीं! ये गाए जैसे निरीह पशु तक की पृजा करते हैं किन्तु राजदूत सर टामस रो के शब्दों में 'ये लोग वह हैं जो मार्ग में खड़े हुए शेर से भी भयभीत नहीं होते। १९९

भारत आज भिखर्मंगा है, जो कुछ भी देसका बचा खुचा

119. India in transition

120. What India wants

121. The People of India

वंभव, सभ्यता और ज्ञान की धुंधली किरणें यहां दिखलाई देती हैं, वह उन भारतीय आदर्श शासकों की करतूत हैं जो रक्षा कर जन्मी और प्रकृति रक्षन करने से ही राजा कहलाने थे । भारत सरकार के भूतपूर्व सुयोग्य अधिकारी डब्ल्यू० डिगवी सी०आ०इ०, इ० ने मुक्त कंठ से स्वीकार किया था कि + + + यदि हमने रेल और मड़कें बनाई हैं तो प्राचीन भारतीयों ने नहरें खोदी थीं और आवपाशी का विशाल मजबूत काम किया था जो कि आज ही नवस्था में होने पर भी हमारे लिये एक आश्चर्य है । ये सब प्रशंसनीय समाटों के शाही कार्य थे । हमने भारतवर्ष से कुछ भी काम नहीं किया जिस विकास के अतिरिक्त... १२२ कहने का तात्पर्य यह है कि यदि इतिहास मुड़कर देखना नहीं भूलता तो एक दिन भारत ध्वजा पर फिर मोटे अक्षरों में लिखा होगा:—जामु राजप्रिय प्रजा दुखारी, नो नुप अवसि नरक अधिकारी ।



# शिक्षा

शिक्षा ही मनुष्य को मनुष्य बनाती है ।

शिक्षा का अर्थ है मनुष्य को उसकी वास्तविक परिस्थिति में सुपरिचित करा देना । भारतीय शिक्षा का अर्थ सदैव ज्ञान प्राप्ति रहा है क्योंकि ज्ञान से कर्म और भाव की शुद्धि होती हैं । भावों के परिष्कृत होने पर ही मनुष्य, मनुष्य बनकर समाज राष्ट्र और संसार के प्रति अपने कर्तव्यों का पालन कर सकता है । शिक्षा और संस्कृत इन दोनों के समवन्य का नाम उत्थान है । यही कारण है कि विद्या विहीन व्यक्ति इस में पशु तुल्य समझा जाता था । सन्तान को शिक्षा न देने वाले माता पिता समाज की दृष्टि में वालक के शत्रु और राजदण्ड के अधिकारी बनते थे । २

भारतीय प्राचीन शिक्षा पद्धति विद्यार्थियों में सदाचार, संथम त्याग और स्वतन्त्रता की भावनाएँ उत्पन्न करती थीं । जैस्टिस सर जान उड्डल्फी ने अपने एक व्याख्यान में बतलाया था कि प्राचीन भारतवर्ष में स्वतन्त्र विचार आचार का एक अङ्ग था । स्वतन्त्र विचारों के कारण ही लोग मुनि कहलाते थे । जो स्व-सन्त्रा पूर्वक विचार कर अपनी सम्मति नहीं बना सकता था वह

1. विद्या विहीनः पशुः—र्वचंत्र

2. माता शत्रु पिता वैरी येन वानो न पार्यतः—हितोद्देश

भीज के समय में नकङ्कहरे नक शिक्षित ही नहीं प्रत्युत नंदूत साक्षिय के मर्मज हुआ करने थे तथा अशुद्ध बोकने पर एक लकड़हरे ने राजा को उत्तर दिया था—“भरं न वान्ने गजन् बावनि ब्राधने” ।

वास्तव में मुर्मिन नहीं था ।<sup>३</sup> यह था प्राचीन शिक्षा प्रणाली का आदर्श ! इस प्रणाली का विवेचन करते हुए रेवरेण्ड एफ० ई० 'की' लिखते हैं—‘वेदों के विभिन्न अङ्ग जिस समय पूर्णता को प्राप्त कर चुके थे उस समय ब्राह्मणों की शिक्षा पद्धति पूर्ण रूप से सुसंगठित थी + + + धीरे धीरे आद्यौगिक या कम से कम गृहस्थ शिक्षा की उत्पत्ति हुई । यज्ञोपवीत संस्कार के अनुसार वे ब्राह्मणों गुरुओं के यहां पढ़ने जाते थे और कम से कम १२ वर्ष तक विद्याव्ययन करते थे । आगे चलकर ‘की’ महाशय बतलाते हैं कि जिन लम्बी शताब्दियों में ये शिक्षा प्रणालियां काम कर रही थीं, इम बात का प्रमाण है कि उनमें सार्वयुक्त तत्त्व अवश्य थे । उन्होंने कितने ही महापुरुषों और सत्यान्वेषकों को उत्पन्न किया है । वैदिक चेत्रों में भी उनका काम किसी भी अवस्था में कम नहीं हो सकता । उन्होंने शिक्षा सम्बन्धी कितने ही महान आदर्शों को विकसित किया जो शिक्षा विषयक विचार और अभ्यास के लिये बहुत मूल्यवान हैं ।’<sup>४</sup>

सन् १८८८ ई० में बंगाल के एक इंसेपेक्टर आफ स्कूल्स जो पञ्चाब के स्कूलों का निरीक्षण करने के लिये भेजे गये थे अपनी रिपोर्ट में लिखते हैं—‘भारत की राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली का निर्माण उन शास्त्रीय विधानों के अनुसार हुआ था जो जीवन के साधारण दैनिक कामों में भी गौरव का सञ्चार कर देते हैं । इसी लिये भारत की शिक्षा पद्धति को एक धर्मिक महत्व प्राप्त हो गया था ।’

भारतवर्ष में शिक्षा विलक्षुल निःशुल्क दी जाती थी । शिक्षा के बदले शुल्क लेना पाप समझा जाता था । ‘की’ महाशय के

3. Bhart Shakti, Page, 71

4. Ancient Indian education

कथनानुसार यहाँ स्थान स्थान पर पाठशालाएँ थीं जिन्हें तोल कहा जाता था और वहाँ से तोलकर एक विश्वविद्यालय की सृष्टि होती थी। इनके अतिरिक्त प्रत्येक नगर और गांव में वहाँ वडे ब्राह्मण परिषद द्वारा करते थे जो विद्यार्थियों को सुन्नत शिक्षा दिया करते थे। इनके अतिरिक्त ग्रन्थियों के आश्रम और गुरुकुलों में भी भारत राष्ट्र के भावी नागरिकों का निर्माण किया जाता था

### तोल—

जै० मालथाई बतलाता है कि ये तोल स्थानीय ग्राम्य पंचायतों के अधिकार में होते थे। इनके व्यय के लिये होती थीं माली जर्माने।<sup>१</sup> बंगाल के उक्त स्कूल इन्सपेक्टर लिखते हैं कि “ये पञ्चायतें, समाज की विभिन्न श्रेणियों को शिक्षित बनाने में वहाँ सहायता पहुंचाती थीं। इसी राष्ट्रीय शिक्षा प्रगती का कल है कि आज भी देश में असल्य पाठशालायें और चट शालायें और तोल विद्यमान हैं। इन संस्थाओं की आधुनिक अवस्था चाहे कितनी ही गिरी क्यों न हो, किन्तु हजारों वर्षों की उदासीनता, उपेक्षा और प्रतिकूल परिस्थितियों के बीच में भी जीवित रहकर ये संस्थायें इस बात को प्रत्यक्ष प्रभागित करती हैं कि जन्म काल के समय इनकी कितनी अधिक ज्ञानता रही होगी। पार्लियामेंट के सदस्य केरहार्डी तत्कालीन शिक्षा विस्तार के सम्बन्ध में लिखते हैं ‘भैक्समूलर ने सरकारी कागजों और एक मिशनरी की रिपोर्ट के आधार पर, जो बंगाल पर अंग्रेजों का प्रभुत्व स्थापित होने के पहिले यहाँ की शिक्षा के सम्बन्ध में लिखी गई थी, लिखा है कि उस समय बंगाल में ८०,००० पाठशालायें स्थापित थीं। अर्थात् प्रान्त के प्रत्येक ४०० भनुओं के पीछे एक पाठशाला

3. Village Government in British India chapter, II. See also loci,

थी ३ लाहौर गवर्नमेंट कालेज के प्रथम प्रिसिपल डाक्टर लीटनर बनना ते हैं कि मन १८५३ ई० में मिस्टर आदम ने इन स्कूलों की मंजूरी ४ लाख अनुमान की थी । मन १८८२ में सर टामस मुनरों ने मद्रास में एक जांच कमेटी नियुक्त की थी, उसने १८४६८ पाठशालाओं की सूचना दी थी । इनमें १८८६५० विद्यार्थी शिक्षा लाभ करते थे । अस्वद्व प्रान्त में भी इसी प्रकार सर्वत्र पाठशालायें पाई गई थीं । १८५४ की जांच पड़ताल के अनुसार पंजाब प्रान्त में ३३७२ पाठशालायें थीं इनके अतिरिक्त घरों पर शिक्षा देने वालों की संख्या अलग है । लीटनर महादय ने तत्कालीन पंजाब प्रान्तीय छात्रों की संख्या ३,३३,५५० बतलाई है । ५

प्राचीन प्राम्य पाठशालाओं के विभय में लाडलो की भी सम्मति मुनिए—'प्रत्येक हिन्दू गांव में जिसका पुराना संगटन अभी तक बना हुआ है, मेरा विश्वास है कि आम तौर पर सब बड़े लिखना पड़ना और हिसाब करना जानते हैं । किन्तु जहाँ हम लोगों ने प्राम्य पंचायतों का नाश कर दिया है, जैसे बंगाल बहाँ उनके साथ २ पाठशालायें भी लुप्त हो गई हैं, । ६

इनकी शिक्षा सम्बन्धी पाठ्यक्रम का व्योग भी रेवरेण्ड 'की' की जबानी भी मुनिए—दोनों प्रकार की शिक्षाएं परस्पर निर्भर न थी । ये आरम्भिक पाठशालाएं व्यापारी, शिल्प और कृषि के मात्रामें मुनरो मद्रास प्रान्त की शिक्षा पूर्वकान को अपेक्षा तिहाई बनना ते हैं ।—El hinstons History of India, Page, 205,

लोटनर साहब के सरकारी शब्दों में सरकारी और इमदादी स्कूलों में पड़ने वाले छात्रों की संख्या पंजाब में ११३००० है ।

6. India's Impressions and Suggestions. Page, 6-7.

7. Unhappy India see ,also Blue books.

9. Ludlow's History of British India, See also, India Page, 6-7

लिये थीं और संस्कृत पाठशालाएं धार्मिक तथा विद्वान लोगों के लिए। अन्यत्र आप लिखते हैं कि भारतवर्ष में सुन्दर कला और दस्तकारी की ओर शताव्दियों से जन प्रवृत्ति थी और भविष्य में इनकी ओर भी उन्नति की आशा है। + + + कला कौशल के लिए एक विशेष सीमा तक नियमित रूप से ड्राइंग की भी शिक्षा दी जाती थी।

### प्राचीन आश्रम—

१—अयोध्या के पश्चिम मालिनि नदी के तट पर कल्प ऋषि का आश्रम था, २—नर्मदा तट पर च्यवन, ३—वम्बई के निकट अगस्त्य, ४—प्रयाग में भारद्वाज का, ५—अमरावती के समीप ऋषि आपस्वम्ब, ६—याज्ञवल्क्य ऋषि का मिथिला में, ७—रेवल ऋषि का सिन्धु तट पर, ८—कलकत्ते के समीप कपिल का, ९—तुंगभद्रा तट पर मतंग ऋषि का, १०—भागलपुर ज़िले में शृंगी ऋषि का, ११—सरयू तट पर भारकण्डेय का, १२—बिहूर में वाल्मीकी का, १३—नैस्याधारण में शौनक ऋषि का, १४—जावाल ऋषि का नैस्याधारण में, १५—सन्दीपन का उज्जेन में और अर्थशास्त्री चारणक्य का पटना में आश्रम था। इनके अतिरिक्त विद्वान विद्यार्थियों को शिक्षा दिया करते थे। इन आश्रमों में अधिकांश के विद्यार्थी भिक्षान्न द्वारा अपना उदार पोषण किया करते थे। भोजन के समय में नगर को चले जाते थे वहां गृहदेवियां भोजन से थाल सजाये हुए गृहद्वारों पर खड़ी इनकी प्रतीक्षा किया करती थी। कहीं कहीं दस हजार विद्यार्थियों तक के भोजन वस्त्र का एक ही आदमी प्रबन्ध करता था। जिसे कुलपति ( Chancellor ) कहते थे।

अहाः कितनी सुन्दर थी यह प्रथा ! इस से विद्यार्थियों के अन्दर सरलता, विनम्रता और स्वदेश प्रेम की कितनी श्रीवृद्धि होती रही होगी । देश का अन्न खाकर वे इसके ऋण को चुकाना अपना सर्वप्रथम कर्तव्य समझते थे । इतना होने पर भी ब्रह्मचारी विद्यार्थियों के प्रति देश में कितनी अद्वा और सम्मान था, वसिष्ठ मुनि के आदेश से ही अनुमान कर लीजिये । ब्रह्मचारी और राजा एक ही मार्ग पर आते हुए एक दूसरे के सन्मुख हो जायं तो राजा को उचित है कि वह स्नातक के सम्मानार्थ मार्ग को छोड़ दें ।” ‘की’ महोदय स्पष्ट रूप से बतलाते हैं कि ‘निर्धन धनी सभीं को सादा जीवन व्यतीत करना पड़ता था । नियंत्रण कठोर था किन्तु कटुता का आभास नहीं ।’

इन आध्यापकों के सम्बन्ध में भी रेवरेण्ड ‘की’ का कथन है—‘आध्यापक किसी आर्थिक दृष्टि से शिक्षा न देते थे प्रत्युत वे इसे अपना कर्तव्य समझते थे । हाँ, शिक्षा समाप्ति पर धनी कुछ गुह दक्षिणा देते थे वह शिक्षा के बदले नहीं प्रत्युत अद्वा मेण्ट के रूप में ।’ १०

### गुरुकुल—

यह भी प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली के केन्द्र थे यहाँ विद्यार्थियों को विविध प्रकार की शिक्षायें दी जाती थीं । किन्तु राष्ट्रीय सभ्यता के आदर्श को अमर रखता था इनकी शिक्षा का उद्देश्य ! आधुनिक गुरुकुल कांगड़ी का निरीक्षण करते हुए भारत के भूतपूर्व मंत्री रेमजे मैक्डानल्ड ने लिखा था—‘मैकाले के भारतीय शिक्षा पर कलम उठाने के बाद से अब तक भारतवर्ष यदि कोई नई महत्वपूर्ण संस्था खुली है तो वह गुरुकुल है ।

जापान के प्रभिद्व विद्वान किसूरा ने गुरुकुल में भाषण देते हुए कहा था—‘अपने अल्प काल के निवास में मुर्ख यहां से अनेक शिक्षार्थी मिली हैं। जो मेरी जन्म भूमि जापान के लिये विलक्षण नहीं है। मैं आशा करता हूँ कि भविष्य में जापान के बहुत से विद्यार्थी गुरुकुलों में आकर भारत की प्राचीन मंस्कृत का अध्ययन करेंगे।

### विश्वविद्यालय—

जिस देश में ब्रान्त्यशून्य रहना गुनाह माना जाय, जिस समाज में बुद्धि विद्या और कर्म धर्म के ही आधार पर मनुष्य का स्थान नियन्त किया जाय वहां शिक्षा संस्थाओं की गणना वहां असंभव नहीं तो दुरुह अवश्य है। प्राचीन भारत में तत्त्वशिला, नालन्दा, अजन्ता, अवन्तिका, काशी कंची, नवद्वीप, केन्द्रेरी, नासिक, पाण्डुपुर, आदि विश्वविद्यालय थे। सिम्टर निवेदिता बनलाती है कि ‘हिन्दुओं के प्राचीन विश्वविद्यालयों में से प्रत्येक अपनी किसी विशेषता के लिये प्रसिद्ध था।’ १

### नालन्दा—

शमनद्विन नामक चीनी परिवर्त लिखता है कि यहां विद्यार्थी और अव्यापकों की संख्या १०००० थी वहां सूत्रों और शास्त्रों के २६ संग्रहों के पढ़ानेवाले १०००, तीस संग्रहों को पढ़ानेवाले ५०० और पचास संग्रहों को पढ़ाने वाले १० अध्यापक थे। विशाल मन्दिर में प्रतिदिन १०० धर्मोपदेशक उपदेश दिया करते और विद्यार्थी इनमें सम्मिलित होते थे। चीनी यात्री ह्यून स्थांग बतलाता है कि यहां सुदूर विदेशों से विद्यार्थी पढ़ने आते थे। इसकी चौमंजिलि इमारतों, रंग विरंगे दरवाजों, कढ़ियों, छतों

ओरस्मिंसे की सुन्दरता देखकर लोग मोहित हो जाते थे । यहां कई बड़े पुस्तकालय और छः बड़े विद्यालय थे ।' अध्यापकों के सम्बन्ध में पर्यटक कहता है कि 'उनका जीवन पवित्र और मरल था । उनकी विद्वता का सिक्षा दूर देशों में जमा हुआ था ।'

### छात्रावास—

छात्रावास का भी वर्णन यात्री की जबानी सुनिए—विद्यार्थियों से किसी भी प्रकार का शुल्क नहीं लिया जाता था, प्रत्युत उन्हें आवश्यक वस्तुएं-भोजन वस्त्र औषधि आदि मुफ्त दी जाती थी । उच्च श्रेणी के विद्यार्थियों को एक अच्छा कमरा और छोटी श्रेणी के विद्यार्थियों को साधारण कमरा दिया जाता था ।'<sup>१२</sup>

### तक्षशिला—

भारत के प्राचीन इतिहास में तक्षशिला अपने विश्वविद्यालय के लिये विशेष विलक्षण है । प्रसिद्ध वैयाकरणी पाणिनि और अद्वितीय वैद्यकला प्रवीण जीवक के जन्म स्थान होने का भी इसे परम सौभाग्य प्राप्त हैं । सुप्रसिद्ध भारतीय विद्वान डाक्टर राधा कुमार मुख्योपाध्याय बतलाते हैं कि 'प्राचीन तक्षशिला सदृश्य विश्वविद्यालयों में ६४ कलाओं की शिक्षा दी जाती थी ।'<sup>१३</sup> एक दूसरे पाश्चात्य विद्वान कहते हैं कि यहां दूरस्थ देशों के लोग और बड़े बड़े राजवंशों के राजकुमार शिक्षा प्रहण करने के लिये आते थे ।<sup>१४</sup>

निवेदिता कुछ भारतीय विश्वविद्यालयों के उनकी विशेषता की दृष्टि से वर्णिकरण करती हैं—'दक्षिण वेदाध्यन के लिये महान

12. Buddhist records of the Western world. Vol. II,

13. Nationalism in Hindu culture, Page, 81

14. Historical glances Page, 1, 2

था आज भी कांगीवरम और समस्त दक्षिणि संस्थाएँ मशहूर हैं। इसी भान्ति बंगाल में नदिया न्याय के लिए और दक्षिण के नासिक और पाण्डुपुर अपनी अपनी अलग विशेषताओं के लिए प्रसिद्ध थे। व्याख्यान, दर्शन आदि के लिए बनारस मशहूर था। अब भी वहां वडे विद्वान हैं। १५ १७वीं शताब्दी के मध्य में आने वाला फ्रांसीसी यात्री भी बनारस के विश्व-विद्यालय और वहां के विशाल पुस्तकालय की सूचना देता है। १६ श्रीमती एम० ई० नोबुल केनहेरी और ऐलीफेन्टा दो विद्यार्पिठों का और पता देती है। १७ 'कि' महोदय प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली की प्रशंसा करते हुए लिखते हैं—‘त्राद्धाण शिक्षकों ने केवल एक ऐसी शिक्षा पद्धति की स्थापना ही नहीं की जो राज्यों के विधंवंस और समाजों के परिवर्तन के पश्चात्य भां जीती जागती बनी रही। वरन् इन्होंने सहस्रों वर्षों तक उच्च शिक्षा प्रदीप का भी प्रज्वलित रखा। उनमें से ऐसे दार्शनिक उत्पन्न हुए जिनकी द्वाप भारत की शिक्षा पर ही नहीं वरन् समस्त संसार के बोट्टक जीवन पर लगी है।’<sup>१८</sup>

### स्त्री शिक्षा—

भारत में ब्रिटिश शासन का पूर्ण प्रभुत्व स्थापित होने से पूर्व स्त्री शिक्षा की व्यवस्था का वर्णन लाहौर गवर्नरमेंट कालेज के प्रथम प्रिसिपिल की जबानी सुनिए—‘पंजाबी स्त्रियां न्यूनाधिक संख्या में स्वयं शीक्षित नहीं होती थीं। प्रत्युत दूसरों को भी शिक्षा देती थीं। ब्रिटिश अधिकार में आने के पूर्व दिल्ली में ६

१५. Post falls of Indian History, Page, 352

१६. Travels in the Mugal Empire, 341,

१७. Post falls of Indian History, Page, 165

१८. Ancient Indian Education, Page, 57

मार्बंजनिक कन्या पाठशालाएँ चलाती थीं। १८८२ई० में शिक्षा नम्बन्दी जांच कमीशन के सामने गवाही देते हुए जो वयान दिया था, उसी के कुछ उदाहरण यहाँ पर पेश किये जाते हैं—देशी गन्यों ..... और ब्रिटिश राज्य में निस्सन्देह बहुत सी स्त्रियां पढ़ सकती हैं। चनाब और अटक के बीच के ज़िलों में सिक्ख महिलाओं के लिए देमी स्कूल सदैव से चले आरहे हैं। पुरोहितों की स्त्रियां अपनी समाज की अन्य स्त्रियों के पास जाकर पढ़ावें—यह टोक ही है। + + + धार्मिक ग्रन्थों का अध्ययन, सीना पिरोना गोटा पढ़ा करना, गृहस्थी के लिए अत्यन्त सावधानी के साथ भोजन पकाना, सफाई से रहना, दुःख में कोमल व्यवहार, घरेलू भगड़ों का नर्मी से निपटारा आदि गृह शासन की विशेष वार्ते ये जानती हैं। १६ सन १८८५ ई० में संयुक्तप्रान्त और पंजाब में लोगों के घरों पर उनकी निजी पुत्री पाठशालाएँ थीं। शिक्षा का वर्णन जो ब्रिटेशी इतिहासज्ञों और विद्वानों की जबानी कराया गया है, यह उस अशान्ति और राजनीतिक संघर्ष के समय का है जब भारत के भाग्याकाश में चारों ओर से काली घटा घिर चुकी थी। इससे एक दो शताब्दी पूर्व की अवस्था स्वयं पाठक सोचते। भारतीय प्राचीन राजे महाराजे और मुगल सम्राट तक इस ओर कितना ध्यान देते थे इसका आभास बेलारी जिले के कलेक्टर ए० ड० कैम्पवेल की १८२३ की रिपोर्ट से मिलता है—  
 '+ + पूर्वकाल में राज्य की आय का एक बहुत भाग विद्या की उन्नति और प्रचार में व्यय किया जाता था, जिससे राज्य के सम्मान की वृद्धि होती थी। हमारे शासन में वह भाग घट कर बहुत ही कम रह गया है और उसका भी उपयोग विद्या को प्रोत्साहन देने के बदले अविद्या की वृद्धि करने में किया जाता

है। पहले राज्य की ओर से विद्या को प्रचुर सहायता मिलनी थीं, उसके बन्द हो जाने के कारण, अब विद्या को केवल उदार व्यक्तियों को अनिश्चित दान पर निर्भर रहना पड़ता है। भारत के इतिहास में विद्या के इस प्रकार के पतन का दूसरा समय दिक्षा सकना कठिन है.....।” १७२३ ई० की कम्पनी की एक सरकारी रिपोर्ट को देखिए—जिसमें प्राम्य शिक्षा का उल्लेख किया गया है:—

‘विटिश भारत के अनेक भागों के किसानों की दशा शिक्षा प्रचार की दृष्टि से इतनी ऊँची है कि इस विषय में किसी भी देश के किसानों की तुलना नहीं की जा सकती।’ १९

केवल १०० वर्षों में ही भारतीय शिक्षा कहां से कहां पहुंच गई। इन दो रिपोर्टों का तुलनात्मक निरीक्षण हो पाठकों को इस भयानक पतन का दिग्दर्शन करा सकता है। इस विगड़ी दशा में भी अंग्रेज हम से कुछ सीखते रहे। इन्होंने यहां की प्राम्य पाठशालाओं की प्रणाली पर इंग्लॅण्ड में जाकर शिक्षा संस्थाओं की स्थापना की। ३ जून सन १८१४ को कम्पनी के डाइरेक्टरों द्वारा बंगाल गवर्नर को भेजे हुए पत्र के एक अंश में इसे भी पढ़िए:—

“भारत में जो शिक्षा प्रणाली वहां के आचार्यों के आधीन अत्यन्त प्राचीन काल से प्रचलित है, उसकी इस देश में अधिक प्रशंसा हुई है। यहां तक कि वह प्रणाली महास के भूतपूर्व पादरी रेवरेण्ड डाक्टर बेल की देख रेख में इस देश में प्रचलित की गई है। हमारी राष्ट्रीय संस्थाओं में इस समय उसी पद्धति से शिक्षा दी जाती है क्यों कि हमें विश्वास हो गया है कि इससे भाषा

इसी सीखता और सिखलाना बहुत ही सरल हो जाता है।

कहा जाता है कि हिन्दुओं की इस प्राचीन और उपयोगी ज्ञानों को राजनीतिक कान्तियाँ भी कोई थेंका नहीं पहुंचा सकीं। पंजाब शिक्षा विभाग के भूतपूर्व सर्वोच्च अधिकारी डाक्टर लिटनर महोदय भी मुकरुंठ से स्वीकार करते हैं कि—जिस प्रकार भारती ज्ञान कीशल के आदर्श के आधार पर वर्तमान अंग्रेजी कलाकारों की मूर्चि का विकास हुआ है, उसी प्रकार भारत की प्राचीन शिक्षा पद्धति से इंग्लैण्ड के स्कूल भी प्रभावित हुए हैं।<sup>२२</sup> मिस्टर हाई अम० एम० ए० मी० एस० एस० ने भी इस भारतीय शृणु को माना है किन्तु बहुत संकुचित रूप में—‘षदें के अन्दर! स्याँ, वह पुस्तक भारतीय विद्यार्थियों के पाठ्यक्रम में शामिल है।’<sup>२३</sup>

प्राचीन भारत वह पुन्य पावन देश है जहां से दुनिया के शेष सभी देशों ने अपनी सभ्यताएँ सीखी हैं। फिर अंग्रेजोंका कहना ही क्या, यह तो अभी कल अंधकार से निकल कर आंखें मीचते प्रकाश में आए हैं। डाक्टर लीटनर जैसे पंडित भी इस महान देश के प्रति अपनी अद्वावज्ज्ञि समर्पित किए विना नहीं रहते। आपके ही शब्दों में—इस सूर्य के देश ने अपने पुत्रों को आवश्यकता से भी कहीं अधिक प्रतिभा प्रदान कर रखी है।

### एशिया—

एशिया का प्राचीन नाम जम्बूद्वीप है, भौगोलिक आकृति भी नाम के ही अनुसार है। स्वर्गीय डाक्टर एनीबिसेन्ट भी प्रोफेसर राधाकुमार मुकर्जी का अनुमोदन करती हुई स्वीकार करती हैं कि ‘अशोक’ जम्बू द्वीप और भारतवर्ष का सम्राट

<sup>22</sup> Unhappy India, See also Blue books

<sup>23</sup> See Pioneers of Progress,

था । २४ आज भी किसी शुभ कार्य में हाथ डालते समय हिन्दू अपने उन वेमव के दिनों को स्मरण कर जम्बू द्वीप के साम्राज्य को याद कर लेते हैं । २५ यह महाद्वीप एक दिन इनकी ही छवि छाया में पलता था । इन्हीं की ध्वनी को प्रतिध्वनि करता था किन्तु काल कि विकराल चाल ने कलम के द्वारा आज हमें उसी ध्रुव सत्य का प्रमाण खोज कर चिन्तित करने के लिए विवश कर दिया है । इसे एशिया क्यों कहते हैं, यह कर्नल जेम्स टाड की जबानी सुन लीजिए—“दोमिदा ( Deomida ) और भजस्वा ( Bajaswa ) ‘हिन्दु’ ( चन्द्र ) वंशीय नाम की एक जाति थी वही इसके अधिकांश देशों पर अपना अधिकार विस्तृत किये थे, तभी से इसका नाम अश्व से बदलते २ एशिया बन गया । अब इसके विभिन्न देशों का पृथक २ वृत्तान्त सुन लीजिए—

### चीन—

कर्नल टाड बतलाते हैं कि चीन और तातार की वंशावलियों से विदित होता हैं कि ये लोग हिन्दू सम्राट के पुरुरवा के उत्ताराधिकारी ‘अवर’ की सन्तान हैं । २६ सर विलियम जॉस भी चीनियों का आदिम स्तोत्र हिन्दु बतलाते हैं । २७ सब से पहला मुसलमान यात्री सुलेमान भी लिखता है—“वहां ( चीन ) की धार्मिक वातें भारतवर्ष से ली गई हैं ! भारतवासी निस्सन्देह उनके धार्मिक गुरु हैं । २८

24. A birds eye view of Indias past as the foundation of Indias future Page 61

25. ओऽम् तन्मत् श्री ब्राह्मणों द्विनीय प्रहराद्वें वैवस्वत मन्त्रनन्तरे श्विशन्ति स्मृतियुगे कलि प्रथम चरणे जम्बूद्वीपे..... ।

26. Annals of Rajasthan, Vol, I Page; 35, and 37.

27. Annals of Rajasthan, Vol, I Page, 35, and 37.

28. सुलेमान सैदामर पृ० ८४

स्कुकिंग (Schuking) चीनी प्रनथ में लिखा है कि ईसा से २०० वर्ष पूर्व फोई नामक एक सज्जन के साथ चीन वालों के दूरंज गए थे। वे लोग चीन के पश्चिमवर्ती पहाड़ प्रान्त से आये थे। चीनके पश्चिम प्रान्त हैं कौन? काश्मीर पंजाब तिब्बत आदि और यह हैं प्राचीन भारत के अंग।

पैरिंग विश्वविद्यालय परिषद् के प्रधान लियाग चिचाव नत मन्त्रक होकर स्वीकार करती हैं कि 'हमें अपनी लोक कथा से मानुम होता है कि सन्नाट शिल्ज हुआंग के समय इस देश में कुछ हिन्दु थे। + + + ६७ ६० से १६६ ६० तक ३७ हिन्दु विद्वान चीन आये। इस संख्या में पूर्वीय और पश्चिमीय तुर्किम्नान से आने वाले हिन्दुओं की संख्या सम्मालित नहीं।..... तुम्हें यह कहते हुए अभिमान होता है कि भारतीय विचार हमारे अनुभव के संसार में पूर्णतया सम्मिश्रित होकर हमारी चेतना का अभिन्नांश बन गये हैं। ओकाकारा बड़े मार्केंकी बात बतलाता है कि केवल लीयांग प्रान्त में दस हजार भारतीय परिवार और तीन हजार भारतीय साधू थे, जो भारतीय धर्म सम्यता एवं कला का प्रचार करते थे।'<sup>२६</sup> प्रोफेसर हीरन महोदय के अनुसार 'चीन' नाम ही भारतीय है।

इन्हें अधिक दातव्यों को शिरोधार्य कर प्राचीन चीन को पूर्व भारत की गोद का पाला हुआ ज्येष्ठ पुत्र कहने से कौन इन्कार कर सकता है।

### जापान—

चीन की भान्ति जापान भी भारत का पुराना चेला है। जापानी विद्वान जे० टाका क्यूसो लिखते हैं कि प्राचीन में भारत का बौद्धिक एवं भौतिक पर्याप्त प्रभाव जापान पर पढ़ा था।

++ कितने ही भारतीय जापान आये थे एक ब्राह्मण भारद्वाज ने अन्य पुरोहितों के साथ चम्पा होते हुए ओसाका और नारा आकर संस्कृत सिखाई थी। ३०

जापानी वर्णमाला का आविष्कार भी संस्कृत के आधार पर हुआ है। डाक्टर विन्टरनिटज (Winternitz), जापानी साहित्य की समालोचना करते हुए लिखते हैं कि जापानी कविता का अलङ्कार भी हिन्दू प्रन्थों से लिया गया है। यही नहीं जापानी पुराणों में दाई नीची का वर्णन मिलता है जिसका अर्थ है “महान् सूर्य”!

## तुर्किस्तान—

तुर्किस्तान और समस्त उत्तरी एशिया में हिन्दुओं का राज्य था। संस्कृतज्ञ मैक्समूलर का कथन है कि ‘तुर्की’ की ही सन्तान तुरानी थे। ३१ टाड साहब लिखते हैं कि तर्क का पुत्र तमक हिन्दू पुराणों का नरिक्षक है। ३२ यह अभिशप्त हो कर देश छोड़कर चले गये थे, इन लोगों ने ही तुर्किस्तान का उपनिवेश बसाया था। मिस्टर जे० टाका क्योसो ने भी तुर्किस्तान में हिन्दू प्रवारकों के निरन्तर आने जाने का अनुसन्धान किया है। चीनी यात्री फ़ाहियान के भी यात्रा वर्णन से पता चलता है कि चीनी तुर्किस्तान में उसके समय में भारतीय रीति रिवाज प्रचलित थे और लोग बौद्ध धर्म के अनुयाई थे। इन प्रमाणों से स्पष्ट है कि तीसरी चौथी शताब्दि तक यह देश अपूर्व पुरुषों के पद चिन्हों का अनुसरण कर बराबर अहिंसा परमोधर्मः का पाठ याद

30. Journal of the Royal Asiatic Society for 1905 Page, 872, 873

31. Science of Language, Page, 245

32. Tod's Rajasthan Vol, Page, 102

करता रहा । अन्त में तलवार की धार पर फैलने वाला इस्लाम इन्हें भी निगल गया । ३३

## खुरासान—

इतिहासवेता जेन्स टाड ने जैसलमीर के प्राचीन इतिहास पत्रों से पूछ तांछ कर पता लगाया है कि चन्द्रघंशी यदु और बहीक जाति ने महाभारत युद्ध के पश्चात्क खुरासान में राज्य स्थापना की । उनके अतिरिक्त पराजित कौरव लोग भी इधर उधर जा वसे थे ।

## जुविलस्तान—

यह देश भी समरकन्द तक और गजनी तक कृष्ण के पुत्रों ने बसाया था । ३४ यह भी महाभारत के बाद बसे और इस्लाम के उभार के साथ हिन्दुओं के हाथ से निकल गये ।

## अफगानिस्तान—

प्राचीन भारत में अपवंश नाम की एक जाति थी, उसमें अपगण नाम का एक मनुष्य हुआ है । उसी की सन्तान अफगान नाम से प्रसिद्ध हुई । अफगान और प्राचीन भारत का बहुत पुराना सम्बन्ध है । महाभारत काल में राजा वृतराष्ट्र का विवाह यहां की राजकुमारी गान्धारी से हुआ था । दिर्गविजय करते समय पाण्डव यहां के राजा के मेहमान बने थे । बौद्धकाल तक यह देश भारत का एक अग रहा है । महाराज जसवन्तसिंह और मानसिंह ने इसे पुनः विजय किया था । कर्नल टाड लिखते हैं कि जैसलमीर का राज्य चिक्रम सम्बत् से पूर्व गजनी से लंकर समरकन्द तक फैला था । ३५

33. Tod's Rajasthan Vol, I, Page, 43

34. Tod's Rajasthan, Vol, Page, 43

35. See Tod's Rajasthan, Vol, I

## साइवेरिया—

महाभारत के सर्वनाशी युद्ध के बाद बहुत सी सूर्य और चन्द्र-बांशी जातियां भारत को छोड़ कर सुदूर देशों में जा बसी थीं। उन्हीं में से कुछ लोगों ने जाकर साइवेरिया में अपना गज स्थापित किया था जिसकी राजधानी थी बज्रपुर। जब इस देश का राजा किसी युद्ध में मार गया, तब श्रीकृष्ण के तीन पुत्र प्रवृत्त गढ़ और शास्त्र बहुत से ब्राह्मणों और ज्ञात्रियों को ले कर गए। इन तीनों में बड़ा भाई वहाँ की गही पर बैठा। श्री कृष्ण की सृत्यु पर ये लोग पुनः द्वारिका आये थे।<sup>३६</sup> साइवेरिया और किंजिलैण्ड के प्रदेशों में यदुवंश की दो जातियों का होना इतिहास में मानूस होता है। ये दोनों ही चन्द्रबांशियों की सन्तानें थीं। एक का नाम श्याम-यदु (Sam oyedes) और दूसरी का जादों (Jchonces) है।

## ब्रह्मा—

ब्रह्मा का नाम, धर्म, रीति रिवाज सब कुछ भारतीय रङ्ग में रङ्गे हैं। मिस्टर विल्सन के शब्दों में ब्रह्मा और तिव्वत की सम्बन्धता भारत से ली गई है। सर ए० पी० फेवर भी बतलाते हैं कि लोअर ब्रह्मा अथवा पीगू तेलगू राज्य से आये हुए लोगों द्वारा जीता गया था।<sup>३७</sup> आज भी धर्मी भारत का एक भाग है।

## भारती उपद्वीप समूह

कर्नल टाड महोदय बतलाते हैं कि यह उपद्वीप समूह (Isles of the Archipelago) सूर्यों वंश के ज्ञात्रियों द्वारा बसाये गए थे। उनकी देवगाथायें और वीरता के इतिहास मन्दिर की दीवारों ३६, देविणा, हरिवंश पुराण विष्णु पर्व, अध्याय ६७

और पुस्तकों में अद्वित हैं । ३५

## कम्बोदिया—

मंस्कृत 'कम्बोज' का अपभ्रंश है। सन १८८२ में एक फ्रांसीसी ने यहां एक मन्दिर ढूँड निकाला था, जिसके लंखों से मालूम होता है कि यह प्राचीन भारत के साम्राज्य का एक भाग नहीं तो उपनिवेश जरूर था । ३६ मिस्टर हैवेल साफ लिखते हैं कि ईसा की चौथी शताब्दी में तक्षशिला के आस पास के प्रदेश जिसे कम्बोज कहते थे, लोगों ने जाकर यहां उपनिवेश बसाये थे, और अपने देश के ही नाम पर इसका भी नाम कम्बोज रखा था । ३७

इतिहासवेता फर्गु सन कहते हैं—‘अमरावती के विशाल खण्डहर बतलाते हैं कि कृष्णा और गोदावरी के मुहावरे से उत्तरार्पाश्चम भारत के बांद्रों ने पीरू कम्बोदिया और जावा के उपनिवेश बसाये थे । ३८ आधुनिक कम्बोदिया के यात्री एन० ए० पीहमल को वहां की नृत्यकला का निरीक्षण कर भारत की याद आगई । आप लिखते हैं आज भी उनके जीवन में भारतीय सभ्यता का गहरा प्रभाव है । ३९

## जावा—

इतिहास लेखक एल्फ्रेन्स्टन का कथन है—“जावा के इतिहासों से मालूम होता है कि बहुत से कालिंग के हिन्दुओं ने यहां आकर वस्तियां बसाईं, लोगों को सभ्यता सिखाई और अपनी सम्बन्ध चलाया। इस सम्बन्ध का आरम्भ ईसा के ७५ वर्ष पूर्व से होना है । ४० मिस्टर सिवेल लिखते हैं कि इस के पश्चात् जावा

३८. Tod's Rajasthan, Vol 11. Page P18 foot note

३९. The Indian mirror, 2nd Sept 1882,

४०. Indian Sculpture and Painting, Page, 136

४१. Indian Archaeology,

४२. The Hindu illustrated weekly, Dec 31, 1933

४३. History of India, Page 168

को गुजरात देश का एक राजकुमार ६०३ ईम्बी में ५००० व्यक्तियों को लेकर वहां पहुंचा और मतग्राम नामक स्थान बस गया। तुक्र काल बाद २००० दो हजार वौज्ज वहां पहुंचे और उन लोगों ने जौदमत का प्रचार किया।<sup>४३</sup>

### वानिंयो—

डाल्टन साहित्य लिखते हैं कि इस द्वीप में स्थान २ पर हिन्दू धर्म के चिन्ह मिलते हैं। पर्गीत कन्दराओं और खुले मैदानों में हिन्दू जैसे मन्दिरों के खरडहर दिखलाई देते हैं। ममुद्र तट के लगभग ४०० मील की दूरी पर वहु नामक स्थान पर कई मन्दिर हैं, जिनकी कला उत्कृष्ट है। ये सब हिन्दू उपासना स्थानों के ही समान हैं।<sup>४४</sup>

### बाली—

जावा के पूर्व में बसे हुए द्वीप का वर्णन करते हुए सर स्टाम कड़े रेफिल्स लिखते हैं—यहां के बल ब्राह्मणों का धर्म ही नहीं प्रत्युत प्राचीन भारतीय स्थानीय शासन प्रबन्ध की शैली भी मिलती है।<sup>४५</sup>

### सुमात्रा—

वह द्वीप भारत के पूर्वी समुद्री किनारों के लोगों द्वारा बसाया गया था।<sup>४६</sup> इतिहासकार कॉल मैन एडर्सन का हवाला इकर लिखते हैं कि उन्हें वहां एक विशाल दूटा हुआ मन्दिर और मूर्तियां मिली हैं जो साफ तौर पर हिन्दुओं की मालूम होती हैं।<sup>४७</sup>

४३. Royal Asiatic Society Journal Page, 402 (1906)

४४. Asiatic Society Journal Vol, VII, Page 153

४५. Description of Java, Vol, II, Page, 286

४६. R. A. S. Journal Vol, XVII.

४७. Hindu mythology Page, 361

## म्याम—

म्याम की कहावतों और इतिहास से पता चलता है कि यहां दृढ़ के जन्म से पहिले भी हिन्दू आवाद थे। यहां ४२० ई० में इंडिया नाम का एक प्राष्ट्य आया था। पान पान देश के लोगों ने उसे अपना सम्राट बना लिया। इसके पश्चात ५०२ ई० में अष्ट्विन्द्रक यहां एक राजा था जिसके दर्बार में बहुत से प्राष्ट्य थे। यहां के प्रसिद्ध मन्दिर अंगकोर को देखकर एक पाश्चात्य यात्री निबन्धना है—जिन जिन पाश्चात्य यात्रियों ने इसे देखा है एक मवर से कहते हैं कि उन्होंने संसार में अन्यत्र कहीं ऐसा मन्दिर नहीं देखा। इसका बनना हिन्दुओं के काल में शुरू हुआ था और ममूर्य होने २ यहां बौद्धमत फैलगया।<sup>१६</sup>

## कोचीन चीन—

मिस्टर रीस डेविड लिखते हैं कि चम्बा और भागलपुर के लोगों ने यहां आकर वस्तियाँ बसाई थीं और अपने देश के नाम पर ही इसका नामकरण संस्कार किया था।<sup>१७</sup>

यह समस्त द्वीप हिन्दुओं के उपनिवेश थे। चीनी यात्री इत्सिह १० हिन्दू उपनिवेशों के नाम गिनता है, जिनमें हिन्दू राजों रिवाज, धर्म और संस्कृति का अध्ययन वस समय प्रचलित था।<sup>१८</sup> भारतीय प्रभाव की धुंधली छाप आज भी इन द्वीपों में मौजूद है इनमें से कितने ही अब तक हिन्दू धर्म को किसी न किसी अंश में मानते हैं।

## आस्ट्रोलिया-

आस्ट्रोलिया में भी हिन्दुओं के पहुंचने और उपनिवेश स्थापित

१६. Hindu Superiority, Page 143, 144

१७. Buddhist India, Page, 35

१८. इत्सिह की भारत यात्रा।

करने का पता चलता है। हिन्दू जाति का प्रभाव बतलाने वाले यहां अनेक चिन्ह मिलते हैं। उनमें प्रधान एक बोमरंग जाह्ज अस्त्र है। इसकी यह विशेषता है कि यह अस्त्र निशाना चूंके पर बत्ताने वाले के पास पुनः वापस आजाता है। यह क्यों अस्त्र है जिसका प्रयोग महाभारत काल में अर्जुन और कर्ण ने किया था।<sup>५२</sup>

एक दिन भारत की विशाल हिन्दू जाति ने बसुन्धरा के कोंडे को ढूँढ़ २ कर, लोगों को गिरि गुफाओं से निकाल कर मध्यक का आत्मोक दिव्यलाया था, सर्वत्र अपने उपनिवेश स्थापित कर सुन्दर शान्ति की स्थापना की थी। यह आज योरुप अमरोक आदि पाँचात्य देशों के प्रकाण्ड परिष्वत नत मस्तक हो कर एक स्वर से स्वीकार करते हैं।

भारत के प्रकर्ष का इतिहास आज इस भूमि में ही नहीं भू-भोग के प्रत्येक कोने में कुपा पड़ा है। ज्याँ २ भू-भर्ग टटोल जायगा, त्याँ २ संसार को हङ्कार बक्का करने वाला कोई न कोई भारत की पुरानी किस्मत का ढूटा फूटा सितारा चमक उठेगा। हम कौन थे, और क्या बन गये ! यही सोचने की चीज है।



# भारतीय सभ्यता का विस्तार

विश्व के विशाल स्टेज पर भारत का ही सर्व पूर्व अवतरण हो गया था । विस्तृत संसार को उसने ही ज्ञान की मशाल जलाकर ज्ञान के अंधकार से बाहर लाकर सभ्यता का पाठ पढ़ाया था—इस आज दुनिया के प्रायः सभी विद्वान एक स्वर से स्वीकार करते हैं । पाश्चात्य पण्डित आज भी जम्बू द्वीप को Torch bearer Asia कह कर सम्बोधित करते हैं । भारत ने मानवता उद्घार के लिये विदेशों की और किस शुभ महूर्त में कदम उठाया था—शुभ पयान की वह पुर्णत तिथि वसुन्धरा के किसी भी पत्र पुष्ट पर अङ्कित नहीं, और होती भी कैसे ? लोगों को इतना ज्ञान ही कहां था, हां बूढ़ा भारत अपने पुराने पञ्चागों को उलट कर कुछ अवश्य बता देता किन्तु वह सदियों पूर्व बर्वर विदेशियों के हम्मामों को गर्म करने में ईंधन बन गए ।

भारत का नाम एक दिने दुनिया के बचे बचे की जबान पर था । संसार उसके भरणे के नीचे एकत्रित होता था और वह प्रेम पूर्वक सभी को अपना कुदुम्ब समझ कर छाती से चिपकाये हुए था । अनुभवी विद्वान, “टाईम्स ऑफ इण्डिया” के भूतपूर्व सम्पादक सर स्टेनली रीड बतलाते हैं कि अत्यन्त पुरातन काल में ही भारत ने बाह्य संसार को बहुत कुछ दिया, यह बात कम महत्वपूर्ण नहीं है कि उसका निर्यात मानवों के देशान्तर्गमन (Human migration) की अपेक्षाकृत विचारों के ही रूप में था । कांट जनरिस्ट जनर्ज भी इसी का समर्थन करते हुए कहते हैं ।

कि आर्यवर्त केवल आहग्य धर्म का पालना नहीं । प्रत्युत हिन्दूओं की उस उच्च सभ्यता का उत्पत्ति स्थान है जो शान्तः शान्तः पश्चिम में एथिओपिया (Ethiopia) मिश्र, फोनोशिया (Phoenos) पूर्व में चीन, जापान, दक्षिण में लंका, जावा सुमात्रा और यूरोप में फारस, काल्डिया (Caldoea) और कोलचिज (Colchis) तक फैल गई, वहां से भारतीय सभ्यता की यह लहर यूनान और रोम आदि में फैल गई ।<sup>२</sup> पी० आर० गोडल० जी० एम० आई० सी० आई० ई० ने भी प्रदल प्रमाणों द्वारा यह सिद्ध किया है कि प्राचीन संसार का भारत के साथ निकटतम सम्बन्ध था ।<sup>३</sup> अब जग इसी बात को पाश्चात्य परिषिक्त एम० इल्वास के शब्दों में भी सुन लीजिए । भारत की प्राचीन सभ्यता के प्रभाव हमारे चारों ओर निरन्तर विद्यमान है । वह देश देशान्तरों में भी परिव्याप्त हैं । अमरीका और योरूप में सर्वत्र दिखाई दे रहा है । यह वही सभ्यता है, जिसका जन्म स्थान गंगातट है ।<sup>४</sup>

कर्नल अल्काट महोदय भी तुलनात्मक भाषा विज्ञानक अध्यक्ष और संस्कृत साहित्य का अन्य भाषाओं से मिलान कर इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि आर्य सभ्यता पश्चिम में पहुंची । आते चलकर अपने चिर अन्वेषन के आधार पर आप बतलाते हैं कि मिश्र, यूनान, रोम और उत्तरी योरूप के दर्शन शास्त्र भारतीय विचारों से परिपूर्ण हैं ।<sup>५</sup>

प्रम्यात चलिस महोदय कहते हैं कि इतिहास के श्रीगणेश के साथ आर्य संसार का इतना विस्तार था कि उसने योरूप के कुछ इधर उधर के भागों के अतिरिक्त उत्तरी रूस तक और एशिया में एशिया माझनर, काकेशिया, आर्मेनिया मेडिया, पश्चिया और

2. *Theogony of the Hindus* Page, 168

3. *India; The New Phase*

4. *The Theosophist*, March 1881

विक्रोरिया तक प्राचीनतम आयो की सीमाएं थीं ।<sup>५</sup>

किन्तु योहपियन इतिहास में इस बूढ़े भारत की जवानी के चिलचिलाते दिनों की दास्तान बनाने की योग्यता ही कहाँ ! भारत भारत ने महाभारत काल में गहरा पलटा खाया । इसी समय में इस देश ने विदेशी भूमि के साथ अपना प्रेम सूत्र भी सुन्दर कर लिया । अस्तु इस पञ्जे को ही पकड़ कर भारतीय सभ्यता का विदेशों में विस्तार हुँडना भी ठीक है ।

यह बात स्मरण रखना चाहिये कि महाभारत काल में विदेशों में जाकर भारतीयों ने अपने सम्बन्ध को पुनः हट किया ।

वास्तव में महाभारत के सर्वनाशी युद्ध ने संसार के इतिहास का एक प्रकाशमान पन्ना उलट कर भारत भाष्याकाश को सदैव कं लिए काली घटाओं से आच्छादित कर दिया । इसने इस देश के गोरक्ष, ऐश्वर्य और सभ्यता पर ऐसा भीषण प्रहार किया कि यह आजतक भी सिसक रहा है । कल्युग के प्रारम्भ अर्थात् डाक्टर एनिविसेन्ट<sup>६</sup> के शब्दों में ईसा से ५००० घर्ष पूर्व से लेकर आजतक इस विशालाद्यान ने दुनिया उस बसन्त बहार को देखा ही नहीं । इस महानाश में हजारों, लाखों नहीं करोड़ों महापरक्तमी योद्धा, विज्ञान विशारद, और महान आत्माओं का संहार हुआ । अत्यन्त प्राचीन काल की विकसित सभ्यता, ज्ञान, विज्ञान, और कला कौशल का हास हो गया ।

इतना ही नहीं अत्यन्त असंख्य शक्तिमान, धीमान और विविध विज्ञान कला विशारद, अपने साथ अवशिष्ट ज्ञान के प्रकाश को लेकर बमुन्धरा के विभिन्न सागों में जाकर बस गए ।

5. Aryan Race, Page, 291.

6. A bird's eye view of India's past as the foundation for India's future. Page 3.

वहां भारतीय सभ्यता की कला का प्रभाकर पूर्ण प्रताप से प्रोद्धा-सित हुआ। यह है भारत की बर्बादी और दुनिया की आवादी की दृढ़ भरी दास्तान। इतिहासज्ञ पेकाक तक भी दुखित हृदय से इसकी दास्तान कहानी कहते हैं—‘भारतीय युद्ध के सदृश भयानक परिणाम वाली घटना कदाचित ही और कोई घटी हो। इसके कारण अण्णगणित भारतीय स्वदेश को छोड़ कर चले गए। इनमें कितने ही प्राचीन सभ्यता के अद्वितीय ज्ञाता और इससे भी अधिक शास्त्र विद्या विशारद सैनिक थे। ... ये लोग योरुपियन लोंगों के लिये कला एवं विद्यान के लिये कीटाणु ले गए। शक्ति सम्पन्न मानव ज्वार जिसने पंजाब की सीमा को पार किया, योरुप तथा एशिया में पहुंच कर विश्व के नतिक उत्पादन के लाभकारी स्थान को परिपूर्ण किया।’<sup>७</sup>

इस भान्ति अब तक ज्ञान के अलोक को प्रहरण करने वाला संसार, भारतीय ज्ञानियों और विज्ञानियों, योद्धाओं और कलाकारों को भी मां की गोद से अपनी ओर खींच ले गया। विश्व सम्पन्न बन गया और हम हो गए विपन्न, इतिहासकार सी० मारिस बतलाता है कि “समस्त विजित भूभाग पुनः हाथ से निकल गये और सौलहवीं शताब्दी के शुरु में आर्य जाति के अधिकार में कुछ भी न रहा।”<sup>८</sup>

### अर्मीका मिथ्र—

पुरातत्व इतिहास वेत्ताओं की गम्भीर गवेषणाओं और अधक परिश्रम ने यह बात प्रमाणित करदी है कि पृथ्वी के प्रत्येक भू-भाग में यशस्वी आर्यों ने प्रतापी साम्राज्य की स्थापना कर अपनी सभ्यता को जगतव्यापी बनाया था। आज विश्व के उन्हीं

7. India in greece, Page 27.

8. Aryan Race, Page 91.

राष्ट्रों में प्राप्त होने वाले स्मारक चिन्ह आयों की महान किर्ति का परिचय दे रहे हैं। संसार में मिश्र की सभ्यता प्राचीनता की दृष्टि में अपना विशेष महत्व रखती है, अस्तु सर्व प्रथम वहाँ पर हिन्दू सभ्यता के प्रभाव का पता लगाना भी आवंश्यक है। कर्नल अल्काट कहते हैं कि “अपने इतिहास के अनुसार मिश्री लोग एक रहस्यमय भू-भाग, पवित्र पुंट ( Punt ) से आये थे, जो इनके देवताओं का असली आधास था..... हम देखते हैं कि यह पुंट ( Punt ) कोई अन्य स्थान नहीं प्रत्युत भारत था। भारत ने २००० वर्ष पूर्व अपने देश का एक दल बाहर वसने के लिये भेजा था जो कि अपनी उच्च सभ्यता और कला को लेकर वहाँ गए थे जिसे आज ( Egypt ) या मिश्र कहते हैं।”<sup>९</sup> इतिहास के प्रकार एवं परित पेकाक अपने चिरकालीन ऐतिहासक अन्वेषण के आधार पर भारतीयों द्वारा मिश्र में सभ्यता प्रस्तार के निश्चाल्कित कारण पेश करते हैं। १ मिश्री दरयाओं और प्रान्तों के नाम भारत से लीए गये हैं। २—राजाओं के नामों में भी समता है जैसे राम और रामसेस ( Ramases ) ३—मूर्तितक्षण कला के बहेश्य और भवन जिमरिण की शैली में भी समता है। ४—शब्दों को अनुचाल करने की शक्ति भी काफी मिलती जुलती है।<sup>१०</sup> इसके अतिरिक्त संस्कृत और मिश्री भाषा में भी गजव का समझनस्य है।

9. Theosophist for March 1881.

10. India in Greece, Page 201.

संस्कृत		मिथ्री	
शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
अक	मोड़ना	अक	मोड़ना
अव	आंख	अस्त्र	देशना
आत्मा	आत्मा	आत्मु	आत्मा
दाव	अनि	देव	अविन

प्रोफेसर हीरेन रंग और शिर की बनावट में मिथ्रियों और भारतीय के अन्दर आश्चर्य जनक समानता देते हैं । ११ वास्तव में विद्वान प्रोफेसर का यह प्रमाण कम मात्रे का नहीं । अन्यत्र इतिहासान्वेषी हीरेन महोदय ने कुछ बनियों के प्राचीन काल में अफीका जाकर बसने का सुराग लगाया है । १२ विद्वान वेज भारतीय एवं मिथ्र साहित्य के तुलनात्मक अध्ययन के पश्चात इस परिणाम पर पहुंचे हैं कि, प्रलय उत्पत्ति के सिद्धान्तों, साहित्य और वेद तथा मिथ्र धर्म ग्रन्थों में काफी एकता पाई जाती है । १३ पादरी माइकल रसले इस विषय में अपने मन्त्रव्य का प्रकाश करते हैं—“दोनों देशों के निवासी विविध धेशियों में विभिन्न हैं—ये वर्ण अपरिवर्तनीय हैं—वे लोग भी प्राचीन काल में भारतीयों की भान्ति चार वर्णों को स्वीकार करते थे । १४

इथोपिया (Ethopia) भी भारतीय उपनिवेष था । सर डब्ल्यू जॉस की सम्मति है कि “इथोपिया और हिन्दुस्तान एक

11. Heern's Asiatic Nations, Vol. II. Page 303.

12. Heern's Historical Researches, Vol. II. Page 309.

13. Egyptian & 1 g.on-Badge.

14. Ancient and Modern Egypt, introduction, Page 34-25.

इन मानि के अनिकार में थे, अथवा थे उपनिषेश !”<sup>१५</sup> प्राचीन अबीसीनिया में भी सिन्धु के आस पास आकर लोग आबाद हुए थे।<sup>१६</sup> कॉट जर्नास्टजर्ना बतलाते हैं कि ‘प्राचीन भूगोल परिषिका को अफ्रीका के उज भाग से सम्बोधित करते थे जिसे बर्मानकाल में न्यूबिया ( Neubu ) अबीसीनिया सनावर ( Sanaor ) डारफर ( Darsfu ) और डंगोला ( Dongola ) भी हने हैं।<sup>१७</sup>

### यूनान—

योरूप के इतिहास में यूनान की सभ्यता बहुत पुरानी है। इतिहासकारों के कथनानुसार यूनान योरूप का गुरु है। किन्तु ममान का यह आसन युनान ने भारत के श्री चरणों में बैठकर ही प्राप्त किया था। विख्यात विद्वान् चार्लस मोरिस कहते हैं कि भारतीय और यूनानी कहावतों एवं धार्मिक प्रन्थों में अपूर्व ममानता पाई जाती है।<sup>१८</sup> कन्ल अल्काट की अनुमति है— वेंलोनिया, मिश्र, यूनान, रोम और उत्तरी योरूप के दर्शनशास्त्र और धर्म भारतीयों के विचारों से परिपूर्ण हैं। पैथागौरस सुकरात, प्लेटो, अरस्तू, होमर, जीनो, हीसिवड, सिसरो, वर्जिल, आदि तत्व वेताओं के विचारों की तुलना कपिल, मनु, व्यास, गौतम, वाल्मीकि, कणायि, जैमिन, नारद, मरीच आदि महर्षियों से करने पर स्पष्ट होजाता है कि पश्चमीय दर्शन शास्त्रों का आधार पूर्वीय दर्शन शास्त्र है.....इन विचारों में इतना साम्य है जितना दर्पण

<sup>१५</sup> Asiatic Researches, Vol. 1. Page 44.

<sup>१६</sup> Haeru's Historical researches, Vol. 31 Page 310

<sup>१७</sup> Theogony of the Hindus Page 41.

<sup>१८</sup> Aryas race Page 244.

के सम्मुख को बस्तु और उसके प्रतिविम्ब में । १९

रामायण और ईलियड के कथानक में अपूर्व समानता है। लखनऊ के भूतपूर्व रेजिस्टर बतलाते हैं कि होमर ने वाल्मीकि रामायण पढ़कर ही ईलियड की रचना की। नीतिकार महाराज मनु ने भारतीय समाजशास्त्र के सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया था और यूनान में 'मिनौस' ने ! कुछ प्राचीन यूनानी कथाओं के आधार पर 'मिनौस' का स्थान यूनान न था और न ही वह था मनुष्य ! वह सूर्य पुत्र था । २० भारतीय इतिहास के अनुसार महाराज मनु सूर्य वंश के प्रवर्तक थे। यूनानी दार्शनिक गेनो-फैनस (XenoPhanes) का कथन है कि संसार और ईश्वर वास्तव एक है। यह एक ही सत्य, स्थिर और परिवर्तन शील है। २१ भारतीय वेदान्त की गर्जना है कि प्रकृति और ईश्वर वास्तव में एक हैं और वह है अविनाशी ! 'एकमेवाद्विनीयं ब्रह्म' भारतीय वर्ण व्यवस्था और दार्शनिक प्लेटो की वर्ण व्यवस्था भी कुछ मिलती जुलती है। दोनों देशों के उत्पत्ति के सिद्धान्त में भी समानता है। भारतीय दार्शनिक संसार की उत्पत्ति पञ्च भूतों द्वारा बतलाते हैं। उनके कथनानुसार शून्य प्रलयावस्था से आकाश उत्पन्न हुआ, आकाश से बायु, बायु से अरनी, अरनी से जल और जल से पृथ्वी ! यूनानी दार्शनिक एस्पेंडोक्लीस भी वही बतलाता है कि सर्व प्रथम शून्य (Choas) से आकाश आग, पृथ्वी, पानी और बायु पैदा हुए। २२ इन्हीं समानताओं जथा अन्य प्रबल प्रमाणों के आधार पर इतिहासकार पीकाक

19. Theosophist March, 1881

20. Encyclopaedia, Britanica, 'mino's'.

21. History of greece Vol. 1. Page 10.

22. W. Ward's History, Literature and mythology of Hindus P. 21.

बतलाता है कि यूनानियों की भाषा, रीति, रिवाज, नदी-पर्वत यद्दृं तक कि इतिहास भी भारत से मिलता जुलता है ।<sup>२३</sup> प्रसिद्ध पश्चात्य परिणित आर्थर लिली गहरे अनुसन्धान पश्चात अपने मनन्य का प्रकाश करते हैं 'यूनान' की प्राचीन देवमाला ( Mythology ) का आधार भारत है ।<sup>२४</sup> प्रोफेसर राली-विन्सन ने यूनान और भारत के अत्यन्त पुरातन सम्बन्ध का पता लगाया है—कवि होमर भी इस से अपरिचित न था, उसने उन्टर्न इयोपियन का जिक्र किया है । हिरोडोटस ( Herodotus ) बतलाता है कि इस शब्द का व्यवहार दक्षिणी भारत के ढाविड़ों के लिए किया गया है ।<sup>२५</sup> प्रोफेसर एच० जी० रीलीविंसन कहते हैं कि सर्व प्रथम लेखक ने लिखा है कि भारत यूनान के भूगोल का पिता है । आप यह भी बतलाते हैं कि प्राचीन यूनानी इतिहास में भारत के आठ नगरों के नाम आये हैं, जैसे कश्यप-पुरा और कन्धार आदि ।<sup>२६</sup> इतिहास यह भी बतलाता है कि अत्यन्त प्राचीन काल में कम्बोदिया से ले कर यूनान तक बोल अथवा बाली ने राज्य किया था । उस के सम्बन्ध में प्रोफेसर मोरिस की सम्मति है, कि बाली महाद्वीप भारत का शक्तिशाली सम्राट था । इन समस्त अवतरणों और प्रमाणों से सिद्ध होता है कि यूनान ने पुरातन काल में भारत की छत्र-छाया में ही पलकर योरुप में अग्रगण्य होने का सौभाग्य लाभ किया था ।

### पार्श्वया—

वेदज्ञ मैक्समूलर की राय है कि 'पार्श्वी, जिन का धर्म

<sup>२३</sup> India in greece Page 129.

<sup>२४</sup> Rama & Homer, Page 62.

<sup>२५</sup> Herod Vol. 70.

<sup>२६</sup> Intercourse between India and the western world, Page 18, 19.

जिन्दावस्ता में सुरिकृत हैं, भारत से देश त्याग कर उत्तर पश्चिम की ओर चले गए थे। और पार्सी ( Zoroastrians ) उनमें भारत के विदेशों में बसे हुए लोग थे। <sup>२७</sup> सर डब्ल्यू. जॉन कहते हैं कि जिद्कोप ( Duperron's zind Dictionary ) में सुन्म १० में से ६—७ शब्द शुद्ध संस्कृत के मिले। <sup>२८</sup> प्लॉन्ट्री व्रतलाता है कि 'अवस्ता' ( Avesta ) शब्द स्वयं हिन्दुओं का है। सुमलमानों के लिए हिन्दू लोग प्रायः 'यवन शब्द व्यवहृत किया करते हैं। यह शब्द यूनान में पहुंच कर आइ-वोनिया ( Ionion ) बन कर इण्डिया ( India ) बन गया। <sup>२९</sup> स्वयं 'परा' शब्द चन्द्रवंशी पुरुष के पुत्र इला का अपभ्रंश है, जिस से ईरान की उत्पत्ति हुई। मिस्टर हांग ईरानियों और भारतीयों की रीति रिवाजों, कहावतों की समानता दिखलाते हुए कहते हैं कि जेन्ट्र. अवस्ता के प्राचीन अंशों एवं वैदिक कालीन साहित्य में धर्म विषय वहुतसी समानतायें पाई जाती हैं। <sup>३०</sup>

प्रोफेसर हीरेल 'मनुस्मृति दृसवें अध्याव के ४३, ४४वें श्लोक का हवाला दे कर फारसियों को ज्ञातियों की सन्तान मिह करते हैं।' <sup>३१</sup>

भारतीय इनिहास के प्राचीन पुष्ट इस बात के जीवित साक्षी हैं कि समस्त पर्शियों पर एक दिन भारतीयों का ऊंचा भरडा लहरा रहा था। एक स्थान पर लिखा है 'नरक के असुर राजा नरकासुर और उनके मन्त्री मुह के असुर ने, इन्द्र का राज्य छीन

“

27. Science of Language. Page 242, 253.

28. Sir W. Jon's works Vol. I, Page 82, 83.

29. Intercourse between India & the western world P. 19, 20.

30. Hang's Essays on the Parsees. Page 287.

31. Historical-Researches Vol. II. Page 22.

लिया था। कृष्ण ने इन्द्र की सहायता की तथा उपरोक्त दोनों द्राक्षमण्डकारियों को मार कर 'मुरारी' की उपाधि प्राप्त की। पर्शिया का इतिहास स्पष्ट रूप से बतला रहा है कि इन्द्रदेव (Iddabugash) अमरावती (Elam) का सम्राट था।<sup>३२</sup>

पार्सियों की धर्म पुस्तक में बतलाया गया है—‘मैंने मनुष्यों को बहुत सुन्दर और उर्बंश देश सौंपा है, कोई भी ऐसा देने की नामर्थ नहीं रखता। यह भूमि पर्शिया के पूर्व में है जहां प्रति नायंकाल तारे चमकते हैं। जार्नेस्टज़ेना कहते हैं कि उपरोक्त स्थान कोई अन्य नहीं प्रत्युत भारत के उत्तर पश्चिमीय प्रदेश है।’<sup>३३</sup> इरान के कुछ भागों में असुरों का राज्य था जिसे अर्मारिया या असुर देश कहते थे।<sup>३४</sup> कर्नल टाड के अनुसार इसका नाम मधु भी था।<sup>३५</sup> इन्हीं असुरों पर मधु देश में विजय प्राप्त करने के कारण भगवान् कृष्ण मधुसूदन कहलाये थे। कर्नल टाड मंहोदय का यह भी विचार है कि कृष्ण के पुत्रों ने समरकंद और कितने ही अन्य स्थानों को आवाद किया था।<sup>३६</sup>

पौराणिक ग्रन्थों एवं आधुनिक इलिहासज्ञों ने प्रबल प्रभाग यह स्पष्ट रूप से सिद्ध कर दिया है कि स्वर्ण भारत का सिक्षा एक दिन पर्शिया की भूमि में चल रहा था।

जिस अमेरिका को १४६८ ई० में खोजने का संहरा मिस्टर कोलम्बस के सर पर बांधा जाता है, महाभारतकाल में वही पाताल देश अर्जुन की सुसराल था। उस समय धार्मिक एवं राजनीतिक

<sup>३२</sup> भगवत् पुराण स्कन्ध १०

<sup>३३</sup> History of Persia Vol. 1 Page 85, 95, 66.

<sup>३४</sup> History of Persia Vol. 1, Page.

<sup>३५</sup> Tod's Rajasthan 32.

<sup>३६</sup> Tod's Rajasthan. Vol. 1 Page 85.

उद्देश्य को निकर भारतीय वरावर विदेशों की यात्रा किया करने थे ! महर्षि व्यास जी ने सुखदेव जी के साथ अमेरिका को प्रस्थान किया था ।<sup>३८</sup> किसी जाति के इतिहास का अनुमन्यान करने के लिए देवमाला (Mythology) का मिलान बड़े मार्के का होता है । प्रेस्काट महोदय बतलाने हैं कि प्राचीन मैक्सिको के मिवासी एजटेक लोग संसार को अनादि करते हुए स्वीकार करते हुए सम्पूर्ण काल को ४ युगों में बांटते थे । प्रत्येक युग लाखों वर्षों का होता था । मृष्टि और प्रलय के भी बे कायल थे । घटा घटियाल भी शुभ अवसरों पर बजाते थे ।<sup>३९</sup> प्राचीन अमेरिका की देव कथाएं तो विलुप्त भारतीयों से मिलजुल ही गई हैं । अब रीति रिवाजों की समता भी इतिहासवेत्ता की जबानी सुनिए — ‘इस हृषिकोण से पीह निवासियों (Ieruviatis) के पूर्व पुरुष और भारतीय एक ही मालूम होते हैं ।<sup>४०</sup>

प्राचीन मैक्सिको के लोग मृतकों की दाह किया करते थे । राख हृषियां वर्तनों में रख कर समाधि बनाया करते थे । इस ममत्वन्य में भी पारचात्य इतिहासज्ञ कहता है—

“निस्सन्देह मृतकों को जलाने की यह प्रणाली, राख को एकत्रित कर समाधि बनाने का तरीका.....यह सब मिश्र और भारत का स्मरण करा देती है ।<sup>४१</sup>

अब धार्मिक भावनाओं और मन्दिरों पर निगाह ढालिये । प्राचीन अमेरिकन काली, महादेव, चरण चिन्ह, पृथ्वी माता आदि की उपासना जौरों से किया करते थे । स्कायर साहब तो

<sup>३८</sup> देविणा, महाभारत, शान्ति पर्व पृ० ३२६

<sup>३९</sup> History of the Conquest of Mexico Page 31.

<sup>४०</sup> India in Greece, Page 17.

<sup>४१</sup> Conquest of Mexico Page 564.

पश्य अमेरिका में बौद्ध मन्दिरों के मिलने की वात बतलाते हैं। हेनरीन माहव लिखते हैं कि विख्यात जर्मन ग्रन्ती वेरत हम्बोल्ट ( Baron Humboldt ) का कथन है कि इस समय भी अमेरिका में हिन्दुओं के स्मारक चिन्ह मिलते हैं।<sup>42</sup>

प्राचीन मैक्रिसकन (एजटेक) लोगों में यह अनुश्रुति विद्यमान थी कि 'उनकी सभ्यता का मूल पश्चिम में है।..... उनकी भाषा की लोकोन्तियों और समाजों में भी समता है।'<sup>43</sup> अभी मिस्टर आर्थर क्रिस्टी (Arthur Christy) न अमेरिकन कवि ह्वाईर (Whithier) की कुछ 'कविताएं' ढूँड कर पेश की हैं जिनमें महात्मा बुद्ध को 'शान्ति पुत्र' (Son of peace) और पवित्र इह कर स्मरण किया गया है।<sup>44</sup> बंगला पत्रिका 'भारती' का योग्य सम्पादिका ने बहुत दिनों पूर्व यह सिद्ध किया था कि पांचवीं शताब्दी में बौद्ध प्रचारकों ने अमेरिका में प्रचार की धूम मचा रखी थी।<sup>45</sup>

सर विलियम जोस के अन्वेषणानुसार अमेरिकन राम और सीता को भी मानते थे, वहां रामलीला के समान 'वार्षिक मेला' भी होता था।<sup>46</sup> मिस्टर डब्ल्यू० एच प्रेसकाट सरीखं इतिहास के मर्मज्ञ भी सामान्यतया इस वात से सहमत हैं कि पूर्वी एशिया और प्राचीन अमेरिकन सभ्यता पर भारतवर्ष का प्रभाव पड़ा है।<sup>47</sup>

42. Hindu Mythology Page 360.

43. Ibid Page 579, 588.

44. Aryan Path for May 1934.

45. भारतीय फाल्गुण १३१० (बंग)

46. १९०८, Asiatic Researches, Vol. 1, Part

47. See Conquest of Mexico.

देवगाथा, रीति रिवाज, भाषा लोकोक्तियां बस्तुकला, इतिहासक अन्वेषण आदि सभी एकमत होकर प्रमाणित करते हैं कि अमेरिकाकी सभ्यता का आदिम स्तोत्र यही प्राचीन भारत-वर्ष है। अमेरिका के आविष्कर्ता कोलम्बस के जन्म प्रह्ला में अनेकों शताब्दियों पूर्व अमेरिका के पश्चीम तट पर भारत की धर्म और व्यापार की वैजन्ती उड़ा करती थी—पर्याप्त अनुसन्धान के पश्चात क्लेफोर्निया यूनिवर्सिटी के पाश्चात्य साहित्य प्रोफेसर जान फ्रेयर (Fryer) ने भी इस सत्य को स्वीकार किया है। ४८

### योरूप—

यह नाम ही संस्कृत 'हरि युपिया' से लिया गया है। वेदों तक में इसका वर्णन मिलता है—“इन्द्र ने हरयुपिया देश में जाकर विशाल देत्य के पुत्रों का जाकर वध किया।” ४९ टाइम्स महोदय इसकी व्युत्पत्ति 'स्वरूप' शब्द से बतलाते हैं। ५० कुछ भी हो इसका नाम अवश्य हिन्दू है। इस हृष्टिकोण से इसे भी भारत का उपनिवेष बतलाना असंगत न होगा। इसे देखने के लिए सर्व प्रथम हम वर्तानिया को ही लेते हैं।

### अंग्रेट ब्रिटेन—

ऐंग्लों सेक्सन (Anglo Saxon) जाति से पहले यहां केंक्ट रहते थे। इनके रीति रिवाज आयों से मिलते जुलते थे। इनके पुरोहित छूइड कहलाते थे। प्राचीन इतिहास लेखक स्टूबो का कथन है कि छूइड (Druid) आत्मा और संसार के अम-  
५१. भारती, माघ १३१० (वांग)

५२. “वधोत इन्द वर शिवस्य शेषः यत् हरिगुर्यो या याम।” ऋग्वेद

न्व पर विश्वास रखते थे । कांट जन्स्टजर्ना बतलाते हैं कि इनके द्वाद में सम्राट भी थर्राया करते थे । ५१ अनवाईल लिखते हैं कि वे लोग कैल्ट ( Calt ) वालकों को शिक्षा दिया करते थे । निजा ग्रन्थ प्रायः छन्दोबद्ध हुआ करते थे । ५२ इन समस्त उद्धरणों से भलि भान्ति मालूग होता है कि केल्टों के पुरोहित ग्रंक आयोंके ऋषि और पाठ्य ग्रन्थ वेद थे ।

भाषा सम्बन्धी अन्वेषण में मिस्टर पेकाक बड़े पते की बात इन्हें कि आज भी अंग्रेजी भाषा में व्यवहृत हीने वाला हुर्रा ( Hurrah ! ) शब्द ब्रिटेन निवासी राजपूतों के बाप दादों के युद्धानाद 'हर' 'हर' था । वेल्स ( Wales ) में पाई जाने वाली जिसमा जाति के सम्बन्ध में पाश्चात्य परिणित ने अन्वेषण कर दह सिद्ध कर दिया है कि यह भी भारत से ही आई थी । विद्वान ग्य० हस्टेलट भी भाषा तत्व विज्ञान के आधार पर केल्ट जाति को बाहर से आया समझते हैं ।

इंगलैण्ड का इतिहास बतलाता है कि जिस देश पर रोम निवासियों ने आक्रमण किया तो छूयड सेंट अथवा मोना द्वीप मुनि द्वीप था और छूयड थे द्रुपद की सन्तान द्रोपदेय । विद्वान इतिहासक्ति टाड ने यदुवंशियों के एक जन्थे के उत्तर की ओर जान का पता लगाया है । यदुवंश और द्रुपद के पुत्रों में काफी संतानी थी । सम्भवतः ये लोग भी उनके साथ चले गये होंगे । विद्वान प्राधके हिमिन्स महोदय भी वतालाते हैं कि ये लोग भारत से आकर इंगलैण्ड में बसे थे । ५३ इतिहासिक कसौटिया ने यह सिद्ध करने की कोई कोर कसर नहीं रखी कि एक दिन भार-

1. Theogony of the Hindus Page 104.

2. Celtic Literature,

3. See, Celtic Druids.

तियों की जय पताका इंगलैण्ड के मस्तक को गौरवावन्नियन्त्र कर रही थी ।

### इटली—

इटली और प्राचीन भारत में अत्याधिक समानता पाई जाना। यहां की वर्णव्यवस्था भी इटली से मिलती जुलती है ।

वर्णव्यवस्था		देवता	
भारत	इटली	भारत	इटली
प्राचीन	Priest ( पुरोहित )	हनु	Jupiter
चत्रि	Senators ( शासक )	गणेश	Janus
दैश्य	Patricieus ( साहूकार )	पार्वती	Juno
शुद्र	Pleadio us ( दाम )	सरम्बती	Minerva

दोनों की देवगाथाओं और वर्णव्यवस्था की समानता के बाद रस्मों रिवाज का भी नीरीकृण कीजिये । विवाह में कन्या का पिता ठीक भारतीयों की भान्ति अर्गिन को साक्षी कर, जलाजलि के साथ कन्या का दान करता था ।<sup>५४</sup> विवाह के पहले मंगती होना भी आवश्यक था । पूर्ण युवास्था से पूर्व भी यदि विवाह हो जाय तो कन्या अधने ही घर रहती थी ।<sup>५५</sup>

५४. Leg. 66, 1 Digest Of Justinian.

५५. See, 10 Desposibous Page 323, 324

इन दोनों देशों में इतनी अधिक समानता है कि डॉली इतिहास में विवश होकर अपने पुराने मंरक्षक का नाम भारत बताना भी पड़ता है ।

### जर्मनी—

मिस्टर मायर (Muir) का कथन है कि यह बात बहुत से लेखकों ने नोट की है कि जिम भान्ति हिन्दू मनु को अपना पूर्व पुराना मानते हैं उसी तरह जर्मन देवमाला में ट्यूटानम Tentorius के पूर्व पुरुष को मानुप (Manus) बतलाया गया है । अंग्रेजी मन Man (मैन जर्मन Mann यह दोनों ही मनु से विलक्षित हो मिलते जुलते हैं) जर्मन मेन्श (Mensch) और मनुष्य में से पूरी समता है । ५६

अब जग रहन सहन और आदतों को देखिए । प्राचीन इतिहासज्ञ टेस्टिस लिखता है कि वे प्रातःकाल उठ कर स्नान कर पिंड के बालों में गाँठ लगाते और ढीला लवादा पहनते थे । टाड माहव स्वीकार करते हैं यह सब बातें पूर्वीय हैं शीत प्रधान देशों में कैसे प्रचलित हो सकती हैं । ५७

कन्ज टाड कहते हैं कि जब योरुप और इंगलैण्ड में मैक्सन जानि के बड़े २ गिरजों के चित्र उनकी कारीगरी और मूर्तियों को देखते हैं तो कृष्ण और गोपिकाओं की याद आ जाती है । जिस देश की देवमाला, रहन, सहन, स्वभाव और इमारतों में इतनी जवरदस्त समता हो उसका प्रेजीडेंट हर हिटलर फिर अपने को आयं क्यों न कहे ? वेदज्ञ मैक्समूलर तो सप्रमाण सिद्ध करते हैं कि “जर्मन” शब्द शार्मन है । भारत का शर्मा जर्मा बन

कर जर्मन हो गया। संस्कृत में शब्द 'श' 'ज' 'अ' परम्परा वहन जाने हैं। जसे आर्य, 'आज्य' आप्य ! <sup>५८</sup> अब अधिक कहने की गुब्जाड़श ही नहीं।

### स्कैरिडनेविया ( स्वीडन और नाम्बे )—

यह नाम स्कन्ध नाभि का अपभ्रंश है। जिस का अर्थ है क्षत्रिय ! कर्नल टाड बताते हैं, कि यहाँ के ईड्ना ( Eddna ) नामक ग्रन्थ से पता चलता है कि यहाँ प्रथम बसने वाले गेटिस ( Getes ) या जिटस ( Jits ) थे। ये 'असि' थे जिनकी पद्धती आवादी असिशढ़ थी।

पिंकर्टन यहाँ महात्मा ओडिन ( Odin ) के ईसा से पांच सौ वर्ष पूर्व पधारने का सम्बाद सुनाते हैं और महात्मा बुद्ध को उनका उत्तराधिकारी बतलाते हैं। <sup>५९</sup> यह तो हुआ स्कैरिडनेविया के क्षत्रियों द्वारा बसाए जाने का इतिहास। इनके सप्ताहिक दिनों का नामकरण तक भारती वीरों के आधार पर हुआ है। यहाँ की देवगाथा का आदिम हिन्दू देवमाला का आदि स्रोत स्वीकार करते हुए, यहाँ के प्रकाण्ड परिणत जनास्टजनी स्वयं कहते हैं—“स्कैरिडनेविया की प्राचीन धर्म पुस्तके “इडू” वेदों से ली गई हैं। <sup>६०</sup>

इतने प्रबल प्रमाणों की सौजूदगी में प्राचीन भारत के उपनिवेशों को तालिका में इस देश को शामिल न करना सरासर अन्याय होगा !

58. Maxmiller's *Regveda*.

59. See, Tod's *Rajasthan* Vol. 1 Page 6.

60. *Theogeny of the Hindus* Page 309.

स्वास्तिक चिह्न—



भारत की प्राचीन सभ्यता इस विस्तृत भूमि में ही नहीं, विशाल विश्व के अणु-अणु और कण-कण में परिव्याप्त है। इंगलैंड के अजायब वर में संसार के विभिन्न देशों से लाई हुई प्राचीन वस्तुओं का एक सुन्दर संग्रह है। इन वस्तुओं पर भारत का स्वास्तिक चिह्न अङ्कित है। आज अपने को आर्य कहने वाले ज्ञानी के भाग्यविधाता हरहिटलर ने विशेष रूप से इस चिह्न का अपनाया है, राष्ट्रीय इमारतों, शहीदों की समाधियों और प्रत्येक गर्भाय कार्यकर्ता के बैंडों (पट्टों) पर स्वास्तिक चिह्न अङ्कित है। अभी हाल ही में इंगलैंड की इम्परियल लोग आफ कैस्टम (साम्राज्यवादी समाजवादी संस्था) ने काउरटी पेलेस में साम्राज्य दिवस पर इसके प्रति पर्याप्त सम्मान प्रदर्शित किया था।

प्राप्त वस्तुओं के आधार पर मिस्टर गवले डिएलविया ने पुरातत्ववेत्ता की हाष्टि से स्वास्तिक प्रसार का एक कालानुक्रमिक चित्र बनाया है। उसमें आपने व्यक्त किया है कि इसा से दो शताब्दी पूर्व यह चिह्न मैसोपोटामिया (सूसा) में था, और वहीं से आपके अनुसन्धान का श्री गणेश होता है। भारत में इसा के ३०० वर्ष पूर्व इस चिन्ह के प्राप्त होने का आप उल्लेख करते हैं। इसा की ६ शताब्दी तक यह चिह्न आस्ट्रेलिया और रूस को छोड़कर संसार के प्रायः समस्त देशों में फैल गया था।

यह सब होते हुए भी भारतवर्ष के अतिरिक्त कोई भी देश इसके अर्थ, विज्ञान, इतिहास और नाम का भी पता नहीं देता।

इस वात का ज्वलन्त प्रमाण है कि यह उनकी अपनी नहीं अपिनु वाहर से आई वस्तु है। इधर भारत में आज से नहीं वैदिक काल से यह प्रचलित है। गृह्यमूत्र आस्वालायन मूत्र अर्जि में इसका स्पष्ट उल्लेख है। यहां भारत की अपड़ स्त्रियों तक इसके नुगां और उपयोगों में पूर्ण परिचित है। आज भी भारतीय हिन्दू आये दिन इसी के समर्गण में ऋग्वेद का यह सन्दर्भ कहते हैं:—

‘ओ॒इम् स्व॒र्मा॒ नित्रा॒ व॒न्नगा॒ स्व॒र्विन॒ प॒थ्ये॒ रे॒वति॒ ।  
स्व॒र्विन॒ त् उ॒द्दृश्यन्नि॒त्यन्न॒ स्व॒र्विन्नो॒ अ॒दित्ये॒ कौ॒षि॒ ।’

इसका यह अर्थ है कि कल्याण, दिन, प्रकाश, जीवन, गौव  
और स्वर्गीय वरदान का निदर्शन यह स्वस्तिक चिन्ह भाग्य की  
अपनी वस्तु है और भारतीय यात्रियों के एवं विजेताओं के हांग  
ही संसार के कोने २ में कैता है । इस रेखाचित्र को रेखाएँ युव  
में पश्चिम की ओर चलती हैं । संसार की सभ्यता की भी यही  
गति रही है, + और वह ही इसका सूचक ।

इतने पर भी यदि दुराप्राही अंग्रेजों अन्वेषकों को सन्देह हो तो उन्हें चालसेमोरिस के शब्दों द्वारा इस बात का निश्चय करनेना चाहिए कि एक दिन भारतीय हिन्दुओं का साम्राज्य एशिया माइनर, काकेशिया, आरमीनिया, मेडिया और पर्सिया तक फैला था। ६३ प्राचीन इतिहासकार प्लीनी प्राचीन भारतीय साम्राज्य में गिड्रोसिया (Gedrosia), अटाचोसिया (Ata-

प्रत्येक शुभ अवसरों पर चन्दन, हल्दी अथवा मिन्दूर से दरवाज़ा, दो बारों और पवित्र चैदियों पर इस का चित्र उस के द्वारा वरादर रखना चाहता है।

ने कहा), एशिया (Asia), पारपामीसस (Parpamisus) हा नाम दिया गिया है। एलिफ्नस्टन इतिहासकार इसमें पर्सिया का इन वैद्यार्थ भाग भी जोड़ देते हैं। ६३

कहने का तात्पर्य यह है कि इस्लाम का धर्म अविभाव होने वर्क पर्सिया के पश्चिमी भाग पर हिन्दुओं का शासन था। इसी बहुत दिन नहीं हुए बायर बतलाते हैं कि हिन्द के राय ने त्रिकोणीन को गजनी में जाकर घेरा था। वप्पा रावल ने खुगासान रक्त नलवार वजाई थी। इन प्रभागों से स्पष्ट हैं कि एशिया में यह स्वनंक चिन्ह हिन्दुओं द्वारा पहुंचा था और भारतीय सभ्यता के प्रभार के माथ ही साथ यह भी समस्त संसार में फैलता गया।

कहने का आशय है कि मिठ रायस विलमन द्वारा अंकित इस चिन्ह में स्वस्तिक चिन्हों से चिन्हित देशों में भारतीय सभ्यता और संस्कृति का बोल बाला था।

मिठ गलवेंडी एलवियला के कथनानुसार ईसा से ३५०० वर्ष पूर्व मोसोपानिया में, लगभग २ हजार वर्ष पूर्व मिनोयान के ग्रीट मुहरों में, १३०० वर्ष पूर्व दि द्रोड़ माइसिनी, और देरामारा में, ११०० वर्ष पूर्व जिलानोडा, ग्रीस (मिट्टी के बरतनों में), लाइकोनिया में, काकेशश में ३०० वर्ष पूर्व आस्ट्र्या ग्रीस (क्षेत्र में, ५०० वर्ष पूर्व प्रेग में मैसोडोनिया और एशिया माइनर में, ४०० वर्ष पूर्व ग्रीस सिसली में, ३०० वर्ष पूर्व २०० वर्ष स्कार्टेनेविया, जर्मनी, ग्रीट त्रिटेन, उत्तर अफ्रीका और चील में, ईमा की तीसरी शताब्दी में रोम और पारस में, तीसरी से द बी सदी तक तिब्बत और जापान में, एं नवी सदी में आइसलैण्ड में स्वस्तिक चिन्ह के प्रचलित होने के प्रमाण मिले हैं।

## भाषा

नृहम्पते प्रथम वाचो अप्र अन्तर्गत नामवेद दधनाः ।

वं वा अंठं वडरि भार्वान्तंगा नद्यो निर्दितं गुद्यनिः ॥-ऋ. १०. १

हे वेदाधिपति अन्तरात्मवद् देश महेश । आपकी अपार कृपा से उत्पत्यनन्तर इतर वाग्यियों के उच्चारण के पूर्वी ही पदार्थों के भिन्न र नाम धारण करते हुए त्राह्यण गण जो जो वचन प्रेरित है वह वाणियों में अप्र अर्थात् श्रेष्ठ है । तथा जो इनमें श्रेष्ठ होने हैं जो पाप रहित होते हैं वह इनके हृदयरूप गुप्त स्थान में गुप्त ज्ञान इनके प्रेम से आविभूत होता है । उन्हीं की अभिव्याक्ति के लिए संसार में भाषा का जन्म हुआ । योनियन विद्वान् गंतिग महोदय का तो विचार है कि “भाषा के विना मानवीय सज्जानता का उत्पन्न होना या इसका ध्यान में लाना ही असम्भव है ।”

मैक्समूलर महोदय ने भी ‘भाषा विज्ञान नामक पुस्तक से इसी भांति अपने विचारों को प्रकट किया है’ ‘संसार में समझ से आने वाले शब्दों और विचारों का अटूट सम्बन्ध है । शब्दाभाव में न विचार मिलते हैं और न विचारों के विना कोई शब्द । जब विचारों का अभिप्राय किसी प्रकार का तर्क उपस्थित करना होता है तो उसकी सिद्धि के लिये भाषा की नितान्त आवश्यकता होती है ।’

भाषा विज्ञान के ज्ञाता इस वात को स्पष्ट रूप से स्वीकार करते हैं कि समस्त प्रचलित भाषाएँ किसी एक भाषा से निकली हैं । अब प्रश्न उठता है कि अनुनिक प्रचलित भाषाओं की जननी

होने का सौभाग्य किस भाषा को प्राप्त है। तथा उसका प्रादुर्भाव कैसे हुआ? आर्य लोग इसका समाधान इस प्रकार करते हैं कि नष्टि कर्त्ता परमात्मा ने सार्थक शब्दों का ज्ञान चार ऋषियों को प्रदान किया। वह भाषा वैदिक भाषा थी और आधुनिक संस्कृत है। उसका निकट स्वरूप, जिससे प्रायः सभी प्रचलित भाषाओं का जन्म हुआ है। पट्टवर्ड कार्पेन्टर महोदय इस बात को सुकृत करठ से स्वीकार करते हैं कि 'किसी नवीन विज्ञान की नदीमें बोज करने की आशा हो सकती है और न इच्छाही कर्त्ता नाहिये। जो विचार वेदों के अन्दर संक्षेप में दिये हैं, उन्हीं का प्रभाव प्रत्येक विज्ञान और वैज्ञानिक के ऊपर पड़।'<sup>1</sup> भाषा विज्ञान विशारद टी० ज० केनेडी० बतलाते हैं कि प्रत्येक भाषा-विज्ञान-वेत्ता की भान्ति में भी जानता हूँ कि आर्य भाषा का काल १०००० ईसा पूर्व है।<sup>2</sup> एक अन्य प्रमुखाल पारचात्य परिवर्त भी मानते हैं कि आर्यों के बोलचाल की, प्राचीन तम विश्व की भाषा संस्कृत है।

तुलनात्मक भाषा विज्ञान एक ऐसी उत्तम कसोटी है जिसके द्वारा इस बात का निश्चय किया जा सकता है कि आधुनिक प्रचलित भाषाओं की जननी और प्राचीनतम विश्व की भाषा कौन सी है। निम्नांकित लालिका द्वारा यह प्रयत्न किया जायगा कि प्राचीन भाषा संस्कृत से संसार की अन्य पुरानी भाषाएं किस प्रकार बनी हैं।

1. Art of Creation, Page 7.

2. Religion and philosophy

संस्कृत		ग्रीकी		लिथुनियन		प्राचीन स्लाविनी		गोटियन	
अहम्	I am	इहिम	αγέλιμ	...	गरिम	गरम	...	गोरिम	...
अहन्	He is	इहिन्	αγέλिन्	...	गरिन्	गर्वर	...	गोरिन्	...
पितृ	Father	पानर	πατέρ	...	...	पात्र	फाद्र	...	...
मातृ	Mother	मातृ	μάτη	...	माति	मातर	...	मात्र	...
पशु	Cattle	पेन,	πεν	...	पेन्	Pecu	...	पेन्	...
गो	Cow	पेकु	πεκु	...	चुस	बास	...	वास	...

इतना ही नहीं क्रियाओं की गद्दीन उनके पुरुष और संत्राओं एवं गणाना में भी संस्कृत के साथ अन्य भाषाओं का सम्बन्ध है।

क्रियाओं की समता					Analogy of verbs				
संस्कृत	ग्रीकी	लिथुनियन	संस्कृत	लिथुनियन	ग्रीकी	प्राचीन स्लाविनी	गोटियन	लिथुनियन	
ददामि	डामि	डिटामि	ह	द्रव्य	ह	वै	वै	द्राव्य	
ददामि	डिटोमो	डिटोमो	डास	तृ	तृ	तृ	तृ	तृ	

भाषाओं के तुलनात्मक विवेचन में शब्दों के वाक्य रूप पर नहीं आन्तरिक रचना पर विचार करना एकान्त आवश्यक है। इन रचना से पूर्ण रूपेणा परिचिन होने के लिए उसके प्रकृत ( 'actual' ) और प्रत्यय को जानना जरूरी है। उदाहरणार्थ 'पञ्चक' को ही लेतीजिए, इसमें 'पञ्च' प्रकृति ( पकाना ) और 'ब्रक' प्रत्यय ( कर्तृत्व ) है। भारतीयों ने भाषा विज्ञान यास्तक में भी बहुत पहले प्राप्त किया था। योन्नपियन विद्वानों ने तो इन नूड तत्त्वों को कल समझा है। इस से पूर्व तो वे वाक्य तुलना की ही उद्येड़ दुन कर रहे थे। प्रोफेसर मैक्समूलर भी इसे स्वीकार करने हुए लिखते हैं कि वास्तविक शब्दों का निवचन शब्द के वाय सादृश्य पर कभी निर्भर नहीं होता।' सदा असमान प्रचीन होने वाले शब्द भी भाषा विज्ञान की दृष्टि से एक हो सकता है। उदाहरणार्थ अंग्रेजी का 'होल्डर' और संस्कृत का 'काद' शब्द ही को ही ले लीजिए। दोनों में बहुत साम्य है। भाषा विज्ञान की दृष्टि से 'क' का परिवर्तन 'ख' और उस से 'ह' में हो जाता है।

पहले बताया जा चुका है कि संस्कृत भाषा में प्रत्येक शब्द की रचना प्रकृति और प्रत्यय के भेद को समझ रख कर की गई है। अस्तु प्रत्येक शब्द अपने रूढ़ि अर्थ को धातु के मौलिक अर्थ के साथ प्रकट करता है। शब्दों के रूप समझने के साथ उसके यथार्थ अर्थ, व्याख्या और लक्षण भी साफ २ समझ में अन्नते हैं जैसे 'मनुष्य' कहने से केवल एक प्राणी का ही वाय होता है प्रत्युत पशु जगत में भेद करने वाला लक्षण 'मनन ( Ratio )' भी साफ २ समझ में आ जाता है। इसी भाँति

Science of Language and thought.

Science of Language.

'मत्य' 'अस' वानु में वन कर 'होने' का अर्थ बतलाना है अर्थात् 'जो हो'। 'सम्य शब्द भी इसी तरह सभा के योग्य व्यक्ति की मंजा है अब अंग्रेजी के Man, Truth और Civilized शब्दों को ले कर कोप के पत्रे पलटिये, कहीं कुछ भी पता नहीं चलता। भाषाओं के इस तुलनात्मक विवेचन में यह वान सिद्ध होगई कि विश्व की कोई भी भाषा पूर्णता, मार्थकता और महत्व में संस्कृत की समता नहीं रह सकती। सर डब्ल्यू. जांत के शब्दों में— संस्कृत भाषा की रचना अपूर्ण एवं आश्चर्य जनक है। वह श्रीक की अपेक्षा अधिक परिणा, लैटन से अधिक विस्तीर्ण और दोनों से ज्यादा ओजस्वनी है।'<sup>५</sup> प्रोफेसर मैक्समूलर की दृष्टि से—'यह भाषाओं का भाषा और भाषा विज्ञान की आत्मा है।'<sup>६</sup> प्रोफेसर हीरेन का विश्वास है कि 'संस्कृत सम्पन्नतम्, और परिष्कृत है। अत्यन्त मृदम् विचारों को भी व्यक्त करने वाले परिभाषिक शब्दों का इस में प्रांचुर्य है।'<sup>७</sup>

जर्मन विद्वान् शीलगर संस्कृत के सम्बन्ध में कहते हैं— श्रीक का सौंदर्य लैटन की अर्थ विशेषका हित्र की स्फुर्ति सभी कुछ मौजूद है।<sup>८</sup>

वास्तव में संस्कृत एक मधुर, प्राञ्जल, और ध्वन्यात्मक ( Phonograph ) भाषा है। शीलगल महोदय के शब्दों में संस्कृत 'नामकरण ही भाषा की पूरी पूर्णता और परिमिति होने का परिचायक है।' प्रोफेसर विल्सन भी इसी का समर्थन करने प्रसिद्ध अंग्रेज इतिहासकार लिखता है कि 'हिन्दुओं की भाषा

5. Asiatic Researches, Vol. 1 Page 422.

6. Science of Language Page 203.

7. Historical Researches Vol 1.

8. History of Literature Page 117.

इत्यन्त मीठी और एकान्त शुद्ध है। उन की विद्या भी संसार में  
मब से अधिक पुरानी है।<sup>१४</sup>

प्रोफेसर हारेन बतलाते हैं कि “जिन्द संस्कृत से निकली  
हैं”<sup>१०</sup> सर डब्ल्यू जॉस प्रमाण देते हैं कि “जिन्द कोष  
(Duperrons zind) में १० में छे-सात शब्द संस्कृत के हैं।<sup>११</sup>  
मिस्टर कार्पेन्टर महोदय की सम्मति है कि ‘यद्यपि संस्कृत का  
आदिम स्थान आयार्वित है फिर भी यह वात प्रमाणित हो चुकी  
है कि यह प्राचीन योरूप के अधिकांश देशों की भाषा थी।’<sup>१२</sup>  
मिस्टर पोकाक के कथनानुसार ग्रीक भाषा की जननी संस्कृत  
ही है।<sup>१३</sup> संस्कृत के प्रख्यात जर्मन परिवर्तन महाकवि फ्रेडिरिक  
शीलगल ने चिरकालीन अनुसन्धान के पश्चात् संसार के सामने  
इम वात को सिद्ध कर दिया है कि ग्रीक लैटिन तथा योरूप की  
अन्य भाषाओं की आदि जननी संस्कृत भाषा है। भारत भृ  
में क्षमूलर महाशय ने अशोक काल में प्रचलित दो प्रकार की  
लिखी जाने वाली लिपियों का पता लगाया है। उनमें से एक  
वाई और से दाहिनी ओर और दूसरी दाहिनी से वाई ओर  
लिखी जाती थी।<sup>१४</sup> इसी आधार पर आधुनिक विद्वानों ने इस  
वात को सिद्ध करने का प्रयत्न किया है कि अर्वी भी भारतीय  
प्रभाव से अछूती नहीं।

अन्वेषण और जागृति के इस काल में स्वीडश कांट जर्मन-

१०. Marsh. Man's History of India.

११. Historical Researches Vol, II Page 220

१२. Sir W. Jahn's work Vol, I

१३. Journal of the Indian Association

१४. Indian in grace Page 18

१५. The Science of language

स्टजनी, डाक्टर ब्लेटाइन, डब्ल्यू० सी० टेलर प्रोफेसर बीबर डाक्टर प्रिट चार्ड आदि असंख्य पाश्चात्य संस्कृत परिदृष्टों ने संस्कृत साहित्य पर मुग्ध होकर अथक परिश्रम द्वारा इसे समस्त मंसार की भाषाओं का स्रोत एवं प्राचीनतम सिद्ध करने में जरा भी कोई कसर नहीं रखी। जर्मन विद्वान फ्रैंज बाघ प्रबल प्रमाणों के आवार पर बतलाने हैं कि एक समय समस्त विश्व में संस्कृत भाषा बोली जाती थी।<sup>१५</sup> मान्म डुबोइस के शब्दों में 'संस्कृत आधुनिक योरूप की भाषाओं का आदिम स्रोत है।'<sup>१६</sup> इतिहासकार गैरट के भी अनुसन्धान को देखिए—'आयों की भाषा से ही संस्कृत, लैटिन ग्रीक और फारसी भाषाएं' निकली हैं।<sup>१७</sup> जिस राष्ट्र की भाषा इतनी परिपूर्ण, प्रांजल परिमार्जन एवं प्राचीन हो उसकी सभ्यता कितनी पुरानी और इन्होंने इसे यकीन करने के लिए कदाचित अधिक प्रमाणों की आवश्यकता नहीं।

15. Edinburgh review No. XXXIII Page 43

16. Bible in India

17. A History of India Page 11



# प्राचीन भारत में लेखन कला



स्वर्गादिपि गर्गीयसी भारत भूमि में लेखन कला का प्रचार अत्यन्त प्राचीन काल से है। सन् १८३८ ई० की अन्तर्राष्ट्रीय प्राच्य कांग्रेस लीडन ( Leyden ) में प्राचीन भारत में लेखन कला का प्रयोग' नामक निवन्ध पढ़ते हुए श्रीयुत एस० के वर्भा ने बड़ी विद्वता के साथ सिद्ध किया था कि 'ऋग्वेद' की 'ऋचाएं' मूर्तकाल के प्रन्थ और साहित्य का गद्य आज तक कभी भी सुग्रित न रहता यदि उस काल में लेखन कला का प्रचार न होता। प्रोफेसर वेल्सन ने लिखा है कि सूत्र और त्रायण काल से पूर्व वेदों में कला, विज्ञान, स्वर्ण के गहने, कवच, अस्त्र शस्त्र आदि थे। यन्त्र काल में तो आपने बड़ी र संस्थाओं और बड़े वड़े कानूनों के पोथों तक का जिक्र किया है।<sup>१</sup> अन्यत्र आपने शुक्लएठ से स्वीकार किया है कि हिन्दू लोग लेखन कला से उतने ही लम्बे काल से परिचित हैं जब से कि साहित्य से।<sup>२</sup>

शतपथ त्रायण का वचन है "तदेतत् पश्यन नृपि मिद्यः प्रतिपद ।"  
(१८.४।२.२३) ऐसरेय त्रायण की भी कुछ ऐसी उक्ति है "तदेत नृपि पश्यन्तुवाच नियत्वा इन्द्र सारथिः ।(६.१)"

इन दोनों प्रमाणों का भाव यह है कि ऋषियों ने वेदों को देखा। देखना आंखों का कार्य है। वे वही वस्तु देख सकते हैं जिस का कोई रूप हो। अर्थात् ऋचाएं लिखित रूप में थी तभी उन्हें देखा गया।

1. Rigveda (Translation) Introduction Page

2. Mill's India Vol, Page, 49 footnote.

सूत्र काल में लेखन कला का प्रभाव 'पटल' और 'सूत्र' शब्दों में मिलता है। पटल शब्द इस बात का परिचायक है कि सूत्र विभिन्न भागों में विभक्त किये गए थे। जिनका नाम 'पटल' था। 'सूत्र' स्वयं पुस्तक की संज्ञा है। जिन सज्जनों ने प्राचीन ग्रन्थ भोजपत्र अथवा तालपत्र पर लिखे होंगे उन्होंने यह भी देखा होगा कि उन पत्रों के बीच में एक छेद होता है जिस में एक सूत्र ( Thread ) डालकर उन पत्रों को बांधा या नहीं किया जान है। जर्मन लोग अब तक उन पुस्तक को बैंड ( Band ) कहते हैं जिसका अनुवाद मर्स्कूत में सूत्र ही होगा। प्रोफेसर हार्मन का भी अनुमान है कि भारत में वर्णमाला की लेखन शैली अत्यन्त प्राचीनकाल से प्रचलित है। इसका प्रयोग केवल ( Interpretation ) शिला लेखों तक ही में सीमित न था प्रत्युत जीवन के सभी साधारण व्यापारों में इसका व्यवहार होता था।

उत्तर सिन्धु प्रदेश के लरकाना ज़िले में एक अत्यन्त प्राचीन नगर 'मोहंजोदाहो' में भारतीय पुरातत्व विभाग के डॉक्टर जनरल सर जान मार्शल के निरीक्षण में खुदाई का काम कई वर्षों से जारी है। तथा मरण उमरी ज़िले के 'हरप्पा' नामक स्थान में भी खुदाई हुई है। यहां से सौ कड़ों सौल मुहरें तथा धातु के खुद लेख पायण् प्रतिमाएँ तथा भिन्न पशु पक्षियों की आकृति के खिलौने, सूर्ता और उनी रंग विरंग चित्र युक्त वस्त्र आदि उपलब्ध हुए हैं। पुरातत्ववेताओं का अनुमान है कि 'मोहंजोदाहो' नगर ताम्र युग में अपनी उन्नति के उच्च शिखर पर था। विश्व के सभी विद्वान ताम्र युग की समाप्ति ईसा से २००० वर्ष पूर्व मानते हैं। सुप्रसिद्ध भारतीय पुरातत्ववेत्ता श्री राखलदास वंधोपाध्याय एम०ए०ने प्रबल प्रमाणों द्वारा यह प्रमाणित किया है कि कि ताम्र

दुर्ग के ब्राह्मण काल में भारतवासियों ने लिखने की प्रणाली निकाली थी । अन्तु विद्वानों के अन्वेषणानुसार “जो लिख कर उदाहरणों को बोचते हैं वे वेदों को दूषित करते हैं ।”<sup>१</sup> इसके अतिरिक्त उमों प्रन्थ में ‘ग्रन्थ’ शब्द ‘मूल पाठ’ और पुस्तक भारत के अर्थों में प्रन्तु न हुआ है ।<sup>२</sup> पाणिनी ने यूनानी, लिपीकर, पटल प्रन्थ, वाइ, मूत्र, वर्गा, वर्गास्वर और अक्षर आदि शब्दों का प्रयोग कर अपने एवं पूर्व काल में लेखन कला के आस्तित्व का आभास दिया है । ‘उन का ‘अदर्शन’ लोपः’ मूत्र तो तत्कालीन लेखन कला का जीता जागता प्रमाण है । पाणिनी महाराज अपनी शैली में कहीं लोप, कहीं आगम और कहीं प्रत्यय लगा कर शब्द सिद्धि करते हैं । लोप का अर्थ लुप धातु, कट जाने का वोधक है । मोचने की बात यह है कि कोई वस्तु कट कर तभी अलग होगी, जोप भी उनीं समय सम्भव है जब वह वस्तु भी हो । जिस से वह वस्तु कटी हो, नहीं तो लोप कहां होगी ? अदि पाणिनी काल में लेखन कला का प्रचार न होता तो ‘रूप सिद्धि’ ही नहीं हो सकती थी भला फिर लोप किसका होता ? यही नहीं पाणिन काल में मर्व साधारणा अपने पशुओं के कान पर कोई चिन्ह खोद दिया करते थे ।<sup>३</sup> प्रसिद्ध जर्मन विद्वान व्युहलर लिखते हैं कि अशोक के शिला लेखों के अक्षर उनसे ४-५ सौ वर्ष पूर्व भारत में प्रचलित थे । अन्यत्र आप कहते हैं कि सम्राट प्रियदर्शी अशोक के लेखों में भी ब्रह्मालिपी का भारत में लम्बा इतिहास है ।<sup>४</sup> इतिहासकार वीरेन्ट स्मिथ बतलाते हैं कि चन्द्रगुप्त से बहुत पहिले भारत में

<sup>१</sup> अनुशासन पर्व श्लो० १३४५

<sup>२</sup> प.नम—श्लोक ११३१६—८८

<sup>३</sup> ‘कर्त्तृ जन्मणस्याविद्या पञ्चमन्मणि भिन्न छिन्ना चिछ्रद्रवरस्त कस्य’

<sup>४</sup> Brahmi Alphabet तथा शर्त्सिंह की भारत यात्रा Page 35 and 47

सबं साधारण के अन्दर लेखन कला का प्रचार था ।<sup>८</sup>

बौद्ध काल के सतम्भ और शिला लेख तो अब तक तत्कालीन लेखन कला के उचलन्त प्रमाण हैं। मथुरा के भूगर्भ से निकले पत्थरों की इतिवृत्त देते हुए डाक्टर फहर ( Fuhrer ) कहते हैं—“वह अब से २००० वर्ष पूर्व वासुदेव आदि राजत्व काल में लिखे गए थे।”<sup>९</sup> प्रोफेसर मैक्समूर्गर का मत सभी से जिराला है। आपका कथनानुसार भारत में लेखन कला का इसा से छः हजार वर्ष पहले ही भारतवासी लेखों को धातु आदि पर सोने कर चिरस्थाई रखने की युक्ति जानते थे।

प्रोफेसर हीवर और मैक्समूर्लर दोनों ही विद्वानों ने महाभारत को प्राचीन प्रन्थ माना है।<sup>१०</sup> यह भी स्पष्ट रूप से कहा गया है कि इसका प्रचार पाणिन के बाद हुआ है। पाणिन ने यद्यपि संस्कृत का व्याकरण जैसा विषय रच डाला फिर भी वह लिखना नहीं जानते थे।—यह आपकी शुभ सम्मति है। वास्तव में प्रोफेसर साहब इस विषय में समुचित न्याय नहीं कर सके, कारण कुछ भी हो। आपने अपने संस्कृत साहित्य के इतिहास पृष्ठ १८७ और ८७३ पर होत्रियों की प्रार्थना पुस्तक ( Prayer Book of the Hotris ) का उल्लेख किया है। विचार करने की बात तो यह है कि जब उस काल में भारतीय लेखन कला से अपरिचित थे तो ‘पुस्तक’ शब्द कहाँ से आया। इसी भावि उसी पुस्तक के १३८ पृष्ट पर आप कात्यायन को पाणिन का समकालीन मानते हैं और फिर १४८ पृष्ट पर लिखते हैं कि कात्यायन ने वर्तिका लिखा। जब कात्यायन ने जो

8. Early History of India Page. 127

9. Epigraphia Indica.

10. Literature Schichle Page 56

कि पाणिन के समकालीन थे पुस्तक लिखी तो फिर पाणिन निवाना कैसे नहीं जानते थे ? जो भी हो इस विषय में मैक्समूलर महाशय का मत भी मान्य नहीं हो सकता । स्वीडशकांट जनोस्टर्जना कहते हैं कि 'इस से २८०० वर्ष पूर्व अथवा इत्राहीम से २० वर्ष पूर्व हिन्दुओं के पास लिखित धार्मिक पुस्तकें मैजूद थीं ।'<sup>११</sup> फादर पाल्यूना ( F. Paulino ) ने तो यहां तक पता लगाया है कि कृशिचयन इतिहास काल ( Jura ) से पहले भारत में रुई का कागज व्यवहृत ( Cotton Paper ) होता था ।<sup>१२</sup> वास्तव में भारत की किसी भी कला की जन्म किंविद्वानों में वृहद् प्रन्थों की रचना हो रही थी, हुनिया की सम्यता काँड़ियों और पृथ्वी की कन्दराओं के अन्धकार में लम्बी ताज कर खरांटे ले रही थी ।

11. Theogony of the Hindus Page 26

12. Historical researches Vol. II Page 107



## दर्शन

मनुष्य क्या वस्तु है ? मृष्टि क्या है ? मानवी आयु की ममासि पर भी मनुष्य का कोई अस्तित्व है ? इन गुणियों को मुलभूता, मनन करना मनुष्य की स्वाभाविक प्रवृत्ति है । अपने, मृष्टि के पुर्जन्म सम्बन्धी प्रश्नों को हल करने की प्रवृत्ति में ही दर्शन शास्त्र की उत्पत्ति होती है । यही दर्शन शास्त्र के सिद्धांत हैं जो जगत में पद-पद पर मनुष्य का पथ-प्रदर्शन करते हैं । विश्व को दर्शनों का विशाल सम्बाद सुनाने वाले जगदगुरु भारत के ही ऋषि थे । विद्वान मैकलमूलर ने लिखा है 'हिन्दू दार्शनिकों की एक जाति थी । उनके संघर्ष विचारों के संघर्ष रहे हैं ।' <sup>१</sup> स्वीडस कांट कहते हैं—'हिन्दू गोम और ग्रीक के दर्शनिकों से बांसों आगे बढ़े थे ।' <sup>२</sup> हिन्दुओं के सम्बन्ध में विद्वान काल ब्रूक स्वीकार करते हैं कि वे शिक्षक थे, शिष्य नहीं । <sup>३</sup> योरुप के सर्वप्रथम दार्शनिक के सम्बन्ध में सर एम० मोनियर विलिम्स वल्लाते हैं—प्लटो और पैथागौरस दोनों ही शास्त्र के सम्बन्ध में हिन्दुओं के कृणि हैं, वे इन सिद्धांतों पर विश्वास भी करते हैं ।' <sup>४</sup>

प्रो० मैकडानेल ने ग्रीक में प्रचलित कथाओं के अनुसार अन्येयगा किया है, थेल्ल, एपीडो, विल्स, डिमाकीट्स एवं अन्य दूसरे विद्वानों ने दर्शन शास्त्र का अध्ययन करने के लिए पूर्व

1. Ancient Sanskrit Literature Page 31

2. The Theogony of Hindus, Page, 27

3. Translation of R. A. S, Vol. I

4. Indian wisdom, Page 83.

जी यात्रा की थी।<sup>५</sup> डाक्टर एन० फील्ड भी बतलाते हैं कि पैथागौरस आदि महानुभावों ने इस विषय का ज्ञान प्राप्त करने के लिए भारत यात्रा की थी जो कि बाद को ग्रीक के प्रसिद्ध दार्शनिक हुए हैं। मुकुरान और प्लेटो का आत्मा के अमरत्व का मिद्दान प्राच्य दर्शन का ही मिद्दान्त है।<sup>६</sup>

प्राचीन आर्यों ने जिस ओर पर दृष्टाया, वही संसार का निश्चिन मार्ग बन गया। वे जिस ओर भुक्त, संसार भी भुक्त गया। आज दुनियां पर उन के ऋण का भार है। मिस्टर प्रिंसेप मूक्तकण्ठ में स्वीकार करते हैं—‘पैथागौरस ने अपने मिद्दान्तों को भारत में लिया—यह बात साधारणतः स्वीकार की जाती है।

जर्मन दार्शनिक शेलगल इसी बात का समर्थन करते हुए कहता है—‘यो नृप का सर्वोच्च दर्शन भारतीय दर्शन के मामने ऐसा ही है जैसा भृश्याहृ-मातृएड के मामने टिमटिमाता प्रदीप।’<sup>७</sup>

उपरोक्त प्रमाणों से यह बात प्रतिपादित हो गई कि दर्शन का स्रोत भारत की पुरातन भूमि है। दर्शन संख्या में है—न्याय, वैरोधिक, सांख्य, योग, पूर्वमीमांसा और उत्तर मीमांसा।

**न्याय—** प्रमार्गर्थ परीक्षणं न्यायः

न्याय दर्शन के प्रणेता महर्षि गौतम हैं। इसका सर्वोत्कृष्ट भाष्य वात्सायन मुनि का है। न्याय में आत्मा की सत्ता का मुन्द्र विवेचन है। आत्मा में ही समृति रहती है। इसमें मोक्ष को ही अपवर्ग सिद्ध किया गया है, जो कि केवल दुःखों से मुक्त हो जाना है। न्याय का विवेचन करती हुई श्रीमति मिनिङ्ग कहती है—‘इस से गौतम की मानसिक शक्ति और गम्भीरतम

<sup>5</sup> Macdonell - Sanskrit Literature;

<sup>6</sup> History of Philosophy Page 65

<sup>7</sup> History of Literature.

प्रश्नों को वर्णन करने की क्रियात्मिक शैली का पता चलता है, जो कि मानव मस्तिक को प्रभावित कर लेती है।<sup>८</sup> शेलगञ्ज महोदय का विचार है कि न्याय का निर्माण तर्क और पवित्रता पर है, जिसके ददाहरण अन्यत्र कम मिलते हैं। डॉक्टर रुद्र महोदय दर्शनों के सम्बन्ध में एक स्थान पर लिखते हैं कि संस्कृत शब्द व्याप्ति का अंग्रेजी में उपर्युक्त पर्यायवाची शब्द मिलना ही अत्यन्त कठिन है।<sup>९</sup> हिन्दू धर्म के सम्बन्ध में विद्वान् मैस्टर हंकार महोदय की सम्मति है—हिन्दुओं के तार्किक अनुसन्धान किसी प्रकार बत्तमान जगत् के तर्क प्रन्थों से पीछे नहीं।<sup>१०</sup> सुप्रसिद्ध इतिहासज्ञ मिस्टर एलिफिन्स्टन लिखते हैं—“त्रावणों ने इस विषय पर अत्यन्त प्रन्थ लिखे हैं।”

### वैशेषिक—

इसके रचियता कणाद मुर्नि हैं। आपने सृष्टि का मूल तत्व परमाणु बतलाए हैं। सृष्टि के पूर्व ये परमाणु एक दूसरे के प्रति अव्यवस्थित रहते हैं। किसी अदृष्ट कारण विशेष से इनमें एक प्रकार का कम्पन या गति होती है। इससे परमाणु एक दूसरे के प्रति आकर्षित होकर परस्पर मिलने लगते हैं। इसी मेल से मृष्टि रचना का श्री गणेश होता है। संस्कृत में न्याय और वैशेषिक—ये दोनों मानव शास्त्र कहलाते हैं। प्रिस्टिपल सील, इतिहासज्ञ मिल के विचारों का विवेचन करते हुए लिखते हैं कि यह विचार मिल की अपेक्षा अधिक सुलभे हुए हैं। मिस्टर एलिफिन्स्टन और श्रीमती मिनिङ्ग भी इसकी मुक्तकण्ठ से सराहना करती हैं।

<sup>८</sup>, Ancient and Mediaeval India, Vol I Page 173

९. Translation of Bhaspatichched

10. History Antiquity, Vol IV page 330

**सांख्य**— विविध दुःखात्मन निवृत्तिरथन पुरुषार्थः ।

दर्शन की इस प्राचीनतम प्रशास्त्री के जन्मदाता कपिल हैं। इसमें प्रकृति और पुरुष को मूल तत्व बतला कर, प्रकृति के संस्कार पुरुष पर पड़ने से उत्पन्न एक प्रकार के कम्पन द्वारा सृष्टि उत्पत्ति के मत का प्रतिपादन है। पुरुष का एक और प्रकृति के २४ भेद माने गए हैं। इसमें पुर्वजन्म और आत्मा का अभावत्व स्वीकार किया है। सर डब्ल्यू० हेस्टर मानते हैं कि आधुनिक मानस रास्त्रियों के विकासवाद के सिद्धान्त कपिल के सिद्धान्तों नवीनालोक में दुनरावृति हैं।<sup>११</sup> प्रोफेसर मैक्डानल बतलाते हैं कि “संमार के इतिहास में सर्व प्रथम मानव मस्तिष्क को स्वतन्त्रता का पूर्ण प्रकाश प्रदान कर अपने मत का सतर्क प्रतिपादन किया गया है।”<sup>१२</sup> सांख्य का नास्टिक (Gnostic) मत पर यथाप्र प्रभाव पड़ा है।<sup>१३</sup>

**योग**— योगाधित्तवृत्ति निरोधः ।

चित वृत्तियों का निरोध कर ब्रह्म ताप से मुक्त होकर उपासना में लीन होने का इस से उत्तम साधन आज तक संसार में नहीं हूँड़ा जा सका। इसी की साधारण क्रियायों को सीख कर आज संसार में लोग अजीब २ करिश्मे दिखला रहे हैं है। इसके कर्त्ता महर्षि पात डली हैं, भाष्य व्यास मुनि का प्रमाणिक हैं। पर्यटक अलबेलनी लिखता है—योग ज्ञानके बिना कोई भी मानव स्वभाव की गहराई तक नहीं पहुँच सकता, हृदय के रहस्य और वास्तविकता से ही परिचित नहीं हो सकता और न ही प्राप्त कर सकता है आत्मा और परमात्मा का ज्ञान।<sup>१४</sup>

11. Indian Gazetteer India Page, 514

12. Macdonald's Sanskrit Literature, Page, 386

13. India's Past Page, 423

14. Max Muller's Science of Language Page, 165.

योग की आठ अवस्थाएं हैं:—यम, नियम, आमन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि । प्राचीन योगियों को देख कर वडे २ पाइचात्य परिणितों के पावों तले से पृथ्वी तिकल गई । इनके विस्तृत विवरण के लिए कर्नल अल्काट, प्रो० विलमन, डाक्टर ग्रेगर आदि की पुस्तकों का अनुशोलन कीजिए । ११ सर प्लूड मार्टिन की आंखों देखी घटना का उद्धरण करते हुए प्रोफेनर चाल्स राकवेल लालमैन (हावड युनिवर्सिट) लिखते हैं कि १८३७ में राजा रगजीतसिंह के दरवार में हरिदास नामक व्यक्ति ६ सप्ताह तक जमीन में मुद्रे की भाँति दबा रहा । यह है हिन्दुओं के आश्चर्य जनक योग का एक करिश्मा ! जान० सी० ओमन्स 'Men of India' से जैकोवी ने अपने अनुवाद Leipzig 1882 Vol. I में मिं० कर ने अपनी पुस्तक History of Buddhism में योग के चमत्कारों की पूरी र प्रशंसा की है । १२

### मीमांसा—

पूर्व मीमांसा में कर्मकाण्ड का विषद् एवं वैज्ञानिक विवेचन किया गया है । इसके प्रयोगों जैमिन हैं । व्यास मुनि ने इसका भाष्य किया है । मैक्समूलर कहते हैं कि यह अपने ढंग का अनुठा है, जिसका मानव मस्तिष्क ने कभी उत्पन्न किया था । मिस्टर एल्फ्रिस्टन प्राचीन श्रीक से पुरातन भारत की तुलना करते हुए लिखते हैं कि—उनका सर्व साधारण ज्ञान विस्तृत और प्रकृति एवं परमात्मा का विशेष था उनके पास एक आलोक था जो यूनान के उत्थान से पूर्व भी उनके अधिकार में था ।

उत्तर मीमांसा के कर्त्ता महर्षि व्यास हैं । यह एक सहत्वपूर्ण १५. See Essays on the Religion of the Hindus & Vol. I,  
१६. Modern Review for Jan 1913

दर्शन है। इसमें आत्मा, ब्रह्म और प्रकृति का विवेचन है। जिस ने जगत की उत्पत्ति, स्थिति, और प्रलय होती है वही ब्रह्म है, यथा सब भ्रम है—मिथ्या है। अंग्रेज दार्शनिक सर जेम्स मिक्नोश वेदान्त सिद्धान्तों का परिकृप्त, अद्वितीय सुन्दर और नाम बतलाता है। सर डब्ल्यू० जांस वेदान्त की प्रशंसा करते हुए लिखते हैं; जब तक इसका यथोचित अनुवाद योहपीयन भाषा में न होगा, उनके दर्शन का इतिहास अपूर्ण रहेगा। मिं० ए० ए० मैकडानल बतलाते हैं—प्राच्य दर्शन का युनानी दर्शन पर बहुत प्रभाव पड़ा है—जेनो फिनस पर मैनिडस के सिद्धान्तों तथा वेदान्त में कुछ साम्य है।<sup>१५</sup>

भारत के दर्शन हिन्दुओं का वह अक्षय कोप हैं जो आज भी यह पग पर संसार का पथदर्शन कर उनको उद्गीव खड़ा किये हैं। उनकी महत्ता एवं विशालता का गुणगाण्य करते हुए लार्ड गेनॉल्डशे लिखते हैं—‘यह सच बड़े मारके के प्रत्यक्ष हैं, जो उस प्राचीन काल के भारतीयों के आश्चर्य जनक उच्चतम विचारों के अद्वितीय प्रमाण हैं। उनके विचार महान मौलिक हैं।’<sup>१६</sup>

### साहित्य—

भाषा और कला के मेल से भावों और विचारों का जो मनोरम स्वरूप बनता है, वही साहित्य है। मानव मस्तिष्क ज्ञान का स्थान है, और साहित्य है उसका आहार। व्याद्य सामग्री की पवित्रता एवं पौष्टिकता पर ही मस्तिष्क का विकास निर्भर है। माहित्य मानव जीवन में वह विकास उत्पन्न करता है जो उसे याधारण प्राणी की है सियत से ऊँचा उठा कर मनुष्यत्व की चरम मीमा तक पहुँचा देता है।

<sup>१५</sup> Indian's Past Page, 155

<sup>१६</sup> India, a birds eye view Page 303

विश्व के इतिहास में साहित्य का प्रभाव अमोघ है । इस कारण विद्वानों ने साहित्य को राष्ट्र आत्मा और उसके उत्थान पतन के इतिहास का समुज्ज्वल दर्पण माना है । उन्नति शील साहित्य, प्रगतिशील राष्ट्र का ज्वलन्त प्रमाण है । विश्व इतिहास के पृष्ठ पलटिए, आज भी वह पुकार रे कर कह रहा है कि प्राचीन भारतीय साहित्य ने संसार का नेतृत्व किया है । स्वीकृत कांट बतलाते हैं—भारतीय साहित्य हमें प्राचीन काल के एक महान राष्ट्र से सुपरिचित कराता है, जिसमें ज्ञान की प्रत्येक शाखा का समावेश है । इसका मानव इतिहास में सदैव ही सर्वोच्च स्थान रहेगा ।”<sup>19</sup> पादरी वार्ड कहते हैं—“कोई भी समझदार व्यक्ति प्राचीन भारतियों की प्रशंसात्म विशाल विद्वता से इन्कार नहीं कर सकता । उनकी विभिन्न विद्यों की विद्वत्ता पूर्ण विवेचना इस बात का प्रमाण है कि वे ज्ञान विज्ञान की अनेक शाखाओं में पारदृश थे ।”<sup>20</sup> विद्वान मैक्समूलर का विश्वास है कि ‘आधुनिक काल में कदाचित ही कोई ऐसा ज्ञान विज्ञान होगा जिस ने प्राचीन भारतीय साहित्य से नवजीवन और अविनय प्रकाश न प्राप्त किया हो ।’<sup>21</sup>

वास्तव में भारतीय साहित्यकारों की काष्ठ कलम के जिस और मुँह मोड़ा कमाल के जौहर दिखलाए । प्रोफेसर हीरोल महोदय के शब्दों में “हिन्दू साहित्य गद्य और पद्य दोनों में ही सम्पन्नतम एवं वैज्ञानिक साहित्य है ।.....जिन लोगों से यह सम्बन्धित था वे उच्च श्रेणी के सुसंस्कृत और सर्वोत्कृष्ण ज्ञानी थे ।<sup>22</sup> प्रख्यात चीनी परिणत लियांग चिचाव ने भारत के प्रति

19, Theogony of the Hindus Page, 85

20 Wall's Antiquity of Hinduism Vol, IV

21. Ibid. . What can it teaches us ? Page 140

22. Heerens Historical Researches Vol, II Page 201

श्रद्धा और सम्मान प्रकट करते हुए लिखा है:—‘मुझे यह कहते हुए अभिमान होता है कि भारतीय विचार हमारे अनुभव से मंसार में पूर्णतया लम्भिलत होकर हमारी चेतना का अभिन्नांश बन गए हैं। उन्होंने हमारी मानसिक शक्तियों के विकास में महायता दी है, उनके बल बर हमने साहित्य और कला के विविध लंगों में उज्ज्वलीय सफलता प्राप्त की है।’

प्राचीन भारतीय साहित्य ने अज्ञान के अन्धकार में भटकने वाली लक्ष्य हीन जातियों को सुमार्ग का पथ प्रदर्शन करने नूर का काम किया है। इस आलोक माला की एक भी किरण नहीं नहीं जिसने दुनिया को कोई नया मार्ग न दिखलाया हो। न्यूयार्क निवासी मिस्टर डेलसा महोदय अपने एक लेख में भारतीय साहित्य और ज्ञान का वर्णन करते हुए लिखते हैं— पश्चिमीय जगत् को जिन बातों पर अभिमान है, वे वास्तव में भारतवर्ष से ही वहां पहुंची थीं।’<sup>२३</sup>

भारतीय विश्ल भावना कोप है, मानवी सम्पत्ति की रीढ़ है और प्राचीन प्रतिमा-सम्पन्न ऋषि एवं कवि-काविदों की दी हुई विलक्षण विभूति, पक्षपात पूर्ण, संकीण इन्द्र और अकृतज्ञ भले ही भारत का आभार स्वीकार करने में आनाकानी करें किन्तु भूमरण्डल के इतिहास का प्रत्येक शब्द अपनी जन्मभूमि भारत बतला रहा है। अन्तर्राष्ट्रीय धार्मिक कांग्रेस लन्दन के सभापति महोदय के अपने व्याख्यान में स्पष्ट रूप से स्वीकार किया था—हमारे ज्ञान के महान् तत्व और सभ्यता हमारी भाषा और समस्त आदतें, कलाएं, धर्म और गाथाएं, हमें पूर्व से प्राप्त हुई हैं।’ डाक्टर डब्ल्यू० डा० न्यून महोदय का विचार है कि—“हिन्दू साहित्य इस आधुनिक सभ्यता को

आश्चर्य चकित कर देगा । ये भारत का फिर एक बार शताव्दी पुष्प की भान्ति देखेंगे, जब वह प्रकुल्लित होकर अपनी मनोहर सुगन्धि प्रसारित करेगा । ये इस सभय उसकी शास्त्राओं से कुसुम-दल माँगेंगे ।<sup>२५</sup>

प्राचीन भारतीयों के ज्ञानामृत का यह अगाध मिथ्यु संसार की ज्ञान पिपासा को तृप्त करने ही के लिए अविभूत हुआ था किन्तु इसका परायग एवं मनन भी हमसी खेल नहीं । सर डब्ल्यू जोन्स ने ठीक कहा है—“हिन्दू साहित्य के किसी एक अंश से भी भली भान्ति परिचित होने के लिए मानव जीवन पर्याप्त नहीं ।”<sup>२६</sup>

साहित्य उन आभाषूर्ण अमूल्य रत्नों का भगवार है, जो विज्ञानलोक में चौंगुनी चमक दमक कर, बड़ी बड़ी चमकीली आंखों को चौंधिया देता है । प्रोफेसर मैक्समूलर और प्रोफेसर मैकडानल बतलाते हैं कि “संस्कृत साहित्य रोम और ग्रीस के संयुक्त साहित्य से बड़ा है ।”<sup>२७</sup> मिस्टर डब्ल्यू० सी० टेलर के शब्दों में इस अनन्त साहित्य की सीमाओं तक पहुंचना कल्पना के लिए भी कठिन है ।” प्रोफेसर विलसन इसकी उपयोगिता, महत्ता एवं विशालता पर कुछ लिखना ही व्यर्थ समझते हैं । वेदव्याख्यक बतलाते हैं । आप का ख्याल है कि ग्रीक साहित्य में वह बातें कहाँ जो संस्कृत में हैं ।<sup>२८</sup>

पाश्चात्य पण्डित इमरसन ने लिखा है कि “जीवन की

24. Superiority of Vedic Religion

25. Asiatic Researches Vol, 1, Page 345

26. History of Sanskrit Literature

27. India What can it teach us

गंभीर गवेषणापूर्ण व्याख्या करने और कला के प्राच्यों में अपने प्राच्यों का एकीकरण करके आनन्द धारा वहां देने वाली अलौकिक हितोंर का नाम ही साहित्य है।” वह हैं संस्कृत साहित्य जिसके द्वारा हमें “मन्यं शिवं मुन्द्रम्” का बहुत कुछ आभास मिल सकता है। श्रीमती डाक्टर एनीविमेन्ट के शब्दों में इस वर्तमान और अतीत माहित्य के आधार पर ही भारतीय गण्ठीयता का अमरत्व निर्भर है।”<sup>२८</sup> अस्तु आज के दिन हमाग कर्तव्य है कि हम अपने माहित्य को समर्पें। उसे जीवन से भी उज्ज्वलित्र एवं आदर्श बनाए रखें।

### वैदिक साहित्य—

वैदिक साहित्य में वेद और सूत्रों का समावेश है। वेद संख्या में चार हैं, ऋग्वेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद, सामवेद,। प्र०० में समूलर वैदिक साहित्य के सम्बन्ध में अपने विचार प्रकट करते हैं—“वैदिक साहित्य मानव ज्ञाति के आधार ज्ञान का दिग्दर्शन कराता है, जिसका जाइ हम संसार में अन्यत्र कहीं नहीं पाते।”<sup>२९</sup>

वैदिक काल के सम्बन्ध में आप कुछ ठीक निश्चय न कर उन्हें प्राचीनतम मानते हैं।<sup>३०</sup> प्र०० ब्लूमफोड ऋषियों को अपना पूर्व पुरुष बतलाते हुए मुन्केन्ट सें स्वीकार करते हैं—“वेद प्राचीनतम है.....इतनी शताव्दियों के पश्चान, हमारे मात्र, भाषा और धर्म में परिवर्तन होने के बाद आज भी वेदों में हमारे लिए बहुत कुछ सौजूद है—‘सदैव स्मरण्य रखना चाहिए।’”<sup>३१</sup> लाइ मालें का विश्वास है—‘जो कुछ वेदों में है,

२८. A Bird's eye View India.

२९. India what can it teaches us

३०. History of Sanskrit Literature.

३१. Religion of Vedas.

अन्यथ कहीं नहीं भी मिलता ।” सर डब्ल्यू० हरेटर महोदय के विचारानुभार—पूज्य ऋग्वेद काल अगम्य हैं ।” मिठू मोरिश-फिलप बतलाते हैं—‘प्राचीन टेस्टामेण्ट ( Old Testament ) के इतिहास और कालनिपुण शास्त्र की अन्तिम खोजों के पश्चात् हम निश्चय पूर्वक कहते हैं कि ऋग्वेद केवल आयों का ही नहीं प्रत्युत सम्पत्ति संसार में सब से पुराना है ।’ इन्हें इतिहास के प्रसिद्ध दार्शनिक और पुरातत्ववेत्ता एडवर्ड कार्पेंटर, जिन्होंने कई बार भारत यात्रा की है, लिखते हैं—“किसी नवीन दार्शनिक विचार प्रवाह की न हमें आशा करनी चाहिये और न इच्छा ही, क्योंकि इतिहास परिशीलन से हम इस परिणाम तक पहुंचते हैं कि प्राचीन काल से लेकर शोपनहार और विट्टमेन तक वेद में जो वीजहृप विचार व्यक्त किए गए हैं वे ही प्रत्येक धर्म और दर्शन शास्त्र के प्रेरक सिद्ध हुए हैं । ३३

जरतुश्त शिक्षा का आधार वेद बतलाते हुए अन्तर्राष्ट्रीय धर्मिक कांग्रेस लन्दन के सभापति महोदय ने अपने व्याख्यान में बतलाया था कि अत्यन्त प्राचीन, अति सरल और सभी धर्मों का आदि स्वरूप वेदों में मिलता है । मिमान्स ल्यून उपर्युक्त अकादम्य युक्तियों के आधार पर उद्घोषित करते हैं, “ब्रीस और रोम कोई एसा स्मारक नहीं, जो ऋग्वेद से बहुमूल्य होवे ।” वेदों के प्रति भारतीयों की ही नहीं, मनुष्य-मात्र की पूज्य दुष्कृति है । विशाल विश्व में आयों के अतिरिक्त अन्य जाति नहीं और वैदिक संस्कृत के सिवा दूसरी भाषा नहीं ३४ जिसे वैदिक साहित्य के समान अद्वितीय अलौकिक ज्ञान भण्डार को अपना लेने का सौभाग्य प्राप्त हो ।

22. Teaching of the Vedas

33. Art of Creation.

34. Science of Language and Tongues.

फ्रांस के प्रसिद्ध दार्शनिक तथा योगी 'एडवर्ड्शूरे' अपनी दुनिक 'राम एण्ड भोजिज' ग्रन्थ में लिखते हैं—'एक अत्यन्त मुन्दर स्फटिक मणि की भान्ति वेद में अनादि सत्य सूर्य की कल्प है और विश्वव्यापी सत्य सिद्धान्त सूर्य रशिमयों की तरह चमकते हैं।' अमरीकन महिला हीलर विलाक्ल के शब्दों में—'वेदों में केवल जीवन सम्बन्धी धार्मिक विचार ही नहीं प्रत्युत वास्तविकताएं हैं जिन्हें समस्त विज्ञानों द्वारा सत्य होने का प्रमाण मिला है।' ३५ जकोलियट महोदय वेदों की महत्ता को स्वीकार करते हुए बतलाते हैं 'वेद अनन्त का ज्ञान हैं, सिद्धान्तों के सिद्धान्त हैं जिनका रहस्य हमारे पूर्व पुरुषों पर प्रकट हुआ था।' ३६ कील विश्व-विद्यालय के विद्वान प्रोफेसर 'कील' महोदय वेदों की महिमा के गीत गाते हुए मुक्तकण्ठ से स्वीकार करते हैं—'वेद समग्र ज्ञान का आदि और अन्त हैं।' ३७

बैलजियम के प्रसिद्ध नाट्यकार कवि और दार्शनिक मैटर-लिंक का अनुभव है—'वेदों के अपूर्व विचार हमारी दुष्टि को चकित कर देते हैं। वे इतने साहस एवं विश्वास से बोलते हैं, जिसका हमारे अन्दर आज भी अभाव है। उनके विचार हमारे विचारों की अपेक्षा अधिक ठीक सिद्ध हुए हैं। कई ऐसे विषय भी हैं जिन पर भटक भटक कर वर्तमान विज्ञान अब वेद मार्ग पर आया है... उन ऋषियों की अपार दुष्टि और अपरिमित ज्ञान का अन्दाजा लगाना हमारे लिए कठिन है।' ३८ प्रो० विल्सन ने ऋषेद के अनुवाद द्वारा यह सिद्ध कर दिया है कि—'सूत्र और

३५. The Sublimity of the Vedas.

३६. The Bible in India.

३७. The Pre-historic Antiquity of Aryans,

३८. The Great Secret.

व्राह्मण काल से भी पूर्व वेदों में कला, विज्ञान, आभूषण, कवच, अस्त्र-शस्त्र, औषधियां और उनके ऐंटीडोट (Antidote<sup>४०</sup>) समय विभाग, न्याय नियम आदि सभी बातें पाई जाती हैं।<sup>४१</sup>

## ईश्वरीय ज्ञान—

श्रीमती बलायोटास्की का दृढ़ विश्वास है कि 'वास्तव में वैदिक ईश्वरीय ज्ञान हैं।'<sup>४२</sup> प्रख्यात परिणित मोरिस फिलिप महोदय भी इसी सिद्धान्त को स्वीकार करते हुए लिखते हैं कि—“वैदिक आयों के उच्च और विशुद्ध विचार ही उनके आदिम ईश्वरीय ज्ञान होने का कारण है।”<sup>४३</sup> टिनावली के विशेष (Vishेष) डाक्टर काइवर्थ मानते हैं—“कि हम ऐसे विचारों को ईश्वरीय ज्ञान मानने में जरा भी आनाकानी नहीं करते।”

वेदज्ञ मैक्समूलर महोदय वेदों के सम्बन्ध में लिखते हैं ‘किसी भी भाषा के प्रन्थ ने जो काम नहीं किया वह वेदों ने संसार के इतिहास में किया है। जिन्हें अपने और अपने पूर्वजों का अभिमान है, जिन्हें वैदिक विकास की इच्छा है, उन सबको वेदों का अभ्यास करना एकान्त आवश्यक है।’<sup>४४</sup>

इसके अतिरिक्त मिस्टर कालब्रुक ने ‘Asiatic Research’ रावर्ट रिसले ने ‘The Future of Hinduism’ डाक्टर डब्ल्यू. डी० ब्राउन ने ‘Superiority of Vedic Religion’ टी० जे० कंनेडी ने ‘Religion and Philosophy’ रावर्ट बालिन ने ‘Social environment and moral Progress’ मिस्टर राथ ने ‘History of the Literature of the Vedas’

३९ Rigveda (translation) VII.

४० Secret Doctrine.

४१ Teachings of the Vedas.

४२ History of Sanskrit Literature.

प्रो० हीरंन ने 'Historical Researches' मैकडानल ने 'Sanskrit Literature' में, वीवर महोदय ने 'Indian Literature' में, प्रोफेसर राक ने 'Vedic Literature and History' में और संस्कृत जर्मन महाकोश में तथा प्रो० हीग, प्रो० हीट, प्रो० लिडव आदि असंख्य पाश्चात्य पण्डितों ने वेदों की महिमा का वर्खान किया है।

### ब्राह्मण ग्रन्थ—

वेद के पश्चात् वैदिक-काल के प्राचीन ग्रन्थ ब्राह्मण हैं। उनमें वेद-मंत्रों की विशद-व्याख्या की गई है। प्रत्येक वेद-संहिता के पृथक पृथक ब्राह्मण हैं उनमें से मुख्य यह हैः—ऋग्वेद के एतरेय और कौशितकी, यजुर्वेद के शतपथ और तैत्तिरीय, साम वेद के लालड्य, षड्विंश और छान्दोग्य तथा अथर्व-वेद का गौपथ।

मारिस फिलिप कहते हैं कि 'ब्राह्मणों के पढ़ने से साफ पता चल जाता है कि ये वेदों के पश्चात् के ग्रन्थ हैं किन्तु किर भी उनमें मनोरञ्जक एवं शिक्षाप्रद वातों का समावेश है।'<sup>१३</sup> प्रोफेसर वीवर महोदय के चिचारानुसार ब्राह्मण-ग्रन्थ या तो वेदों की व्याख्या है अथवा उनकी दार्शनिक व्याख्या। प्रोफेसर मैकडानल महोदय की सम्मति है कि वे इन्डो-योन्पियन परिवार के प्राचीन गद्य-लेखन का नमूना हैं।<sup>१४</sup>

मिस्टर हालहेड ब्राह्मण-ग्रन्थों के सम्बन्ध में बङ्गाते हैं। कि:—प्राचीनता की दृष्टि से संसार के पास उन ग्रन्थों के अतिरिक्त अन्य निर्विवाद-ग्रन्थ नहीं जिन्हें प्राचीन ब्राह्मणों ने लिखा था।<sup>१५</sup>

१३ Teachings of the Vedas.

१४ Macdonell's Sanskrit Literature.

१५ The Code of Hindu Law,

## सूत्र—

सूत्र ६ भागों में विभाजित हैं:—१—शिक्षा २—कल्प  
३—व्याकरण ४—छन्द ५—निरुक्ति ६—ज्योतिष ।

सूत्रों का यह विभाजित प्राचीन भारतीय अध्ययन-प्रणाली के परिष्कृत रूप और सिद्धान्तों की वैज्ञानिकता का पूर्ण परिचायक है। प्रोफेसर एच० एच० विलसन महोदय शिक्षा सूत्र का विवेचन करते हुए लिखते हैं:—ऐसा परिश्रमशील सूक्ष्म, परिष्कृत मानवी-वाणी के उच्चारण का वर्णन किसी भी जाति के साहित्य में सुलभ नहीं।<sup>४६</sup> डाक्टर डब्ल्यू० डी० ब्राउन वैदिक-साहित्य का विवेचन करते हुए लिखते हैं—‘सतर्क-निरीक्षण के पश्चात् एक निष्पक्ष-मस्तिष्क को मानना पड़ता है कि भारत साहित्य एवं परमार्थज्ञान में संसार की माँ है।’<sup>४७</sup>

रार्बर्ट वालिस महोदय छन्दों के सम्बन्ध में अपने विचार इस प्रकार व्यक्त करते हैं—छन्दों-भजनों (Hymns) का आश्चर्यजनक समूह धार्मिक शिक्षा की विशुद्ध एवं उच्च-प्रणाली है। वैदिक-कालीन छन्द किसी प्रकार भी हमारे विशाल-तम धार्मिक छन्दों और मिलटन शैक्सपियर और टेनीसन से किसी प्रकार घब्ब कर नहीं।<sup>४८</sup>

प्रो० मैक्समूलर महोदय कहते हैं—‘समस्त-भाषा को संक्षिप्त कर कुछ अल्प-संख्यक धातुओं में बन्द करने का विचार, जिस का प्रयत्न योहप में हेनरी स्टेनी ने १६वीं शताब्दी में किया था, उस से ब्राह्मण कम से कम ईसा से ५०० वर्ष पूर्व भली भास्ति परिचित थे।’<sup>४९</sup>

46 Wilson's Essays on Sanskrit Literature Vol. III Page, 311

47. Superiority of Vedic Religion

48. Social Environments and Moral Progress.

49. Maxwell's Lecture on the Science of Language.

## व्याकरण—

प्रोफेसर सर मोनियर विलियम्स बतलाते हैं कि 'संस्कृत-व्याकरण' उस मानव-मस्तिष्क की प्रतिभा का आश्चर्यतम् नमूना है जिसे किसी देश ने अब तक सामने नहीं रखा।<sup>५०</sup> श्रीमति मैनिंग भी इसी बात का प्रतिपादन करती है कि 'संस्कृत का व्याकरण समस्त व्याकरणों से बहुत उंचा है।'<sup>५१</sup> प्रो॰ मैक्समूलर महोदय के शब्दों में 'हिन्दुओं के व्याकरण-अन्वय की योग्यता संसार की किसी भी जाति के व्याकरण-साहित्य से बढ़ चढ़ कर है।'

विद्वान् कालत्रुक् कहते हैं—'व्याकरण के वे नियम अत्यन्त सतर्कता से बनाए गए थे और उन की शैली अत्यन्त प्रतिभा-पूर्ण थी।'<sup>५२</sup> सर डब्ल्यू० डब्ल्यू० हेंटर लिखते हैं—'संसार के व्याकरणों में पाणिनि का व्याकरण चौटी का है। उस की वर्ण-युद्धा, भाषा का धात्वन्य, वाक्य-विधान के सिद्धान्त और प्रयोग-विधियां अद्वितीय एवं अपूर्व हैं.....यह भानवीय प्राप्ति का अत्यन्त महत्व-मूर्ण-आविष्कार है।'<sup>५३</sup> पाणिनिय, कात्यायन और पातञ्जली यह भारतीय व्याकरणाचार्यों की ब्रह्मी है। इस के अतिरिक्त कश्यप, गर्ग गालव, भारद्वाज आदि कितने व्याकरण महारथियों ने इस भाषा-उद्यान को अपने विशाल-थ्रम से विभूषित एवं परिष्कृत बनाया है। सर एम॰ विलियम्स की सम्मति के अनुसार 'कोई देश इसकी तुलना योग्य व्याकरण पेश नहीं कर सकता।'<sup>५४</sup>

५० Indian Wisdom Page 176.

५१. Ancient and Mediaeval India.

५२. Werner's Indian Literature.

५३. Gazetteer of India.

५४. Indian wisdom.

## काव्य—

काव्य शास्त्र विनेदन कानोगच्छति धीरताम्—हिनोपदेश

काव्य की अनृठी कलिकाएँ जो इस कुसमोद्यान में हृष्म खेल गई हैं, नन्दन कानन में ही कदाचित नमीब हाँ। उन का अक्षय सौरभ आज भी भारतीयों को आनन्द की चरम चोटी पर विटला देता है। शरीर को ले कर अशरीर की अनुभूति लाभ करा देना, इही लोक से उठा कर दृसभी दुनिया में बिठा देना। प्राचीन भारतीय काव्य का ही काम है। विद्वान जार्जस्टजर्नी कहते हैं 'काव्य भारतका भारत में शासन है।'<sup>५५</sup> किद्वान मारियान्ताद्व वतलाते हैं—'काव्य का वह मनोहरीरूप जो यूनानी देवमाला का आवार है। यद्यपि यह बालक व्यस्क बनकर सुन्दर और शक्ति सम्पन्न बन गया है, जिसका माता ने कभी अभिमान नहीं किया। फिर भी हृष्म उस मूल स्रोत का सम्मान किए दिना नहीं रह सकते जिसने हृष्म को प्रसन्न किया और शिक्षा दी है। काव्य की इन गम्भीर प्रवृत्तियों ने हृमारी बेदना और बासना को शान्त कर हृष्में एक नवीन नैतिक अस्तित्व प्रदान किया है।'<sup>५६</sup> इस लिए प्रो० मैक्स डंकर कहते हैं कि 'भारत का काव्य-कोष अनन्त है।'<sup>५७</sup> प्रो० विल्सन इस की सादगी, उत्तमता, महत्ता, पवित्रता, कोमल कल्पना और मौलिकता पर सौ जान में निश्चावर हैं।<sup>५८</sup> इम्पीरियल पुस्तकालय कलकत्ता के पुस्तक अध्यक्ष विद्वानों को सलाह देते हैं कि 'भारतीय काव्य की प्रत्येक पंक्ति में उस के आचार का कुछ न कुछ रूप विद्यमान है, इसे आप को ध्यान पूर्वक पढ़ना चाहिये।'<sup>५९</sup>

५५. Theog. by. of the Hindus Page 80.

५६. Literature on India Page 21.

५७. History of Antiquity Vol. IV. Page 27.

५८. Elphinston's History of India Page 155.

५९. India its Character.

संसार के गहन-तम विषयों को भी काव्य के सुलिलित सांचे में डाल कर आकर्षक बना देना प्राचीन हिन्दू कवि कोविदों का अपना काम था, जिन विद्वान ने इसके जिस जौहर को समझा उसी पर मुराद हो कर उस का गुण-गान करने लगा । सरहार कोट बटलर कहते हैं कि भारतीय धार्मिक एवं काव्य ग्रन्थों ने प्रकृति को सुन्दर निरूपण किया है ।<sup>१०</sup> संस्कृत-साहित्य मर्मद्वारा महा के शब्दों में भारतीय काव्य में भी सभी सुन्दरताओं एवं अलङ्कारों का समावेश हुआ है । + + + इस में अतीव हृदय स्पर्शी भावों का प्रवेश हुआ है ।<sup>११</sup> प्रस्त्रात-पाश्चात्य परिदृष्ट हीरेन की सम्मति से प्रचुरता से फूली-फली हिन्दू काव्य की विभिन्न शाखाएँ आश्चर्य जनक सफलता के साथ विकसित हुई हैं । उदाहरण स्पष्ट में आप महाकाव्य, नाट्य काव्य, गीत काव्य, नीति काव्य आदि का नाम लेने हैं ।<sup>१२</sup>

प्राचीन हिन्दू-काव्य-प्रदीप के आलोक में संसार ने जिन मूद्दम तत्वों को प्राप्त किया है, वह आधुनिक विज्ञियों का जगमगारी ज्योति में भी नहीं मिलता । देखिए, मैंकडानेल सर्वांग विद्वान भी इस से प्रभावित हो कर कहते हैं कि संसार की अपेक्षाकृत हिन्दू साहित्य अपने काव्य निवृक्षण पर गर्व कर सकता है ।<sup>१३</sup>

## महाकाव्य

संसार की अन्य जातियों के पास इने गिने महाकाव्य किसी कोने में भले ही पढ़े हों किन्तु भाष्ट के अनेकों महाकवियों ने

१०, India Insistent Page 13

११, Letters on India Page, 23

१२, Historical Researches Vol VII, Page 190

१३, See History of Sanskrit Literature Page, 377

कितने ही महाकाव्य रचे हैं। प्रोफेसर हीरेन के शब्दों में 'हिन्दुओं का साहित्य महाकाव्य-सम्पन्न है। दूसरों के पास इतने महाकाव्यों का कोप हो ही कैसे सकता था? वीर भूमि भारत के अतिरिक्त अन्यत्र इतने महापुरुष हुए भी कहाँ हैं?

विश्व-साहित्य-भण्डार में ओडसी और ईलियड अन्य दो और महाकाव्य हैं जिन पर पाश्चात्य परिदृष्ट यत्किञ्चित गव किन्तु रामायण और महाभारत की समता में ये खड़े रहे मर्के यह हो ही नहीं सकता! सर्व प्रथम उन के आकार की ही तुलना कर लीजिए।

महाभारत	....	८००००	पंजियां
रामायण	.....	४८०००	„
ईलियड	....	१५६६३	„
ईलिय और ओडसी	.....	३००००	„

डाक्टर एफ० वाशवन्होपकिन्स बतलाते हैं कि 'यदि हम इन की तुलना करें तो बड़ा अन्तर मिलता है। विशाल काव्य महाभारत ईलियड और ओडसी दोनों के योग से सतरुने से भी बड़ा है और रामायण है महाभारत का चौथाई' १३४ डाक्टर महोदय यहाँ कुछ गलती कर गए। मैकडानेल के कथनानुसार महाभारत इन दोनों को मिलाकर भी इनके अठगुने के लग भग होता है। १५

पाश्चात्य जगन् के पास एक Virgil's Aeneid भी है

61. India old and new.

62. See, San Kit Literature Page 382,

जिस में ६८८ पंक्तियाँ हैं किन्तु इतिहासज्ञ गेरेट के शब्दों में वाल्मीकि रामायण में २४,००० पद और सात काण्ड हैं । १० आकार की दृष्टि से तो विश्व के महाकाव्य महाभारत और रामायण के मामने बच्चे ही ठहरते हैं । अब तात्त्विक दृष्टि से भी इनके अन्तर्गत-तम को टटोल कर मुकाबला कर लीजिए । प्रोफेसर मोर्नियर विलियम्स का ही निर्णय सुनिए—इन दोनों की तुलना दिम-महिडत-जंचे हिमालय से निकल कर अनेकों सहायक नदियों के साथ बहाने वाली गंगा और मिन्दु की समता अटीका (Attica) अथवा थेसली (Thessaly) के भरनों से करना है । ११ अब रामायण और महाभारत को पृथक पृथक रख कर दो विद्वानों की दृष्टि से देखना उचित है ।

### रामायण—

आदि कवि महर्षि वाल्मीकि ने अपने देश काल को अपनों काव्य स्पी कराठ दिया था, रामायण उसी का असर सन्देश है । १२ रामायण के नायक हैं राम, सर मोर्नियर विलियम्स के शब्दों में—राम का चरित्र चित्रण बड़ी सुन्दरता से किया गया है । मानव समाज में वे बहुत बड़े निःस्वार्थी थे । १३ आर्थर-लॉली का विश्वास शास्त्रास्त्र सज्जित राम दुनिया के इतिहास में अपना दूसरा नहीं रखते । १४

इस महाकाव्य की नायिका थीं सीता, उन के सन्वन्ध में

६६ A History of India Page 121

६७, Indian Epic Poetry Page 1

१० रामायण की धन्ता धैर्यिक काल के पश्चान् और इस से बहुत ही पहले जी है—गेरेट

६८, Asiatic Researches Page 255,

७०, Rama and Homer Page 151.

डॉडेन ( Dowden ) की राय है कि वे एक स्वर्गीय महिला थीं ; लघुनऊ के भूतपूर्व रेजिस्टर ए० लीली० का कथन है कि सीता वह मुललित चरित्र थी जिसन कभी मानव अथवा देव हृदय में पैठ कर कल्पना का जगाया था । ११ मिस एम० स्काट कहती है—‘सीता स्त्रीत्व का एक महुर-नम आदर्श थीं जिन का मैते कभी अध्ययन किया है ।’ १२ रामायण में कवि ने राम को मनुष्यत्व से उठा कर देवत्व पद पर पहुंचाया है । रामायण की महिमा राम-रावण के युद्ध से नहीं । यह बटना राम और सीता की दास्पत्य प्रीति को उड़वल बनाने के लिए उपलक्ष्यमात्र है । भाई का आत्म त्याग<sup>१३</sup> पिता के प्रति पुत्र की वश्यता, पति पत्नी की पारस्परिक निष्ठा और राजा प्रजा का आदर्श सम्बन्ध ही हजारों वर्ष पूर्व के भारत-हृतिपण्ड के हृष्प में स्पन्दिन हो रहा है । चिद्वान मार्गियाग्रहण रामायण की विवेचना करते हुए इन्होंने प्राचीन-तम काव्य एवं इतिहास बतलाते हैं । १४ रेवरेण्ड पीटर पर्सिवल के शब्दों में इस विशाल ग्रन्थ की ओर एक निगाह भर कर देख लेने से ही इसके अन्तराम का बहुत कुछ पता लग जाता है । यह अनेकों ग्रन्थों का आदर्श है । १५ परिचृत चाल्स भोरिस कहते हैं कि रामायण की शैली सर्वोत्कृष्ट है । मानवीय कृत्यों में इस का आसन बहुत ऊँचा है । १६ प्रिसपल प्रिथक के शब्दों में ‘अन्यत्र कहीं भी काव्य और नैतिकता का इतना सम्मोहक समन्वय नहीं मिलता ।’

११. Rama and Homer Page 70

१२. Letter to P. C. Roy, dated London the 8th Dec. 1883.

१३: Letters on India Page 29.

१४. The Land Of the Vedas Page 76.

१५. Aryan Race Page 243

गृहस्थाश्रम भारतीय आयसमाज की भित्ति है और रामायण है उसका एक महाकाव्य। शान्ति रसास्पद गृहधर्म को ही करणा के अवृत्त जल से अभियक्त कर महान शैर्य वीर्य के उपर प्रतिष्ठित किया है। प्रोफेसर एम० एम० विलियम्स रामायण का पारायण कर इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं—“रामायण से अधिक सम्मोहक काव्य संस्कृत साहित्य में दूसरा नहीं, मापा की निर्दोषिता, शैली नी भरतता और मुन्द्रता साथ ही कवित्व पूर्ण भावनाओं की प्रचुरता, शीर्षत्व पूर्ण बटनाओं का चित्रमय वर्णन, प्रकृति के विशान दृश्य, मानव हृदय की परिष्कृत भावनाओं और दुन्दों और गम्भीर विश्लेषण का मुन्द्र समन्वय है इसे किसी राष्ट्र के निर्मी युग काव्य की समता में रखा जा सकता है। रामायण एक आनन्द दायक वाटिका के समान है। यत्र तत्र इसमें वज्रेल दृश्य भी है। यह अत्यन्त स्तोत्र सिद्ध्यत फल फूलों से सुसम्पन्न है। इसके सघन कानन भी आनन्द दायक पराडिजियों से भरपूर है।” १३ ‘फ्रेड इंडिया’ के सम्पादक जेम्स रट्लेज ने भी बताया था कि इसके विवेचन के लिए भी एक प्रन्थ की आवश्यकता है। एल० चिशविद्यालय के संस्कृत प्रोफेसर डाक्टर होपकिन्स बताते हैं—रामायण अधिक परिमाणित अनुकूल और परिष्कृत है। यह अपने विषय और सामाजिक वातावरण के दृष्टिकोण से अतीव गुद्ध है। १४

रामायण मिस्टर मोरिस के शब्दों में प्राचीन विचारों का एक आश्चर्य जनक आदर्श है। इसके टक्कर का दूसरा ग्रन्थ आज तक किसी ने देखा ही नहीं। इसके आधार पर कितने ग्रन्थ आज तक बने हैं किसी ने गिनने का कष्ट ही नहीं उठाया। प्रसिद्ध

फ्रांसीसी विद्वान् एम० एच० फाउचे (Fauche) ने रामायण के फ्रांसीसी अनुवाद की भूमिका में चिर अनुमन्धान के पश्चात लिखा है कि रामायण की रचना होमर काव्यों के पूर्व की है। होमर ने अपने विचार यहाँ से लिए हैं। प्रथम के तीन अध्यायों की अपूर्व समता को देख कर ही आर्थर लीली फैसला देते हैं कि बाल्मीकि रामायण को पढ़कर ही होमर ने अपने प्रन्थों की रचना की है। लीली महाद्वय ने दोनों प्रन्थों की तुलना ही में एक तीसरा ग्रन्थ रच डाला है।<sup>78</sup>

पाठक इस ग्रन्थ को केवल कवि का काव्य ही समझ कर ही न देखें प्रत्युत इसे भारत का रामायण समझें। वे रामायण द्वारा भारत और भारत के द्वारा रामायण का ज्ञान प्राप्त करने का प्रयत्न करें।

### महाभारत—

महर्षि वेदव्यास की यह रचना उस विशाल वृक्ष के समान प्रतीत होती हैं जो देश के हृदय रूपी भूतल से उत्पन्न होकर उस देश को आश्रय रूपी छाया देना हुआ खड़ा हो। मिस्टर निवेदिता के शब्दों में इसकी रचना राष्ट्रीय अमर प्राथंता का उच्च काव्य है।<sup>79</sup> मैकडानल महाद्वय का कथन है कि 'महाभारत आदर्श दर्शन की अक्षय खान है।'<sup>80</sup> असरीकन विद्वान् जेरेमिमह कर्टिन लिखते हैं—मैंने इससे अधिक आनन्द अपने जीवन भर में अन्य किसी भी पुस्तक को पढ़कर प्राप्त नहीं किया। भारतीय आयौं का सदाचार और वौद्धिक पद (स्थान) समस्त संसार की आंखें खोल देगा।<sup>81</sup>

78 Sea Roma and Homer.

79. Foot falls of Indian History

80. Sanskrit Literature Page 378

81. Maha Bharat part XXX

महाभारत की रचना के अन्तस्तल से वह स्वर्गीय तान निकलती है जिसके द्वारा भारत ही नहीं ममस्त विश्व एक प्रकार के अमृत पूर्व सुव का अनुभव करना है। देखिए अमरीका के निमिडु डाक्टर पफ० ए० हेसलर कहते हैं—मेरे जीवन के अनुभव में मुझे कोई भी ऐसा ग्रन्थ नहीं मिला जिसने बुद्धिमानों के इस विश्वास ग्रन्थ की भान्ति मुझे आनन्दित किया है। वास्तव में अनीतकाल में मैंने किसी भी ग्रन्थ की अपेक्षाकृत इसका अधिक अध्ययन किया है और लगभग १००० नोट अपने मनन के लिए कम में तैयार किए हैं। महाभारत ने मेरे सामने एक नवीन मंसार का उद्घाटन किया है। मैं इस पुस्तक के पृष्ठों पर अद्वित बुद्धि, ब्रान, सत्यता और सत्य प्रेम को देख कर आश्चर्य चकित रह गया। इनना ही नहीं, मैंने कितने ही सत्यताएँ जिन्हें ईश्वर और मृष्टि के सम्बन्ध में मेरे हृदय ने स्वयं मुझे बताया था, इस पुस्तक को मैंने सुन्दर और स्पष्ट भाषा में पाया है।<sup>४२</sup>

चार्ल्स मोरिस की जबानी भी इसका कुछ वर्णन सुन लीजिए—“महाभारत एक विलक्षण ग्रन्थ है। यह केवल एक काव्य नहीं प्रत्युत कवितामय आख्यान है।”<sup>४३</sup> प्रोफेसर हीरेन बतलाते हैं कि ‘महाभारत एक सम्पन्नतम ग्रन्थ है, जो कभी रचा गया था, इसमें इन्कार नहीं किया जा सकता।’<sup>४४</sup>

रेवरेण्डपोटर पर्सिवल कहते हैं कि महाभारत एक अत्यन्त योग्यता पूर्ण रचना है। सुशोभ्य विद्वान निर्णायिकों ने बतलाया है कि यह महाकाव्यों का एक अत्यन्त सुन्दर नमूना है जो किसी काल में रचा गया था। यह अपर्णा शानदारशैली के

४२ Roy's Mahabharat

४३ Aryan Rice Page 249

४४ Historical Researchers Vol 11 Page 161

लिये सुविख्यात हैं।<sup>८३</sup> मर्ट एच० वार्थ लेमी लिखते हैं कि मन् १७२५ ई० में जब मिस्टर विल्किसन ने इस विशाल प्रन्थ के अंश को प्रकाशित किया था तो संसार इसकी प्रभा से चौंथिया गया था।<sup>८४</sup>

विशाल भारत की कुटियों से निकली हुई सर्वोत्कृष्ट रचनाएँ संसार के कितने हृदयों में सुख शान्ति की थपकियां दी इमझ़ बहुत कुछ आभास विद्वानों के इन शब्दों से हो गया। अब इमझ़ आदर्श पर रची जाने वाली यूनानी पुस्तक की साज़ी का एक नमूना कर्नेल विलफौर्ड से भी ले लीजिए। आप कहते हैं कि 'डायोनीसस आफ नन्स' (Dionysus of Nounus) का कथानक महाभारत से लिया गया है।<sup>८५</sup>

महाभारत अपने ढंग का विलक्षण वेपोइ ग्रन्थ है। 'सत्यमेव जयति' और ले दूवता है एक पापी नाव को मंभथार से डस का आदि च्यन्त हैं। कविन्द्र रविन्द्र के शब्दों में 'शताव्दियों पर शताव्दियां व्यतीत होती चली जाती हैं किन्तु २१मायण और महाभारत का स्रोक भारत में नाम को भी शुण्क नहीं होता।' ये दोनों महाकाव्य हिमालय और गङ्गा की भाँति भारत के हैं।

### महाकाव्य

भारतीय महाकवियों ने भावुकता और प्रतिभा को साथ ले कर डस कुसमोद्यान में कदम रखा है। उनकी भाषा में, भाओं में, आभास में, और इंगित में एक अलौकिकता है। शब्द सुमन शर शरीर को बाल बाल बचा कर सीधे हृदय में पैठ जाता है, सौरभ मस्तक को सुवासित करने लगता है।

83. The Land of the Vedas Page 79

84. Journal Das Savant for Sept. 1886

85. Asiatic Researches Vol IY Page 93

इस सुधा को मधुलोभी संवरे एक बार ओठों से लगा कर प्रशंसा का गग यावज्जीवन गुनगुजाया करते हैं। प्रोफेसर विन्सेत सत्य ही कहते हैं कि हिन्दुओं की भाषा, प्रकृति और रीतिरिवाज का अध्ययन किए विना कोई वयोचित रूप से प्रशंसा कर सकता है।”

‘जो जाको गुग जानही भो नेहि आउर छेन।

देविष, पाश्चात्य संस्कृतज्ञ मैकडानल को काव्य का यह मजा दूसरी जगह नहीं ही नहीं होता। आप तो लोगों को यहाँ तक ममझा देते हैं कि भारतीय काव्य का मुस्वादु लेने के लिए वही रहना आवश्यक है क्योंकि अनुवाद मूल को नहीं पा सकता शीक है म्वर्गीय पञ्चसिंह के शब्दों में यह आसव दूसरे वर्तन में पत्तटते ही सिरका हो जाता है। आइए देखिए! दुनिया के ज़ैदरियों की आंखें हिन्दू काव्य को प कित्त ललचाई निगाहें में देख रही हैं।

मेघदूत को ही उठा लीजिए, पढ़ना प्रारम्भ कोजिए, सह्य और कल्पना का अन्तर मूल जाइएगा! देखिए, पीटर पर्सिवल जैसे पाश्चात्य पण्डित क्र्या कहते हैं—“समस्त रचना प्राकृतिक एवं ग्रीतिशील है, सुकोमल भावनाओं का व्यक्तिकरण, राष्ट्रीय ज़रिन के सुन्दर प्रभाव अङ्गित किए विना नहीं रहती।”

यज्ञ समस्त यात्रा के चित्रण के पश्चात् सन्देप चाहक मेघ से कहता है—

नून तत्य श्रवन रुदितोच्छून नेत्र प्रियाया,

विश्वासा नामशिरतया भिन्न वर्णऽवरोषम्।

हस्तमंस्त सुख सकल व्यक्ति लम्बालक्ष्या,

दिनदोर्दश्य त्वदनु सरणविलाष्य यान्ते विभर्ति ॥ ८८ ३०.३३

I view her now ! long weeping Swells her eyes,  
 And those dear lips are dried and parting sigh's;  
 Salt on her hand her pallid cheek decline;  
 And half unseen through veiling tresses shires:  
 As when a darkning night the moon ashrowds'  
 A few friah rays break strizzling through the clouds.

प्रोफेसर मैक्डानल बतलाते हैं कि इस 'ग्रन्थ' का विषय एक सन्देश है, जो एक निर्वासित अपनी सुदूर वासिनी प्रेयसी को बादलों द्वारा प्रेरित करता है। फाचे ( Fauche ) कहता है कि योग्यिता साहित्य में मेघद्रुत की समता का दृसरा ग्रन्थ नहीं। डाक्टर एफ० डब्ल्यू० होपकिन्स संस्कृत प्रोफेसर एल ( Yale ) विश्वविद्यालय बड़े गर्व के साथ कहते हैं कि कालीदाम हमारे लिए एक सुन्दर काव्य ग्रन्थ छोड़ गये हैं।<sup>१०</sup> विश्व लोक में विचरण करने वालों के लिए दक्षिण पवन का एक भाँका।<sup>११</sup> विद्वान मारिया प्राह्ण की सम्मति से-इस काव्य के विशाल सौन्दर्य और सुकुमारता ने हिन्दू महाकाव्यों में विशेष स्थान देरखा है।<sup>१२</sup>

### रघुवंश—

विद्वान एम० प्राह्ण ने इस की प्रशंसा के गीत अपने लिखित पत्रों में गाये हैं, 'कालब्रुक ने भी इस ग्रन्थ के सम्बन्ध में बहुत कुछ लिखा है।'<sup>१३</sup> इस के काव्य सौरभ से भी मस्तिष्क को सुवासित कर लीजिएः—

१०. India old and new Page 61.

११. मित्रा सद्यः क्रिसत्य पुद्रान्द्रेन द्वारु द्रुमाणं,  
 ये नत्त्वीर लुत्तिसुरमयो दक्षिणेन प्रवृत्ताः ।  
 आविज्ञयन्ते रुणवति मया ते तुषाराद्रियाताः,  
 पूर्वं सृष्टं किन यदि भवेद्द्रुमेभिस्त्वते ॥

१२. Letters on India.

१३. Letters on India Page 39

एकान्तं पत्रं त्रयनः प्रभुत्वं,  
नवं वयः कान्तं मिदं वपुरुच ।

अल्पस्य हेतो वर्हुद्वातु मिन्द्रुन—

विचारं मृदः प्रतिसानि मन्त्रन् ॥

राजा का उत्तर भी सुनिये:—

वनाक्षिन व्रायत इयुद्ग्रः,

क्षत्रस्य शशो मुवनेषु रुदः ।

राज्येन किं तद्विभीत वृत्तेः

प्रणां हप कोश मनी मन्त्रवा ॥

## शिशुपाल—

मारिया ग्राह्ण के शब्दों में 'माध का शिशुपाल वध संस्कृत के' सर्वोत्तम काव्यों में एक है ।<sup>१६३</sup> कालद्रुक भी कहते हैं कि एक दूसरा प्रतिष्ठित महाकाव्य है ।<sup>१६४</sup> सौन्दर्य की परिभाषा और रवेतक की शोभा, दोनों का काव्य में दर्शन कीजिये—

द्वृष्टेष्वपि रौतः सः सुदुर्मुखे,

रपूर्वं विहस्य माननान ।

चणे चणे यन्नवत्तामुर्तिः,

तदेव हपं रमणीय तायाः ॥

## कुमार सम्भव—

कालीदास अत्यन्त सौन्दर्योपासक कवि थे, किन्तु इस सौन्दर्य का अन्तिम सिरा होता था भोग-विराग, जहाँ पहुंच कर कालीदास की कल्पना शान्त और लेखनी विश्राम ग्रहण करती है । मिस्टर प्रिफथ इसे 'भाव पूर्ण और सम्मोहक वत्तलाते हैं ।<sup>१६५</sup>

मारिया प्राह्ण के शब्दों में 'हिमेमलिङ्गत हिमालय' को बर्णन सुन्दर और स्वाभाविक है।<sup>१५४</sup> कवि :सौन्दर्य को बस्त्राभूषण सु मञ्जित शरीर में नहीं देखता, उस के ही दृष्टिकोण से सौन्दर्य सृत पान कीजिये—

इत्येष मा कर्तुं मवन्ध्य रूपतां, नमधि मास्थाय तपोभिरात्मनः ।

कवि कुल शिरोमणि कालीदास के इस कोव्य में कामदेव का उच्छ्रवास और धर्म-ध्वनि साथ साथ निकली है ।

### किरातार्जुनाय—

“भाव प्राचुर्य और अनुप्रासों का सुन्दर समावेश है।<sup>१५५</sup> यह है विद्वान कालश्रक की सम्मति ! आप भी द्रोषकी की इम वारोचित भावना को अवलोकन कर कवि-प्रतिमा की दादीजिए ।

यशोऽध्य गन्तु मुखनिष्यर्था वा मरुष्य संख्या मतिवार्तु ।

निरूपकानामभि योग भाजां समुत्सक्वांक सुपैति इक्ष्मी ॥

### नलोदय—

श्रीमती मेनिंग के शब्दों में “यह असाधारण कोव्य है।” रेवरेंड पीटर पर्सिवल कहते हैं—“काव्य-निर्माण में कालिदास ने कवित्व का कोष ही खाली कर दिया है। इस काव्य में अनु-

• And now the sun had set with crimson tinge

• The looms red had lost its glowing hue

• From which it was apparent to the eye;

• The sun has been a most notorious thief:

• The clear of his beams the fact discloses,

• But soon he lost his most unlawful grain,

<sup>१५५</sup> Letters on India Page 32,

<sup>१५६</sup> Ancients & mediæval India Vol. II. Page 135.

And suffer'd for the sly nefarious deal,  
The darkness thicken'd round his Path-to show;  
The loss of glory is the fruits of sin.

प्राप्त के अपूर्व नमूने हैं । १८५ एक दूसरे आलोचक की सम्मति है—इस में संस्कृत भाषा की असाधारण शक्ति का दिव्यदर्शन कराया गया है, कवि की कौशल पर आश्चर्य प्रकट न करना असम्भव है । १८६—

### भट्टिकाव्य—

भर्तृहरि का यह काव्य अत्यन्त असिद्ध है । १८७ इस 'चिलचसा कवि की प्रतिभा का सिक्का मानते हुए डाक्टर होपकिन्स 'माधु-दर्शनिक' की उपाधि से विभूषित करते हैं । १८८ व्याकरण के विद्यार्थी इसे धातुओं के रूप याद रखने को पढ़ते हैं । इस में गामायण की कथा संक्षेप रूप में दी गई है । अलिराज और कुमुम को लेकर कवि ने कितनी सुन्दर कल्पना की है, देखिए—

प्रभान्वाताइनि कमिताकृतिः,

कुमुदिति रेणु विशङ्ग विश्रहम् ।

निराम भृङ्ग कुपितेव पदिमती,

न मानिनो संसहनेऽन्यमंगमम् ॥

### नल दमयन्ती—

प्रोफेसर हीरेन इसकी प्रशंसा करते हुए लिखते हैं कि इसके उत्तरभागों का सम्मान होमर भी स्वीकार करेगे । १८९ आप कहाँ जा रहे हैं ? केवल इस प्रश्न को पूछने के लिए दमयन्ती के मुंह १९७ The Land of the Vedas Page 60.

१८३. Old India poetry.

१८५. Abidid Page 137.

१८६. See India old and new Page 60.

१८७. Heeren's Historical Researches Vol. II, 167.

से कवि ने कितना अलङ्कारिक श्लोक कहलाया है । कवि का यह कौशल भी सामने है—

निवदेनां हन्त समाप्यन्तौ,  
शिरीप के पश्चद्दीमांभिसानम् ॥  
पादौ कियद्दुर्भिर्मां प्रवामे,  
निधी नाते तुच्छदर्शं सनस्ने ॥

## नैषध चरित्र—

श्रीहर्ष के नैषध की गणना संस्कृत महाकाव्य की बृहदत्रयी में की गई है । मारियाप्राण्य भी स्वीकार करता है कि यह संस्कृत भाषा के सुन्दरतम काव्यों में से एक है । जग सा कांटा मानव शरीर में विश कर भीम काय व्यक्तियों को व्याकुल कर देता है किन्तु दमयन्ती सर्वाखी मुकुमारी राजदुलारी के मर्मस्थान (हृदय) में नल जैसा चक्रवर्ती नरेश प्रवेश कर क्या कुछ अवस्था इत्पन्न कर देगा, कवि के शब्दों में सुनिए—

निविशने यदि शक्त शित्ता पदे,  
सूजनि ना कियनांभिव नववथाम् ।  
सृदुनने विनने तुकथं न य,  
मरनिनुत्तु निविश्य हृदिस्थनी ॥

यह है हिन्दू महाकाव्यों की एक भाँकी, जिस की हम नहीं बड़े २ अमरीकन योरुपियन तक महत्ता स्वीकार करते हैं । दुनिया के काव्य और महाकाव्य इन्हीं की छाया पर रचे गए हैं, इसी आदिम स्तोत्र से निकले हैं । प्रांसीसी स्पष्ट बतलाते हैं कि होमर काव्यों का आधार रामायण है । लेसीन महोदय ग्रीक काव्यों में महाभारत का आधार देखते हैं । प्रोफेसर हारेन अपने विशाल अध्ययन के पश्चात इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि युनानियों की

अपेक्षा जर्मन और अंग्रे जों की देव मालाएँ हिन्दुओं के काव्यों में मिलती जुलती हैं। १०२

## नाटक

सभ्यता एवं संस्कृत की परीक्षा में समस्त साहित्य के इस प्रमुख अंग का नीरीक्षण एकान्त आवश्यक होता है, क्योंकि इनका प्रादुर्भाव और विकास जातीय जीवन के उसी स्वरूपकाल में होता है जब लोग प्राकृतिक रहस्यों के उद्घाटन में बहुत कुछ मर्यादा हो चुकते हैं। जिस भारत ने अपने चिर संचित कोष से दरिद्र दुनिया को सम्पन्न बना दिया, वह भला नास्यजैसे आवश्यकीय साहित्य की वसीयत में कैसे पीछे पिछड़ जाता ?

नाटक के प्रथानातः तीन लक्षण हैं गीत काव्य, आश्यान और कथोपकथन। ये तीनों ही पुरातन ऋग्वेद के पुनीत पृष्ठों पर अङ्गित हैं। मरमा और पाणिन, पुरुरवा और उर्वशी, यम और यमी के प्रसंगों को पढ़ लीजिए, वैदिककाल ही में आपको भारतीय रंग मंच पर आभास साफ दिखाई देगा। महाभारत में भी नाटक का वर्णन मिलता है। पाणिन ने अपने व्याकरण में 'शिलालिन' और कृशाश्व दो नास्याचों का उल्लेख किया है। पतञ्जली ने भी अपने महाभाष्य में रंगशालाओं और अभिनय के सम्बन्ध में सुन्दर विवेचन किया है। उस समय 'कंसवध' और वालिवध मरीचे भी अभिनय होने लगे थे। महाभारत काल के पश्चात लिखी हुई हरिवंश पुरान में भी 'रूपक' में कैलाश पर्वत तक के हृश दिखाए जाते थे, जो नाटक की कुशलता और अर्तीब सन्नतावस्था के परिचायक हैं। कौवीरमा भिसार और विक्रमेश्वरी के अभिनय कोई हंसी खेल नहीं थे। इस इतिहासिक विवेचन से

येह बातें संपष्ट हो गई कि प्रभु ईसा के जन्म से हजारों साल पहले भारतीय रंगमंचों पर बैठ कर अभिनय देखा करते थे। मैक्डानल कीथ आंदि प्रेसुख पंचात्य पण्डितों ने भी स्वीकार किया है कि नाटकों का सर्वसं पहले आरम्भ इसी भारत भूमि में हुआ था।

सर्वेताकी प्राचीनता के अवार्द्ध में चीन भी पुराना पहलवान है। चीनी नाटकों के सम्बन्ध में प्रोफेसर विलसन कहते हैं ... वे मुन्द्र और प्रायः मनोरञ्जक हैं। वे सत्यता के साथ गति-विधियों और भावों का प्रदर्शन करते हैं। वे सुसम्भ्य व्यक्तियों की कृतियां हैं। १०३ चीन ने यह कला सीखी कहां से ? स्वयं पैरिंग विश्व-विद्यालय परिषद् के सभापति की जवानी सुनिये—‘रंगमंच पर खेले जाते वाले हमारे सर्व प्रथम नाटक का नाम ‘पूदू’ है। आधुनिक अनुसन्धान से सिद्ध हुआ है कि यह नाटक का प्रत्यारोपी ‘पूदू’ नामक दैश से हुआ था। विद्वानों का कथन है कि यह टांडुंग सं देस हजार मील की दूरी पर दक्षिण भारत के समीप था। ..... इस दृष्टि से नाट्य कला को ब्र में भी दृम भारत के आभारी है।’ सर डब्ल्यू० जॉस की राय है कि विक्रमादित्य के काल में जिन्होंने ईसा से एक शताब्दी पहले राज्य किया था नाट्यकीय मनोरञ्जन की विभिन्न शाखाओं का ‘पूर्ण विकास हो चुका था।’ १०४ हिन्दू नाटकों का विकास कब हुआ था इसकी तारीख दूर नहीं आसान नहीं। विद्वान् प्रोफेसर इस से पहले के सुप्रसिद्ध नाट्यकार ‘भास’ को भूल ही गए जिस ने लगभग एक दर्जन नाटकों की रचना की थी।

रेवरेण्ड पीटर पर्सिवल जैसे सम्मानित विद्वान् की भी इस विषय में सम्मति लेना आवश्यक है आप कहते हैं हिन्दू नाटक

केवल प्राचीन ही नहीं, किन्तु उन में सौलिकता भी है। संस्कृत में सर्वोत्तम नाटक लिखे गए हैं।<sup>१०५</sup>

हिन्दू नाट्य कला में रूपक के दस भेद हैं—नाटक प्रकरण भाग, व्यायोग, समवकार, दिम, इहामृग, अङ्क, वीथी, और प्रदसन्न आगे चल कर उपरूपक के भी १८ भेद किये गये हैं। रङ्गशालाएं भी तीन प्रकार की बतलाई गई हैं—प्रक्ष गृह (१०८ हाथ लम्बा) चतुरश्च (६५ × ३२ हाथ) और त्यश्च। इस के अतिरिक्त नायक पात्रों तथा अङ्गार और वस्त्राभूपण का इतना विस्तृत विवेचन मिलता है जो कि परिष्कृत संज्ञों पर भी नहीं दिवाई देता। प्रोफेसर हारेन की राय में हिन्दुओं के विशाल थियेटर (Theatre) ही पात्रों के परिधान और सजावट का पता बतलाने में काफी है।<sup>१०६</sup>

हिन्दू नाट्य शास्त्र में शृंगार, वीर, कलणा अद्भुत रौद्र भयानक वीभत्स हास्य और शान्त—ये नौ रस हैं। इनकी जागृति कर दर्शकों के हृदय में नाट्य का अपेक्षित प्रभाव उत्पन्न किया जाता है। 'लैटिन और ग्रीक के सुरवान्त नाटकों की कामुकता हिन्दुओं में कम है'—यह है चिद्रान विलसन का फैसला! अन्यत्र आप यह भी लिखते हैं कि हिन्दू ड्रामे सम्माननीय हैं उसमें कभी परकीया नायिका को महत्व नहीं दिया जाता।<sup>१०७</sup> दूसरी विशेषता रेवरेण्ड पी० पर्सिवल से सुनिये—'उनकी एक विशेषता यह भी है कि उनमें दुखदायक चित्रण नहीं होता। भारत निवासी एसे हस्यों के विरुद्ध है।'<sup>१०८</sup>

105. The Land of the Vedas Page 87.

106. Heeren's Historical Researches Vol II

107. Miel's History of India

108. The Land of the Vedas Page 84.

नाटक जाति के आन्तिरिक और बाह्य जीवन का चित्र है। समाज का हृदय नाटकों में स्पष्ट दिखाई पड़ता। भारतीय नाटकों में कहीं पर नीतिकता की सीमा में एक अंगुल आगे भी पैर नहीं बढ़ाया गया। यह प्राचीन हिन्दुओं की कला-कुशलता का एक उत्तर प्रसार है। प्रेम के चित्रण में दुनिया के लेखक वे लगाम हों गये किन्तु भारतीय नहीं, श्रीमती मैतीग इस चित्रण पर भी जान से निश्चावर है आपकी राय में “भारतीय काव्यों” की भान्ति प्रेम और मनोरग का व्यक्तिकारण और कहीं इस बेग में नहीं हुआ।<sup>१०६</sup>

यों तो नाट्य कला के आचार्य भगत सुनि माने जाते हैं। किन्तु आधुनिक पाश्चात्य विद्वान् कालिदास के समय से ही हिन्दू नाटक कला में विशेष रूपेण परिचित है। कारण सुसल-मानों के आक्रमणों ने जहां ऊंटों के काफिलों पर भारत लृट की अतुल सम्मति लादी थी, वहां साहित्य में भट्टियां गर्म करने में भी किञ्चित् मंकोच और बेद्ना का अनुभव नहीं किया। महानुभाव विलसन के शब्दों में काल “चक्र से जो कुछ बचाया जा सका सामने है।”

रेवरेण्ड पीटर पर्सिवल बतलाते हैं कि ‘सन्नाट विक्रमादित्य विद्या का माना हुआ संरक्षक था। स्वयं यह और उसके आठ कवि हिन्दू साहित्य के नवरत्न हैं। कालिदास इनमें अत्यन्त प्रसिद्ध हैं। इसने भारतीय नाटकों को पूर्णता के शिखर पर पहुंचा दिया था। इसे हिन्दू शैक्षणिक प्रयोग कहा जाता है किन्तु अकारण नहीं।’<sup>१०७</sup> प्रांकेसर हीरेन कहते हैं ‘कालिदास अपनी जाति के ही नहीं प्रत्युत समस्त सभ्य मानवता के सम्मान का कारण हुआ

३११० प्रोफेसर मैकडानल के शब्दों में 'कालिदास ने जिस कल्पना प्राचुर्य में काम लिया है और जो कौशल, कोमल भावनाओं के प्रकाशन में दिखलाया है, उसने संसार के नाट्यकारों में इनको उच्च स्थान दिया है ।' ३१११ विल्मन महोदय के अनुसार कालिदास संसार के सर्वोत्कृष्ट नाट्यकार थे ।

### शकुन्तला—

कालिदास का सर्वोत्कृष्ट नाटक शकुन्तला है, जिसका अनुवाद आज संसार की समस्त समुन्नत भाषाओं में हो चुका है । इसके लिए डाक्टर पट्टेस (Vates) के उद्वार सुनिए 'इस कृत्य को कालिदास ने प्राच्य-पाइडत्य के अगाध भूमि से लाए हुए मुक्ताओं द्वारा अलंकृत किया है ।' ३११२ डाक्टर हेटर कहते हैं । शकुन्तला के प्रेम और शोक ने आधुनिक कवियों के लिए एक मूल मिठान्त को सजा दिया है । योद्धप के महाकवि गेटे ने एक ही पद में शकुन्तला का गीत गाया है—'यदि कोई तमगावत्मर के फूल और परिगित वत्मर के फल, मर्त्य और स्वर्ग को एकत्र देवना चाहे तो वे उसे शकुन्तला में प्राप्त होंगे ।' ३११३ वास्तव में शकुन्तला का पूर्व और उत्तर भिलना ही स्वर्ग और मर्त्य है ।

विद्वौन मारिया प्राप्ति कहता है—इसके चित्रण में अपूर्व चिल

III. Historical Re-searches Vol 11 Page 1931

३११२ Sanskrit Literature Page 353,

III. The Land of the Vedas Page 89.

III. Wouldst thou the young years.

Blossoms and fruits of its decline,

And all by which the soul is Charmed,

Enraptured, feasted, fed.

क्षणता हैं। ११५ 'बेदों की भूमि' नामक पुस्तक के विद्वान लेखक नाटक के रंगमठ्च पर किस भान्ति विस्मय-विसर्ग हो कर बढ़े रहे उनके ही शब्दों में सुनिए। 'चेतन और अचेतन के साथ गंगी आन्तरिक आत्मीयता अन्यत्र एकान्त दूर्लभ है तपोवन में शकुन्तला के विद्याप्रदान करते समय कर्ण कहते हैं—

"पातु' न प्रथम व्यवस्थनि जन् युप्मास्त्रपीतेषु या,

नादत्ते प्रियमगडतापि भवतां स्नेहेनश्चा पल्लवम् ।

आद्ये वः कुमुम प्रसूनि नमये यस्याभवन्युत्पवः,

मेव यनि शकुन्तला पनिगृहं सर्वेरनुजायताम् ॥

*Wouldst thou the earth and Heaven itself in one sole name Combine  
I name thee O Sakuntla ! and all at once is said  
Transtately Eastwich.*

शकुन्तला के बाद फिर संसार ने ऐसी रचना नहीं देखी। इसके आधार पर विदेशियों में अनेकों ग्रन्थों की रचना हुई है। योरुपियन संस्कृतज्ञ मैकडानल कहते हैं कि प्रतिष्ठित शकुन्तला नाटक के आधार पर प्रसिद्धतम योरुपियन नाटक लिखे गये हैं। ११६

### विक्रमोर्बशी—

कालीदास की दूसरी रचना विक्रमोर्बशी है इसकी तुलना शकुन्तला के साथ करते हुए प्रोफेसर विल्सन कहते हैं कि "भाव

115 Letters on India Page 36,

'My body moves onward, but my restless heart runs,'

Back to her like a light flag borne on a staff against the wind  
and fluttering in an opposite direction.

116, History of Sanskrit Literature Page 416.

कोमलता और वर्णन कुशलता दोनों में समान है। विचारों की सुकुमारता और शेर्ली का उत्कृष्ट सौन्दर्य भी दोनों को समान रूप में प्राप्त है। किर किसे प्रथानन्ता दी जाय, यही कठिन है। चित्रण म्बाभाविकता कुशल कवि की कला का अपना कमाल है कलम के ये जोहर चित्रकार भी कूच्ची में भी तो नहीं आसकते। रथ मञ्चालन के इस करिश्मे को देखिये—

अप्रेण ग्रन्ति रथस्य रेणु पद्मी चूणां भवन्तोधना-

शक्त्रान्तिर्गत्तरं पु विनोत्यन्यामिकारा वनाम !

चित्रा रम्भविनिश्चन्वं हयशिरस्यामवच्चामरं,

यन्मध्ये समपस्थितो धजपउः प्रान्ते च वंगानिनात ॥

## राम चरित्र—

कालिदास के बाद सातवीं शताब्दी के अन्त में भवभूति हुए हैं। इस प्रतिभासम्पन्न नाट्यकार की लेखनी ने मालतीमाधव के रूप में शृंगार, रामचरित्र के रूप में कल्पणा और महावीर नाटक के रूप में वीर इस का स्रोत सङ्क्षिप्त किया है। उनमें से प्रथम दो बहुत प्रसिद्ध हैं। पीटर पर्सिवल लिखते हैं कि 'इन्होंने प्रकृति का भव्य उत्कृष्ट चित्रण किया है। मेघमाला मणिडत पवृत, धने निकुञ्ज, निर्भरों का भर भर कर अन्धकार से ढके विशाल वन और अर्धरात्रि की नीरखता इन के प्रिय विषय हैं।' ११३ विलसन महाशय की राय है—कि मानवीय चित्तवृत्तियों का ऐसा यथाधित्रिण कदाचित ही किसी अन्य हिन्दू नाटक में मिले। राम और सीता का विद्याग अवस्था में विरह प्रकाश बड़ी कोमलता में व्यक्त किया गया है।.....न्याय और सौन्दर्य के ऐसे भाव किसी भी साहित्य से कम नहीं।' ११५

‘वत्रादृपि कदोरग्मिण पद्मन कुगमादपि’ राम के ही सुंह से सुनिए—  
 अस्मन्नेव नतागुहे त्वमभवत्तन्मार्प दत्तवरणः,  
 मा हर्मः कृत कौनुका चिरमभृद गोदावरा सैकते ।  
 आयांत्या परिदुम नायितमिव त्वां वीक्ष्य वद्धमत्या,  
 कातर्यां द्वारविन्द कुड्डमन निमो मुख्यः प्रागमात्रजनिः ॥

## मालती माधव—

मालती माधव के भवत्वल्य में एम० प्राद्य महोदय वत्तलाते हैं—  
 भवभूति ने इसे १० अंकों में समाप्त किया है । प्रथम पांच  
 अंक अत्यन्त रोचक हैं इन्होंने कथानक के विकास को स्वभाविक  
 बता दिया है । कथानक बहुत ही सनोरजनक है, विलङ्घण भगवं  
 भी घरेलू है । १०१० विद्वान विल्सन की गाय है कि एम० विभिन्न  
 प्राणियों को इस भान्ति पकता के सूत्र में जकड़ देना हिन्दुओं  
 का ग्राहीय चरित्र है । वास्तव में इस नाटक की संह ह सरिता  
 बड़ी विषभ भूमि से प्रवाहित हुई हैं किन्तु किर भी कामुकता के  
 कदम का कहीं पता भी नहीं । वियोगी माधव, मालती को हज़म  
 कर जाने का दोयारोपण बन पर किस भान्ति आरोपित करता  
 है भवभूति के शब्दों में सुनिए—

नंयु जोश प्रसृत्यु कान्ति दर्शः कुरंगेषु गत गजेषु ।  
 नतामुनव्रव्विमिति प्रसभ्य व्यक्तः विमक्त्य विपिने प्रियामे ॥५

119. Letteres on India Page 37 and 41.

५ नव पुष्पित लोध के बुद्धनुने नव कोमन कानि लई सुकुमारी ।  
 श्रस्त लोचन चाह कुरंगु ने गति मत्त मनंगनु ने मतकारी ॥  
 इन वेत्ता नदेलिनू ने मन मोहन नप्र स्वभाहि की छुवि धारी ।  
 यह जानि परै सूत्र ने बन में मिलो बाटि लई मम प्राण पियारी ॥

## मुद्राराज्ञस—

यह विशाख दत्त की लेखनी का कमाल है समस्त नाटक में केवल एक स्त्री का अविभाव हुआ है, वह भी प्रोटा ग्रहणी के हृप में। किर भी नाटक में सजीव रोचकता है। पड़यत्रों की मृष्टि और संहार, राजनीतिक उल्तियों का सुलभना और दृटना, विद्वान् लेखक की प्रतिभा का आश्चर्यजनक नमूना है। प्रोफेसर विल्सन १०० के विचार से समस्त नाटकों के साहित्य में ज्ञान का इस से उत्तम एवं सफल चित्रण प्राप्त करना कठिन है। उनिहासिक और राजनीतिक दोनों हाइयों से यह महत्व पूर्ण है। एच० जी० रालीविसन आई० ई० एस० लिखते हैं—‘यह एक अत्यन्त रोचक ऐतिहासिक नाटक है और चारों ओर से चन्द्रगुप्त पा प्रकाश ढालता है।’ १०० मौर्य साम्राज्य के संस्थापक, योस्य का मिरीलियन, उर्धशास्त्र और नीति के विश्व-विन्यात आच्यु को पर्याकुटी का चित्र कवि के शब्दों में सुनिए और अतीत भारत की इस प्राचीन पावन वेदी पर दो अश्रु-कण्ठ चढ़ाइये—

उपशक्तमेतद्वै इकं गोमयानाम् ।

वदुभिरपहतानां वर्द्धेषास्ताममेतम् ।

शरणमापं समिद्धिः शुष्ठमाणमितभिः

विनमितं पट्कानां दृश्यते जार्णु कुच्यम् ।

1. Wilson's theatre of the Hindus Vol II Page 254

2. Intercourse between India and the Western world Page 45.

कहुं परे गोमय शुष्क, कहुं सिन पर्य भैभा दे रही ।

कहुं तिन, कहुं जव-रासि लागी वदुन जो भिन्ना कही ॥

कहुं कृम परे, कहुं सभिध सूखन भार सो तके नयो ।

यह जग्नी छप्पर महा जर जर होई कैसो मुकि गयो ॥

## प्रवोध चन्द्रादय—

प्रवोध चन्द्रादय भी अपनी शैली का निराला नाटक है इसके रचना करने वाले हैं कृष्ण मिश्र । प्रोफेसर लीमन कहते हैं कि 'दूसरे देशों के इतिहास में एक भी नाटक इस की समता का नहीं ।'

## मृच्छकटिक—

शूद्रक का मृच्छकटिक भी तत्कालीन समाज का एक मुन्द्र चित्रण है । इस में नाटकीय कला का अच्छा समावेश है । वर्णन शैली मुन्द्र और भाषा रोचक हैं । संसार में आपतियों का आक्रमण किस प्रवल वेग से होता है, न्यायालय में खड़े चालक के शब्दों में सुनिए—

यथैव पुनं पथमे विज्ञाने,

ममेभ्य पातुं मधुराः प्रतिनिः ॥

एवं मतुष्यस्य विपत्ति काले ।

छिद्रध्वनर्था वहुर्ता भवनिः ॥

एक हो नहीं, अनेकों नाटकों से संस्कृत का भव्यभएडार भरा है । रत्नावली, और वेणी संहार की टक्कर के नाटक गोप चीन मिश्र के साहित्य कोष में आज भी न मिल सकेंगे । मैक्समूलर पिशल आदि सभी विद्वान भारतीय नाटकों की प्राचीनता का लोहा मानते हैं । सर विलियम जोंस कहते हैं कि आधुनिक योरूप के किसी भी देश से भारतीय नाटक संख्या में कम नहीं । । मोरिय प्राप्त <sup>२२</sup> की शुभ सम्मति है कि हिन्दू + कफटन है जैसे मधुर, खिजन कृत देवी को देखी ।

परत विपत चहुं और से, अनरथ होन विमेर्खा ॥

माहित्य के नाटक योग्यियों को बहुत आनन्द दायक सिद्ध होंगे, नदि वे इन का भली भान्ति अनुशीलन करें।

### गीत काव्य

गीत काव्य के विना भाषा अधूरी ही रहती है। मनोभाव की रंगस्थली गीत-काव्य का ही क्षेत्र है। पाठकों को प्राचीन काव्य कानन की उम कथावी का भी निरीक्षण कर लेना ही योग्य है। गीत काव्य का सौन्दर्य है, विशाल भावों को कुछ एक शब्दों में वन्द कर देना। कवि इस काव्य में बहुत कुछ पाठकों पर भी छोड़ देता है और स्वयं डशाग कर आगे बढ़ जाता है। अन्त गीत काव्यों की समुन्नति साहित्य सम्पन्नता की निशानी है। महाकवि जयदेव का गीत गोविन्द संस्कृति माहित्य का एक प्रतिष्ठित एवं सुप्रसिद्ध गीतकाव्य (Lyric Poetry) है। इसकी कोमल कान्त पदावली और रमणियाक अद्वितीय है। इसका यथार्थ आनन्द संस्कृतव्य ही लूट सकते हैं। विद्वान् ग्रीफथ की सम्मति पढ़िये—गीतों के उत्कृष्ट स्वरमाधुर्य की दाद वही दे सकते हैं जो मूल में उसका आनन्द लूट सकते हैं। १३३ मंस्कृतव्य साहित्य के मर्मज्ञ मारिया ग्राह्य के मुंह से मुन लीजिए—“हिन्दू कवियों में बहुत से, गीत काव्यों के भी लेखक हैं किन्तु मैं केवल जयदेव का ही नाम लेता हूँ जिसकी रचनाएँ धार्मिक और नैतिक हाइ से उत्तम हैं। जैसे हाफिज की फारसी में।” प्रोफेसर हीरेन का भी अनुभव सुनिए—“गीत गोविन्द को पढ़कर ममाहित न होना असम्भव है!” मैक्डानल महोदय इसके माधुर्य और रंगीनी की प्रशंसा करते हुए कहते हैं—जयदेव के काव्य को

दंगलिश का जामा पहिनाना असम्भव है ॥१॥ अमर कवि जय-  
देव के काव्य निकुञ्ज में कैसा आनन्द थिरक रहा है जरा अन्दर  
बढ़कर अनुभव कीजिये ।

निमृत निकुञ्ज गुह्य मनया निशि रहमि निनीय वगन्नं ।

चकित विनोक्ति मक्कल दिशा रनिरभस भरेण हमन्नं ॥१॥

मनि हे ! केशी मुदारं ।

रम्य मया मह मदन मनोरथ भावितया मनिकारं ।

## भूत्तुहरि शतक—

डाक्टर होपकिन्स पाठकों को डस प्रन्थ रहन के सम्बन्ध में  
परामर्श देते हैं—‘यह अपने ढंग का अद्वितीय प्रन्थ है, मैंने इसे  
पढ़ा है और मुझे विश्वास है कि आप भी पढ़ेंगे । . . इस भाषु  
दार्शनिक ने प्रेम, नैतिकता और धार्मिक गीतों को बड़ी सुन्दरता  
से संवारा है ।’<sup>१२३</sup> लेखक ने प्रेमियों की आशा निराशा, कोध,  
उपासना आदि भावों का बड़ी कुशलता से चित्रण किया है।  
मैकडानल महोदय के शब्दों में—यह बात बड़े मार्के की है कि  
एक ही सीमित विषय को जिसकी अवस्था परिमित और मनो-  
भावनाएँ समान है, कवि ने विल्कुल नये ढंग से उनका चित्रण  
किया है ।<sup>१२४</sup> प्रोफेसर वाशर्वर्न बतलाते हैं कि वह प्रेम और  
हृदय के परिणाम में विश्वास करता है ।<sup>१२५</sup> स्त्रियां अवला  
नहीं सबला हैं, भूत्तुहरि के सुंह से सुनिए—

नून हि ते कविवरा विपरित वोधा,

ये नित्यमाहुरत्वां डति कर्मिना नाम् ।

123. Sanskrit Literature Page, 345

126. India old and new,

127. See Sanskrit Literature, Page 342.

128. Separation still is union if the hearts united be, but if

hearts are separated then divorce should set them free,

यात्मिविनोक्तनर तारक दृष्टि फानः,  
शक्ता द्व्योरपि विजितास्त्ववनाः कथं ताः ॥

*The fruits of love on earth is this  
One single thought of two souls wed.  
If those made one have two fold thought  
, its but the union of the dead*  
India old and new, Page. 61

## ऋतु संहार—

कालिदास के गीत काव्य की ऋतु संहार श्रीमती मेन्जिंग के  
मध्ये में भारतीयों द्वारा ही नहीं समस्त मंस्कृत साहित्य के  
विद्यार्थिओं द्वारा सराहना की गई है। सर जॉन्स इसका भूरिभूति  
प्रशंसा करने हुए कहते हैं शोक का विपर्य है कि समस्त पुस्तक  
का अनुवाद करना ही असम्भव है। ११२६

## कथा कहानियाँ

—८५२—

मंस्कृत साहित्य में केवल, दर्शन, काव्य, तत्त्वज्ञान भगवद्गीता,  
कम कारण आदि का विवेचन नहीं, उसमें सर्व साधारण नर नारी  
वालक-वालिकाओं की शिक्षा सामग्री भी प्रचुर परिमाण में  
मौजूद हैं। भूमण्डल पर सब से पहला देश भारतवर्ष ही है जिसने  
कथा कहानी आरुयाधिका, उपाख्यान का आविष्कार किया है।  
योग्यिन विद्वान एम० ग्राहा वल्लाता है कि कथाओं द्वारा शिक्षा

देने की प्रगतियों के आविष्कार होने का श्रेष्ठ भारतीयों को ही प्राप्त है। १३० प्रोफेसर विल्मन का कथन है कि हिन्दुओं की कथा कहानियों में क्रियात्मक विधान है। सुन्दर शासन के नियमों तथा धार्मिक एवं मामाजिक व्यवहारों का सुन्दर विवेचन है। १३१

## बृहत्कथा—

इस प्रन्थ को गुणाधर्म ने पैशाचिक भाषा में लिखा था। छठी शताब्दी में इस प्रन्थ की धूम थी। इसके दो संस्कृत अनुवाद मिलते हैं, एक काश्मीर और दूसरा नेपाल का। सर स्टेनली रीड और पी० आर० गाडेल जी० एस० आई० एक स्वर में स्वीकार करते हैं कि इसाप (Eosop's Fables) और अरेबियन नाइट्स (Arabian Nights) के किसमें जो अगगित पीढ़ियों से योहप को प्रसन्नता प्राप्त करा रहे हैं उनका मूल भारत में है। + + + कदाचित् यूनान के दर्शन की नींव से भी ये अपना आस्तित्व रखते हैं। १३२

कांट जनैस्टजनी कहते हैं कि योहप में सुप्रसिद्ध अरेबियन नाइट्स का मूल स्तोत्र हिन्दू है। पहले इसका अनुवाद पर्शियन में (अलिफ लला) हुआ और फिर अन्य भाषाओं में संस्कृत में इसका नाम बृहत्कथा सागर है। १३३

## पञ्चतंत्र—

इसका इतिहास काफी रहस्यपूर्ण है पहले थ्योडर विनके ने इसका अनुवाद किया। फिर जिन जिन भाषाओं और देशों में

130 Letters on India Page, 88

131. Essays on Sanskrit Literature, Vol II Page, 95

132 India: The new phase, Page, 2-3,

133. Theogony of the Hindus Page, 85

इसका अनुवाद हुआ उसका पता लगाया विद्वान् जे० हर्टल ने । प्रसिद्ध इनिहासकार फरिश्ता लिखता है कि इस पुस्तक को भारत सम्राट् ने पर्शियन सम्राट् नौशेरवां के पास एक शतरंज बोर्ड के माथ भेजा था । उनके बजीर ने इसका पहलवी भाषा में अनुवाद किया और नाम रखा 'कलीलादमना' । ये दोनों नाम पंचतंत्र के प्रथम अध्याय में वर्णित दो शृगाल वर्कटंक और दमनक हैं । मुलतान मिर्जा ने परिकृष्ट फार्सी में इसका अनुवाद 'अनुवार नहली' नाम से कराया । कलीला दमना से इसका अनुवाद ५० द्वारा पञ्चतंत्रसे १५ भाषाओं में हुआ है । संसारकी इतनी भाषाओं में कदाचित ही किसी अन्य ग्रन्थ का अनुवाद हुआ हो ।

प्रोफेसर विल्सन इसके अर्वी में अनुवादित होने का एक प्रमाण बड़े मार्के का पेश करते हैं । अर्वी में एक पच्ची का नाम टिटावी ( Titawi ) आया है । यह अर्वी के किसी धानु में नहीं निकलता । यह नाम एक भारतीय पच्ची का है जिसे संस्कृत में 'टिटिभा' बंगला में टिटभि और हिन्दी में टिटहरि कहते हैं । ३३ इसका रचना काल पाश्चात्य परिवर्त ३ से ५ वीं शताब्दी का अनुमान करते हैं ।

## हितोपदेश —

इसका काल १००० और १३०० ई० के बीच में है । मिस्टर मार्टियाप्राह्लि लिखते हैं—'इसमें संदेह का स्थान नहीं कि एक प्राचीन कहानियों का संग्रह योक्तप में बहुत दिनों से प्रचलित है जिसे पिल्पेज फेनुल्ज ( Pilpays Fables ) कहते हैं । मिस्टर विल्सन ने इसका मौलिक नाम हूँढ कर हितोपदेश बतलाया है

14 Brigg's Frist a Vol 1 Page, 149- 150

15 See Essays on Sanskrit Literature

इसमें एक ब्राह्मण शिवक द्वारा शाननद्यवस्था के मिठान्त, गुहाम्ब  
एवं वैयक्तिक चरित्र सम्बन्धी बहुत सी कथायें कही गई हैं। १००

### शुक मसनि—

इसमें तोते की सत्तर कहानियां हैं। चोद्हरी शताव्दी में  
इसका फारसी में अनुवाद हुआ, जिसका नाम था 'तृती'। इसके  
आधार पर ट्रिस्टान अन इसोल्डे (Tristan un Iso le) नामक  
ग्रन्थ की रचना हुई है।

### सिंहासन द्वित्रिंशतिका—

यह तीनों रूपों में मिलती है। एक गद्य, दूसरी पद्य और  
तीसरी चंपू में। १५१७ में इसका फारसी में अनुवाद हुआ था।  
स्याम और भंगोलिया देशों में भी यह अनुदित हुई है। मर डब्ल्यू०  
डब्ल्यू० हेटर की सम्मति है कि सुललित हिन्दू कल्पना न  
परियों की कहानियों को भी जन्म दिया था। आज प्रचलित  
परियों की कहानियां (Fairy tales) का आदिम स्थान  
संस्कृत ही है। १००

### बैताल पंच विशंतिका—

ये पचीस कहानियां वृहत्कथा के कशमीरी अनुवाद में मिलती  
हैं। ये कहानियां शमशान निवासी बैताल की हैं। मैकडान्तल  
महोदय लिखते हैं कि कूसेड काल में, शुक मप्रति सिंहासन द्वित्रि-  
शातिका बैताल पंचविशंतिका और कथा सरित्सागर आदि  
यौरुप में अनुदित हुई। श्रीमती मेनिंग का विचार है कि संस्कृत  
की कहानियां प्रायः सभी भाषाओं में चली गई हैं।

दण्डी का दशकुमार चरित्र, सुबब्धु का वासदत्ता, वाणि का

कांदमवरी और विविकम भट्ट का नलचंपू न जाने कितनी भाषाओं में अब तक अनुवादित हो चुके हैं। डितिहासकार पर्लिफ-  
स्टन कहते हैं कि किससे कहानियों की रचना में हिन्दू लोग शेष  
मानवता के शिक्षक रहे हैं। १३२ विद्वान लाफोन्टाडन (Lefou-  
nçon) स्वीकार करता है कि उमको कृत्यों का आधार भारतीय  
'विद्यापति' है। १३३ सर डब्ल्यू० हैटर बनलाते हैं कि प्राचीन-  
तम भारतीय पशु कथाएं आज भी डंगलैण्ड और जर्मनी का  
बरेन्क कहानियाँ हैं। अरब लेखक मसूदी ने ४५६ ई० में लिया  
है कि सिन्यवाद की कहानी हिन्दुस्ता से ली गई है। यह कहानी  
पार्सी, अरबी, हिन्दी, यूनानी, सीरीयन तथा योरूप की अन्य  
भाषाओं में विभिन्न नामों से प्राप्त होती है।

भारत के मुख्य तीन माहित्य हैं. आर्य, वौद्ध, और जैन।  
इन तीनों ही में नीति विपयक, शिक्षाप्रद एवं मनोरक्षक कथा  
कहानियों को प्रचुरता है। संसार की प्रायः सभी भाषाओं ने अपने  
माहित्य में इनकी कथा कहानियों की समूची पुस्तकों का विसा  
मूल का आभास दिये ही अनुवाद कर लिया है। कहावतों के  
विपय में मिस्टर जे० पी० मिल्स लिखते हैं कि आसाम में इनका  
बहुमूल्य काप है, कहा नहीं जा सकता कि संसार में उनका कहां  
तक विस्तार हुआ। उदाहरण स्पृह में प्लीनी अपनी एक कहानी  
में आसाम का उल्लेख करता है। एक कहाना जा आजकल आसाम  
में प्रचलित है, मिश्र में ईसा से १३०० वर्ष पूर्व पाई जाती  
है। १४० इन प्रमाणों के आधार पर कोई भी विद्वान वह स्वी-

कार किए, विना नहीं रह सकता कि संसार के साहित्य और सभ्यता का मूल स्रोत भारत है।

## इतिहास



इतिहास मनुष्य के कायों द्वारा समाज पर घटिन होने वाले भले बुरे परिणाम के वैद्वानिक विवेचन का शास्त्र है। यह भूत काल को स्पष्ट कर भविष्य की अद्युति सृष्टि पर भी प्रकाश डालने वाला एक अद्भुत आलोक है। जिन जातियों की यह ज्योति मलिन होती है उनकी भावी उन्नति आशंका से खाली नहीं;

इतिहास ग्राहाभिमान की शिक्षा देने का समुत्तम माध्यम ममझा जाता है। भारत इसके सर्वे को भली भान्ति समझता था। इसी लिए यहां इतिहास निर्माता वीरात्माओं का अनादिकाल में आदर होता चला आ रहा है। भारत का कोई भी प्राचीन ग्रन्थ उठाकर देखिए, इतिहास की भलक से खाली न होगा, किसी भी मन्दिर की तरफ देखिए किसी भी मूर्ति का निरीक्षण कीजिए, कोई न कोई जबरदस्त ऐतिहासक महत्व आपको मालूम हो जायगा। विदुपी एम० डॉ ने बुल (वहन निवेदिता) कहती है— 'प्रायः कहा जाता है कि भारतीय साहित्य में इतिहास नहीं,.... हमें स्मरण रखना चाहिये कि इस सम्बन्ध में स्वयं भारत एक विशाल लिखित प्रमाण है। वह इतिहास है जिसका पढ़ना हमें सीखना चाहिए। कुछ लोग कहते हैं राजनीतिक शक्ति हास होने पर इतिहास साहित्य का एक अंग बन कर उत्तर जीवी नहीं रह सकता। यही कारण है कि भारत के पास बहुत सी वंश परिचायक पुस्तकें नहीं। जो लोग इस पर जोर देते हैं, इस बात पर

विश्वाम करते हैं कि इसके इतिहास के प्रत्येक नवीन काल में विगत इतिहास नष्ट कर दिया गया। दूसरी ओर हम अपनी वंशावलियों और अन्य साहित्य के विभागों में इस कमी का पूरा बदला पाते हैं वेगाल के कुछ इतिहासों का जो इसके निर्माण की नव्यारी में लगे हैं कहना है कि इतिहास की सामग्री इन्हीं अधिक है कि उनमें सम्भाल कर रखना कठिन हो रहा है। अन्त में आप कहती हैं कि यदि भारत स्वयं अपना इतिहास है तो उसके पढ़ने का उत्तम उपाय है उसका परिभ्रमण।<sup>1</sup> सुविळ्ळयात् इति-हास्त्वेष्टक कर्त्तल जेस्स टाइ भी कहते हैं—“हम यदि राजनीतिक परिवर्तनों और उन गड्ढविद्यों पर दृष्टिपात्र करें जो सहमूद् और उसके अनुदार पचपार्वी आक्रमणकारियों द्वारा हुई तो हमें इसकी इतिहासिक त्यूनता कर निष्कर्ष भालूम हो जायगा और हम इस गत परिणाम पर न पहुंचेंगे कि हिन्दू लोग उस कला से अनभिज्ञ थे जो अन्य देशों में आदिम काल से ही प्रचलित था। यह विचार करने का विषय है कि हिन्दुओं जैसी सुसभ्य जाति जिसने कलाओं का ठीक २ सम्पूर्ण विकास किया, जिसने ललित कला, वस्तुकला, मन्दिर निर्माण कला, काव्य और संगीत केवल विकसित ही नहीं किए गए अपितु दूसरों को सिखाए गए और जिसके नियमों तक का महत्वपूर्ण विवेचन किया गया, वह अपने साधारण घटनाओं की चित्रण कला इतिहास से अपरिचित थी, अपने राजाओं के चरित्र चित्रण और शासन व्यवस्था के अक्षण में कोरी थी।<sup>2</sup>

प्राचीन भारतीयों के लेखों से स्थान २ पर प्रकट होता है कि वे भूत के अनुभवों का भाविष्य में निर्माण में वहुत जवदूस्त हाथ

1. Foot falls of Indian History Page, 6-7 and 15

2. Introduction to Tod's Rajasthan

समझते थे। मिस्टर डी० भी डम वान को स्वीकार नहीं करते कि हिन्दुओं के साहित्य में इतिहास का अभाव था और ब्राह्मणों के रचे हुए बृहद मन्त्रों में इतिहास नहीं।<sup>३</sup> मिस्टर विल्मन भी डम वे मिर पैर की बात से विलकूल सहमत नहीं, आप कहते हैं—कि यह कहना कि हिन्दुओं ने इतिहास नहीं रचा गत्त है। दक्षिण का इतिहास स्थानीय इतिहास से भग पड़ा है जिसे हिन्दुओं ने लिखा है। मिस्टर स्टर्लिंग उडीसा और कनल टाड का राजपूताने में पर्याप्त इतिहास मिला है।<sup>४</sup>

हिन्दू इतिहास को 'पञ्चमवेद' के नाम से सम्बोधित करते थे। इससे अधिक आदर संसार में और कोई अपने इतिहास को देही क्या सकता है। भारतीय इतिहास पर कटाक्ष करने वाले दुराग्राही विद्वानों से टाढ महोदय पूछते हैं—'यदि प्राचीन काल में लिखित इतिहास नहीं था तो भारत के इतिहास को लिखने का मसाला अबदुल फजल ने कहां से प्राप्त किया।

पाश्चात्य परिदृतों का यह विवेचन भारतीयों की इतिहास विज्ञता का ज्वलन्त प्रमाण है। अब उन साधनों को भी मिस्टर पञ्च० एल० ओ० गैरट आई० ई० एस० की जवानी सुन लीजिए—जिनके आधार पर भारतीय इतिहास के भव्य भवन का निर्माण हो सकता है—चारों वेद, वेदांग, आरण्यक, उपनिषद् और अन्य ग्रन्थ जो आदिम आयों के रहन सहन पर प्रकाश डालते हैं। महाकाव्य—रामायण और महाभारत, जिनमें काफी इतिहास है। बुद्धों के धार्मिक ग्रन्थ और सम्राट् अशोक के शिलालेख, जो बुद्ध कालीन इतिहास के परिचायक हैं। राजपूत सम्राटों का जो वर्णन जैन ग्रन्थों और चीनी यात्रियों के यात्रा वर्णन से मिलता है।

3. History of Hindustan Preface

4. Mill's India Vol II Page, 67 foot note

पुरानी राजदूत मैगस्थनीज की पुरातक से जो चन्द्रगुप्त के दूरवार में रहा था । पुरान, यद्यपि इनमें अन्य विषय भी है, फिर भी ये इतिहासिक घटनाओं से भरपूर हैं । इनमें ही हुई वंशावली का आधार प्रमाणित है । शिलालेख, सिक्के और ताम्रपत्र भी विभिन्न मन्त्राण्डों और वंशों का सन् और सम्बन्ध दृढ़ ढंगे के लिए उपयुक्त हैं । इनके अतिरिक्त कलहन की राजतरङ्गणी वान का हर्ष चरित्र और चन्द्र का पृथ्वीराज रासव भी उस समय का तुलनात्मक वर्गान्त मिलता है ।<sup>५</sup>

इसके अतिरिक्त कौटिल्य का अर्थशास्त्र, मनुस्मृति, महाभाष्य इन्द्रविजय, शुक्रनीति, नागानन्द की रत्नावली, कालिदास की शबुन्तला, शुद्रक का मृच्छ काटिक, विशाखदत्त का मुद्राराज्ञस मुरमान आदि अन्य रासव आदि प्रन्थ तथा पुरानी गुफाएँ और मान्दिरों की चित्रकारी आदि कम महत्वपूर्ण नहीं । प्राचीन काल में मारत की विस्तृत सीमाएँ वमुन्धरां से मिलती थीं । अस्तु अन्य देशों की देवमालाएँ और इतिहास निर्माण में कुछ कम सथायक न होंगे । कुछ विद्वानों ने पुराणों को जिनमें वहुव कुछ मिश्रित होने के कारण अनावश्यक समझ रखा है । किन्तु पार्जीटर आदि पाश्चात्य विद्वानों के प्रयत्नों से वे भी इतिहास का स्रोत स्वीकृत किए जा चुके हैं । प्रसिद्ध इतिहास लेखक वी० ए० स्मिथ भी स्वीकार करते हैं—गम्भीर अध्ययन के बाद वहुत मुन्द्र और वहुमूल्य ऐतिहासिक मसाला मिला । उदाहरणार्थ विष्णु पुराण में मोर्य वंश के सम्बन्ध में ( कहावतें ) तथा मत्स्य पुराण में अन्ध इतिहास के सम्बन्ध में अत्यन्त विश्वासनीय बातें मिलती हैं ।<sup>६</sup>

5. A History of India. Page 12-13

6. See Early History of India Page, 2

परम्परा गत कथा कहावतें भी इतिहास का एक उपयोगी अङ्ग हैं। मिस्टर जी० केर हार्डी एम० पी० के शब्दों में ये भारत के प्रत्येक भाग में प्रचुरता से प्रचलित हैं। इनके द्वारा भी इतिहास लेखन में पर्याप्त सहायता मिल सकती है।

भारत में भारतीय इतिहास मन्दबन्धी ममाने और साथनों का एकान्त कमी नहीं है, कमी है केवल उसे पुनः एक शृङ्खला में गूँथने वाले परिव्रमी निधेष्ठ इतिहास अनुनन्द्यान कर्त्ताओं की। इतिहास को नष्ट भय करना परन्तु देखें की वर्चरता है। भारतीय इतिहास पर विदेशियों के असंबद्ध आवात हुए हैं। भारतीय ग्रन्थों की होलियां ज्ञाई गई हैं, उन्हें दूसरे देशों में लाइ कर ले जाया गया है, और इंग्लैंड द्वारा तहकालान इतिहास लेखन की नितान्त मनाही करदी गई थी। ऐसी प्रतिकूल परिस्थितियों में भी आज भारत के इतिहासिक कोष में भी इतर्ना पुस्तकें अवशेष हैं। इससे अधिक भारत कोष विशलता की और सम्पन्नता का प्रमाण ही क्या हो सकता है।

भारत का कण्ठ कण्ठ प्रत्येक भग्नस्तूप और टोला, खण्डहर और शिवालय अतीत इतिहास का बोलता हुआ चित्र है। स्वर्गीय डाक्टर एनाविसेन्ट भी यही कहती है—‘भारत का एक शृङ्खला नदू इतिहास है जो प्राचीन काल की ओर दौड़ता है। वह कितना प्राचीन है, किस में बतलाने का सामर्थ्य है।’ अन्त में हम सिस्टर निवेदिता के शब्दों में यही कहेंगे ‘आप उम भारतीय बातावरण में क्षणमात्र का विश्राम लीजिए, आप अपने चाहों ओर के इतिहास पर विचार कीजिए।’<sup>7</sup>

7. See India Impression and Suggestions,  
8. A bird's eye view of India's Past Page 2  
9. Foot falls of Indian History Page 19

## उपनिषद्

उत्तित जागृत प्राप्य वराक्रियोधन ।

चुरस्यधारा निशिना दुर्गत्या हुर्गं पथमत्तक्षयो वदन्ति ॥

—कठोपनिषद्

दर्शनों का न्योत झाँह लोक एवं परलोक का समन्वय जीवन और मरण का प्रश्न, तथा आत्मा और परमात्मा की विषय ज्ञान्या उपनिषदों के भण्डार में मौजूद है। उपनिषदों के अगाध अनन्त सागर के एक एक विन्दु को लेकर संसार में विविध ग्रन्थों की रचना हुई है। अंग्रेजी के प्रसिद्ध कवि बड़ूस वर्थ की टिन्टर्न अबे ( Tintern Adbey ) नामक काव्य को पढ़ लीजिए दूहर ने मे के पोइस आफ फिलासिटी ( Poems of Felicity ) को नेरहवें पृष्ठ पर खोल कर देखिए द्वान्द्वाय के तत्वों का कितना सुन्दर निःपत्ता है। उपनिषद् सर्वा में १०८ हैं किन्तु उनमें से प्रसिद्ध ये हैं। द्वान्द्वाय, द्वृहदायायक तेत्तिरीय, ऐतर्य, माण्डूक्य, मुण्डक, प्रश्न, कठ, केन ईश आदि।

जर्मन तत्त्ववेत्ता शोपनहार उपनिषदों के सम्बन्ध में लिखता है—उपनिषदों के प्रत्येक पद् गम्भीर और नवीन विचार उत्पन्न होते हैं, इनमें सर्वोत्कृष्ट पवित्र और सच्चे भाव मौजूद हैं..... आगे चल कर आप कहते हैं। इन्होंने मुझे जीवन में शान्ति प्रदान की है और मृत्योपरान्त भी शान्ति देंगे। सर डब्ल्यू हेनर भी इसकी महत्ता का गुणगान करते हुए लिखते हैं—‘जिन ममस्याओं को रोमन ग्रीक सुलभा न सके, जिन प्रश्नों ने मध्य कालीन और आधुनिक विज्ञान वेताओं को परेशान कर रखा है उन सब का उत्तम और समुचित उत्तर दर्शनों में मौजूद है।’

प्रोफेसर मैक्समूलर की राय है कि कोई भी इनकी सराहना किए विना नहीं रह सकता। गोल्डस्टक महाशय समस्त दृश्यों के जीवाणु उपनिषदों में पाते हैं। लेडि रोनाल्डशे का कथन है—  
ये आदिम कालीन भारतीयों की बड़े मार्कों की उत्पत्ति है, यह उनके उच्च विचारों का निर्दौष एवं आश्चर्यजनक प्रमाण है।  
इनमें महान मौलिकता के भाव हैं।”

अब जरा इन उपनिषदों के ज्ञान कोष के एक जगमगाने आलोक को भी देखिये:—

यस्तु सर्वाणि भूतान्यात्मन्येवानुपश्वनि ।

सर्वभूतेषु चात्मानं ततो न विज्ञुगुप्तते ॥६—ईशोपनिषद् ।

वासांसि जीर्णानि यथा विहाय न गानि गृहानि नरेऽपराणि ।

तथा शरीराणि विद्युत्य जीर्णानि अन्यानि सवानि नवानि देही ।

## गीता—

योगेश्वर कृष्ण की अधिकार पूर्ण वाणी से निकले हुए गीता के पद विश्व साहित्य में एकदम अनूठे और अनुपम हैं। रोतों को हँसा देना, मुर्दों में जान डाल देना, व्याकुलों को सान्त्वना प्रदान करना गीता की अपनी विशेषताएँ हैं।

जर्मन के प्रसिद्ध विद्वान विलियम बान हॉबोल्ट बतलाते हैं—  
संसार के पास सब से अधिक उत्तम और महान ग्रन्थ भगवद्गीता है। मैं अपने भार्य को अस्यन्त धन्य समझता हूँ कि उसने गीता के अवलोकनार्थ जीवन प्रदान किया। मिस्टर एफ० टी० ब्रुक का कथन है कि भगवद्गीता राष्ट्रीय जीवन की पूँजी है। राष्ट्रीय धर्म पुस्तक बनने वाले सभी लक्षण इसमें मौजूद हैं। यह महाईश्वर को सर्वाधार, सर्वव्यापी समझने वाला किसी की घृणा का पात्र कहे बन सकता है।

भारत के अतीत कालीन स्वर्ग पुग के सन्वेश रूप में मानव जीवन को अधिकाधिक उज्ज्वल बनाने के लिए प्रदान की गई थी । क्य मनिष्य के सावभौमिक धर्म की प्रसिद्ध धर्म पुस्तक है ।<sup>12</sup>

गीता के पाठकों की कल्पना को कई अद्भुत रस्य मूर्खों का प्रवास करने की अभी मन्त्रिय मिलती है । एलिफ्टस्टन महोदय इसे पढ़ कर अपनी सम्मति प्रकट करते हैं—‘गीता सर्वोत्तम प्रन्थ है । इसमें मानव कर्तव्य का सुन्दर विवेचन किया गया है ।’<sup>13</sup> गीता की रसगीयता पल पल पर नवीनता धारणा करती है । जितनी बार आप पढ़ेंगे कोई न कोई नूतन विचार आपको अवश्य मिलेगा । देखिए जीवन मरण की महान उलझी गुत्थी को योगेश्वर कितनी सरलता से हल करते हैं ।

## पुस्तकालय

पुस्तकालयों का इतिहास मानवीय सभ्यता की समता का समझना चाहिये । क्योंकि इसका श्रीगणेश उसी समय से होता है जब से हाथ से कलम आदि पकड़ कर भावों को व्यक्त करने की कला का ज्ञान लोगों को हुआ । भारतीय आर्य जब वेदों को स्मरण न रख सके, अथवा त्रिकालदर्शी ज्ञान ने उन्हें पुस्तक बढ़ करने के लिए बाध्य किया, वहीं से पुस्तक और उसके बाद पुस्तकालयों का जन्म समझना चाहिए ।

वैदिक काल में हमें गौतम, गर्ग, शांखिष्य आदि कई ऋषियों के नामों का ज्ञान है जो जीवित जागृत पुस्तकालय से किसी प्रकार

10. Gospel of Life.

11. History of India Page 49 .

कम न थे। वैदिक काल में माहित्य का विकास वास्तव में आश्चर्योन्पादक है। वेदों की व्याख्या लेप में ही जो शास्त्र ग्रन्थ लिखे गये थे, उनकी गणना ११२७ की संख्या तक पहुंची थी।

ऐतिहासिक युग में रामायण, गीता, महाभारत, उपनिषद, ब्राह्मण, अग्रण्यक, ओतसूत्र, गृह्यसूत्र, धर्मसूत्र, पुराण, व्याकरण दर्शन, ज्योतिष इतिहास, कामशास्त्र, अर्थशास्त्र, स्मृति दण्ड-शास्त्र, शिल्प शास्त्र आदि। इस प्रकार पता चलता है कि वैदिक काल के पुस्तकालय पौराणिक काल में अपनी उन्नति के ऊंचे शिखर पर पहुंच गए थे।

बौद्ध काल, लगभग इसा से ६ शताब्दी पूर्व का समय माना जाता है इस समय भारत में पुस्तकालयों की साधारण उन्नति हुई। बौद्ध काल में बुद्धों के ही सेकड़ों ग्रन्थ थे उनमें से कुछ प्रवान हैं। धर्मपद, वाशिटू, सुत्त, धार्मिक सुन्न मोहवरग विजय पिटक, सुत पिटक और अविधर्म पिटक आदि। नौद्ध भित्तुक प्रायः अपने प्रत्येक मन्दिर में एक पुस्तकालय अवश्य रखते थे। तत्कालीन सम्राटों ने भी इस प्रगति को ऊंचा उठाने में काफी सहायता दी थी। सम्राट चन्द्रगुप्त का अपना एक बहुत बड़ा पुस्तकालय था, जिसमें से कितनी ही पुस्तकें सल्यूकस को भेणट दी गई थी। आचार्य चार्क्य के पास भी बहुत सी पुस्तक संग्रह का पता इतिहास देता है। सम्राट अशोक का भी निजी पुस्तकालय था। तत्कालीन देश देशान्तरों में बुद्ध धर्म का प्रचार भी प्राचीन ग्रन्थ प्रचुरता का परिचायक है। बौद्धकाल में प्रायः सभी विश्व-विद्यालयों के साथ एक बृहद पुस्तकालय हुआ करता था। तिज्वरी इतिवृत्ति के अनुसार नालन्दा विश्व-विद्यालय का पुस्तकालय धर्मगङ्गा नामक प्रदेश में स्थित था। इसकी तीन बड़ी २ इमारतें, थी। एक का नाम रत्नोदयि था, यह भवन नौ मर्जिल का था

दूर्यो भवन रत्नसागर और रत्नरञ्जक भी हैं, है मर्जिल के दूर्यों कितने ग्रन्थ रहे हांगे इसका स्वयं अनुसान लगावृये। इनके अतिरिक्त ओदान्त पुरी विक्रमशिला जगदल सहारंथीला अद्वितीय वादि के भी बड़े २ पुस्तकालय थे। प्रसिद्ध पुरातन्त्रदेता रथ व्याधुर शरचन्द्र दाम लिखते हैं कि ये (अन्तमढ़ों) पुस्तकालय विनियार विलजी के मेनापति की आज्ञा स जलाकर स्वाक कर डाले गये थे।

कुमारगुप्त का भी विश्व-विश्रुत पुस्तकालय था। डाकटर थोवोट की सम्मति है कि प्राचीन ज्योतिष शास्त्र की अत्यन्त प्रणिद्व पुस्तक रोमक सिद्धान्त कुमारगुप्त और चन्द्रगुप्त द्वितीय के पुस्तकालय में पाई जाती थी। इतिहास से पता चलता है कि विकादित्य का वृहद् पुस्तकालय नौ विभागों में विभक्त था। प्रत्येक विभाग तदविषयक विद्वानों के अधिकार में था। गजा हृष्वर्धन के पास भी अपना एक अद्वितीय पुस्तकालय था। वाया भट्ट इसके समय का माना हुआ विद्वान था। इतिहासज्ञ मैक्डोनल थतलाते हैं कि इसने हस्तलिखित प्रतियां पढ़ने के लिए एक परिषित नियुक्त किया था।<sup>१४</sup> इससे साफ पता चलता है कि उन परिषित 'वाणी' के पुस्तकालय का पुस्तकाध्यक्ष था, अन्यथा हस्तलिखित प्रतियां पढ़ने के लिए एक व्यक्ति विशेष रखने की क्या जहरत?

हिन्दू राजाओं के अतिरिक्त मुगल सम्राटों में अकबर ने भी पुस्तक संग्रह की ओर विशेष ध्यान दिया था। वर्नियर और टेवर नियर नामक फ्रांसीसी यात्री भी काशी विश्व-विद्यालय की एक पुस्तकालय का वर्णन करते हैं जिसमें बैठ कर उन्होंने जलपान किया था।<sup>१५</sup> भारत के ग्रन्थ रत्नों से आजतक नगर का नगर

14. Hindustan review for 1906

15. History of Sanskrit Literature,

वसा होता यदि असभ्य विदेशी मूर्खतावश उन्हें अग्रिंज अर्पित न करते। मुलतान अलाउद्दीन खिलजी ने अनहलवाड़ा पट्टन की लायत्रेरी को जला कर स्वाहा कर दिया था। फिरोज शाह ने कोहाना के एल विशाल संस्कृत पुस्तकालय को आग लगवाकर सत्यानाश कर दिया था। मुसलमान इतिहासकार सैयद गुलाम हुसैन लिखते हैं कि औरङ्गजेब बहुत पक्षपाती बादशाह था, यह जहां कहीं हिन्दुओं की पुस्तकें पाता था जलवा देता था।” १५

संसार के कोने कोने में सभ्यता संस्कृत का प्रचार करने वाले भारतीयों के पास कितनी पुस्तकें और पुस्तकालय रहे होंगे इसका अनुमान लगाना भी आसान नहीं। साहित्य को संस्कृत का सुमुकर समझने वाले इनका संस्थापन स्वदेश में ही नहीं विदेशों में भी किया था क्योंकि इनका एक मात्र उद्देश्य था ज्ञान का प्रचार। इतिहास साक्षी है कि जितने भी विदेशी यात्री और दर्शक भारत आये अन्य उपहारों के साथ पुस्तकें भी ले गये। जिन भड़ फाहियान और हुएनसांग को जाने दीजिये हर्ष कालीन चीनी यात्री इर्टिसह भी ६०० से ऊपर हस्तलिखित ग्रन्थ यहां से ले गया था। वर्षर बास्तियार खिलजी के कारण न जाने कितने बौद्ध भिन्नु किंवद्वत्, चीन, नैपाल, और भूटान में भाग गये थे। जहां कि अब भी १५०० सौ के लगभग बौद्ध साहित्य के ग्रन्थ मौजूद हैं। योरुपियन लोग भी कुछ कम पुस्तकें नहीं ले गए। भारत में सम्पत्ति की ही भान्ति ग्रन्थों की भी लूट और बरबादी हुई है किन्तु ऐसी अवस्था में भी किसी सुसम्पन देश की अपेक्षा भारत में हस्तलिखित ग्रन्थों की संख्या आज भी ज्यादा है। सम्भवत हस्तलिखित संस्कृत ग्रन्थ ७ लाख से भी ज्यादा होंगे। श्री जी०

35. Travels in the Mugal Empire, Page 341

18. Hindu Superiority, Page 117

आगरा राज्य ने बड़ी छान बीन के बाद विभिन्न संस्थाओं के पुस्तकालयों में रखी हुई संस्कृत की हस्तलिखित पुस्तकों की तालिका दृष्टांशित करवाई है। उसके अनुसार

पश्चात्र विश्व विद्यालय में	...	...	६५००
गवर्नर्मेंगढ मंस्कृत कालेज काशी	...	....	६५०००
झंगा० ग० वी० कालेज लाहौर	...	...	६५००
ग्रेशेयाटिक सोसायटी कलकत्ता	...	...	६५०००
कलकत्ता संस्कृत साहित्य परिषद में	...	....	५०००
नंजोर राज्य	...	...	१२०००
निवेन्द्रम राज्य	...	...	१००००
मैसूर राज्य	....	...	१६०००
भगड़ार कर रिसर्च इन्स्टीच्यूट पूजा	...	...	३००००
आनन्दाश्रम पूजा	...	...	३६०००
बड़ोदा राज्य	...	...	८०००
ओरिएण्टल पुस्तकालय मद्रास	...	...	३००००

इसके अतिरिक्त भारत के विभिन्न नगरों और शहरों में जाने कितनी पुस्तकें भोजपन्न, ताड़पन्न और कागजों पर लिखी जैजूद हैं। नैपाल वी यात्रा करने वाले यामिनी कान्तसेन लिखते हैं कि नैपाल के प्रन्थगार में ६०००० हस्तलिखित पुस्तकें, यह संग्रह समस्त ऐश्वर्या में अद्वितीय है।<sup>१५</sup> सम्प्रति भारत में पुस्तकालयों का विकास बड़ी तेजी से हो रहा है। आशा है बहुत शीघ्र यहां भारत का विखरा हुआ साहित्य संग्रहीत होकर सामने आ जायगा।

## वैद्य विद्या

मंसाग में जीवन से प्यारी वस्तु दृसरी नहीं। यही कारण है कि कीट पतङ्ग से लेकर, मनुष्य तक वृद्ध, जीर्ण रोगी से तन्दुरुस्मन जवान तक सभी जीवन रक्षु को अधिक लम्बी करने के उद्दोग में प्रयत्नशील रहते हैं। जिस जीवन से इह लोकिक एवं पारलोकिक सिद्धियां प्राप्त होती हैं, उसे चिकित्सा तक स्वम्भ एवं कायच्चम बनाए रखने के ही लिए प्राचीन आयोग ने 'आयुर्वेद' का अनुसन्धान किया था। वंगाल के भूतपूर्व लैफटीनेन्ट गवर्नर मर्जार्ज कैम्पबेल लिखते हैं कि 'वे (हिन्दू) मानवता के प्रति हृदय में दया भाव रखते हैं जो कि मानव स्वभाव का एक अंग है। उनके प्रधान कार्य मानव समाज के लाभ के लिए होते हैं। एक मत्कर्मी हिन्दू गरीबों को भोजन देने के लिए संस्थायें खोलता है, अथवा यात्रियों के लिए कुएं और सराय बनवाता है। उन्हें धूप से बचने के लिए सायेदार वृक्ष लगवाता है।' १ बात अक्षरशः सत्य है। दृसरों के लिए जीना और मरना ही प्राचीन हिन्दुओं के जीवन का एकमात्र उद्देश्य था। उनका यह बढ़ा चढ़ा चिकित्सा विद्यान भी सेवा धर्म ही के लिए था,—थन, यश संचय के लिए नहीं।

'आयुर्वेद' चिकित्सा प्रणाली विश्व कीं आदि चिकित्सा पद्धति है। विश्वमान्य आचार्य, अग्निवेश चरक, धनवन्तरि, सुश्रुत, भरद्वाज, कपिश-थला, भेठ, जातुकर्ण, पाराशर, हरीत, औहलिक, पांचाल, वाम्भट्ट, भट्टा, हरिशचन्द्र, चन्द्रकाकार,

2. नात्मार्थ नापि कामार्थम् भूत दयां प्रति ।

वर्तते नरेचकित्सायां स शर्व मनि वर्तते ॥——चरक

बहुनि, कर्गीराचार्य, भोज, और गोतम, नागार्जुन, वृद्धकाश्यप, वन्द्राचन्द्र, तीसटाचार्य, अमर, जीवक, हिंगाक्ष, सात्यिक, वृन्धाणि आदि प्राचीन भारत के प्रणाचार्य हैं।

‘आयुर्वेद’ का सम्पूर्ण साहित्य यश्यपि आज सुलभ नहीं, फिर भी अवशिष्ट सात्र ही संसार की अन्य समस्त चिकित्सा प्रणालियों के साहित्य से कहीं अधिक बड़ा है। प्रोफेसर वीवर भी स्वीकार करते हैं कि ‘साहित्य और आचार्यों की संख्या बहुत अधिक है।’<sup>३</sup> प्रोफेसर विलम्बन भी यही कहते हैं—संकृत में चिकित्सा विज्ञान सम्बन्धी साहित्य बहुत बड़ा है। नवीं शताब्दी में अखंकों ने कुछ प्रवान ग्रन्थों के नाम लिए हैं जिनका बगदाद में अनुवाद हुआ था। इनके अन्दर चिकित्सा विज्ञान की सभी ग्राहाओं का वर्णन है, जिसमें शल्य शास्त्र कितने ही अनुभूत गंभीर निरीजगा और चिकित्सा प्रणाली भी सम्मिलित है।<sup>४</sup> भारतीय चिकित्सा प्रणाली कितनी सम्पूर्ण है, भारत संकार के भूतपूर्व सर्जन जरनल सर चाल्सी पार्डी ल्यूकिस की जबानी सुनिये जितना अधिक मैं भारत में गहूँगा, उतना ही यहाँ के प्राचीन पुस्तकों के प्रति मेरा आदर सम्मान बढ़ता जायगा और अधिकाधिक यहीं समझूँगा कि पश्चिम को अभी पूर्व से बहुत कुछ सीखना है।

“आजकल हम लोग अपने आपको जिस चिकित्सक प्रणाली का प्रयोता कह कर गई करते हैं। भारतीय महर्षि हमारे आर्वि-भाव से पूर्व उसका विषद् विवेचन कर रख गये हैं।”

आयुर्वेद की प्रशंसा करते हुए प्रोफेसर विलम्बन लिखते हैं—“प्राचीन हिन्दुओं ने औषधि ज्ञान और चीर फाड़ में सब से अधिक योग्यता प्राप्त कर रखी था, जितना कि लिखित प्रमाण

मिलता है। उनकी स्वभाविक एकाग्रता एवं चतुरता ने उच्चकोटि का निरीक्षक-बना रखा था। साथ ही उनको स्वदेश की उर्वरा भूमि ने उनके लिए बहुमूल्य औपधियां भी जुटा रखी थीं। उनका निदान उच्चकोटि का और निवन्दु बहुत बहुदृढ़ था।<sup>5</sup> माधव निदान आज भी संसार में अपनी सानी का दूसरा ग्रन्थ नहीं रखता।

जिन अविष्टकारों पर आज प्रश्नात्मक फूले नहीं समाते वे यहां लाखों वर्ष पूर्व व्यवहृत होते थे। लेफ्टीनेंट कर्नल डॉकिंग ने मद्रास विश्वविद्यालय में व्याख्यान देते हुए स्पष्ट चतुराया था—“मनुस्मृति में इस विषय की पूर्ण रूप से व्याख्या की गई है कि शुद्ध जल का संप्रदाय और व्यवहार कैसे किया जाय औपधिद्वारा कुछों का पानी साफ़ करना, महामारी कैलने पर कुमि नाशक औपधियों द्वारा स्वच्छता रखना... आदि वैष्णव नियम मनुस्मृति में चतुराये गये हैं।<sup>6</sup> मद्रास के भूतपूर्व गवर्नर लार्ड एम्प्रिल की सम्मति है—‘भारत वासियों को कर्नल किंग का कृतज्ञ होना चाहिये। उन्होंने पूर्ण रीति से बताया है कि जिस समय योक्तुपसिवासी अज्ञानता और जंगलीपन के घोर अन्यकार में थे, भारतीय चिकित्सा पद्धति के सिद्धान्तों को भली भान्ति जानते थे।

सर विलियम हरेटर ने इस विषय में क्या कुछ अनुभव किया यह भी उन्हीं के शब्दों में सुन लीजिए—‘भारतीय औपधि शास्त्र ने विज्ञान के पूर्णाङ्गों का विवेचन किया है। इसमें शरीर की बनावट, भीतरी अवयवों, मांस पेशियों, पुटों, धमनियों और नाड़ियों का भी वर्णन है। हिन्दुओं के निवन्दु में खनिज, बनस्पति और पशु सम्बन्धी औपधियों का बहुदृढ़ भण्डार हैं जिनमें से बहुतों का

द्वंग आयुतिक औपचियन डाक्टर भी कहते हैं।<sup>१</sup> भारत में आयुर्वेद शास्त्र का इतना प्रचुर प्रचार हुआ था कि यहाँ प्रायः प्रत्येक व्यक्ति को स्वास्थ सम्बन्धी आवश्यक वातों का पूरा ज्ञान था। आज भी भारत के गांवों में बहुत से स्त्री पुरुष एमेजिनेंटों जॊ वडे २ भयानक रोगों को संगलता के साथ अच्छा कर देते हैं। जैर कर हार्डी ( Keir Hardie ) एम० पी० कलकत्ते की दुकानों पर स्त्री, पुरुषों और पशुओं की मूर्तियाँ देख कर आश्चर्य व्यक्ति हो कहते हैं—“शर्गीर विज्ञान का ज्ञान भी इन्हें विगस्तमें मिला है? नहीं तो फिर जॊ एक दिन के लिए भी कालेज या स्कूल नहीं गए, उनमें यह कहाँ से आया।”<sup>२</sup> किन्तु विचारपूर्ण हाउस में देखते पर मालूम हो जायगा कि यह भारती मिट्टी और पानी का ही प्रभाव है।

आयुर्वेदिक औषधियाँ कितनी अचूक रामवाण होती हैं। प्रश्नात पाश्चात्य परिषद्त सर जान उड्डफी का अनुभव सुन लोंजिए! ‘आयुर्वेदिक औषधिया गुणकारी हैं यह मैं उनके सम्बन्ध में कहता हूँ जिनका मैंने स्वयं व्यवहार किया है। वे कुछ ऐतोपेथिक दवाओं की भान्ति तुकसान पहुंचाने वाली नहीं होती, कोई भी आयुर्वेदिक औषधि किसी भी अवस्था में हानिकारक नहीं होती। समस्त भारतीय वस्तुओं की भान्ति वह सुन्दर लाभ पहुंचाने में स्वाभाविक होती हैं। वे सस्ती और संगलता से प्राप्त होने वाली हैं, अधिकांश मूल्य केवल उनके एकत्रित करने का व्यव होता है। अन्त में उड्डफी महोदय भारतीयों के विदेशी वस्तु प्रेम पर व्यंग करते हुए कहते हैं ‘किन्तु नहीं वे सब ऐसा कैसे कर सकता हैं। वे पाश्चात्य तो नहीं।’<sup>३</sup>

१. Imperial Indian Gazetteer ‘India’ Page 120  
 २. India’s Opcess ops and Suggestions, Page 31  
 ३. Bhart Shakti

## शत्यचिकित्सा—

जिस चीर काड़ को सीख कर आज अंग्रे ज विद्वान गवं मे  
फूज उठाते हैं वह इसी दार्ता देश का दातव्य है । वृद्ध भारत के  
प्राचार्यार्थी ने ही संसार को वावों पर पट्टी बांधना मिलाया था ।  
विश्वाम न हो तो मिस्टर वेवर से पृछ देखिए—“आज भी  
पाश्चात्य विद्वान भारतीय शल्य चिकित्सा में नहुन कुछ सीम  
सकते हैं । जैसे कि उन्होंने कटी हुई नाक के ऊँझे की विधि  
भारतीयों से सिखी थी ।”<sup>१०</sup> प्रोफेसर मैकडानल भी इसी का  
समर्थन करते हैं ‘नाक का आपरेशन और कृत्रिम नाक बनाना  
अंग्रेजों ने भारतीयों से विगत शताब्दी में सीखा था ।’<sup>११</sup> मर  
डब्ल्यू० हेटर के कथनानुसार हिन्दू नाक कान आदि के चीर  
काड़ और उनकी कृत्रिम रचना में विशेष निपुण थे । जिसे कि  
योग्यियत सर्जनों ने उनसे लिया है । .. .प्राचीन भारतीय अंग-  
छेद करते थे, जिस द्वाव राक सकते थे पथरी निकालते थे, अन्न-  
बृद्धि, भग्नदर, नाड़ी ब्रग्ग एवं अर्श को ठीक कर देते थे । वे गभे  
एवं स्त्रियों के रोगों के सूक्ष्म से सूक्ष्म आपरेशन करते थे ।<sup>१२</sup>  
डाक्टर सील बतलाते हैं कि यहां विद्यार्थियों को सीखाने के लिए  
लाशों का आपरेशन किया जाता था । इतिहासकार एलिफन्स्टन  
की राय है कि भारतीयों का शल्यशास्त्र उसी कमाल का है जैसी  
कि उनकी औषधियां ।<sup>१३</sup> रेवरेण्डर पीटर पर्सिवल भी इसका  
अनुमोदन करते हुए लिखते हैं—‘उनकी (हिन्दुओं) प्राचीन

10. Weder's Indian Literature, Page 260

11. History of Sanskrit Literature Page, 247

12. Indiau Gazetteer, India Page, 220

13. History of India Page, 147

गुर्मतकों में १२७ प्रकार के चीर फाड़ के अस्त्रों का वर्णन है । १४ विदुषी मैनिंग बतलाती है कि चीर फाड़ के अस्त्र इतने तीव्र थे कि लम्बवाई में बाल को चीर कर दो भाग कर देते थे । १५

सर्जन सुश्रूत और विख्यात चरक ने जो कुछ दिया था, उसे नीत्वने में, समझने से आधुनिक योरूप को अभी सदियां लगेंगी । इतना कुछ बतलाने पर मी डाक्टर विल्यम स्टरलिंग यही कहते हैं कि यकृत के विषय में अभी बहुत कुछ हमें सीखना है । उसकी अनेक कार्य प्रणालियां हैं कुछ स्पष्ट और कुछ अस्पष्ट ।” १६

### रसायन शास्त्र—

मिस्टर एलिफन्सटन कहते हैं कि उनका (भारतीय) रसायनिक ज्ञान आशा के बाहर और विस्मय कारक था । + + + वे गन्धक शोरा आदि के तेजाच ( Acid ), जिस्त, लोहा, सीमा आदि के आक्साइड ( Oxide ) तथा कार्बोनेट और साल्फाइट आदि तैयार करते थे । कभी २ उनके बनाने की विधियां विलक्षण हुआ करती थी सन् १६०६ ई० में कलकत्ते में व्याख्यान देते हुए डाक्टर एनीविसेन्ट ने कहा था कि हिन्दू और मुसलमान दोनों औषधियों की दृष्टि से पारचात्यों से बढ़ कर हैं । १७ रेवरेंड पीटर पर्सिवल भी स्वीकार करते हैं कि उनका औषधिय ज्ञान विशाल था, किस कालेज के प्रोफेसर रोआयल ( Royal ) कहते हैं कि उनकी रसायनिक निपुणता भी कुछ कम न थी । १८ यात्री अल्बेरनी बतलाता है कि ‘वे हिन्दू कीमिया ( रसायन ) की

14. The Land of the Veda Page 139

15. Ancient and mediaeval India, Vol II, Page, 346

16. “We have still much to learn about the liver, It has several functions—Some obvious, others not”

17. On 'National Universities in India'

18. The Land of the Vedas

भान्ति एक अन्य विद्या भी जानते हैं जिसे रसायन कहते हैं। इसका मिद्यान्ति निराश रोगियों को पुनः स्वस्थ करना और चुड़े को जबान बनाना है। इस भान्ति बृद्ध वैसे ही हो जाने हैं जैसे कि जबानी के करीब थे। सफेद वाले काले हो जाते हैं, उनकी शक्तियां पुनः प्रवल हो जाती हैं यहां तक कि स्त्री सहवास के लिए भी पूर्ववत् शक्ति च्याजाती है और इस संसार में उनकी आयु चिरकाल के लिए बढ़जाती है... इस कला का प्रसिद्ध प्रतिनिधि सौमनाथ के पास किला देहिक का रहने वाला था। यह हमारे काल से लगभग सौ वर्ष पूर्व हुआ था।” १९

भारतीय रसायन शास्त्र के इन काया कल्पों को देख सुन कर अमरीका के सुप्रसिद्ध डाक्टर जी० एम० कलार्क एम० ए० एम० डी० आधुनिक डाक्टरों को सत्परामर्श देते हैं ‘यदि आधुनिक डाक्टर प्रचलित रसायन तथा औषधियों को छोड़ दें और चरक के अनुसार रोगियों की औषधि व्यवस्था करें, तो जगत् में शब बाहकों का कार्य घटत कम हो जाय और घट जाय जीर्ण निर्वल रोगियों की संख्या।’

## धातु शास्त्र—

धातु विद्या (Midwifery) के सम्बन्ध में डाक्टर सर हेटर लिखते हैं कि “वे (हिन्दू) इस शास्त्र में सिद्धहस्त थे।” २० यह शास्त्र आधुनिक चिकित्सा पद्धति में आयुर्वेद से लिया गया है। इनसाईक्लोपीडिया मेडिका की छटी ज़िल्ड के पृष्ठ १८२२ का चरक संहिता और भाव प्रकाश के तद्वि विषयक धातु प्रकर्ण का मिलान कर देखिए आज भारत में इस विषय का ज्ञान रखने वालों

19. Alderuni's India Vol. I. Page 133-139

20. Indian Gazetteer 'India' Page 220, See also, weder's Indian Literature, Page, 270

जिनमें ही अनपढ़ द्वाइयां सौजूदक हैं जिनकी पटुता की परीक्षा कर वड़ी २ लेडी डाक्टरों की बुद्धि चखी हो जायगी।

### सूचिका भेदन—

भारतीय प्राणाचार्य सूचिका भेदन ( Injection ) और टीका ( Vaccination ) की क्रिया से संसार को कांगा छोड़ जाने यह कैसे हो सकता है। भूतपूर्व मद्रास के गवर्नर लार्ड प्रस्पर्थिल ने मन १८७५ ई० में व्याख्यान देते हुए कहा था कि कर्नल किंग ने जेनर ( jenner ) के आविष्कार से पूर्व भारत में टीके और इन्जेक्शन की क्रिया का प्रचलित होना सिद्ध कर दिया है।<sup>१</sup> वर्सेल पीटर पर्सिवल बतलाते हैं कि वे खनिज द्रव्य ( भस्म और रन ) का प्रयोग आन्तरिक रूप में करते थे। आयुर्वेद में 'सूचिका भेद रस' आज भी मिलता है जिसका नाम ही इस बात का दोतक है कि यह इन्जेक्शन के लिए पेटेन्ट था। भारतीय प्रचलित गोदन या लीला क्रिया भी इसी की परिचायक है। मो० आर० टेबना नामक एक ग्राहपियन मद्रास में सुत्राद्धण्यम के मन्दिर मेले का उल्लब्ध करता है। यहां रागियों के शरीर में सूड़यां चुभां कर उन्हें प्रातः काल सुत्राद्धण्यम के कुण्ड में स्नान करा कर देवता आदि को पूजा कराई जाती थी। इसके बाद वह लिखता है कि सूड़यां शरीर से निकाल ली जाती हैं और रोगी निरोग हो जाता है।<sup>२</sup> क्या यह सूचिका भेदन का पूर्व अथवा विकृत रूप नहीं।

### सर्प चिकित्सा—

सर्प चिकित्सा भारत की एक व्यापक चिकित्सा है इसके उमाल विदेशी अलबंगनी के मुंह से सुनिए। 'उनका यह जादू

<sup>१</sup>, See, Hindu Superiority, Page 267, 268, 269

<sup>२</sup> विश्वामित्र— See, Indian microburn

अधिकांश में सर्प दंशर्ति लोगों के लिए होता है। मैंने एक आदमी द्वारा यह सुना कि उसने एक सांप काटे मुद्दे को देखा था जो कि जादू के बाद पुनः जीवित हो गया।<sup>२३</sup> प्रो॰ वीवर मत्पथ ब्राह्मण और आस्वलायन का हवाला देते हुए सिद्ध करते हैं कि हिन्दू सर्प विद्या के ज्ञाता थे।<sup>२४</sup> निमाकर्स कहता है कि भारतीयों ने यूनानियों को सर्प चिकित्सा सिखलाई थी।<sup>२५</sup>

### अन्य चिकित्साएं

आधुनिक प्रचलित मभी चिकित्साओं की जननी आयुर्वेद चिकित्सा प्रणाली है। इसी के एक अंश को लेकर इनका अधिर्भाव हुआ है। उपवास चिकित्सा जो अभी आधुनिक मंसार की समझ में आई है, वह न जाने किस काल से यहां व्यवहृत होता है। सन् ६७३ ई० में भारत पवारने वाला चीनी यात्री डू-त्सिह कहता है—पश्चिमी भारत के जो लोग बीमार होते हैं कर्भा आधा मास और कभी र पूरा मास उपवास करते हैं। मध्यभारत में उपवास की दीर्घतम अवधि एक सप्ताह है।<sup>२६</sup> आधुनिक रशिमया जिसके अविष्कार का ढोल आज पश्चिम के वैज्ञानिक पीट रहे हैं उसका वर्णन हिन्दुओं के वैदिक ग्रन्थों में प्रचुरता से प्राप्त होता है। ‘सूर्य की किरणों सात रंगों में विभक्त हैं।’<sup>२७</sup> सूर्य राजस अथवा रोगोत्पादक कीटाणुओं को नष्ट करने वाला है।<sup>२८</sup> एलिफ्स्टन कहते हैं कि श्वास रोग में धूत्रों का धूवां पीने की

२३ Albertuni's India Vol, I, 194

२४. History of Hindu chemistry Vol 1 Page 55

२५. Weber's History of India Page 145

२६. इत्सिह की भारत यात्रा पृ० ११८

२७. स एष सप्त रश्मः वृषभः—जै० आ० ब्रा०

२८. सूर्योहि—रक्षसमपहन्ता।—अ० १३।४।८

विद्यि योरुपियनों ने भारतीयों से सीखी हैं।<sup>२९</sup> ८

## टेस्ट ट्यूब वेवीज़—

हाल ही में अमेरिका के लेडी डाक्टर फान्सेस सैमूर ने 'टेस्ट ट्यूब वेवीज़' या 'असंगज बालक' का सिद्धान्त सामने लाकर लोगों को आश्चर्य चकित कर दिया है। आपने कई स्त्रियों को पुरुष संग के बगैर ही एक यन्त्र द्वारा गर्भवती और सन्तान बाली बनाया है। इंलैण्ड के डाक्टर नोरसा हेल का कथन है कि सन्तान उत्पत्ति की यह प्रणाली अब से पहिले इंगलैण्ड में प्रचलित थी। परिस के प्रोफेसर जीन लुईस कहते हैं यह कोई नवीन वस्तु नहीं है, यह विधि तो शताब्दियों पूर्वी भी थी, पम्पाई के खण्डहरों से इसी काम में प्रयुक्त होने वाली पिचकारियां मिली हैं। कहना व्यर्थ है कि इन पम्पाई की पिचकारियों का उद्दम स्थान भारतवर्ष है। लाहौर के कविराज श्री हरिकृष्ण सहगल ने एक विद्वतापूर्ण लेख में इस बात को भलि भान्ति सिद्ध कर दिया है।<sup>३०</sup> आपके कथनानुसार प्राचीन भारत में भी ऐसी पिचकारियों-वस्तियों से योनि चिकित्सा होती थी। यथा—

योनि व्यापस्तु मूर्यष्टं शस्यते कर्म बातजित् ।

वस्त्यम्बज्ज परीषके प्रलेपाः पितु धारणम् ॥<sup>३१</sup> १

हाँ, यह अवश्य है कि भारत ने इस प्रणाली को काम में लाने की कभी आवश्यता नहीं समझी, कारण उसका विश्वास है कि ऐसे बालकों में पूर्वजों के संस्कार नहीं आ सके तो वे पूर्णज्ञ नहीं हो सकते।

२९. History of India, Page 154

३० 'विश्ववन्नु' ५ अगस्त १६३४

३१. चकदत्त

## कीमिया (ALCHYMY)

भारत ने अपने शिष्यों से कोई वात छिपा कर नहीं सका। हाँ प्रमाद् वश उन्होंने कुछ भुला दिया हो, यह दूसरी वात है। आज जिस सोने के पीछे संसार गरीबों की आहों की गठियां सिर पर लाद रहा है, भारत ने कभी उससे प्रेम सूत्र जोड़ा ही नहीं। वे यद्यपि उसका बनाना तक जानते थे। सूक्ष्मदर्शी पर्यटक अलवेरूनी अपनी आंखों देखी कहता है—‘उनकी (हिन्दुओं) की जादूगरी की एक किस्म रसायन (कीमिया) है। एक मनुष्य रुई का एक टुकड़ा लेकर एक सोने के टुकड़े में बदल देता है। यह ठीक वैसा ही है जैसे एक मनुष्य चादी के टुकड़े को लेकर सोने में बदल दे ... हिन्दू कीमिया की ओर विशेष ध्यान नहीं देते।’<sup>१२</sup> क्या भारत के अतिरिक्त रसायन के इस ऊंचे रहस्य को किसी देश ने समझा है?

## पशु चिकित्सा—

मानवीय चिकित्सा को छोड़िये, दयामूर्ति भाग्तीय पशु चिकित्सा में भी पूर्णरूप से पारांगत थे। डाक्टर हैटर कहते हैं कि, हाथी घोड़े आदि पशुओं की चिकित्सा में भी उन्होंने आश्चर्यजनक उत्तरानि की थी।<sup>१३</sup> सर जान उडरफी की शिक्षा भी इस विषय में मानने योग्य है—‘पुरानी बातों को नई के फर में आकर भुलाइये नहीं, देखिए क्या कुछ पूर्जों ने किया और कहा है। अन्ततः देश ने इस सम्बन्ध में भी सुन्दर किया है। यदि ऐसा है तो इसका कारण है उन लोगों का ज्ञान, उदाहरणार्थ वारामिहरकृत वृहत् संहिता को देखिए! आज भी यहाँ ऐसे लोग हैं गो-

चिकित्सा में निपुण हैं । ३४ मिस्टर इलियड सूचित करते हैं कि लवनऊ के शाही पुस्तकालय में पश्च चिकित्सा सम्बन्धी एक पुस्तक है जिसे १३२१ में गयामुहीन मोहम्मदशाह खिलजी ने मंकूत में अनुवाद कराया था । ३५ देखिए इतिहासक्र वीयर किनी पुरानी रिपोर्ट पेश करते हैं—‘वैदिक काल में लोग पश्च गरीग रचना से पूर्णतया परिचित थे । उन्होंने उनके प्रत्येक अग के नामों तक का वर्णन किया है । ३६

यह है भारतीय ‘आयुर्वेद’ की आदिम चिकित्सा प्रणाली का आदर्श इतिहास ! दुनिया ने इसका सबक (पाठ) किस भान्ति पढ़ा, यह दास्तान भी सुन लीजिए ? भारत के ही धन से संसार धर्ना बना है और इसी के साहित्य का अनुशीलन कर विद्वान् सेन प्रामिसको, अमरीका के सुप्रसिद्ध डाक्टर कार्पेंटर लिखते हैं कि आग्नेय, चरक, सुश्रुत एवं अन्यान्य प्राचीन महर्षियों की अविकृत चिकित्सा प्रणाली को अवलोकन करने से हमको भी आज उनकी दिव्य स्मृति का स्मरण हो आता है । कारण अनेक शताव्दियों पूर्व उक्त महर्षियों के आयुर्वेदिक ग्रन्थों का अर्वों लेटिन और ग्रीक आदि अनेक भाषाओं में अनुवाद होकर योरुप और अमरीका में प्रचार हो चुका है इस से हमारे ग्रन्थों में भी उनकी विभूति विद्यमान है । प्रोफेसर मैक्डानल का कहना है कि हिन्दू आयुर्वेद-विज्ञान का अर्वों पर ७०० ई० के लगभग प्रभाव पड़ा यह विचारणीय है, क्योंकि बगदाद के खलीफा ने कितने ही ग्रन्थों का अनुवाद कराया था । ३७ विदुषी मैनिंग के शब्दों में

34 Bhart Shakti, Page, 24

35 अख्य चिकित्सा सम्बन्ध में ‘शलहोत्र’ में भी देखने योग्य है ।

36 Weber's Indian Literature, Page, 263-264

37. Sanskrit Literature Page, 427

‘भारतीय आयुर्वेद साहित्य ने समस्त संसार में प्रतिष्ठा प्राप्त कर ली थी। जब वगदाद के खलीफा ने उसके वृहद् ग्रन्थों को एकत्रित कर उसीं के बारे में विद्वान् वैज्ञानिकों को बुलाकर वगदाद को विद्या का केन्द्र प्रतिष्ठित करने का प्रयत्न किया।’<sup>३५</sup> अल-बेह्नी की गय भी इस सम्बन्ध में माननीय हैं “जो कुछ भारत ने दिया वह दो रास्तों से वगदाद पहुंचा।” उस के बारे में संक्षृत से अनूदित होकर तथा हिन्दू विद्वानों को वगदाद के हम्पतालों का अध्यक्ष नियुक्त कर और उनके द्वारा अनुवाद करके यह अर्कीं भाषा में यहां आया।<sup>३६</sup> श्रीमती मेनिंग बतलाती हैं कि यूनानी वगदाद में हिन्दुओं के इस साहित्य से परिचित हुए। सर हेट्ट कहते हैं कि १७ वर्षीं शताब्दी में योरूप ने यह ज्ञान अरब बालों से लिया। इस तरह समस्त संसार ने भारतीय आयुर्वेद ग्रन्थों से स्वास्थ की शिक्षा प्राप्त की। डाक्टर जैकोलेट एक दूसरा ही सम्बाद सुनाते हैं। ‘प्राचीन कालीन तत्व ज्ञानी और महात्मा जीवन विज्ञान की शिक्षा प्राप्त करने के लिए भारत जाते थे।’<sup>३०</sup>

### काम-विज्ञान

समुन्नत राष्ट्र हमारे सुख शान्ति सम्पन्न वरों का परिमाण है। घर की समस्त व्यवस्था और गृहस्थान्नम का पूरा आनन्द स्त्री-पुरुष के पारस्परिक प्रेम का प्रतिफल है। इस विज्ञान में भारतीय महात्माओं ने उसी का विवेचन किया है। आज यदि भारत में इसका यथेष्ट प्रचार नहीं किन्तु विदेशियों ने इस भारतीय विज्ञान से पर्याप्त लाभ उठाया है। भारत में इसका प्रचार कब से शुरू हुआ,

38. Ancient and medieval India Vol. 1, Page 353-354

39. Alberoni's India Vol. 1, Prep. XXVI

40. “All the philosophers and Sages of antiquity went to India to study the Science of life.”

इतिहास चुप है । मिस्टर टी० डब्ल्यू० रोस डेविड्स बतलाते हैं कि 'इसा में है शताव्दी पूर्व के बल हिन्दू ही दास्पत्य जीवन के मुख्यालनार्थी जयमों का निर्माण कर चुके थे ।' भर जान उड़-हफ्ता भारत की भौतिकता का वर्णन करते हुए लिखते हैं— "भारत के कठोर तपस्वी जिन्होंने स्त्रियों की जी भर कर क्रिश्चयन पूर्व पुरुषों की भान्ति निन्दा की थी, काम विपवक धर्म पुस्तक, काम शास्त्र की भी वैज्ञानिक रचना कर डाली, विषय सम्बन्धी साहित्य लिख डाला.....वही भारत जो सन्त्यासी के रूप में जंगलों की ओर निकल गया था, इस बहुमूल्य कला डारा विश्व को आलोकित कर गया । ४१

निसन्देह भारत के ज्ञानियों ने संसार की महान से महानतम वस्तु से लेकर छोटी से छोटी चीज को भी अछूता नहीं छोड़ा । भारतीयों की उपेक्षा के कारण यद्यपि यह अंग आज लुप्र प्राया से हो गया है, किन्तु फिर भी कामसूत्र अनंग रंग पंचशर, रतिमंजरी गतिरहस्य, आदि अनेक ग्रन्थ अब भी ऐसे मौजूद हैं, जिनकी वैज्ञानिक गुणित्यों को अभी आधुनिक वैज्ञानिक सुलभा नहीं सके ।

### हस्पताल—

मानवता का कल्याणार्थ हस्पतालों की स्थापना करने वाली हिन्दू दुनिया में सब से पहली जाति है । इतिहासकार गैरट बतलाते हैं कि 'अशोक ने अपनी प्रजा को प्रसन्न एवं सन्तुष्ट रखने के लिए अपनी शक्ति अनुसार सब कुछ किया । उन्होंने बड़े २ हस्पताल खोले जिनका खर्च राज्य की ओर से दिया जाता था । उनमें अस्वस्थ एवं रुग्ण व्यक्तियों का मुफ्त इलाज होता था । ४२ इनमें से एक हस्पताल का वर्णन ४१३ ई० में आने वाला चीनी

41. Is India Civilised ?

42. A History of India Page 60

यात्री फाहिनान उस भान्ति कहता है—यहां समस्त गरीब और अनाथ सभी रोगों के रोगी आते थे। उनकी भलि भान्ति परिचय होती थी। एक डाक्टर उनकी देव्यभाल किया करता था। आवश्यकतानुमार उन्हें भोजन और औप्रथि दी जाती थी। उस तरह उनके आराम का सब कुछ प्रवन्ध था। अच्छे हो जाने पर वे चले जा सकते थे।<sup>३३</sup> प्राचीन भारत में रोगियों की व्यवस्था का बड़ा मुन्द्र प्रवन्ध था। चीनी पर्यटक हुआनमाग ने भी तज़शिला, मनिपुर, मथुरा, मुलतान आदि की पुण्यशालाओं के नाम दिये हैं जिनमें गरीब और विद्यवाचों को भोजन और वस्त्र मुक्ति दिये जाते थे।<sup>३४</sup> अब मेरे एक सदी पूर्व को आंखों देखा तात लेफटीनेंट कर्नल मानियर विलियम्स ने दक्षिण के सम्बन्ध में लिखा है कि यहां प्रत्येक गांव की ओर से अनाथों और वीमारों के लिए हर प्रकार का प्रवन्ध किया जाता था।<sup>३५</sup>

३३. A bird's eye view of Indians past Page 51

३४. Modern India and the Indians, Page 51

द्वितीयसंवार वर्ष १८८० मिथ का कहना है कि सब से पहला हास्पिटन योग्य के अन्दर दशवीं शताब्दी में खुला था।

Early History of India, Page 259



## गणित

विन्द्यात चीनी विद्वान लियांग चिचाव के शब्दों में 'वर्तमान मध्य जातियों ने जब हाथ पैर हिलाना भी प्रारम्भ नहीं किया था तभी हम दोनों भाइयों ने । ( चीन और भारत ) मानव मन्त्रियों नमस्याओं को सुलझाना आरम्भ कर दिया था ।<sup>1</sup> मेनिंग महोदय भी कहती है कि हिन्दुओं का मस्तिष्क उतना ही विशाल था जितना मानवों में धारणा करने की क्षमता है । ज्ञान का स्थान मस्तिष्क है फिर त्रिकालज्ञ ऋषियों की दृष्टि से वच कर किमी मृदम अंश का भी निकल जाना असम्भव था । प्रोफेसर कानिधम नक स्वीकार करते हैं कि विज्ञान में भी योल्प भारतवर्ष का बहुत अर्थ ही है ।

सत्य बात तो यह है कि भूमण्डल में हिन्दुओं की विशाल त्रुदि और मस्तिष्क की विलक्षणता पर विमुग्ध होकर प्रकृति ने इन सूदम विज्ञानों के लिए उन्हें निर्वाचित किया था । ३०० वर्ष के लम्बे चौड़े अनुभव के आधार पर सर टामस मुनरों ग्रामानिन बरते हैं—'वे ( हिन्दु ) यौरपियनों की अपेक्षा अच्छे मुर्तीम ( Accountant ) होते हैं ।<sup>2</sup>

### अङ्कगणित—

विज्ञान की शाखाओं में अङ्कगणित ऐकान्त निर्दोष है । सर डॉक्यू० हेटर महोदय बतलाते हैं कि हिन्दुओं ने अङ्कगणित और बीजगणित में स्वतन्त्रा पूर्वक बहुत ऊंची योग्यता

1. Ancient and mediaeval India Vol I, Page 114

2. India: Impressions and Suggestions Page, 34

प्राप्त करली थी। प्राकेन्द्र मैक्डानल लिखते हैं कि 'विज्ञान में भी भारतवर्ष का योजन बहुत ऋणी है। प्रथम सबसे बड़ी बात यह है कि भारतवासियों ने गणितके अङ्कों का अधिकार किया जिनका प्रयोग समस्त संसार में हो रहा है। इन अङ्कोंपर निर्भार रहने वाले दशक सिद्धान्त का गणित ही नहीं परन्तु सभ्यता के उत्कर्ष पर जो प्रभाव पड़ा वह अमूल्य है।'<sup>३</sup> मिस्टर केजोरी (Cejori) भी वत्तलाते हैं—“यह ध्यान देने की बात है कि भारतीय गणित ने हमारे वर्तमान विज्ञान में किस हद तक प्रवेश किया है। आधुनिक वीज गणित और अङ्कगणित दोनों ही आत्मा तथा स्पृष्ट में भारतीय है, यूनान के नहीं। सब से अधिक उन पूर्ण गणित चिन्हों को देखिए, वे भारतीय है। उनकी वीज गणित प्रथाओं को देखिए वे हमारी प्रथाओं के वरावर पूर्ण हैं। फिर सोचिये कि गंगातट वासी ब्राह्मणों को इसका कुछ न कुछ श्रेय मिलना चाहिए दुभाग्य वश हिन्दुओं के कितने ही अमूल्य अधिकार योजन में बहुत पीछे पहुंचे, जिनका प्रभाव यदि वे दो तीन सदी पहले पहुंचते तो बहुत पड़ता।”<sup>४</sup> सुप्रसिद्ध जर्मन आलोचक शेलगल के अन्य पण्यातुसार हिन्दुओं ने ही दशमलव के चिन्दुओं (Ciphers) का अधिकार किया है।<sup>५</sup>

डी० मार्गन (De Margan) भी स्वीकार करता है कि 'हिन्दुओं का अङ्कगणित यूनान के किसी भी अङ्कगणित से बहुत बड़ा है। जिस आज कल हम व्यवहृत करते हैं यह भारतीय अङ्कगणित है। श्रोमतो मेनिंग के शब्दों में कोई भी निवन्ध, पत्रिका

3. History of the Sanskrit Literature

4. History of mathematics, see also, Hindu Achievements in exact Science Page 8

5. Schlegel's History of Literature Page, 123

द्वारा काम देखिए, हमारी गिनितयां हिन्दुओं की हैं अरब लोग न उन्हें भास्त में लाने वाले एक सध्यस्य थे ।” १

अब एक दूसरे पाश्चात्य पस्तित की जावानी गणित के भारती अविष्कृत होने की दास्तान सुनिये डस्में सन्देह नहीं कि इसमें वर्तमान अंक-क्रम दशगुणोत्तर की उत्पत्ति भारतीय है। वस्मवतः खगोल सम्बन्धी उन के साथ जिनको एक भारतीय ग्रन्ति सन् ७७ ई० में वगदाद ले गया, इन अङ्कों का प्रवेश हुआ। किंतु नवीं शताब्दी के प्रारम्भ काल में अबूजफर मोहम्मद ने अर्बों में उक्तक्रम का विवेचन किया और उसी समय से अरबों में उसका प्रचार बढ़ने लगा।

योरूप में शून्य सहित यह अङ्कक्रम बारहवीं शताब्दि में अरबों से लिया गया। + + + जीर्ण शब्द की उत्पत्ति अरबी के मिफर से लियों नाड़ों के प्रयुक्त किये हुए ‘मिफिरो’ शब्द द्वारा प्रतीत होती है।

हिन्दू लोगों ने दर्शक चिन्हों ( Decimal Notation ) का अविष्कार दुनिया में सब से पहले किया था। २ व्यास स्मृति इस विषय में स्पष्ट बतलाती है।

“धर्म जनणा वस्था परिणामः न द्रव्यान्तरतः यथा पक्षा रेखा शत स्थानं गुण वशस्थाने इश एकं चक्रस्थाने ।”

पठ्यटक अल्बेनी भी मुक्तकण्ठ से स्वीकार करता है कि ‘जिन अङ्कों को हम काम में लाते हैं वे हिन्दुओं के सब सं सुन्दर अङ्कों से लिए गए हैं। जिन जातियों से मेरा सम्पर्क रहा है उन सब की भाषाओं के संख्या सूचक अङ्कों ( इकाई दहाई आदि ) का मैंने अध्ययन किया है। इससे मालूम हुआ है कि कोई जाति

१. Ancient and mediaeval India Vol 1, Page 374

2. Encyclopaedia Britannica Vol 11, Page 626

एक हजार से आगे गिनता ही नहीं जानती। अरब लोग ये एक हजार तक जानते हैं। अपने अंसु क्रम में जो एक हजार से अधिक जानते हैं वे हिन्दू हैं।<sup>५</sup>

भारत में डस विद्वान में पुरुषों ही ने नहीं स्त्रियों ने भी अद्भुत उन्नति की थी श्रीमती लूसी और सुप्रियद्वारा अंग्रेज गणितज्ञ प्रोफेसर बेलस तक लीलावती का लोहा मानते हैं लीलावती में विद्वान के केवल साधारण नियम ही नहीं किन्तु—अनेक प्रकार के मिती काटा, व्याज, आदि में उनका प्रयोग भी किया गया है। इसके नियम विल्कुल ठीक हैं।<sup>६</sup>

इसका निष्कर्ष भी विद्वान मैकडानल के शब्दों में सुन लीजिए—“आठवीं तथा नवीं शताब्दी में अङ्गगणित तथा वीज गणित अरबों के शिक्षक थे। उनके अरब बालों के द्वारा इसका प्रचार योरूप में हुआ। ‘हम यद्यपि इस शास्त्र का अरबी नामकरण करते हैं, तो भी इस प्रसाद को हम लोगों ने भारतीयों द्वारा प्राप्त किया।’”<sup>६</sup>

### वीजगणित—

अङ्गगणित और वीज गणित का बहुत गहरा सम्बन्ध है। हिन्दू लोग एक शाखा अङ्गगणित के विधाता थे और हंकल साहब के शब्दों में वीजगणित के वास्तविक आविष्कर्ता में इसका बहुत बड़ा श्रेय विद्वान आंभिद को है। डॉ० मार्गेन के कथनानुसार योरूप के मशहूर गणितज्ञ डायो फैट्स का समस्त गणित हिन्दुओं के दोज गणित के सामने कुछ भी नहीं।

प्रोफेसर बेलस महोदय ने प्लेफसर साहब की कुछ पंक्तियां उद्धृत की हैं जिनका आशय है कि ज्योतिष ज्ञान के बिना वीज

8. Alberuni's India Vol I Page 174 to 177

9. History of the Sanskrit Literature Page 424

गणित की रचना एकान्त कठिन है।' विद्वान विल्मन कहते हैं कि यह हिन्दुओं के गणित विज्ञान की प्राचीनता, मौजिकता और विकास का अकाटव उत्तर है। । १०० सर मोनियर विलियम्स का भी कथन है—वीज गणित, और गेवा गणित के अविष्कार और ज्ञानिष में उनके प्रयोग का श्रेय हिन्दुओं का है। । १११

ज्यु राशि ( Negative Quantity ) का भाव नथा वर्ग समीरण की व्याख्या का अविष्कार ब्रह्मगुप्त ने ६६० ई० पूर्व ( Quadratic equation ) किया था। हिन्दुओं ने भव्य प्रथम अड्डणश ( Pemutation ) तथा संयोग ( Combination ) नथा अद्वितीयोरित समीकरण ( Undetermined equation ) का पता हिन्दुओं ने लगाया था।

विद्वान गणितज्ञ भास्कराचार्य जिसे उन्हें स्टेन्स्टेन महोदय 'मिद्वान्त शिरोमणि' पुस्तक का कर्त्ता बतलाते हैं भिन्नों को नामित क्षेत्र में जन्म दिया था उन्होंने यह सिद्ध किया है कि—

$$\begin{array}{r} \text{क} + ० \\ \text{क} - ० \\ \text{क} \times ० \\ \text{क} \div ० \end{array} \quad \begin{array}{r} = \text{क}, \\ = -\text{क}, \\ = ० \\ = \infty \end{array} \quad \begin{array}{r} = ०, \\ = \infty \end{array} \quad \begin{array}{r} = ०, \\ = \infty \end{array}$$

इन्हीं समस्त प्रमाणों के आधार पर मिस्टर कालब्रुक बतलाते हैं कि हिन्दू साहित्य अपनी इस अवनतावस्था में भी, जब कि उनके बहुत थाड़े प्रन्थ उपलब्ध हैं, उनको गणित सम्बन्धी रचनाओं में प्रकट होता है कि वे आधुनिक योग्यपियनों से इस सिद्धान्त में पांच नहीं।

### खेवा गणित—

हिन्दुओं ने इस विज्ञान में कहाँ तक उन्नति की थी प्रोफेसर 10 Mill's India Vol II Page 151  
H. Indian wisdom Page 185

वेलस की ज्वानी सुनिए—“रेखागणित भारत में ‘सूर्य सिद्धान्त के निर्माण में भी लोग बहुत पहले ज्ञानते थे ।’”<sup>१२</sup> सूर्य सिद्धान्त का काल योर्नापयन विद्वानों ने २००० वर्ष ईसा पूर्व अनुमान किया है ।”<sup>१३</sup>

मिट्टर एलिफन्टन वतलाते हैं कि सूर्य सिद्धान्त में त्रिकोणमिति (Trigonometry) का वर्णन है और साथ ही (Theorem) का भी है समावेश ! इनका भी अनुसन्धान योग्य में विगत दो शताब्दि पूर्व तक नहीं हो सका था ।<sup>१४</sup> स्वीडश काट जनास्ट जनरी ने अक्वर कालीन अववृल फजल की आईजा अक्वरी में यह पता लगाया है कि जब अरब और यूनान वालों को कुछ भी पता नहीं था, उस समय भी हिन्दू परिधि वृत अष्टमुज ज्ञान (Square Root) आदि सभी रेखा गणित सम्बन्धी वातों का पूर्ण ज्ञान था ।<sup>१५</sup>

रेखागणित के अनेकों सिद्धान्तों के यूनान पहुंचने की सूचना देते हुए प्रोफेसर वेलस वतलाते हैं कि तीन भुजाएं ज्ञात होने पर भी त्रिभुज का क्षेत्रफल निकालने की विधि प्राचीन यूनानी रेखा गणितज्ञों को ज्ञात न थी ।

ग्रीस के रेखा गणितज्ञ और सुल्व सूत्र में अत्याधिक समानता पाई जाती है । इस सूत्र का काल ईसा के जन्म से आठ शताब्दी पूर्व माना गया है । डाक्टर थी बोट ने दर्शाया है कि रेखागणित के अन्तर्गत प्रथम पुस्तके ४७ वें सिद्धान्त को, जिसे लोग पैथा गौरस द्वारा प्रतिपादित समझते हैं । हिन्दुओं ने उसे कम से कम

12. Mill's India Vol II, Page 150

13. Mill's India Vol II, Page 3 foot note

14. History of India Page 129

15. See Theogony of the Hindus Page 37,

दो शतांडी पूर्व मिछु किया था । विद्वान् स्कोर्डर भी उसे भारत का कर्गी समझता है ।<sup>१६</sup>

यहीं नहीं हिन्दुओं ने ज्यासारिणी (Table of Verses) नथ अस्यन्तर ज्यासारिणी (Table of Verses) का भी निर्माण किया था । 'जिन नियमों का प्रचार पहले पहले वृत्तपियन गणितज्ञ विग ने १६वीं शतांडी में किया था वे भारतीयों द्वारा अनेक सहस्राविद्यों पूर्व खोजे जा चुके थे ।'

रेखागणित का नाम अबौ ने 'इल्म हिन्दुस' रखा है, जो माफ़ इसके भारतीय होने का प्रमाण है । विज्ञान की इस शाखा को वैदिक काल के पश्चात विकिसित करने से बड़ा श्रेय आर्य मट्ट और भास्कराचार्य को है । डाक्टर थी बोट नव मस्तक हो कर भारत का यह आभार स्वीकार करते हुए कहता है कि रेखागणित के लिए संसार यूनान का नहीं भारत का कर्गी है ।

आधुनिक संसार के ज्ञान-विज्ञान हिन्दू संस्कृतों की ही उपज है विद्वान् रेवरेण्डर पीटर पर्सिवल वत्तलाते हैं—हिन्दू दिग्माणों ने वीजगणित रेखागणित, त्रिकोणमिति आदि विज्ञान की शाखाओं में महान् तम योग्यता दिखलाई थी । उन्होंने अत्यन्त प्राचीन काल में ही काफी उन्नति कर ली थी जैसा कि उन के इस विषय के ग्रन्थों को विशेषज्ञ विद्वानों से उच्च उद्दरया है ।<sup>१७</sup>

16. Hindu Chemistry Vol I chap I, II

17. Ibid, Page 20.

18. The Land of the Vedas, Page 47.

## ज्योतिष

ज्योतिष विज्ञान प्रकृति के सूक्ष्मातिसूक्ष्म रहस्यों के अध्ययन का परिणाम है उसका विकास उन्हीं जातियों में होता है जिनकी सम्भवता एवं संस्कृत बहुत ऊँची हो। दूसरे शब्दों में हम यह कह सकते हैं कि ज्योतिष विज्ञान सम्भवता को मापने का उत्तम मापदण्ड है। भारत की जलवायु, प्राकृतिक सुप्रभा सभी कुछ सम्भवता के विकास के लिए उत्तम माध्यम हैं। गर्भी और लादी जीन पढ़ने के कारण यहां के निवासी सैंडैव में बाहर विचरने और मोने के आदि हैं। संसार की रंगस्थली में यही एक ऐसा देश है जिसे प्रकृति सुन्दरी के साहचर्य में अधिकाधिक समय व्यतीन करने का मुश्किल सर प्राप्त होता है। यही कारण है कि इन्होंने नक्काशों की बनावट और उन की गति का सब में पहले निरीक्षण किया, चन्द्रग्रहण सूर्यग्रहण सम्बन्धी अविष्यद्वाणियों में प्रथम रहे। डाक्टर गर विलियम हरटर कहते हैं कि 'हिन्दुओं का ज्योतिष-विज्ञान अतीव प्रशंसनीय है। कारण, मिस्टर एलिफन्टन के शब्दों में सुनिये 'उन के ज्योतिष सम्बन्धी ग्रन्थों में मिलता है।' विद्वान जैकोवी अपने अनुसन्धान के आधार पर बतलाते हैं कि इसा से ५००० वर्ष पूर्व भारत वासियों ने ज्योतिष शास्त्र में अच्छी गति प्राप्त कर ली थी। कांट जनस्टर्जना भी ऐसा ही बतलाते हैं कि कलियुग के प्रारम्भ में (५००० वर्ष) हिन्दू इस क्षेत्र में काफी उन्नति कर चुके थे। वे यह भी कहते हैं—'हिन्दुओं की ज्योतिष गणना के अनुसार

वर्तमान कलियुग का श्रीगणेश देश से २१०२ वर्ष पहले व ब्रह्म का २७ मिनट ३० सेकंड पर हुआ था । ..... ग्रहों का संयोग भी उन्होंने टीक दिखाया है । ब्रह्मगणों की गणना हमारे ज्योतिष्यों ने मिलान करने पर टीक उतरी ।<sup>३</sup> भारतीय ज्योतिष शास्त्र का जन्म वंदों के माथ माथ हुआ है । यहां उस की प्राचीनता का प्रमाण है । अथवा वेदमें युगोंकी गणना का कितना सुन्दर गुरु निश्चित किया गया है । युग के १२००० दिव्य वर्षों के दशवें भाग को ४, ३, २, १ से गुणा करने पर क्रम में मत्युग, त्रेता द्वापर और कलियुग के दिव्य वर्ष की संख्या होगी ।<sup>४</sup> महाराज मनु ने भी इस गणना का कितना सरल और सुन्दर उपाय दरलाया है ।<sup>५</sup>

$$1 \text{ देव वर्ष} = ३६० \text{ माध्यारण वर्ष}$$

$$\text{कृत्युग} = ८००० \text{ वर्ष}$$

$$\text{मत्युग} = १४०० \times ३६० = ५२८,००० \text{ वर्ष}$$

$$\text{त्रेता} = ३६०० \times ३६० = १,२६६,००० \text{ ..}$$

$$\text{द्वापर} = २८०० \times ३६० = ८१६,००० \text{ ..}$$

$$\text{कलियुग} = १२०० \times ३६० = ४३२,००० \text{ ..}$$

$$\text{एक चतुर्थीगी} = ४३२०,००० \text{ वर्ष}$$

स्टैंज महोदय हैरान होकर कहते हैं कि 'प्राचीन आर्य यह ज्ञान कहां उपलब्ध करते थे । इसका अवधारण करना

2. Theogony of the Hindus,

3. 'शतं ते अयुतं हायनान्द्यं युगं त्रीणि चत्वारिंक्रामः ।' - अथवेद न-२-२१

4. मनु० अ० १ श्लोक ६६, ७०

कठिन है।<sup>५</sup> श्रीमति मेनिंग इस परेशानी को अपने शब्दोंमें दूर करता है— 'हिन्दुओं के पास उतना हां विशाल ममितक था जितना कि मनुष्य को धारण करने की शक्ति होती है।'<sup>६</sup> मुलेमान सौदागर तत्कालीन राष्ट्रों में भारत और चीन को उद्धत समझता है किन्तु ज्योतिष के मस्तकन्ध में उन की समस्ति है कि 'भारतीय पण्डित ज्योतिष में चीनियों से अधिक योग्यता रखते हैं।'<sup>७</sup> चीनी विद्वान लियांग चिचाव स्वयं स्वीकार करते हैं— इस शास्त्र के अध्ययन चीन में पुरातन काल में ही होता रहा है किन्तु इनका विशेष विकास टंग राजाओं के समय में हुआ। इस का कारण यह था कि उस समय 'जू ट्यू सई' नामक पुस्तक प्रकाशित हुई थी जिस से भारत के गहरे प्रभाव का स्पष्ट पता लगता है।<sup>८</sup>

हिन्दुओं ने अत्यन्त पुरातन काल में ही इस विज्ञान में कितनी आश्चर्य जनक उन्नति की थी, इतिहासव्याप्ति, विल्सन महोदय के मुंह से सुनिए 'भारत में मिलने वाली क्रांति वृत का विभाग सौर और चन्द्रमासां का निरूपण, प्रह्लगति का निर्णय, सौर राशि मण्डल, पृथ्वी की निराधार स्थिति, अपने अक्ष पर उसकी दैनिक गति, चन्द्र का भ्रमण और पृथ्वी से उस का अन्तर, ग्रह कक्षा का मान आदि ऐसी वाले हैं जो अशिक्षित जातियों में नहीं पाई जाती।'<sup>९</sup> तभी तो स्वीडश कांट बेली के

5. *Remand Page 23.*

6. *Ancient and mediaeval India* Vol. II Page 145.

7. मुलेमान सौदागर पृ० ८४

8. सातवी शताब्दी।

9. 'विशाल भारत' अगरत १६३३ ई०

9. *Mull's History of India* Vol. II Page 107.

गणतानुसार हिन्दुओं के ज्योतिष और रेखा गणितज्ञान का इनमें ३००० वर्ष पूर्व मानते हुए पूछते हैं कि उनकी संस्कृत का आगम्य कितना शतांकदर्शी पहले हुआ होगा, क्योंकि ज्ञान पथ पर मानव मस्तिक क्रमशः अप्रभर होता है।<sup>10</sup>

मिस्टर मार्गिया आद्यकी मस्ति है मस्त मानवीय परिष्कृत विज्ञानों में, ज्योतिष मनुष्य को उंचा उठा देता है।.....इसके आगम्यक विकास का डितिहास संसार की मानवता के उत्थान का डितिहास है। भारत में इसके आदिम अस्तित्व के बहुत से प्रमाण मौजूद हैं।<sup>11</sup> हिन्दुओं का ज्योतिष साहित्य संसार में सम्प्रतम है। इस के प्रसिद्ध ६ सिद्धान्त हैं—त्रिष्णु, सूर्य, मोम, ब्रह्मस्ति, पाराशार, गार्गेय, नारद, पुलसत्य और विशिष्ट निदान। योन्नपियन विद्वान् सूर्य सिद्धान्त ही से अधिक परिचित है।<sup>12</sup>

मिस्टर डेविस के अनुसार पाराशार काल ईशा में १३६१ वर्ष पूर्व है।<sup>13</sup> पाराशार के बाद आर्य भट्ट हुआ है। योन्नपियन विद्वानों के अनुसार यह पहला व्यक्ति है जिस ने पृथ्वी का अपनी कीली पर धूमना, सूर्य और चन्द्र प्रदण्णा आदि के सबे सिद्धान्तों

10 Theogony of the Hindus, Page 37.

11 Letters on India Page 109-111,

12 Indian wisdom Page 184-185.

13 Asiatic Researches Vol. II Page 33-34

। 'श्रमद्यर्क मिन्दु विद्यं भूमिभाः।' अर्थात् जब पृथ्वी धूम कर तर्ह और चन्द्र के मध्य में आ जाता है और उस की छाया चन्द्र पर पड़ती है तो चन्द्र प्रदण्णा होता है। जब चन्द्र और सूर्य पृथ्वी के बीच में आजाता है तो सूर्य प्रदण्णा होते हैं। ब्रह्म पुराण में भी देखिये—  
पूर्व काले तु सम्प्राप्ते चन्द्राकौं छादभिष्याति,  
भूमिच्छाया गतश्चन्द्र चन्द्रगैर्कं कदाचन ॥

को बतलाया है। १४ कालत्रुक महोदय भी इम सम्बन्ध में आर्य-भट्ट का सिक्का मानते हैं।

फ्रांसीसी पर्यटक फ्राक्वीस वर्नियर भी भारतीयों की ज्योतिःज्ञान की प्रशंसा करता हुआ लिखता है कि वे 'अपने दग्धना द्वारा चन्द्र और सूर्य प्रहरण की विलक्षण ठीक भविष्यद्वारणी करते हैं।' १५ यात्री अलबेन्नो भी आर्यभट्ट को उच्च कोटी का वैज्ञानिक मानता हुआ उन के सिद्धान्तों की सत्यता पर अपना पूर्ण विश्वास प्रकट करता है। १६

आर्यभट्ट के पश्चात सबसे योग्य ज्योतिष विज्ञान का आचार्य वागमिहर था, मिसेज मेनिंग के शब्दों में वह गणित और फलन ज्योतिष की दोनों शाखाओं का प्रमुख पण्डित था। १७ अन्तिम ज्योतिषाचार्य भास्कराचार्य हुआ है जिसका काल योग्यपियन द्वारा बारहवीं शताब्दी बतलाया जाता है इसने आकर्षण-विकर्षण नियमों का बड़ी विद्वता से विवेचन किया है। यह ससार का सर्वोपरि गणितज्ञ था।

अधुनिक भूगोल जिन्हें हमारे विद्यार्थी स्कूल और कालेजों में पढ़ते हैं। उनके गम्भीर सिद्धान्तों का निश्चय करने वाले भारतीय ज्योतिषी ही थे। कुछ सोटी २ वातों का यहां ज्ञान किया जाता है।

## पृथ्वी गोल है !

हांग (Hang) महोदय आत्रेय ब्राह्मण द्वारा सिद्ध करते हैं

14. Chambers Encyclopaedia also, Cole brooke's essays Appendix 9 Page 467.

15. Travels in the Mugal Empire Page 329.

16. See, Alberuni's India Vol 1 Page 227,

17. Ancient and mediæval India Vol I Page 365, 369.

कि पृथ्वी गोल है । १८ आर्यभट्टभी इसी का प्रतिपादन करते हैं अलवस्ती कहता है—उनके (हिन्दुओं के) अनुमार दुनिया गोल है और पृथ्वीकी शक्ति गोलाकार (Globular Shape) है । १९

### स्थिति—

पृथ्वी विना आधार के मिथ्या है भास्करगच्छार्थ के शब्दों  
में सुनिये—

‘नाम्याशार स्वशब्दन्या विद्यांत च निदनं निष्टी हास्याष्टु ।’

### व्यास और परिधि—

पृथ्वी का परिधि ४६६७ योजन और व्यास १५८१  
योजन है ।

‘गोलकी योजन संख्यमा कुपरिषेः सप्तांग नन्दावध्यस्तद्यनः ।

कुभुजस्य सायक भुवः सिद्धाशां के नाधिकाः ॥’

पृथ्वी की आंकाश की कोई ऐसी बात नहीं है जिसका वर्णन प्राचीन हिन्दुओं ने न किया हो । मिस्टर सी. वी. क्लार्क एफ० जी० एफ० कहते हैं कि अभी वहुत वर्ष पीछे तक हम मुद्र स्थानों के अक्षांश (Longitudes) के विषय में निश्चयात्मक रूप से ज्ञान नहीं रखते थे किन्तु प्राचीन हिन्दुओं ने ग्रहण ज्ञान (Eclip ) के समय से ही इन्हें जानते थे । उनके तरीके वैज्ञानिक नहीं अचूक भी थे । २० अलवस्ती बतलाता है कि ‘हिन्दुओं की भाषा में Pole को ध्रुव और Axis श्लाका को (कील) कहते हैं ।..... वैष्णव धर्म में मार्कंडेय ने बतलाया है कि जब

17. Eaqig's Astraraya Brahma Vol II Page 242.

18. Alberuni's India Vol 1 Page 230. ‘र्कपिथ फर्त’ विद्युत्

अहंतर्याः सम् ।’

20. Hindus Superiority Page 296.

परमात्मा ने सृष्टि उत्पन्न की तो ध्रुव अन्धकारस्य और इन-  
शून्य थे २१ कव कहा दिन होता है और कहा रात, समार का  
यहाँ पता प्राचीन हिन्दू ज्योतिषियों की ज्ञान से सुन लीजिये।  
लंका में सूर्योदय के समय, ज्ञावा में मध्याह्न, अमरीका में सूर्योम्न  
और रोम में अद्युरात्री होती है।<sup>२२३</sup> प्रांमीर्मा यात्री टर्वीनियर  
भी भारतीयों के इस विशाल ज्ञान से प्रभावित हो कर कहता है  
त्राहण ज्योतिष ज्ञान में अतीव निपुण हैं।<sup>२२३</sup>

## गति शास्त्र—

यह भी हिन्दुओं की सूक्ष्म बुद्धि ने न जाने अतीत की किम  
घड़ी में अनुभव कर लिया था। कगाद किसी वस्तु के पृथक् पा  
गिरने का कारण मध्याकर्षण वत्तलाते हैं। वे मध्याकर्षण गति  
(Kinetic) और शक्ति शक्ति (Potential energy) आदि  
का न जाने कब स्पष्टी करण कर चुके थे। उद्यनाचार्य आदि  
विद्वानों ने इनका इतना गम्भीर विवेचन किया है कि योरूपियन  
आज तक वहाँ पहुंच ही नहीं सके। न्यूटन का गति शास्त्र  
(Dynamics) तो हिन्दू सिद्धान्तों का प्रतिविम्ब है।

आकृष्ट शक्तिश्व महीतयायत् ।

स्वस्थं गुरु स्वामि मुख स्वशक्त्या ॥

आकर्ष्यते नन् पनतीव भासि ।

समे समन्तात कव' पतित्वयरेव ॥

—सिद्धान्त शिरोमाण

21. Alberuni's India Vol I Page 239 and 241.

22. 'लङ्घपुरे कर्त्त्य यदाद्यः स्यात्तश दिनाद्यं यमकोटियुमोम ।

भवेत दा सिद्धिपुरे स्तकालः स्याद्रोम के रात्रिदत्त' तदैव ॥

23. Terveniers travels in India Page, 433.

मूर्यस्त कभी होता ही नहीं।' वह चलता ही नहीं किन्तु चलता सा प्रतीत होता है।<sup>१०८</sup> चन्द्रमा अपना प्रकाश मूर्य में ग्रहण करता है।<sup>१०९</sup> सूर्य ऋतुओं का नियमन करता है।<sup>११०</sup> सूर्य जन का स्थान है।<sup>१११</sup> वह रशिमयों द्वाग वृष्टि को धारणा करता है।<sup>११२</sup> क्षेत्र सिद्धान्त जिन्हें दुनिया ने आज सीखा है। भारत में कब से इनके आधार पर काम किया जा रहा है— दुनिया को इसका समरण ही नहीं। रेवरेण्डर पीटर पर्सिवल मूर्चित करते हैं। डस बात को सिद्ध करते के लिए प्रचुरप्रमाण मौजूद है कि जब हिन्दुओं ने इस विज्ञान में काफी उन्नति कर ली थी, उस समय यूनान को इसका पता न था।<sup>११३</sup>

विद्वान मारिया प्रात्म योरूप भर के सम्बन्ध में अपने यही भाव व्यक्त करता है।<sup>११४</sup> मैकडानल महोदय सर्वीकार करते हैं कि वेदों में ज्योतिष के बहुत ऊंचे सिद्धान्तों का वर्णन मिलता है।<sup>११५</sup> ऐसी अवस्था में दुनिया भारतीय ज्योतिष की जन्म कुरड़ी का सिरा कैसे हूँढ़ सकती है। वैदिक काल संसार के इतिहास का वह पृष्ठ है जब भारत को छोड़ कर समस्त मानवता गिर कन्दराओं में सोती थी।

११६. 'न वा एष न कदाचनास्तमेति तो देति ।'

ऐ० ब्रा० ३।८४

'ग्रन्तो वाव मर्थ्य यतीव ।'

ऐ० ब्रा० ४।१०

११७. 'दिवि सोमो अधिष्ठितः ।'

—अर्थव॑ वेद

११८. 'पूर्वमनु प्रदेशं पार्थिवानामृतन् प्रशासद्विद धावनुष्ठ ॥'

श० ब्रा०

११९. 'वृत्त भाजना ह्यादियाः ।'

श० ब्रा०

१२०. 'सविता रशिमिः वर्ष समद धात् ॥'

ग० ब्रा०

१२१. The Land of the Vedas Page 73.

१२२. See, Letters on India Page 110, 111.

१२३. India's past Page 181.

आज के सभ्य देशों ने अपने युरु भारत से प्रकृतिज्ञान का पाठ कव और कैम पढ़ा, यह भी सुन लौंजिए। सर० डब्ल्यू० डब्ल्यू० हेन्टर बतलाते हैं कि आठवीं शताब्दी में अरब के लोग हिन्दुओं के शिष्य बने और संस्कृत अन्थ सिद्धान्तों का 'मिन्द हिन्द' नाम से अनुवाद किया था।<sup>३२</sup> प्रोफेसर विल्सन कहते हैं कि भारतीय ज्योतिष्यों को प्राचीन खलीफा ओं विशेष कर हास्त-रशीद के भर्ता भान्ति प्रोत्साहित किया। वे वगदाद आमंत्रित किये गए और वहां उनके ग्रन्थोंका अनुवाद किया गया।<sup>३३</sup>

भारत भूमि अनादि काल से वैज्ञानिकों, शूरवीरों और शिक्षकों को जन्म देती आ रही है। दो शताब्दी से भी कम समय बीता अब राजपूताने की वीर भूमि में एक नक्षत्र-विद्या विशारद ज्योतिषी ने जन्म लिया था। उन्हीं जयपुर नरेश के सम्बन्ध में मर हेन्टर लिखते हैं कि राजा जयसिंह विद्वान ने जयपुर मधुग बनारस, देहली और उज्जेयन में ग्रह-निरीक्षण युह (मान-मन्दिर) निर्माण कराये थे। राजा ने अपनी विलक्षण बुद्धि सूति स्वरूप में अपने निरीक्षण किये हुए ग्रहों की एक सूची छोड़ गये हैं।<sup>३४</sup> भारत समस्त कला कौशल, विज्ञान की भान्ति ज्योतिष का जन्म स्थान है, प्रतिष्ठित पाश्चात्य पण्डित ने चिर अन्वेषण के पश्चात् इसे स्वीकार भी किया है। ईश्वर करे विश्व में भारत-ज्ञान का अलोक फैलाने वाले लाज्जों से भारत मां की गौदी सदैव भरपूर रहे।

३२. Indian Gazetteer India Page 211.

३३. Mill's History of India Vol II.

## युद्ध-विज्ञान

भद्र मनः क्रणुष्व वृजतर्ये ।—ऋ० ५-२६-३४

जिस जाति के हुंकार से बमुधरा कांप उटती थी, जिस के धौंमें की धमक को सुन कर बड़े बड़े महावलियों के देट का पानी हिल उठता था, जिस के महावलियों ने अपने भुज बल की द्वाया में संमार को अभय-दान दे रखा था । उस विश्रुत-दीर्घ जाति के युद्ध-विज्ञान का अङ्कन, लौह-लेखनी कहां कर सकती है ? जिस विशाल जाति ने स्वार्थ के वशीभूत हो कर दूसरों की स्वार्थीनता को हाहप करने की कभी कल्पना तक नहीं की, जिस की तलवारों के पीछे रक्षमा दौड़ती रही उस के युद्ध-कोशल वे करिश्मों का जिक्र ही कैसा ।

### सेना-सङ्गठन—

युद्ध-वास्तव में एक विज्ञान, और साथ ही है कला, जिसकी बारीकियों को प्राचीन भारतियों ने भली भान्ति अध्ययन किया और सीखा था ! रामायण और महाभारत काल के सेना सङ्गठन को देख कर आज भी दुनिया देंग रह जाती है व्यूह रचना, प्राचीन हिन्दुओं की युद्ध कुशलता और सेना संगठन का अद्वितीय नमूना है । व्यूह बनाने की निपुणता पर ही जय पराजय वहुत अंशों में अवलम्बित है । किसी भी सेना को विस्तृत या संकुचित कर देना, व्यूह रचना विशारदों के बायें हाथ का खेल था, महात्मा

<sup>1</sup> Keep thy mind pure even when vanquishing thy foes in the battlefield.

शुक्राचार्य ने प्रधान व्यूह ये बतलाते हैं—कौच, श्यन, भक्त, सूची, सर्वतोभद्र, शक्ट, और सर्प व्यूह।<sup>१</sup> अल्प योद्धा हों तो उन को एकत्रित कर के और बहुत हों तो उन को विस्तृत कर मूर्च्छाकार और वज्राकार व्यूह का संगठन कर युद्ध कराये यह है महाराज मनु का आदेश।<sup>२</sup> इतिहासकार प्लिफन्टन बतलाते हैं कि हिन्दुओं के समुद्र और पार्वत भाग से आक्रमण करने की नीति और प्रणाली की बहुत दिनों तक योग्यपयन सराहना करते रहे।<sup>३</sup> मनु महाराज ने यहां तक बतलाया है कि कुरुक्षेत्र, मत्स्य, पाञ्चाल और शूरसंन देश के निवासी नाटे और ऊंचे मनुष्यों को आगे करे! ... और युद्ध के समय उनकी चेष्टाओं पर दृष्टि रखें।<sup>४</sup> किस देश के निवासी, किस स्थान पर ठीक तौर से लड़ सकते हैं और उस समय उनकी भनोभावना क्या होती है, यह बात प्राचीन हिन्दुओं की युद्ध-निपुणता का नमूना है इसी सिए कैप्टन ट्रोयर (Troyer, कहते हैं कि हिन्दुओं की परम्परा गत गाथायें लड़ाइयों से भरी पड़ी हैं। जिनमें धर्म का भी हिस्सा है। मैं ने इस विषय में बहुत कुछ बतलाया है अब दूर जाने की भी आवश्यकता नहीं, सुर और असुरों का युद्ध ही देख लीजिए।<sup>५</sup> महाभारत की १८ अक्षोहिणी सेना का सुचारू संगठन और सुसञ्चालन भारतियों की अपनी योग्यता थी। अलवेहनी एक अक्षोहिणी की गणना इस भान्ति करता है—२१,८७० रथ, २१,४७० हाथी, ६५,६१० स्वार और

१. शुक्र नीतिश्रो ४.

२. मनुस्मृति श्रो १ श्लोक १६१

३. History of India, Page 82.

४. मनु स्मृति श्रो ७ श्लो १६३, १६४

५. Asiatic Journal Oct. 1844 Page 514

१०६.३५० पैदल सैनिकों के समूह को एक अक्षोहिणी कहते हैं। हाथी, घोड़े और मनुष्यों (केवल जीवधारी) की कुल संख्या एक अक्षोहिणी में ६३४,२४३१२११२७६ होती थी।<sup>१</sup> महाभारत में इसी का वर्णन इस भान्ति किया गया है।

ऐसी सुव्यवस्थित विशाल सेनाओं की क्या संसार ने महाभारत काल के बाद फिर कभी कल्पना की है। प्राचीन ईतिहास का परिवर्तन लिखता है कि मेगस्थनीज, चन्द्रगुप्त की उस प्रसिद्ध मेना का मम्पूर्ण विवरण देता है जिस ने सल्यूक्स को हराया था।<sup>२</sup> उसमें सवार, पैदल, रथ, हाथी आदि सभी थे।

अब जरा दक्षिण भारत के सुप्रापेद्र हिन्दू सम्राट विजय नगर के टिही दल को भी देख लीजिए। कमाल उदीन रजाक इसकी संख्या ७ लाख बतलाता है। इससे कुछ काल पहले विजयनगर का दर्शन करने वाला पहला योर्हाप्यन इट्टालयन यात्री निकोलो कार्यटी कहता है कि सेना १० लाख से भी अधिक थी। १६वीं शताब्दी के प्रथम चरण का लेखक डी० पेस लिखता है—‘मैं आप को बतलाना चाहता हूँ कि सम्राट के पास १० लाख सेना है, जिस में १५००० सवार भी शामिल है। न्यूनज भी इसी मेना का सविस्तार वर्णन करते हुए संख्या १० लाख से ऊपर बतलाता है।’<sup>३</sup>

यह है प्राचीन हिन्दू सम्राटों की सेना का एक धुंधला चित्र, जो कि अन्य तत्कालीन भारत के चक्रवर्ती सम्राटों की सेना-संगठन का अनुमान लगाने में बहुत कुछ सहायक बन सकता है।

इतिहासवेता गैरट बतलाते हैं एक उन के (चन्द्रगुप्त) के

१. Alberuni's India Vol, 1

२. Aman, India XV, Starbo XVII 50.

३. Scenes and characters from Indian history Page 56, 57

है।<sup>१६</sup> यहां पर चरित्र और राष्ट्रीय भावों को भी दृमरों की हड्डी में देखना आवश्यक प्रतीत होता है। ऐतिहासिकार एवं वैज्ञानिक वनलाते हैं कि हिन्दू परम्परे दृजों की लडाकू जातियों से पीछे नहीं। वे धर्म और सम्मान के लिए विना आगा-पीछा किये ही प्राप्त हो देते हैं। मेजर जनरल मर ओ० टी० ब्यूरीक ( Buree ) की गय है कि 'भारतियों ने शत्रु और मित्र दोनों प्रकार में अपने को बहादुर मिपाही प्रमाणित कर दिया है।'<sup>१७</sup> विलियम मॉ० बेनेट ( Bennett ) सेटिलमेंट कमिशनर ने १८५६ ई० में लिखा था—गजपृत और ब्राह्मणों का साहस और सम्मान भाव कुमियों की मित्तव्यता एवं परिश्रम साधारण दर्शक की हृषि में भी पेटेन्ट ( Patent ) है।<sup>१८</sup> चार्ल्स मीयर सरीखे व्यक्तियों ने भी स्वीकार किया है—'संयम में सर्वश्रेष्ठ, साहस में समान केवल शारीरिक शक्ति में हमारे देश वासियों से कम, —मैं ने ऐसे अच्छे सैनिक और बहादुर मनुष्य कभी नहीं देखे।'<sup>१९</sup> वर्षाई के भूतपूर्व गवर्नर रिचार्ड टेम्पल वार्ट के उद्गार देखिए—'भारतियों के चरित्र में व्यक्तिगत कृपा और दातव्य लदेव की प्रिय-नम विशेषता है।..... उनके स्वभाव में प्रसन्नता, साहस और वैर्य राष्ट्रीय-क्लेस के मध्य में पोपित होता है।'<sup>२०</sup> विद्वान जेम्स सामलसन की हृषि से—'वे प्रसन्न बदन, कृतव्य और सब से अधिक अपमान की अपेक्षा आपत्ति का सामना करना अच्छा समझते हैं।'<sup>२१</sup> सर जान लारेस तक ने स्वीकार किया था कि

16 Field service Regulation 1824 part II See 1 Page 2.

17. Clyde and strait marine ( R. 9 series )

18. the oudeh Gazetteer 1877.

19. The Indian review Nov 1855,

20. The People of India,

21. Indian past and present,

भारतियों ने अपनी शानदार वहादुरी और वीरता पूर्णव्यवहार के कारण रुयाति पाई है। मिट्टर आम्किवथ (A-quith) के शब्दों में फ्रांस के युद्धचेत्र में उन्होंने अपनी वकारारी और वीरता का अमर यश कमाया था।<sup>12</sup> शक्ति और माहौल भारतियों की अपनी चीज़ है। देखिए सर जान उड़फी इस विषय में क्या कहते हैं? 'भारत एक भावना है। यह एक विशेष गति है। भारत शक्ति समस्त अन्य शक्तियों की अपेक्षा अपनी विज्ञान प्रकृति और गुणों के लिए प्रमिष्ट है। वह वह सज्जा भारतीय घर नहीं जहां इसका व्यक्ति करगा न हो।'<sup>13</sup>

सैनिक योरता के पश्चात सेना नायकों का निर्विजय कर लेना भी आवश्यक है। प्राचीन भारत में प्रत्येक व्यक्ति नियमित सूप में सैनिक शिक्षा प्रदान करता था। प्रत्येक राजा के लिए नो इस विषय का पूर्ण पारिडृत्य प्राप्त करना एकान्त अनिवार्य था। कहां तक कहा जाय यह ज्ञान विवाह संम्कार तक के लिए जट्ठी माहो गया था। परशुराम, द्रांगाचार्य, कृपाचार्य, विश्वामित्र अर्जुन आदि की मौजूदगी में अधिक सेनाशिक्षकों की खोज करना ही बेकार है। हां, सेनाभ्यक्तों पर विचार करना आवश्यक है। क्योंकि हार जीत का पांसा उन्हीं के हाथों से उलटना-पुलटना है। युद्ध-कला-विज्ञान आर्थर लिली निष्पक्ष होकर बतलाने हैं कि 'शस्त्रास्त्र सज्जित राम विश्व के इतिहास में अपना मानी ही नहीं रखते !'<sup>14</sup> लद्दमण, इन्द्रजीत, पितामह भीष्म, धृष्टधुम्र जैसे सेनानी दुनिया ने आज तक दुवारा देखा ही नहीं, उनके हस्त लाघव और युद्ध कौशल आधुनिक वैज्ञानिकों के लिए एक कल्पना

12. What India wants.

13. Bharat Shakti.

24. Rama and Homer Page 51.

कष्ट बात है। सर डाक्टर हरेटर मुक्त करण से स्वीकार करते हुए कहते हैं कि सेनासंगठन और संचालन सिद्धान्तों आदि के सम्बन्ध में कुछ भी कहने की आवश्यकता नहीं, इन का वर्णन महाभारत में कई बार हो चुका है।<sup>२५</sup> वीरता और दया का घनिष्ठ सम्बन्ध है, दयालु सेनानी अशोक का कलिंग विजय आज की एक ऐतिहासिक घटना है। गैरट के अनुसार जिसने, चीन खोतान काशगर यारकन्थ तक विजय किया उस कनिष्ठ के सेना नायकत्व के प्रमाण की आवश्यकता ही क्या है। वीसेंट स्मिथ कहते हैं कि 'कदाचित भारत विक्रमादित्य शासन के बाद प्राच्य ढंग से फिर इतना सुन्दर शासित नहीं हुआ।' डितिहासज्ज जी०-८० वाथेन कहते हैं कि चन्द्रगुप्त द्वितीय और समुद्रगुप्त ये शासक और महान योद्धा थे।<sup>२६</sup> पौरुष के पराक्रम पर मुख्य हो कर ही सिकन्दर ने उसकी सराहना की थी।<sup>२७</sup> शत्रु भी जिस पर सौ जान से निछावर हों ऐसे सेना नायकों के लिए दुनिया को हिन्दुस्तान की ओर ही आंखें घुमाना पड़ता है। ऐनीविसेन्ट महोदय ने ईशा से २०३५ वर्ष पहले की तारीख पलव कर बताया है कि नाहवह (Niueh) सेमीरामिस (Semiramis) भारत में धंस आया जिसे भारतीय राजकुमार (Strabrobates) ने भगा दिया था।<sup>२८</sup>

यह तो हैं बहुत मुरानी बातें, अब महाराणा संग्रामसिंह सम्बन्ध में कन्तल टाड की जवान से सुनिए—'इस लड़ाके वीर की एक आंख भाई के साथ भगड़े में विदा हो गई, देहली के

26, Indian Gazetteer India Page 223.

26, A history of India Page 71,

27 A history of India Page 71.

28, A bird's eye view of India's past,

लोरी सप्राट के साथ युद्ध करने में एक बाजू जाता रहा, और अन्यत्र तोप के गोले से अंग टूटने के कारण लंग हो गया। इसके शरीर के विभिन्न भागों पर तत्त्वार और बर्द्धी के ८० घाव थे। ३६ इतिहासज्ञ पाइन लिखता है 'कि यह वीर पराजित होकर सदैव के लिए भारत के साम्राज्य को अन्तिम नमस्कार कर पहाड़ों की ओर चला गया और लोगों को बतला दिया कि वह चिन्ताइ में पुनः प्रवेश न करेगा, करेगा तो विजय... ...!' ३७ मुझे भर राजपूतों को ले कर टिही दल मुगलों को हल्दी धाटी का रणाङ्गण में लोहे के चने चबवाना संग्रामसिंह के वंशज महाराणा प्रताप का ही काम था। राजस्थान का एतिहासज्ञ कर्नल जेम्स-टाड बड़े गर्व से बतलाता है कि 'मां के दूध की लाज रखने के लिए प्रताप चौथाई शताब्दी तक साम्राज्य का मुकाबला करता रहा। वह कभी मैदानों की खाक छानता था तो कभी चट्टानों की किन्तु वापल रावल का वंशज माथा कैसे झुकावे-यह विचार सदैव उसके मास्तिष्क में विराजमान रहता था। सयुक्त प्रान्त के भूतर्गत गवर्नर सर हार्ट कोर्ट बट्टर तक शिवा जी को 'राष्ट्रीय मरहठा महान पुरुष बतलाते हैं।' जिस ने हिन्दुओं द्वारा स्वर्गीय सम्मान प्राप्त किया। ३८ एक, दो, नहीं भारत भूमि ने असंख्य सेनानियों को जन्म देने का सौभाग्य प्राप्त किया है, जिन के दम से आज भी इसका मस्तक ऊंचा है। मिस्टर वार्ड इस के साक्षी हैं—'हिन्दू सम्राटों को सैनिक शिक्षा दी जाती थी और वे अपनी

सेना के नाथ युद्ध केत्र को जाते थे । इनमें से बहुत सम्राट अपनी आदर्श वीरता और युद्ध कौशल के लिए प्रसिद्ध थे ।<sup>३२</sup>

## युद्ध नियम—

युद्ध के नियम शूरता वीरता ही के नहीं प्रत्युता सम्भवता के भी परिचायक हैं । आधुनिक काल में यद्यपि 'प्रेम और युद्ध में कुछ भी असंगत नहीं'<sup>३३</sup> का दाक्य बड़े गर्व में व्यवहार किया जाता है किन्तु प्राचीन भारत में जघन्य अपराध माना जाता था, और आज भी भागतीय ऐसी वातों पर धूमा से मुह मोड़ लेने हैं, हिन्दू जाति की नीति, युद्ध में सदा-उदार और रक्षात्मक रही है । वे जहाँ दूसरों की सम्पन्नता पर लार टपकाना नहीं जानते थे, वहीं शत्रुओं की लाल पीली आंखें देखना भी उन्हें वर्दीशत न था । स्वाभिमान के दांव पर वे सदैव प्राणों की वाजी लगाया करते थे । चन्द्रगुप्त ने मल्यूक्स को वीर की भाँति पराजित कर दयालु एवं उदार की भाँति मुक्त कर दिया । पृथ्वीराज ने शहावुद्दीन को पकड़ा और दया का आंचल फैलाने पर जमा की भिज्वा डाल दी । महाराणा भीम ने विश्वास धाती अलाउद्दीन को घर चुला कर भी सकुशल वापिस लौटा दिया । कतिपय राज्य नीतिज्ञ इन असंख्य घटनाओं को राजनीति की भूलें सके ही बता दें किन्तु इनकी ओट में तत्कालीन भारतीय हृदय की उदारता एवं अलोकिक शक्ति का अद्भुत चमत्कार छिपा है ।

<sup>३२</sup>, The Theosophist, March 81,

<sup>३३</sup>, Nothing is unfair in war and Love,

<sup>३४</sup> देखये मनुस्मृति अ० ७ इति.क० ६१, ६२, ६३, ६४

सम्बन्ध में एक बड़े सार्के की बात कहता है—‘भारतवर्ष में एक राजा दूसरे से युद्ध ठानता है तो उसका यह विचार बहुत ही कम होता है कि वह दूसरों के राज्य पर अपना अधिकार जमावे। जब कोई राजा अन्य पर विजयी होता है तो पराजित राजा के कुम्भ में मे किसी को जीते हुए राज्य का राजा बना देता है।’ १ यूनानी राजदूत मेगास्थनोज लिखता है—युद्ध के समय विपक्षी पक्ष दूसरे का संहार करते हैं किन्तु कृषकों को बाधा की देते। शत्रु के देश को अग्नि से सत्यनाश नहीं करते और न काटते हैं उन के बृक्ष।’

वीरता और उदारता के इतने सुन्दर समन्वय का आदर्श श्रव्य जाति के अतिरिक्त और किसके इतिहास में मौजूद है ?

### गुतचर—

सैनिक संगठन और जासूसी प्रथा (Spionage) का बहुत बनिष्ठ सम्बन्ध है। भारत ने यदि छलछद्वा को किसी भी क्षेत्र में बढ़ने नहीं दिया किन्तु शक्ति-परिस्थिति एवं प्रजा के प्रति अधिकारियों के व्यवहार का परिज्ञान प्राप्त करने के लिए उस चक्रको ऐसे ताने बाने का जाल में गूँथा था कि आधुनिक गुप्तचर विभाग (C. I. D.) उस के सामने कुछ भी नहीं टहरता। रामायण में एक नहीं अनेकों स्थानों पर इसका विवेचन मिलता है। रावण का ‘शुक’ नामक दूत राम के शांवर में आया, वानरों ने उसे बन्दी बनाकर राम के सामने पेश किया। चौलाक भेदिया ने ‘दृत’ का बहाना कर ज्ञामा चाही किन्तु अंगद ने तुरन्त राम को सायधान कर दिया ‘हे महाप्राज्ञ ! यह दूत नहीं जासूस मालूम होता है २६ महाभारत से वैदेशिक राजाओं के अठारह विभागों ३५, मुलेमान सौदागर पृ० १८, १६

१६ ‘नाम दूतो महाप्राज्ञ चारकः प्रति भाति में ।’

में गुप्तचरों की नियुक्ति का उल्लेख किया गया है। कर्णिक अन्त्य राष्ट्रों में पाख्य ऐड्यों, तापसों आदि की नियुक्ति का परामर्श देता है। ३३ महाभारत काल में तो गुप्तचरों की अलग भाषा थी जिस की संज्ञा 'म्लेक्ष' बतलाई गई है।

आचार्य शुक्र ने भी इस का सुन्दर विवेचन किया है। ३५ मनुस्मृति, मृच्छ कटिक नाटक, मुद्राराज्ञस, उत्तर राम चरित्र और किरातार्जुनीय आदि पुस्तकों में भी प्राचीन गुप्तचर प्रथा का उल्लेख किया गया है। गुप्तचर विभाग ने चन्द्रगुप्त काल में काफी उन्नति की थी। इस विभाग के पुनः निरीदण के लिए ही पांच विभाग थे। जिस के आचार्य थे चाणक्य। आपने विदेशी शासकों के यहां कुवड़े, बौने, हिजड़े कलाकारिणी स्त्रियां, गृणे तथा म्लेक्ष जाति के व्यक्तियों को ननके घरों में गुप्तचर बनाकर रखाथा। ३६ आपका नियम था कि इन मामलों में 'विश्वासपात्र' का भी पर्याप्त प्रमाण के बिना विश्वास न किया जाय। ३७ रहस्य को गुप्त रखना ही गुप्तचरों की योग्यता की एक कसौटी है। इस सम्बन्ध में आचार्य चाणक्य का कितनों सुन्दर आदेश है—'मनसा निनित कर्म वचमा न प्रकाशयेत्।'

अर्थात् मन में जो कुछ सोचों और की बात क्या अपनी जीवान को भी उसकी खबर न होने दे। विश्व-इतिहास के पन्ने चन्द्रगुप्त के गुप्तचर विभाग की चानुरी के सामने विलक्षण करें। ३८. चरा सुविहिता काये आत्मनस्त्वं परस्यवा पाखगडा स्तापसादीश्च

परराष्ट्रे षु योजयेत्। आदि० प्र०

३९. शुक्र अ० १ श्लोक० १३०—१३६

४०. अन्तर्गृह चराश्तेषां कुब्ज बामन षगडकाः,

शिल्पवत्याः स्त्रियो मूकशिन्द्रा श्च म्लेच्छ जातयः।—अर्थशास्त्र

४०. 'वश्वस्तेष्वपि न विश्वसेत्।'

दीवते हैं। यही कारण है कि आचार्य उपगुप्त को पाश्चात्य इनिहास लेखक भारत का Machivalli कहते हैं।

### वैद्य—

सेना संगठन में सेना के डाक्टर का आसन बहुत महत्वपूर्ण है। गमायण काल में हम सेना के एक ऐसे पीयूष पाणि निपुण चिकित्सक पाते हैं जो 'शक्ति सरीखे धातक अस्त्र के आवात को शल्य विद्या (Surgery) की सद्वायता के बिना ही, केवल मर्जीवनी बूटी से अच्छा कर देता है। विद्वान् आर्थ लिली उस मुयायण चिकित्सक का नाम जम्बवान् बतला कर यह भी कहते हैं कि उस बक्त बूटी को मेरुपर्वत की चोटी गन्धमादन से किसी को भंज कर मंगवाने का परामर्श दिया था।<sup>४१</sup>

महाभारत में युद्ध क्षेत्र में लगे हुए कैम्पों के वर्णन में स्पष्ट रूप में बतलाया गया है कि 'वहाँ पर सैकड़ों शल्य विशारद वैद्य उपस्थित थे जिन के पास सजरी और औपधी का समस्त सामान मौजूद था। इन्हें नियमित रूप से वेतन भी मिला करता था।'<sup>४२</sup> भीष्मपितामह के शर शैयासीन होने पर भी अनेक चिकित्सक उन की सेवा के लिए उपस्थित हुए थे।<sup>४३</sup> प्राचीन भारतीय इनिहास को राई-रत्ती खोज डालिये, कहीं भी आपको यह कहने की आवश्कता न पड़ेगी कि असुक वस्तु का उस काल में अभाव था।

<sup>41</sup> Rama and Homer Page 161,

<sup>42</sup> 'त्रासद् शिल्पिनः प्राज्ञः शतशो दत्त वेतनः।'

सर्वोपकरणैषुक्ता वैद्याः शास्त्र विशारदाः॥'—उ०, अ० १५१

<sup>43</sup> देखिए भीष्म पर्व, अ० १२८

## शस्त्रास्त्र

प्राक्ताद प्राक्ताद धरदुक्त दमि जहि रज्मः पर्वतेन ॥

मृ० ५-१०४-१६ ।

युद्ध विज्ञान का निरीक्षण करते समय उस के अस्त्र शस्त्र को भी देखना अत्यन्त आवश्यक है, क्योंकि इनकी योग्यता और संचालन पर ही हार जीत का फैसला होता है। जिस जानिने हुनिया को अस्त्रशस्त्रों का प्रयोग बतला कर संरक्षण का पाठ पढ़ाया था, जो राष्ट्र एक दिन संसार के लिए हथियार तैयार करना था, उसी के निवासी आज अस्त्र पकड़ना तो क्या उनके नामों से भी अपरिचित है। उस विषय का विवेचन करने से पूर्व 'अस्त्र' और 'शस्त्र' इन दो शब्दों पर विचार कर लेना आवश्यक प्रतीत होता है। शुकाचार्य की व्याख्यानुसार—'यंत्रमंत्र और अग्नि इन तीनों द्वारा चलाये जाने वाले, 'अस्त्र' हैं। अस्त्र दो प्रकार के होते हैं, नालिक और यान्त्रिक। यंत्र और अग्नि द्वाग जलाये जाने वाले नालिकास्त्र तो प बन्दूक आदि हैं, किन्तु मंत्र द्वारा सञ्चालित अस्त्रों का अन्वेषण अथवा प्रयोग आज तक वैज्ञानिक की बुद्धि में नहीं टकराया। इन का वर्णन अथर्ववेद के तीसरे और आठवें मन्त्रों में मिलता है इन का प्रयोग रामायण काल में प्रचुरता में होता था। इन के अतिरिक्त अन्य तलवारें और भालों आदि की गणना शस्त्रों

t. 'Forward behind and from above and under, smite down the demons (looters) with thy rocky weapons'

में है।<sup>१</sup> अन्य शास्त्र कारों के मत से भी यही सिद्ध होता है। साहस कर के भी जिस से बचाव न हो सके, वह अस्त्र है, 'महेन येन त्रायां न भवति स अस्त्रः ) और साहस के द्वारा जिस से रक्षा हो सके वह शस्त्र है। (माहसे येन त्राया भवति स शस्त्रः )

भारतीय युद्ध-शस्त्र के अन्दर अस्त्र शस्त्रों के अनेक भेद नप्रभेद पाये जाते हैं। जैसे यंत्र मुक्ता हस्त मुक्ता मुक्ता-मुक्ता प्राकृतिक इत्यादि.. विलसन महोदय, तलवार, तीर कमान, मंगीन कटार फरसा, गदा गुर्ज, छुरी, मिद्याल, कुहक्वान आदि के नाम गिनते हैं<sup>२</sup> भारत में 'अस्त्र' संज्ञा धारी हथियार महा विकराल होते थे, निशाना चूकना तो इनके लिए कठिन ही था। किसी कवि के शब्दों में—

हस्ती दन्त कमान-मर भयरथ बचन प्रवीन,  
जुग चहे पलटन रहै ये न पलटे तीन।

### धनुष—

किसमत की भाँति न पलटने वाले कमान के तीर भारतीयों के हाथों का अपना जौहर था। अर्जुन, कर्ण, एकलव्य आदि का शर संचालन, चौहान पृथ्वीराज का शब्द वेधी बाण आज भी भारतीय शत्रुओं के हृदयों को प्रकस्तित कर देता है विलसन महोदय विश्वास दिलाते हैं कि हिन्दू धनुर्चिद्या के आचार्य थे। उनकी शर संचालन कुशलता आश्चर्यजनक थी। वे एक साथ 'चार से नौ बाण तक मारते थे।' युद्ध कला-निपुण आर्थर लिली बतलाते हैं कि इन्द्रजीत (राघव के पुत्र मेघनाद) के जादू भरे

१ 'अस्त्वने शिष्ये यत्त मन्त्र मन्त्राग्निभिश्च तत्।

अस्त्र मद्यतः शस्त्रमस्ति कुन्तादिक्श्च यत्॥

अस्त्रतु द्विविधं ज्ञेयं नास्तिकं भान्त्रिष्ठ तथा।'—शुक्लीति

2, Wilson's essay's Vol II Page 191, 192

बाण वर्द्धियों के रूप में सांप की भाँति होते थे।<sup>१</sup> प्राचीन भारतीय बाण चलाने वालों के हाथ में पुनः बापस आ जाते थे, दुनिया आज तक इसे कवियों की कल्पना समझती थी किन्तु जब से आस्टे लिया में इनका पता चला है उस समय से वैज्ञानिकों की आंखें खुल गई हैं और संसार भारतीयों के पुराने कमालात पर आश्चर्य से दान्तों तले उंगली दबाने ने लिए विवश हुआ है।

सन १८५१ और १८६२ की अन्तराष्ट्रीय प्रदर्शनियों में प्राचीन विश्व-विजेता भारत के कुछ शस्त्रास्त्र पेश किये गये थे। उनके सम्बन्ध में विदुपी मेनिंग की सम्मति है—‘भारतीय जड़ाऊँ-अलंकारों की भाँति वे सुन्दर थे, उनका लोहा बहुत ऊँची कोटी का था, और वे भली भाँति पुरस्कृत भी किये गये थे।’<sup>२</sup> वास्तव में प्राचीन हिन्दूओं के धनुष से निकले हुये वाण में जो करामात थी वह आधुनिक बन्दूक की गोली में कहां !

### तलवार—

सर हेनरी काटन कहते हैं कि ‘समस्त योरोपियन, यहां तक कि अरमोनियन, यहूदी और योरोपियन बिना लाइसेंस के हथियार रख सकते हैं पर भारतवासी नहीं।’<sup>३</sup> किन्तु यहां हाथ छड़ी लेना तक गुनाह नहीं जुर्म समझा जाता है। एक शताब्दी पहले भारतीय किसान तक कमर में तलवार लटका कर खेतों में काम किया करते थे। यात्री अब्दुरज्जाक लिखता है कि ‘मैं ने कालीकट के बन्दरगाह पर उत्तर कर देखा कि एक कबीले के लोग एक हाथ में जल की भाँति उज्ज्वल हिन्दी तलवारें और

<sup>1</sup> Rama & Homer Page 173.

<sup>2</sup> Ancient and mediaveal India Vol, II Page 365.

<sup>3</sup> New India.

दूसरे में बादल के दुकड़ों की भाँति ढालै लिए हुये थे।<sup>१</sup> यात्री अलबेहनी भी कहता है कि 'वे ( हिन्दू ) बाईं' तरफ कमर ने तलवार लटकाये रहते थे।<sup>२</sup>

अपना द्वाया में मौत को लेकर चलने वाली हिन्दू तलवारों का लोहा दुनिया के बड़े बड़े शूरमाओं ने माना था। इस की शहादत विदेशी आक्रमणकारी थे किन्तु उनकी आत्मायें तो कब्रों की तह में सिसकियाँ भर रही हैं। विवश होकर इतिहास के पन्नों पर ही सन्तोष कर लीजिए। अर्ची भाषा का सुकवि लिखता है— 'निकटतम सम्बन्धी के अत्याचार का धाव हिन्दुओं की तलवार ने भी अधिक भयानक होता है।'<sup>३</sup> फारसी का मशहूर शायर फिरोसी भी भारतीय सम्पत्ति और तलवार का राग गाता है।<sup>४</sup> मीर्सियास (Mēriyās) बतलाता है कि भारतीय तलवारे संसार में सब से अच्छी थीं।<sup>५</sup> बहादुर राजपूत किस कमालकी तलवारे चलते थे विलियम बाटरफील्ड महोदय की जबान से सुन लीजिए। बारह-बारह कोस तक तलवार झाड़ना, यह दुनिया में केवल हिन्दुओं का ही सामर्थ्य है।

*'Twelve Kos their swords their path did hew.'*

*Three long kos night furiously;*

*Stout Dhewas sword made play;*

*Two kos brave malkhan slew his foes.'*

5. Scenes and Characters from Indian History Page 49.

Alberuni's India Vol. I

6. Sabaa moalaqa, 'तफसीर अजीजी में भी पढ़िये—'तेग हिन्दा व खंजरे रूमी—नकुनन्द आंकि इन्तजार कुनन्द।'

7. 'जियाकूतो अलमासो जितेगे हिन्द, हमा तेग हिन्दी सरोसर परन्द।'  
—शाहनामा

8. History of antiquity, Vol. IV Page 436,

## आग्नेयास्त्र—

आधुनिक युद्ध में आग्नेयास्त्रों का ही महत्व है। संसार ने यद्यपि इनका प्रयोग अभी सीखा और जाना है परन्तु भारत में इन का व्यवहार बहुत प्राचीन काल से होता है। अथवेद् में कहा है ... वानक हम तुम्हें सीसे (Bullet) से बीधते हैं ॥<sup>१</sup> अन्यत्र यह भी बतलाया गया है कि 'आग्नेयास्त्र हमारे शत्रुओं और उन की सेनाओं को जलाता और मूर्छित करता हुआ हमारे पास लौट आवे ॥<sup>२</sup> गमायण काल में विश्वामित्र ने राम को अन्य अस्त्रों के साथ साथ आग्ने अस्त्र (Fire Arms) भी दिये थे। श्रीमती ब्लावास्टकी स्वीकार करती हैं कि आग्नेयास्त्रों का व्यवहार प्राचीन हिन्दू लोग किया करते थे ॥<sup>३</sup> प्रीक लोगों ने ब्राह्मणों के सम्बन्ध में लिखा है कि वे लोग फासले पर खड़े होकर विजली और प्रकाश (Fire-Arms) से युद्ध करते हैं ॥<sup>४</sup> ऐतिहासिकार मर्फी कहता है कि 'भारतीय आग्नेयास्त्र के युद्ध में पुर्तगीजों से बहुत बड़े चढ़े थे ॥<sup>५</sup> सिकन्दर अरस्तू को एक पत्र द्वारा सूचित करता है कि 'उस' ने स्वयं देखा है, भारत में उस की सेना पर अग्रिन लपटों की वर्षा हुई है ॥<sup>६</sup> महाभारत के युद्ध में ऐसे अस्त्रों का प्रयोग हुआ था, जिनको सोचने और समझने में वैज्ञानिकों की कल्पना कुराइठत हो जाती है। द्वोण पर्व में लिखा १. 'तत्वा सोसेन विद्यामो यथा तोऽसा अवारहा ।'

१० आग्नन् शत्रून् प्रत्येतु विद्वान् प्रति दहन्नभिशस्तभर्त्तिम स सेनां मोहयुन्

परे पां निहस्तांश्च कुर्ण वज्जात वेदाः ॥ तृ० का० प्र० स० १ इतोक०

11. *Ibis Unveiled.*

12. *Orat XXVII Page 387,*

13. *Indica Page 25,*

14. *Dantes Inferno XIV.,*

—लोहे के बने हुए चक्र, भुशुण्डि, पट्टिश और शतनियां बगावर चल रहीं थीं ।<sup>१५</sup> अन्यत्र इसी प्रन्थ में अशनि अस्त्र का दर्शन इस प्रकार किया गया है—‘इस में एक मन का गोला ढाला जाता था, उसके नीचे चक्र लगे रहते थे। गोले वायु में ही फूट जाने थे और वड़ा भारी धक्का पहुंचाते थे, उस में वादलों की तरह बोर नाड़ होता है ।’<sup>१६</sup> तोपों और मर्शीनगनों के सम्बन्ध में प्रत्यात पाश्चात्य परिष्ठित स्वीकार करते हैं कि त्रायणों के पास इस प्रकार की मशीनें थीं । प्रोफेसर विल्सन की राय है कि आग्नेयास्त्रों में प्राचीन भारतीय अत्यन्त पुरातन काल से ही हुशियार थे । इतिहासकार एलिफन्टन बहुत काल की वीरती वालों का म्मरण दिलाते हैं कि विजय दशमी के दिन आग्नेयास्त्रों के आलोक में लड़ा वर्दिद हुई थी ।<sup>१७</sup> शुक्राचार्य ने भी गोले तोलियों के सम्बन्ध में स्पष्ट स्पष्ट से बतलाया है कि—ये दो प्रकार के होते हैं । एक में वारूद भरा जाता है और दूसरे केवल लोहे के ही होते हैं, बन्दूक की गोलियां सीसे की बनाई जाती हैं ।<sup>१८</sup>

१५ आयसानी च चक्राणि भुशुण्डयः शक्ति तोमराः ।

पन्थ विरता: शूलाः शतन्यः पट्टि शास्त्रा ॥ द्रो० अ० १५६

शतन्य—Which Colonel Yule believed to have a prehistoric

Rocket to Tarpedo (विजली की मछली से मिलता जुलता अस्त्र)

Rima & Homer Page 55

१६. द्रोण पूर्व<sup>१९</sup> अ० २०० इतोक १७ से २१ तक

१७. Elphinstone's history of India Page 178,

१८ गालो लोहभयो गर्म घुटिकः केवलोऽपि वा,

सांसस्य लघु नालार्थे हयन्तर्धातु भवोपि वा ।—शु० २०४

शतांशि का अर्थ होता है, एक बार में सौ को जप्त करने वाली। संस्कृत कोपों के अनुसार वह मैशीन जो लोहे के टुकड़ों आदि को गोले के रूप में फेंक कर वहु संरूपा में प्राणोपहरण करे। मिस्टर हालहैंड भी इस का अनुमोदन करते हैं। १९ आगनेयास्त्रों के विषय में आप बतलाते हैं कि इस का अन्य विशेषताओं में एक विशेषता यह भी होती थी कि यह जब अन्य निकल कर शत्रु की ओर चलता था तो इस की लपटें कितने ही भागों में विभाजित हो जाती थीं और सभी प्रभावपूर्ण होती थीं। एक बार लग जाने पर यह शान्त नहीं किया जा सकता था। किन्तु इस प्रकार का अस्त्र अब लुप्त हो गया है। २० ग्राहान्त्र को रेवरेण्ड के० एम० बनर्जी आधुनिक तोड़ेदार बन्दूक से मिलता जुलता एक अस्त्र मानते हैं। २१

मध्यकाल में भी तोपों बन्दूकों का प्रयोग भारतमें बड़ी प्रचुरता से किया जाता था। पृथ्वीराज चौहान के समय का प्रमाणिक ग्रन्थ 'रासौ' जो उन के सखा चन्द्र वरदाई द्वारा रचा गया था, ऐसी तोपों को बतलाता है जिन के गोले १० कोस तक जाते थे। २२ भारतीय इतिहासज्ञ लाला कुन्दनलाल जोकि नवाब अवध के यहां रहे हैं, एक तोप 'लछिमा' के स्मद्दन्ध में बतलाते हैं कि वह पहले चौहान पृथ्वीराज के पास रही और फिर नवाब के पास थी। २३ १५वीं शताब्दी में गुजरातियों के नौका पर बैठ कर बन्दूक चलाने की रिपोर्ट 'एफ-सौज' (Faria-Souzo) देता

19. Code of Gour, Law introduction Page 52.

20. Encyclopaedia Bengal Vol. III Page 21.

21. चमू तोप छूटहिं फनकिक-दस कोस जाप गोला भन्नकि। पृथ्वीराज राजे

22. मुन्नदाव तकासीउल अखबार पृ० १४६-१५०

३१३ कर्नलटाड महाराणा संग्रामसिंह का भी एक बहिर्या दूर्क्ष से लंगड़ा होने की दास्तान लिखते हैं । ३४

इस समस्त उद्धरणों द्वारा यह भली भांति प्रमाणित हो रही कि संसार के हाथों में अस्त्रशस्त्र पकड़ने की शक्ति भारतियों ही ने दी है क्योंकि अत्यन्त प्राचीन काल से ही ये तोप-बन्दूक और मशीनगनों के प्रयोग ही में नहीं प्रत्युत अस्त्र-निर्माण काल में भी अत्यन्त निपुण थे । डाक्टर आर० डी० ब्रुक एम० डी० ब्रवर्ड का वर्णन करते हुये लिखते हैं कि यहां से जंगी जहाज तक बन कर बाहर जाते थे, इनका निर्माण पासियों की देख रेख में होता था ३५ १६५६ ई० में भारत यात्रा करने वाला फ्रांसीसी वर्तियर फ्राक्वीस कहता है—‘अन्य चीजों के साथ साथ यहां जब से अच्छी बन्दूकें तैयार होती हैं ।’ ३६

आरंभयास्त्रों के चलाने का प्रयोग करने में यहां के लोग कितने कमाल के हाथ दिखाते थे, यह भी प्रसिद्ध ऐतिहासिक जनरल चासने (Casney) की जवानी सुन लीजिए ‘ग्रीक लोग भारतीय वीरों की मुक्केएठ से प्रशंसा करते थे । आठ सालों तक निरन्तर युद्ध में, वीरता, चतुराई तथा बल में यूनानियों ने भारतीय सिपाहियों को ही सब से बढ़ चढ़ कर पाया था ।’ ३७ किसी भारतीय कवि ने बन्दूक विद्या के वीजसंत्र को इस अमित्रात्मक छन्द में किसी खूबी से बन्द किया है ।

३३ Ibid VII,

३४ Tod's Rajasthan Vol I Page 307,

३५ General Gazetteer and Geographical Dictionary Page 117.

३६ Travels in the Mogul Empire Page 254,

३७ Ancient India its invasion by Alexander the great as described by the Arian Page 405,

‘नजर निमान जोत बन्द  
मक्खी मुध रक्खी ।  
करके मम्हार जायगी रक्खी

।

बहुत दिन नहीं हुए, केवल १८५७ की बात है। फ़ॉन्ड-मार्शल फ्रेड गवर्टम भारतीयों के विषय में अपने घर वालों को सूचित करते हैं—‘साधारणतः गरना में श. ४०००० हांग जिन के पास अगारित बन्दूकें थीं। निश्चय रूप से वे इन का प्रयोग अच्छा करते हैं। उन की पैदल सेना भी अच्छा युद्ध करती है।’<sup>२८</sup>

### बारूद—

बारूद आगने यास्त्रों के प्रयोग के लिए एक अत्यन्तावश्यक वस्तु है। लुक-छिप कर, फर्लाङ्ग और मीलों के अन्तर से शक्ति का प्रदर्शन करने वाले अधुनिक सैन्य-समाज को इसके अभाव में मिट्टी का शेर ही समझिए। अस्तु प्राचीन हिन्दू विद्वान के विवेचन को सम्पूर्ण करने के लिए बारूद पर विचार करना भी जरूरी है। ऐतिहासिक टाड ने कृष्ण के वंशज यदु भानु नक ‘बारूद’ का प्रयोग होना खोजा है।<sup>२९</sup> मिस्टर हाल-हेड (Hal-hed) कहते हैं कि अन्वेषण काल में भी पूर्व भारत और चीन में इस का प्रयोग होता था। विद्वान प्रोफेसर विल्सन लिखते

कि बद्यक प्रन्था द्वारा पता चलता कि वे बारूद (Gun-Powder) की चीजों से भली भाँति परिचित थे।—गन्धक, चारकोल (Charcoal) शोरा—यह सब प्रचुर परिमाण

28. Letter written during the Mutiny Page 34

29. Tod's Rajasthan Vol. 11 Page 220,

30. Wilson's essays Vol. 11 Page 303,

में उन के पास मौजूद था...। वास्तु बनाना भारतीयोंने कब मानवा, इसकी तिथि खोजना कठिन है। आचार्य शुक्र ३१ ने न जाने कब इस का वर्णन किया था आप लिखते हैं—‘वास्तु बनाने के लिए वस्तुओं को इस अनुपात से एकत्रित करना चाहिए। मुद्रितों निमक ५ भाग गन्धक १ भाग, आक, स्तुह या किसी ऐसे पेड़ की लकड़ी के कोयले १ भाग। (कोयले बनाने में उसका धुवां न निकलना चाहिए)। इन तीनों वस्तुओं को छलग २ साफ वर्तनों में खूब बारीक पीस लेना चाहिए। फिर इन्हें मिला देना चाहिए। इस चूर्ण में स्तुही या आक का दूध डाल कर धूप में सुखाना चाहिए। फिर इसे खांड की भाँति चूर्ण कर लेना चाहिए। इस से अधिक अरनेयास्त्रों के प्रयोग और उन के ज्ञान का प्रमाण और हो ही क्या सकता है! प्रोफेसर विल्सन भी स्वीकार करते हैं कि इसके आविष्कारक भारतीय ही मालूम होते हैं। एक दो नहीं सभी विद्वान वास्तु का आदिम स्थान भारत ही बतलाते हैं यहीं से चीन, प्रीस और समस्त संसार में इसका प्रचार हुआ। ३२ मिस्टर लैंगले ने फ्रांस की साहित्य परिपद के सामने एक निबन्ध पढ़ा था कि अरब लोगों ने

३१ सुवर्चिं लवणात् पञ्चपत्तानि गन्धकात् पतम् ।

अनन्धूं म विपक्वार्कं स्तुहायज्ञारतः दत्तम् ॥ २०१

शुद्धात्संप्राप्तं संचूर्णम् सम्मील्य प्रपुटे द्रस्तेः ।

स्तुच्यर्कणां रसोनस्य शोपये दात पेन च ॥

पिष्टचा शर्कर द्येनदग्निं चूर्णं भवेत् खलु ॥ २०२

सुवर्चि लवणात् भोगाः खंडव चत्वारी एव च ।

नाजास्त्रार्थाग्निं चूर्णेतु गन्धाङ्गरौतु ॥ २०३

शुक्र नीति अध्याय ४

भारत वासियों से बाहूद बनाना सीखा और फिर उन से योग्य के अन्य देशों ने । ।

### अन्यास्त्र (Other Arms)

अब प्राचीन काल में व्यवहृत होने वाले अस्त्र शास्त्रों का भी निरीक्षण कर लेना चाहिये । क्यों, रावण और दुर्योधन सरीखे मगरुरों का मद भाड़ने के लिए इन तोपों बन्दूकों का ही चलाना तो प्रथमिन था । महाभारत में 'अन्तर्धानास्त्र' का प्रयोग हुआ था जिस के सम्बन्ध में कुवेर बतलाते हैं कि 'यह शत्रु को सुलाने और नाश करने वाला है ।' ३३ क्या आधुनिक विज्ञान आज ऐसी विपैली सम्मोहक गेस का अविष्कार कर सका है । 'बझ' की गणना प्रोफेसर विल्सन एक विस्फोटक अस्त्र की श्रेणी में करते हैं । ३४ विद्वान ईलियट इस से आगे बढ़ कर बतलाते हैं कि यहाँ केवल धड़ाके वाले अस्त्रों का ही नहीं बल्कि बहुत कुछ ठीक एक फ्यूज (Fuze) के समान था जिस से धड़ाका (Explosion) एक निश्चित समय पर होता था । ३५ इतिहास वेत्ता लौसेन (Lassen) भारत में व्यवहृत होने वाले एक ऐसे तेल को बतलाता है जो कि शत्रुओं के कस्बों और किलों को बिनष्ट करने के काम में प्रयोग किया जाता था । ३६ इलियन बतलाता है कि यह अस्त्रों और सैनिकों को भी जला कर स्वाहा कर देता था । ३७

1. History of Inventions and discoveries

33, तदिदं प्रति गृहीष्व अन्तधर्मि प्रियम् ।

ओजस्तेजो, धुतिकरं प्रस्तापुरात्मनुत ॥ ३६

बन पर्व

34, Willson's essays Vol II

35, Elliotts History of India Vol 1 Page 265.

36, Lassen's India Alt 11 Page 641.

37, Hindu superiority Page 310.

प्राचीन भारत में आधुनिक वमों (Bomb) और विषाक्त गैसों का व्यवहार युद्धों में होता था किन्तु कम क्योंकि यह शक्ति प्रदर्शन के अत्यन्त ओछे प्रयोग समझे जाते थे ! कर्नल आल्काट कहते हैं कि 'वे समस्त विज्ञान, गैसों और कलाओं को जानते थे' १३५ भारत सरकार के भूतपूर्व वैदेशिक मंत्री एच० एच० इलियट स्वीकार करते हैं कि भारत के आदिम ऐतिहासिक काल में कुछ प्रकार के अग्नेयास्त्रों का प्रयोग होता था, उन में फैंक जाने वाले विस्फोटक भी थे । उन के फटने अथवा जलने का नमय इच्छानुकूल होता था । प्रक्षिप्त वस्तुएं (Projectiles) इमारतों और दरवाजों को नष्ट करने में व्यवहार की जाती थी और काफी दूर से आग लगाने के लिए मशीनें होती थीं १३६ प्राचीन आर्य इनके अतिरिक्त कुछ ऐसे अस्त्रों का उपयोग करते थे जिन को समझने के लिए कदाचित आधुनिक संसार को अभी शताब्दियों माथा पच्ची करना पड़ेगा । उदाहरणार्थ असुर विद्या को ही लीजिये, इसके द्वारा वे विद्युत एवं विषाक्त गैसों का प्रयोग कर नाना भाँति के कृत्रिम सर्प आदि ऐसे छोड़ा करते थे जो अनादास ही शत्रु सेना का संहार कर डालते थे । महाभारत के युद्ध में पुनर्शोकोन्मत्त अर्जुन की प्रतीज्ञा पूर्ति के लिये दिन रहते सूर्य को छिपा देना क्या था ? कुप्ण की एक साधारण गैस (Gas) का प्रयोग । कर्नल अल्काट के शब्दों में 'वर्तमान प्रोफेसर इस विज्ञान (Science) का संकेत भी नहीं समझते । इसके द्वारा आक्रमणकारी सेना को विषाक्त गैसों और भयानक द्वाया रूपी आकृतियों एवं आवाजों से बायुमण्डल को दूषित कर

३८, Theopnist March 1881.

३९. Bibliographical index to the Historian of modern India.

पूर्ण रूप से तहस नहस कर डालते थे ।<sup>४०</sup> आर्थ लिलीं गमायल के युद्ध का वर्णन करते हुये भी ऐसी ही प्रणाली का उल्लेख करते हैं कि वह आक्रमण करते और जीवन रक्षा के लिए आश्चर्य-जनक उपायों से गायब हो जाते थे ।<sup>४१</sup>

### युद्धक्षेत्र और वाहन—

प्राचीन काल में भारतीय युद्धों का क्षेत्र केवल स्थल ही नहीं जल और आकाश भी था । महाराज मनु ने भी तीनों सागौं का उल्लेख किया है ।<sup>४२</sup> पृथ्वी पर ये रथों, घोड़ों हाथियों आदि पर सवार होकर तथा पैदल युद्ध किया करते थे । रथों के सम्बन्ध में पर्यटक अलबेल्नी लिखता है कि जंगी रथों का आविष्कार एक हिन्दू (Aphrodisios) ने किया था जब कि प्रलय के ६०० वर्ष पांच वह मिश्र पर शासन करता था ।<sup>४३</sup> हाथी का तो कहना ही क्या है ? वह अतीत काल में युद्ध के लिये एकांत उपयुक्त समझा जाता है । आज भी बनराज शेर का शिकार लोग इसी पर सवार होकर करते हैं । प्रोफेसर मेक्सूडकर सूचित करते हैं कि भारतीय सम्राट १० हजार हाथी ले कर युद्ध के लिये चला था ।<sup>४४</sup> यूनानी लेखक प्लेटो बतलाता है कि युद्ध में पोरस की सवारी का अपना हाथी जख्मों से छलनी हो गया था, विवश होकर बैठ कर वह स्वयं अपने घावों से तीरों आदि को निकाल रहा था ।<sup>४५</sup> भारतीय घोड़ों की बफादारी भारतीय बीरों ही की

४० Theosophist for March 1831.

४१. Rama and Homer Page 137.

४२. संयोग्य त्रिविद्यं मार्गं पड़विद्यं च चक्रं स्वक्रन् । मनु, अ१ खण्ड १८५

४३. Alberuni's India Vol I Page 407,

४४. History of antiquity,

४५. See, Scenes and Characters from Indian History,

भाँति विज्ञान है। सब कुछ स्वाधीनता की बेंडी में समर्पण कर मी मलिन सुख न होने वाला प्रताप 'चेतक' को चलते देख कर रो पड़ा था। असबैरहनी लिखता है कि वे बिना काठी कसे भी धोंडों की सबारी करते हैं। ४६

आकाश युद्ध भारतीय युद्ध-विज्ञान का एक उत्कृष्ट नमूना है। सन् १८८१ में इलाहबाद में व्यास्थान देते हुए कर्नल अल्काट महोदय ने बतलाया था कि 'प्राचीन हिन्दू केवल वायु में चलना हीं नहीं अपितु पक्षियों की भाँति आकाश में युद्ध करने की कला में निपुण थे।' ४७ जिस देशके तीन ओर अगाध समुद्र लहरा रहा हो वहां के नौका नयन का पूछता ही क्या! इतिहास लेखक एच० जॉ० एली० बिन्सन कहते हैं 'पुरातन कालीन भारतीय अत्यन्त अनुभवी मल्लाह थे उनका प्राचीन साहित्य उनके बुद्धिमान और साहसी जहाजी ज्ञान के प्रचुर प्रमाण पेश करता है।' ४८ कर्नल टाड भी इसी का अनुमोदन करते हुए लिखते हैं कि प्राचीन हिन्दुओं की जहाजी शक्ति जबरदस्त थी। ४९ इतिहास बेंता स्मिथ भी चन्द्रगुप्त और अशोक के जहाजी बेंडे की महत्ता को मुक्त करण्ठ से स्वीकार करता है। ५०

पाश्चात्य पण्डितों और ऐतिहासिज्ञों की यह साक्षियां प्राचीन भारतीयों के युद्ध विज्ञान की सर्वाङ्गपूर्णता, और कुशलता का ज्वलन्त प्रमाण हैं। उनका अतीत कालीन दिग्विजय भी इस पर कम प्रकाश नहीं ढालता जल, थल और आकाश, सर्वत्र उनका

46, Alberuni's India Vol 1 Page 181.

47. Theosophist march 1881.

48, Intercourse between India and the western world Page 18-19

49, Tod's Rajasthan Vol 11,

50, Edicts of Asoka Introduction VIII,

साम्राज्य विस्तृत था । एक पाश्चात्य परिषद्गत मेघनाद की विनिव्र  
गाड़ी की सूचना देता है 'इन्द्रजीत की गाड़ी उसके इच्छानुकूल  
जहाँ चाहे जाती थी ।'<sup>१२</sup>

यह भारत के वैभव से जगमगाते दिनों की शक्ति की, विज्ञान  
की एक सुन्दर भाँकी है । अधिक जानने के लिए रामायण महा-  
भारत आदि लोकमान्य प्रन्थों का अध्यलोकन कर लीजिए । उन्हें  
का ऊंचा विज्ञान समझ कर आक्षेप के लिए तुरन्त कमर कस कर  
तैयार मत हो जाइये किन्तु विद्वान ईलियट के शब्दों पर विचार  
कर लीजिये—'इन में से कुछ अस्त्र काल्पनिक रूपाल लिये जाते  
थे किन्तु ५० वर्ष पूर्व ग्रामोकोन, सिनीमेटोग्राफ और बेतार वं  
तारों को कौन केवल काल्पनिक नहीं समझता था ।'



## विद्युत-विज्ञान

अगन्म उत्तिरम्भा अभूम ॥—यजुर्वेदः ८, ५२

अतीत-कालीन आयों ने विजली को वशवर्तिनी बना कर कितने आश्चर्य जनक काम किए थे, इसे देखना चाहते हैं तो गौव पूर्ण अतीत से आधुनिक अन्धकार का परदा उठा दीजिए— सब कुछ साफ नजर आजायगा । हमारे प्रकर्ष का इतिहास प्राचीन पुस्तकों के पन्नों में बन्द है, उनका स्वाध्याय कीजिए, सारा रहस्य खुल जायगा । ऋग्वेद को उठा कर देखिए—

त्वमने शमिस्त्वमाशुशुब्रणि स्त्रमद्द्यमत्वमश्मनस्वरि ।

त्वं वनेभ्य स्त्रं चणां चृणां चृपते ज्ञायने शुचिः ॥

ऋ० २, १, १.

अर्थात्—‘हे अग्ने तू दिव्य पदार्थों से उत्पन्न होती है, तू सीधे शुष्क कर देती है । तू पत्थर और जल से उत्पन्न होती है । तू मनुष्यों के लिए सब प्रकार से शोधक है ।’ आज कल के वैज्ञानिकों को जल द्वारा विद्युत निकालने का प्रयोग प्राचीन आई प्रन्थों ही ने सिखाया था । विद्वान् ई० साल्वेरटे अपनी ‘अकल्ट साईं सेज’ में लिखते हैं कि ‘वह आगी जो लहरों की छाती में भर भर किया करती है, उस पानी की अग्नी से भारतीय प्राचीन काल ही में, बाढ़व नाम से परिचित थे ।’

विजली के केवल नामही से हिन्दू भिज्ञ न थे प्रत्युत आये दिन के कामों में उसका उपयोग भी करते थे । वेद में एक स्थान पर

कहा गया है 'हे अग्ने ! तुम को त्वष्टा शिल्पी अधिक बल वाला बनाता है तू शीघ्रगामी होकर उत्तम घोड़े का काम देती है ।'<sup>३</sup> अमरीकन महिला ह्वाइलर विलाक्स बतलाती हैं कि वेदों के महर्षि विद्युत ( Electricity ) रेडियो ( Radium ) एलेक्ट्रॉन ( Electron ) और हवाई जहाजों आदि से परिचिन थे ।<sup>४</sup> निरुक्तिकार यास्तक ने ताल या लैम द्वारा मूर्य राशियों को एकत्रित करके अस्त्रिन उत्पन्न करने की विधि का निर्देश किया है ।

महर्षि स्वामी दयानन्द जी सरस्वती ने ऐतिहासिक अन्वेषण द्वारा बतलाया था कि इस देश के अतीत काल में एक ऐसे पंचे का अविष्कार हुआ था जो एक बार चाबी देने से एक मास तक बराबर चला करता था । एक अमरीक आलोचक स्वीकार करते हैं कि प्राचीन भारत में वाष्ययंत्र (Steam) हुआ करते थे जो अग्नि-रथ के नाम से प्रसिद्ध थे ।<sup>५</sup>

### तार और वेतार—

तार प्राचीनकाल में भली भाँति प्रचलित थे । महाराज शुक्राचार्य ने राजा को इस बात का आदेश दिया है कि वह दस हजार कोस तक का समाचार एक ही दिन में जान ले ।

'अयुत कोशर्जा वार्ता' हरेक देन दिनेन वै ।<sup>६</sup>

तार और वेतार की बात जाने दोजिए यहां तो लोग मन मात्रकि द्वारा ही सन्देश भेजा करते थे । अभी १८५७ ई० के आस पर त्वामने त्वष्टा विप्रे सुवीर्यम् । त्वमाशु हेमा रीरणे स्वश्वर्यम् ॥

ऋ० २।१।१।५

g. Sublimity of the Vedas P. 83.

4. Hindu Superiority,

5. शुक्र नीति अ० १ श्लोक ३६।

यात की वात है कि योरीपियन विद्वानों ने भारतीयों की इस अंतर्राष्ट्रीय शक्ति का अनुभव किया था। वेनार यंत्र का आविद्धकारक मार्कोनी भी इस वात को सहपै स्वीकार करता है कि भारत में मानसिक सन्देश भेजने वाली कोई गुप्त विद्या उस समय लोगों को ज्ञात थी।<sup>६</sup>

मिस्टर लेन के० हार्डी एम० पी० कहते हैं कि भारत से कला कौशल और ज्ञान विज्ञान की ज्योति योरोप में पहुंची थी।<sup>७</sup> आज का हमारा स्वप्न अतीत भारत में सत्य था। संसार के आधुनिक वैज्ञानिक चमत्कार इसी भव्य भूमि के करण थे। मर जान सील के शब्दों में—हमारी साईंस का कोई विरला ही सिद्धान्त ऐसा होगा जो उन के लिए नवीन हो।<sup>८</sup> फ्रांस के मुविद्यान योगी भी स्वीकार करते हैं कि '++वर्तमान विज्ञान केवल उन्हीं सिद्धान्तों को पुनः प्रस्तुत करता है जो वेद में वर्णित हैं।'



६. See wireless Telegraphy, introduction,

७. See India impressions and Suggestions, Page

८. Expansion of England.

## कला

माहिन्य महीन कला विदीनः, नाचात्मणु पुच्छ विषाणु हीनः ।

— मनुहीनः

किसी भी जाति की सभ्यता का महत्व उसकी कला सम्बन्धी वैज्ञानिक दृत्यों से ही जाना जाता है। आर्थ संस्कृति में कला का उतना ही ऊचा स्थान रहा है जितना कि अध्यात्म विद्या का। जिस प्रकार ऋषियों ने अध्यात्म ज्ञान के आलोक में उस अनन्त सत्ता के सानिध्य को प्राप्त किया, ठीक उसी भाँति कलाकारों ने हृदय की प्रस्फुटित भावनाओं की ज्योति में उसी का चित्रण एवं दर्शन किया। भारतीय कला का विवेचन करते हुए मिस्टर काइरल जी० ई० वंट लिखते हैं 'कला' प्रकाश है, विचारों, भावनाओं अथवा आत्मानुभव का। राष्ट्रीयता, संस्कृति आदि सारिक शब्दों से प्रभावित होकर आत्मानुभव का वाह्य भौतिक स्वरूप ही कला है।<sup>1</sup> वास्तव में योगियों का सत्य, भक्तों का शिव ही कलावन्तों का सुन्दर है। इसी के पाद पद्मों में वह आत्मसमर्पण करता है।

ई० बी० हेवेल के विचार से 'भारतीय कला ही विशुद्ध कला है, यह अतिंशयोक और अश्लालता सं, जो अशिक्षितों के नंत्र रक्षित करती है,—रहित है। योरूप कीं श्रेष्ठ कला से यह अविक गूढ़ एवं गम्भीर है, इसी लिए इसको समझने के लिए कला के

1. Modern review for January 1919.

2. Indian Sculpture and Painting Page 60.

3. Modern review for June 1924.

इन ज्ञान की आवश्यकता है। प्रोफेसर क्लेयर बट्टले भारतीय कला का विवेचन करते हुए लिखते हैं कि इसने नगरों की मौन्दीय बृद्धि में काफी भाग लिया है। ३ डंकन प्रीनलेस एम० प० (Osen) दक्षिण के सम्बन्ध में कहते हैं कि वहां कला प्रेमियों की एक बहुत बड़ी संस्था थी, क्योंकि इस प्राचीन भूमि में टहलते समय भी इसकी प्राचीनता का हमें बहुत दुष्कृत्यान हो जाता है। भारतीय कला एक प्रकार के अध्यात्मिक अनुभव का नाम है। इसका कुछ विवेचन भारतीय पुरातत्व विभाग के संचालक जान मार्शल के शब्दों में सुनिष्ट—‘यह कला उन लोगों के अध्यात्मिक विश्वास और प्रकृति के गहरे ज्ञान और वोलते हुये प्रमाण के समान है। कृत्रिमता और आदर्शवाद से परे इसका उद्देश्य धा, धर्म को उज्ज्वल करना सो भी भारत के अध्यात्मिक काल की कला के समान अध्यत्मिक भावनाओं को शारीरिक स्वरूप के द्वारा अंकित किये बिना केवल सीधी सादी पर प्रभावोत्पादक ‘भाषा’ में, जिस पर उस समय के कारीगरों की हेती का अविकार था, बोद्ध धर्म की अद्यायिकाएँ कह कर निर्मित किया। यह उन लोगों के प्रेम और आत्म विश्वास का ही फल है कि नक्षात्री के ये काम बड़ी सज्जाई के साथ उनकी आत्मा का प्रतिविम्ब प्रदर्शित कर रहे हैं और हमारी मावनाओं को भली भाँति जागृत करने में अब भी समर्थ हैं।’ भारतीय कला की उत्कृष्टता का वर्णन करते हुये कलाविद् हेवल महोदय कहते हैं कि भारत ने यदि बाहर वालों से सीखा है तो उस का सौ बुना बाहर वालों को सिखाया है।  $\times \frac{8}{8} \div =$  इस सम्बन्ध में भारत मानवता के सम्मान का अधिकारी है। ४

लार्ड रोनाल्डशे भी हिन्दू कला के प्रति अपनी अद्वांजली

समर्पित करते हुए कहते हैं—‘वह एक चीज है, सांसारिक नहीं पृथ्वी पर होते हुए भी उसका सम्बन्ध आत्मा से है।’<sup>५</sup> आयं जाति अनादि काल से ही उस ‘केवल’ की खोज में लगी रही है। जिस की अलौकिक प्रभा से प्रकृति का कण-कण उभूतपूर्व ज्योति धारणा किया करता है। अस्तु इस प्राचीनतम जाति की समस्त विद्यायें और कलाओं की भी दौड़ उसी ओर रही है। यही कारण है कि भारत के कला का आनन्द लूटने के लिए उसे कलाकार की उंगली से छूना और कलावन्त की निगाह से देखना चाहिए। विद्वान मिस्टर वंट न त मस्तक हो कर स्वीकार करते हैं—‘भारतीय कला के सुविस्तृत सिद्धान्त का निर्माण हम जैसों के लिए नहीं। मैं उसके आश्चर्यों ( अज्ञायवात ) के बीच में एक रास्ते के पक्षी के समान हूँ। किन्तु कोई कभी जरूर इसे करेगा, और स्वयं भारतीय लालों द्वारा होना चाहिए। मेरा काम तो केवल एक अनुभवी तरीके से बटन दबा देना है, ( जैसे बच्चा बिजली के बटन को दबाता है ) केवल इस आशा पर कि ऐसा करने से आप को मालूम होगा कि भारत के स्पष्टीकरण से कितनी विशाल प्राप्ति हो सकती है।’<sup>६</sup>

### वस्तु कला—

कला का उद्भव स्रोत, विश्व के कलाकार की कीड़ा भूमियती स्वर्ग भूमिभारत है। विशाल मन्दिरों से ले कर भूगर्भ से निकलने वाले सहस्राब्दियों के पुराने प्रदीपों तक, इस भूमि को कला-कौशल पीठ प्रमाणित कर रहे हैं। मिठ हैवल बतलाते हैं—‘भारतीय शिल्प कला का स्थान ऐशिया में सर्वोच्च है।’ श्रीमती मेर्निंग का कथन है कि यह इतनी विस्मय विसुग्धकारी है कि

५. Indian a birds eye view Page 16.

६. Modern review for January 1919.

योगोपयन दर्शक प्रथम बार अपने आश्चर्य एवं प्रशंसात्मक भावों को अभिव्यक्त करने के लिए शब्द ही नहीं पाता । १ चीनी पर्यटक राजप्रमाणके मानव कृत्य होने में सन्देह करता है, मैगस्थ-नोज चन्द्रगुप्त के महल को देख कर दंग रह जाता है, यात्री कमालुहीन विजय नगर को देख कर दान्तों तले अंगुली दबा कर कहता है कि न अंखों ने ऐसा देखा है न कानों ने सुना । विस्काउंटेस काकलैण्ड महाराष्ट्र के छोटे महल में ही पहुंच कर चौकन्नी हो उठता है, आप ही के शब्दों में 'मैंने विचार करना शुरू किया कि मैं जादू के महल में हूँ ।' २ हेनरी आकूसिएडन रामगढ़ दुर्ग के सम्बन्ध में कहता है कि इसे कला और उस से अधिक प्रकृति ने मुट्ठ बना रखा था । ३ संसार के यात्रियों ने दुनिया देख कर, उसके अज्ञायबात को इसी भूमि में देखा है । सर फ्रेडरिक टेवज की भपकती निगाह, भारत से क्या कुछ हृदय पर अङ्कित कर ले गई, सुनिए 'हरे भरे' और बादामी मैदानों के बीच में कीच है, उन की छायादार छोटी सड़कें, सफेद दीवारें और चमकती वुर्जियां बड़ी सुन्दर हैं । ४ १८४२ में भारत आया हुआ अंपेज चालसट्रे यहां के निवासियों के घरों की कुशादगी पर ही लहू हो गया । ५

६ सचमुच भारतीय प्राचीन प्रसादों और महलों को देखकर आँखों की तदूचिषयक पिपासा बहुत कुछ शान्त हो जाती है । प्राचीन भारतीय इमारतों के सम्बन्ध में चिद्वान थार्टन का भी राय

7. Ancient and mediaeval India Vol. 1 Page 391,

8 Chow Chow P. 40.

9 Scenes and characters from Indian history P. 215.

10 The other Side of the Lantern P. 37.

11. Scenes and thoughts in foreign lands P. 27.

है—‘हजारों वर्षों के उथल पुथल का भी इनकी दृढ़ता पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा।’<sup>12</sup>

## मन्दिर और मूर्तियाँ—

एक पश्चात्य विद्वान के शब्दों में ‘भारत मन्दिरों की भूमि कहलाती है।’<sup>13</sup> भारतीय शिल्पियों ने उन अभूतपूर्व अलौकिक विचारों को मन्दिरों और भावसंयी मूर्तियों द्वारा साकार बनाकर लर्व साधारण के सामने रख दिया है, जिसको समझने के लिए एकान्त उदारता की आवश्यकता है।

## जगन्नाथ पुरी—

लाड़ रोनाल्डशे का कथन है कि ‘पुरी में जगन्नाथ का विशाल मन्दिर है। ६५० फीट के अच्छे घेरे में मन्दिरों का एक समूह स्थित है। इसका एक बड़ा स्तूप (Tower) १६० फीट ऊँचा है इसकी अलौकिक मूर्ति के सम्बन्ध में वहां पर कुछ किंवदन्तियाँ प्रचलित हैं जिस के सम्बन्ध में योग्य जुबोइस लिखते हैं ‘मुविरुद्यात कलाकार ने पदार्पण कर एक ही रात्रि में कृष्ण की प्रतिमा तैयार की थी।’<sup>14</sup> विशप हीवर कर्माक और पुरी की मूर्तियों पर अपनी सम्पत्ति इन शब्दों में प्रकट करते हैं ‘भारतीयों ने टिटान (Titan) की भाँति निर्माण कर जौहरियों की भान्ति समाप्त किया।’ कर्माक के मन्दिरकी प्रतिष्ठा नरसिंहदेव के राजत्व काल में हुई थी। प्रसिद्ध भारतीय इतिहासज्ञ अब्दुल-फजल इस के निर्माण व्यय का व्योरा बतलाते हुए लिखते हैं। डडीसा की ६ वर्ष की मालगुजारी इस पर व्यय की गई थी।

12. British history of India ‘Thornton’s Chapter’

13. The great temples.

14. India, a birds eye view. Page 259,

चड़ीमा की वार्षिक आय भी उन्हीं के शब्दों में रेटेक्टेट रूपया है फर्गुमन माद्व की दृष्टि में यह मन्दिर संसार में सब से अधिक सुन्दर एवं मनोरम है।<sup>15</sup>

## मधुरा—

मधुरा के प्राचीन मन्दिरों के सम्बन्ध में महमूद गजनवी अपने म्बदेश वासियों को सूचित करता है 'यहां असंख्य मन्दिरों के अतिरिक्त १००० प्रासाद मुसलमानों के इमान की भान्ति हूँ है। उन में कितने ही संगमरमर के बने हैं, जिन के बनाने में करोड़ों दीनार खर्च हुए होंगे। ऐसी इमारतें तो दो शताब्दी में भी बत कर तैयार न हों सकेंगी।'<sup>16</sup> मुगल कालीन यात्री एफ० मांसरेट कहता है कि यहां की लाठें (Columns) और प्राचीन मूर्तियां कला, और बुद्धि कुशलता की परिचायक हैं।<sup>17</sup>

ईसा से १५०० वर्ष पूर्व पश्चिमी योरूप में सभ्यता की प्रथम किरण चमकी थी, उस समय, कला विज्ञान, धर्म और द्वान प्राचान हिन्दू राज्य में लहरा रहा था, जिस की राजधानी दूली थी।<sup>18</sup> यह हैं बिंदुन हाई एम० पी० के विचार। अब दिल्ली के बृहदमान-मन्दिर के छवंसावशेषों को देख कर बॉन अर्लिस्कट ( Vonarliset ) के उद्गार सुनिए—'अब तक यह जीर्ण, कीर्ति, भग्न, सौंव, अतीत के अनुपम निर्माण कौशल की गवाही दे रहा है। यह विशाल सूर्य घड़ी और तुरीय घंट्र

15 Ancient architecture of Hindustan P. 22,

16, Brig Falisata Vol

17, Commentary of Father Monserrate P. 93,

18, Indian Impressions and Suggestions P. 56.

प्रकाण्ड वृत्तखण्ड के ऊपर अवस्थित लाल रंग के पत्थरों ने बना है।'

### बद्रीनाथ—

विश्व का यह मन्दिर पर्वत माला के स्कन्ध पर १०४०० फीट की ऊंचाई पर स्थित है। कहा जाता है इसका निर्माण शङ्कर स्वामी द्वारा हुआ था।

### बनारस—

'बनारस सर्वग द्वार है।' छब्ल्यू० एस० के ने कहते हैं। दुर्गाकुण्ड का सुन्दर नक्काशी किया हुआ पत्थर का देवालय महाराष्ट्र की रानी भवानी द्वारा बनाया गया था और विश्वनाथ का मन्दिर इन्दौर की रानी अहिल्याबाई ने निर्माण कराया था, जिसे स्वर्ण मन्दिर कहते हैं। १६

### आबू के मन्दिर—

विद्वान् फ़रुसन की सम्मति है कि आबू के बने संगमरमर के मन्दिरों में जैसी बारीकी के साथ भौहर आकृतियाँ बनाई गई हैं, १० उनकी नकल कागज पर उतारने में भी परिश्रम और समय व्यय से सफलता नहीं मिल सकती। १९

### बड़ौली—

यहाँ के मन्दिर की तक्षणकला की प्रशंसा करते हुए टाइ महोदय लिखते हैं कि 'इसकी विचित्र और भव्य रचना का

19, The Great temples P. 24,

20, A trip round the world P. 12,

21 The Great temples P. 15.

व्रथावत् वर्गन करना लेखनी की शक्ति में दात्र है। यहां मानो कला का कोप ही रिक्त कर दिया गया है। इसके स्तम्भ द्वारा और जियर का एक एक पत्थर मन्दिर के रूप का परिचय करता है। प्रत्येक स्तम्भ पर चुदाई का काम इतनी सुन्दरता और वारोंकी में हिया गया है कि उस का वर्गन नहीं किया जा सकता।”<sup>१</sup>

### हृषीवेद—

यहां के मन्दिर के स्तम्भन्ध ने वीमन्टमिथ का कथन है—“यह मन्दिर धर्मशील मानव जाति के अम का अत्यन्त आश्चर्य जनक नमूना है इसके कला-कौशल को देख कर आख्ये नुम नहीं होनी।” मिस्टर ए० ए० संकड़ानल की भी सम्मति सुनिए—भारत भर में कोई ऐसा दृसग मन्दिर न होगा जिस में चुदाई का काम इतना सुन्दर किया गया हो। दो हजार हाथी की आकृतियों में कोई सी एक दूसरे से नहीं मिलता।”

### तंजोर—

इस सुन्दर मन्दिर में दो बगामदे हैं बाहरी २५० वर्ग फीट और अन्दर्हनी ५०० वर्ग फीट है। इस में २५० देवालय है। इसका निर्माण चांदहर्वी शतावरी है। मध्य-निर्मित स्तम्भ भारत में अपने ढंग का अनोखा है। दूसरी विशेषता यह है कि इस का कुछ भाग विष्णु और शिव समर्पित है। यह फूल की भान्ति चमचमाता है।<sup>२</sup>

### काजा वरम—

लेफटीनेन्ट कर्नल एच० ए० हीवल एफ० आर० जी० एच

<sup>1</sup> Tol's Rajasthan Vol III.

History of fine art in India P 42.

India's Past P. 83,

वतलाते हैं कि पवित्रता के दृष्टिकोण से काशी के बाद इसका दूसरा स्थान है। यहां मन्दिरों का समूह है, कितने ही ऐतिहासिक दृष्टि से वहे महत्व के हैं। कांजीपुरम के कैलाशानन्द मन्दिर और सुत्राह्नायम, चोला स्त्रोट निर्मित विद्वान दंट के शब्दों में दक्षिण भारत के सुन्दरतम मन्दिर हैं। इसकी खुदाई वडी वारीकी और सुन्दरता से की गई है।

### देवगढ़

जाखमौन (G. I. P. Ry) स्टेशन के निकट देवगढ़ के मन्दिर की मूर्तियां कला का जीता जागता नमूना है। मिस्टर स्मिथ के मतानुसार ये मूर्तियाँ उस समय की निर्मित हैं जब हिन्दू शिल्प विद्या उन्नति के उच्चतम शिखर पर थी। मन्दिर के विषय में आपका कथन है कि यह गुप्त काल का सर्वोत्तम मन्दिर है। दीवारों पर अङ्कित कक्षा भारतीय शिल्प कला के उच्चमनमूर्नों में से है।

### पाटन--

नैपाल का महा महा बुद्ध मन्दिर संसार की एक आश्चर्य-जनक सृष्टि है। यह एक शताब्दी से अधिक समय में बन कर तथ्यार हुआ था। इसमें ४००० बुद्ध मूर्तियाँ हैं। यात्री ओल्ड फील्ड कहता है कि “नैपाल की उपत्यका का यह अत्यन्त शानदार मन्दिर है।”

### सुन्दर नारायण मन्दिर--

नासिक का यह मन्दिर अत्यन्त सुन्दर है। यह चौकोर है।

इसकी लम्बाई २६० और चौड़ाई १२० फीट है। इस मन्दिर के निर्माण में ७ लाख रुपया व्यय हुआ था।

कला मर्मज्ञ कार्डिल जी० ई० वेंट बुद्ध गया और अनन्दपुरा लङ्गा के मन्दिरोंका विवेचन करते हुए लिखते हैं “इनकी बक्काशी बड़े आश्चर्य जनक ढंग से की गई है इनकी महत्ता का रहस्य मूक पत्थरों द्वारा अद्वौद्वाटित रह जाता है। + + + सोमनाथ पुरका केशव मन्दिर, मदोवरा का मीनाक्षी मन्दिर और विरुमाक्ष देवालय कला के उत्तम नमूने हैं।” १३

न्यूनत में आप कहते हैं। “मन्दिर चाहे बौद्धों जैनियों या हिन्दुओं, किसी के भी हों, सभी उसी भावना से अलंकृत हैं। वे भारतीय महानतम कला के स्मारक हैं। इस थोड़े से स्थान में प्राचीन भारत के प्रतिष्ठित कायों का विवरण देना कठिन है।” १३

भारतीय कला और सभ्यता का गौरव आज ईंट पत्थरों में बन्द है। कला की यह धारा इसी के जन्मसे कितनी सहजान्वित्यां पूर्व भारत में अठखेलियां कर रही थीं, मोहंजो दाहो में जाकर आंखों से देखिये, मथरा अजायब घर की ‘परखम’ और कलकत्ते में ‘यक्षिणी’ की मूर्ति का निरीक्षण कीजिये, बहुत कुछ आभास मिल जायगा। कॉटनमैन और इतिहासज्ञ स्मिथ कहते हैं कि हिन्दुओं की प्राचीन मूर्तिकला हमारी प्रशंसात्मक भावनाओं को जागृत कर देती है। दक्षिण किनारा के जैन मन्दिरों का वर्णन करते हुए बेलगोला (मौसूर) की मूर्तियों के विषय में कहते हैं—

उदयन आश्वनि १३४० ( वंग )

The great temples P. 27

22. Modern review for January, 1919

23. Vide introduction to Indian art. Pages 4-8

“यहां दुनियां की मर्दी महान मूर्ति है।”<sup>२४</sup>

भारत की शासन पद्धति कितनी उच्चल थी, इसका कुछ आभास वही ज्ञान सकते हैं जिन्होंने इसके प्राचीन साहित्य का अध्ययन किया है।

दुर्गा की प्रतिमा का वर्णन करते हुए मिस्टर एच० ई० हैवल बतलाते हैं कि हिन्दुओं की कला में भावों का उत्तम निर्दर्शन है। इसे किसी भी कस्टोटी पर कस कर कला का आश्चर्य जनक कार्य कहा जा सकता है।<sup>२५</sup> हिन्दू मूर्तिकला का यह चमत्कार पूर्ण निर्दर्शन चिग्काल तक भारत को समर्पिता की दौड़ में उन्नत रखेगा। चीनी विद्वान लियांगचिचाव भी स्वीकार करते हैं कि “मूर्ति भण्डार हमारा अमूल्य कोप है भारत की कृपा के बिना यह दृमें कदापि प्राप्त नहीं हो सकता था।”<sup>२६</sup>

### गुफाएँ—

विद्वान् वंट के शब्दों में ये पूर्ण इतिहासिक काल की स्मृतियां हैं। इनके अन्दरूनी अन्यकार की समता हम रात के समय जंगलों के अस्पष्ट रहस्य से कर सकते हैं। + + + किसी लकड़ी के टुकड़े पर नक्काशी कीजिये देखिये कैसा कठिन कार्य है। किर भी ऐतोरा में महान् खुदाई, उत्कृष्ट सौन्दर्य और आश्चर्य-जनक कौशल पाते हैं। एक ही पत्थर (Block) पर इतना बड़ा जबरदस्त नक्काशी का काम,—संसार में अद्वितीय है।<sup>२७</sup> प्रोफेसर हीनर सूचित करते हैं कि जो कुछ महान, शानदार और शिल्प कला में अलंकृत है वह यहां प्रतिविर्मान के ऊपर और अन्दर पाया जाता है।<sup>२८</sup> मिस्टर प्रिफथका कथन है कि दीघेकाल तक

24. Calcutta review for, 1919

25. Indian Sculpture and Painting.

26. Modern review for Jan. 1919

27. Historical Researches Vol II P. P. 60-70

मनक निरीक्षण के पश्चात् भी सुके कोई पत्थर ऐसा नहीं मिला जिसे कारीगरों ने आवश्यकता से कहीं भी अधिक काटा हो।<sup>23</sup>

"भारतीय शिल्प कला के प्राचीनतम अवशेष" मिस्टर मार्गिया ग्राह के शब्दों में 'सम्भवतः एलौरा, एलीफैन्टा और मालमठ की आश्चर्य जनक गुफायें हैं, जिनमें मूर्ति तत्त्वगत कला मौजूद हैं।'<sup>24</sup> विश्ववाची कने मूर्चित करते हैं कि एलौरा के गुफा मन्दिर ठोस चट्टान से तयार किये गये हैं। छत को रोकने वाले विशाल स्तम्भ बड़ी मुन्द्रता से लगाये गये हैं।<sup>25</sup>

### स्तम्भ-स्तूप—

विलम्ब महोदय भारतीय स्तम्भ कला की दाढ़ देते हुए लिखते हैं—'ये मिल रोम और यूनानी स्तूपों से अधिक मुन्द्र हैं।' पुरी के सामने बाले अरुण स्तम्भ के चरम सौन्दर्य में प्रभावित हो मिस्टर ब्राडन को कहता ही पड़ा—'यह दुनिया का एक सब से बड़ा मुन्द्र स्तम्भ है।'<sup>26</sup>

'लिङ्गराज शिखर ( मुखनेश्वर ) भारतीय कारीगरों का एक महानवम कौशल है। + + + निश्चय रूप से यह अभूत पूर्व मुन्द्र है।' यह हैं लार्ड रोनाल्डसन के विचार अब सूक्ष्मदर्शक कागु सन की भी सम्मति सुन लीजिए—'उदाहरणार्थ कल्पना कीजिए कि ऐसी इमारत के बनाने में एक लाख रूपया खर्च होगा तो इसकी नक्कासी में तीन लाख लगेगा।'<sup>27</sup> हैवल के कथन को भी ऐसा ही समझिए।<sup>28</sup>

23. The paintings in the Buddhist Cave temples of Aganta

24. Letters on India P. 58, ▶

25. A trip round the world P. 389

26. उद्यन, कार्तिक, १३४० ( बड़ा )

27. See India. a bird's eye view P. 256

जैन स्तम्भ (कनारा) के सम्बन्ध में मिस्टर चालहाड़म कहते हैं कि समस्त राजधानी एक आलोक, सौन्दर्य, और उच्च श्रेणी के पापाण कौशल का आश्चर्यजनक नमूना है। इन सुन्दर स्तम्भों की राजसी प्रतिप्रासं कोई भी बाजी नहीं ले जा सकता।<sup>३३</sup>

डब्ल्यू० एस० केन, एम० पी० की विश्व यात्रा की दास्ताव भी सुनिए। देहली के लौह स्तम्भ के सम्बन्ध में आप लिखते हैं—‘इसकी लम्बाई २४ इंच, धेरा १६ इंच और वजन १७ टन है। इस पर एक लेख भी खुदा है जो राजा देव का विजय स्मारक है। यह बड़े माकों की बात है कि इतने समय पूर्व, इतना बड़ा और वजनी लोह का स्तम्भ बनाने में समर्थ थे जिसे योरोप अभी बहुत दिनों बाद तक नहीं बना सका। यह १७०० वर्ष का पुराना है।<sup>३४</sup> एक बात जिसे योग्य यात्री भूल गया है दूरदर्शी फर्गुसन के मुंह से सुनिए ‘हिन्दू लोग धातु के काम में इतने निपुण थे ! यह कम आश्चर्य की बात नहीं है कि इतने दिन तक हवा पानी में रहने के बाद भी इस में सोचा (जंग) तक नहीं लगा।’

सारनाथ के स्तम्भ का उल्लेख करते हुए वी० ए०, रिय कहते हैं कि किसी भी देश में प्राचीन पशु मूर्ति कला का उदाहरण इस से श्रेष्ठ अथवा इस सुन्दर कला के समान पाना कठिन है।<sup>३५</sup>

पार्लियामेंट के भूत पूर्व सदस्य को बतलाते हैं कि बनारस से ४ मील की दूरी पर उसकी सीमाओं के अन्दर सारनाथ का

33. Indian antiquity Vol V P. 39.

34. A trip round the world, P. 354

35. History of fine art in India P. 60

स्तम्भ है। इसका निर्माण दुद्द के आठ शताब्दी बाद हुआ था। इस स्तूप का आधार पत्थरों पर है। इसका धेरा ६३ फीट है। और ६३ फीट की ऊँचाई तक पत्थर लोहे से जुड़े हैं। पत्थर के काम के ऊपर इमारत इंटों की है। कुल ऊँचाई १२८ फीट है। इस स्तूप के चारों तरफ कला का सर्वोत्कृष्ट निर्दर्शन है। इसका अवशेष ही देख कर पता चलता है कि समस्त स्तूप कितना सुन्दर रहा होगा यह एक अत्यन्त सुन्दर और अचरणजक स्तूप है। ३६

सांची का स्तूप दुनियां के अन्दर भारतीय कला का अद्वितीय नमूना है। मिस्टर जान-मार्शल के शब्दों में 'जिस कला को सांची के कलाकारों ने जन्म दिया है वह निसल्न्देह उस समय की राष्ट्रीय कला का प्रमाण स्वरूप है।' एक दो नहीं जनरल टेलर कनिंघम और मेसी सरीखे विद्वान भी इसे देखकर किरण्व्य विमूढ़ बन गये। किसी ने उसे महान कहा तो किसी ने बतलाया आकर्षक।

केने अशोक की दिल्ली वाली लाठ की प्रशंसा करता हुआ लिखता है कि यह लाठ कुछ हल्के गुलाबी रंग का बना हुआ है इस की लम्बाई ४० फीट है और २२०० वर्ष पूर्व बना है। ३७ भारतीयों की इस कला ने योरोप के लिए एक आदर्श का निर्माण कर दिया है। प्रोफेसर वीवर इसे स्वीकार करते हुए लिखते हैं— 'वास्तव में यह असंगत नहीं कि इमारों पश्चिमी मीनारें बुद्धों के स्तम्भों की नकल हैं। ३८

'एलीफेंटा और उसके मन्दिर भारती नकाशी-कटाई के

36. A trip round the world P.P. 313 '14.

37. A trip round the world Page 357,

\* Ancient and mediaeval India Vol Page 240.

शानदार नमूने हैं।<sup>१</sup> लार्ड रोनाल्डशे का कथन है कि यह गुरु मन्दिर, इनके शानदार स्तम्भ और टिटानिक कौशल (Titanic) जो एक दर्जन शताव्दियों से भी पुण्यता है जरा भी अपना प्रभाव उत्पन्न करने में असफल नहीं। मिस्टर निवेदिता एलोफ्टा का समरण कर कहती है कि यह हिन्दुओं के संयोजन भाव को आज तक चिरस्थायी बनाये हुए है।<sup>२</sup>

गुफा एवं मन्दिरों का निर्माण प्राचीन हिन्दुओं के कुशल कर्गों का अपना काम है। प्राचीन अथवा अवाचीन संमार आज तक इस कला का एक भी नमूना पेश करने में समर्थ नहीं हो सका। अन्त में हम विद्वान घंट के शब्दों में यही कहेंगे। 'मुझे आश्चर्य है कि हमारे आधुनिक पाठकों में कितनों ने इस आवश्यक सत्य को अनुभव किया है कि वह भावना जिसने एलोरा और एजन्टा की गुफाओं का निर्माण किया था अब भी भारतीयों में सुन्त है।'<sup>३</sup>

### दुर्ग-निर्माण—

जिस हिन्दू जाति ने अपने बाहुबल द्वारा अनेकों बार पृथ्वी को विजय किया था, जिनके सन्य सङ्गठन की धाक दुनिया में जर्मी थी, उनके दुर्ग-निर्माण कौशल का भी कुछ हाल सुन लीजिए। महाराज मनु ने, धर्नु दुर्ग, महीदुर्ग, जलदुर्ग, वृक्षदुर्ग सेनादुर्ग और गिरिदुर्ग का वर्णन किया है और सब प्रकार के दुर्गों में गिरि दुर्ग को ख्रेष्ठ बतलाया है।<sup>४</sup> अन्य ग्रन्थ कारों

<sup>१</sup> India, a bird's eye view P. 16.

<sup>२</sup> Foot falls of India history P. 176.

<sup>३</sup> Modern review for Jan. 1919.

<sup>४</sup> धर्नु दुर्ग मह दुर्ग मह दुर्ग मवदुर्गवर्क्ष-मेव वा। आ० ७ श्लोक ७०

गिरिदुर्ग चृदुर्ग वा समाश्रित्य वसेत्परम् ॥

ने भी गिरिदुर्ग जलदुर्ग गहरदुर्ग और भूमिदुर्ग का लेख कर पहाड़ी किले को ही प्रधानता दी है। इस विवेचन में स्पष्ट है कि प्राचीन भागतीय इच्छीनियर इस कला में भी पूर्ण संयोग कुशल थे। ग्रोफेसर क्लाइड बटेले (Cland Bately) प्राचीन नगर निर्माण व्यवस्था की उत्तमता को स्वीकार करते हुए लिखते हैं कि उन दिनों की गढ़-निर्माणा कला इतनी सफल थी कि कभी कभी दीवारों के गोली चलाने वाले छोड़ों और तुकीले फाटकों के द्वारा शट्टों को टक्करें मार कर लौटना पड़ा था।

सोल्हवीं शताब्दी का यात्री एफ० मांसरेट ग्वालियर के किले का वर्णन करता हुआ लिखता है कि एक पहाड़ी चट्टान की चोटी पर यह बहुत मजबूत किला बना हुआ है।<sup>40</sup>

पंजद्वीं शताब्दी के आदि में भारत आने वाला यात्री कमालुदीन अब्दुल रज्जाक हिन्दू सम्राट विजयनगर के किले का वर्णन इस भान्ति करता है—‘विहारा एक पहाड़ी चोटी पर पत्थर और सीमेंट का बना हुआ था। उस का फाटक बहुत मजबूत था। सातवें दुर्ग का निर्माण केन्द्र में था। वह हिरात के बाजार से इस गुनी भूमि धेरे हुए थे।’ स्वेल (Swell) कहता है—‘वास्तव में यदि दक्षिण की पहिली दीवार से वह नापा जाय तो आठ मील होगा।’ इस विशाल किले के ध्वंसावशेष अब तक केवल जा सकते हैं।<sup>41</sup>

‘रामगढ़ का किला लगभग ३००० फीट की ऊँचाई ऊँची चट्टान पर बना था। यह जिवरालटर की ही भान्ति अजय सर्गेण तु प्रयत्नेन गिरिदुर्ग समाश्रयेत्।’

“ ७१

ऐप हि वाहुगुण्यन गिरिदुर्ग विशिष्येत ॥

40. Commentary of Father Monseprate P. 23.

41. Scenes and Characters from Indian History P. 56.

था । + + + कला की अपेक्षा प्रकृति ने ही इसे अधिक मुहूर्त बनाया था ।'—यह है ईस्ट डिएड्या कम्पनी द्वारा शिवाजी को सेवा में प्रोप्रिएट हेनरी आफ सिएडन नामक दृत का चित्रण । ०३

भारतीय इर्जनियर दुर्गा-निर्माण कला में कितने निपुण हैं, अधिक इतिहास को पलटने की आवश्यकता नहीं, भारत के प्रधान नगरों में जाकर देख लीजिए ।

अब थोड़े ही दिन पहले लिखे गये भरतपुर के किले का भी विवेचन कर्नल मैलसेन की जवानी सुन लीजिए—

'उनकी राजधानी का दुर्ग भारतवर्ष में ऐसा था, जिसकी दीवारों के सामने वृटिश सैन्य दल को हटना पड़ा ।' भारत-दुर्भाग्य, फूट ने इस दुर्ग को भी अधिक काल तक विजय न रखा । वेल्स की जवानी इस का भी हाल सुनिए—'भरतपुर दुर्ग पर विजय प्राप्त कर लेने पर भी कोई हिन्दुस्तानी दूसका विश्वास नहीं करता कि भूतपूर्व दुर्ग जीता गया है । वे हिन्दुस्तान में येरं रहने के अन्तिम समय तक यही कहते रहे कि भरतपुर दुर्ग जीता नहीं मोल ले लिया गया है ।' ०३

यह है हिन्दुओं की कला का आश्चर्यजनक नमूना । भारत के भूतपूर्व वायसराय लार्ड इरविन महोदय ने सन् १८८८ ई० में व्याख्यान देते हुए कहा था—जोधपुर का लाल किला अभूत पूर्व और चित्रवत्तरचक की भान्ति मारवाड़ के मैदान में खड़ा है । इसकी शिल्प कला इसके निर्माण कर्ता की दृढ़भावनाओं

42. Scenes and Characters from Indian history P. 215

\*देविर्णी दुर्गों के विषय में विस्काउटेस फाकलैंगड का कथन है पहाड़ों की कलों के सम्बन्ध में दर्शण के अन्दर कहावतें प्रचलित हैं कि उनका निर्माण मानवीय विदान-वेदी पर हुआ है । Chow-Chow P. 21.

43. Native State of India,

का प्रतिविम्ब है। इसका प्रत्येक पत्थर आपके महाराजा के पूर्वुत्तरों के युद्ध वीरता को बताता रहा है, जिस से इस देश के हिन्दूम्‌म के किनने पृष्ठ भरे हैं।<sup>44</sup> मिस्टर एम० प्राहस० अश्चर्यचकित होकर कहते हैं कि भारत का पूर्व सैनिक-शिल्प कितना स्वाभाविक रहा होगा।<sup>45</sup>

### कुबां-तालाव—

यह भी भारतीय कला का एक उत्कृष्ट नमूना है। मानवता को अधिकाधिक आराम पहुंचाने के लिए प्राचीन हिन्दू जो कुछ कर गए हैं, आधुनिक संसार उनका सहस्रांश भी ना नहीं कर सका। हिन्दुओं के पवित्र स्थानों के तालाबों का वर्णन करने हुए अलवेहनी लिखता है—‘इस कला में उन्होंने कमाल हासिल किया था। हमारे लोग (मुसलमान) जब इसे देखते हैं आश्चर्य चकित रह जाते हैं। वे उसका विवेचन करने में भी असमर्थ हैं।’<sup>46</sup> इतिहासक्ति एलिफेंसटन बतलाते हैं कि हिन्दुओं का महानतम-कार्य है उन के तालाब, और उनके कुंए भी बहुत सुन्दर होते हैं।<sup>47</sup> चीनी यादी हुआनसांग की जबानी कन्नोज का भी वर्णन सुनिए—‘चारों तरफ कुञ्ज, फूल, झील और तालाब दर्पण की भान्ति चमकते मालूम होते थे।’

‘मैंने स्वयं कुंए देखे हैं, वे बर्दिया गोल और धारीदार और स्वच्छ होते हैं।’ यह है लार्ड रोनाल्डशे के हिन्दुओं के कुओं के प्रति विचार। सर एफ० बी० वाट की सम्मति है कि इटली की लों का देश मशहूर है किन्तु वहां एक झील भी उदयपुर के

44. Military Reminiscences. Vol. II P. P. 240, 241

45. Letters on India.

46. Alberuni's India Vol II P. 144,

47. History of India.

समान सर्वोत्कृष्ट नहीं।<sup>48</sup> इतिहासवेता मारियाप्राज्ञ भी यहां कहते हैं कि हिन्दु प्रां के सब में अधिक प्रशंसनीय काम हैं उनके सुन्दर तालाब।<sup>49</sup> रेवेहडर पर्सिवल भी सूचित करते हैं कि भारतीय शानदार तालाब कृत्रिम कला के सुन्दर नमूने और अपरचितों को प्रभावित करने वाले हैं।<sup>50</sup>

लङ्घा के सरोवर का वर्णन करते हुए हेनरी डब्ल्यू केव एम० प० एफ० आर० लिखते हैं—संसार में ऐसा कोई स्थान नहीं जहां न्यूरोलिया के जी० एस० सभी चित्ता-कर्पंक सामान एकत्र हों।<sup>51</sup>

भारतीय कलाकारों ने पुनीत भावों की कूर्ची ले कर 'सुन्दर' के श्री चरणों में जो कुछ समर्पित किया है वह केवल लोगों की आंखों के लिए संसार का एक आश्चर्य और हृदय के उनुभव की चीज है। आज तक संसार ने हिन्दू कला की समता न अन्यत्र कहीं पाई है और न भविष्य में पाने की कोई आशा ही है। दुनिया की कलाएँ इसी हिन्दू कला का प्रातिदिम्ब हैं। कई दुराग्रही पाश्चात्य विद्वान कहते हैं कि यूनानी कला का प्रभाव भारतीय कला पर पड़ा है किन्तु ऐसे महानुभावों से प्रो० एच० जी० राली विन्सन आई० ई० एस० कहते हैं—'इस कल्पना का कोई कारण नहीं कि भारत यूनानी शिल्प कला से प्रभावित हुआ।'<sup>52</sup> ई० वी० हैवल का विचार है कि भारत ने अपने शिल्पी प्रचारक आदि समस्त दक्षिण ऐशिया, सीलोन, स्याम और कम्बोडिया को भेजे थे उनके द्वारा विदेशों में भारतीय

48. The other Side of the Lantern.

49. Letters on India P. 63

50. The Land of the Vedas P. 132.

51. Intercourse between India & the western world P. 168.

कला का प्रचार हुआ । चीन और कोरिया द्वारा इसका प्रवेश जापान में हुआ । हम यह भी स्वीकार करते हैं कि इसका प्रभाव योरोप पर भी पड़ा ।<sup>५२</sup> मिस्टर कालमैन का विश्वास है कि भारतीय वस्तु कला अवशेष सम्भव है योगोपित्यन कला को जये भाव देकर उसे उत्तम और सुन्दर बना दें ।<sup>५३</sup>

भारतीय प्राचीन हिन्दू कला के सरदन्ध में कला के पाश्चात्य परिणाम वंट की भविष्य वाणी भी सुन लीजिए—‘मैं यह विचार करने का साहस करता हूँ कि समय के साथ भारतीय अपनी इस पैतृक सम्पत्ति के महान् मूल्य को समर्झेंगे । निकट भविष्य में कोई महान् आत्मा उत्पन्न होगी, और एक पल मात्र में, कला भवन के सदस्यों प्रभास सम्पन्न शिखरों को जादू की छड़ी से छू देगा ! उस समय पाश्चात्य जगत् इस कहावत की सत्यता को समर्झेगा—‘यह है भारत की आवरण हीन आत्मा भारतीय इतिहास—भारतीय प्रेम ।’<sup>५४</sup>

भारत के कण्ठ-कण्ठ में उसकी अतीत कला का चमत्कार भरा है, उसके खण्डरों, टीलों, स्तूपों और मन्दिरों किसी को भी देखिए महत्वपूर्ण इतिहास का, भारतीय भावनाओं का बोलता चित्र आंखों के आगे आजायगा । पुरातन शिला लेखों, भूगर्भ से प्राप्त होने वाली वस्तुओं की भित्ति पर जिस दिन भारतीय कला का इतिहास लिखा जायगा, उस दिन संसार समर्झेगा कि यदि प्राचीन हिन्दू कलाबन्त उन्हें यह पाठ न पढ़ाते तो कदाचित् ही वह कन्द्रा निवासी जंगलों से अभिन्न होते । कें हैवल

५२. See, Indian Sculpture and Painting,

५३. Hindu mythology Preface P, IX,

५४. The modern review for January 1919

माहव की सम्मति है कि सिवाने की वजाय आज भी योगेपियन भारतीय कला से बहुत कुछ सीख सकते हैं।<sup>५५</sup>

### प्राचीन इंडीनियर—

जिस भारतीय कला को देख कर विदेशी दर्शक किंकर्तव्य विमूढ़ बन गये, उसके कलाकारों इंडीनियरों के सम्बन्ध में भी कुछ न कुछ जान लेना आवश्यक है। बहुत दूर तक आ कर क्या कीजिएगा। गमायण कालीन कुशल इंडीनियर नल और नील को ही देख लीजिए नदी नालों पर पुल बांधते हुए आधुनिक इंडीनियरों को वर्षा बीत जाते हैं फिर समुद्र की छाती पर आदम का पुल खड़ा कर देना कोई सख्तौल तो नहीं।

महाभागत काल के यम की करामात देखने ही से तो युविष्टि की सभा का स्मरण कर लीजिए। अमरीकन आलोचक तो उम की चातुरीक चित्र पढ़ कर चकित हो जाता है। अब जरा मौर्य कालीन कला की कुशलता से तत्कालीन इंडीनियरों की योग्यता का अन्दाज़ा लगाइये। इतिहास लेखक वी० ए० स्मिथ तो कहते हैं—‘इननी बड़ी ५० टन वजनी लाठों का बनाना, ले जाना और उन को स्थापित करना, यही इस बात का प्रमाण है कि अशोक कालीन पापाणि कार और इंडीनियर किसी देश-काल के इंडीनियरों से कम नहीं थे।’<sup>५६</sup>

### ललित कलाएं

मनुष्य की सम्पूर्ण शक्तियों का आदिम मूल स्रोत है उस की आत्मा। भाव (Feeling), विचार (Thinking) और वृत्ति

(willings) इन तीनों व्यवहारों का समावेश आत्मा में होता है। अन्तु इन शक्तियों के ही विकास की मंज्ञा मन्मना है। भावों के मनुनम विम्नार से ही ललित कलाओं का विकास उत्त-मन्मना की एक सर्वमान्य कसौटी है।

ललित कला के अन्तर्गत वाम्नु-कला, मूर्ति-कला काव्य-कला चित्र-कला, और संगीत-कला, इन पांच कलाओं की गणना की जाती है। इन से मानसिक विकास द्वारा अलौकिक आनन्द की प्रपत्रि होती है। मनुष्य एक मौन्द्योपासक प्राणी है। वह अपनी उपयोगी वस्तुओं को यथा शक्ति सुन्दर बनाने की चेष्टा करता है। मौन्द्य की यह बढ़ती हुई शैकीनी ही कलाओं के विकास का कारण है अन्य कलाओं के विवेचन अन्यत्र पुस्तक में किया गया है यहां केवल अन्तिम दो कलाओं पर विचार किया जायगा।

## सङ्गीत—

संसार में रोना और गाना सभी जानते हैं किन्तु भारतीयों की सङ्गीत-साधना के इतिहास का अध्याय कहां से शुरू होता है इस का पता लगाना कठिन है। ईश्वरोपासना में तल्लीन सामग्रन पृथ्वी और आकाश को पुलकित करने वाले ऋषियों की सङ्गीत-प्रियता एवं कुशलता की साक्षी सन-सन करती हुई सर्वार आज भी दे रही है। इस कला का भारत भूमि में कितना सुन्दर विकास हुआ, गन्धर्व वेद को उठा कर देख लेना ही पर्याप्त है। रेवरेण्डर पीटर पर्सिवल कहते हैं कि प्रत्येक अन्य वस्तुओं की मान्ति सङ्गीत भी भारत के साथ सम्बन्धित है, वह एक स्वर्गीय व्यस्तता का आविभाव करती है। पवित्र वेदों में ने एक उपवेद गन्धर्व भी है। ... ... ... भारतीय ललित कलाओं में इसका विशेष स्थान है। इसका संवर्धन यद्यपि कम

हो गया है किन्तु फिर भी आनन्दोत्पादक इस अद्वितीय कला या विज्ञान में काफी कमाल हासिल कर रखा है। आज हिन्दुओं के अतिरिक्त अन्य लोगों में इस के सम्मोहन को गृहण करने की कुशलता नहीं है।<sup>५७</sup> श्रीमती एनी (Anne) सी० विल्सन बतलाती हैं कि प्रसिद्ध प्राचीन सुकवि हिन्दू प्रख्यात सङ्गीतका भी रहे हैं। ..... भारत के अस्तित्व में सङ्गीत का सम्मिश्रण है। दिन के प्रत्येक घण्टे और वर्ष की प्रत्येक ऋतु में इसी का स्वरमाधुर्य व्याप्त रहता है।<sup>५८</sup> सर डब्ल्यू विलियम हेटर की सम्मति है कि यूनानी सङ्गीत-विद्यार्थियों को आश्चर्यचकित करने वाला प्राचीन भारतीय सङ्गीत अब भी जीवित एवं सुरक्षित है।<sup>५९</sup> मिस्टर कालमैन सर डब्ल्यू जॉस का हवाला देकर कहते हैं कि हिन्दू सङ्गीत हमारी अपेक्षा अच्छे सिद्धान्तों पर निर्मित किया गया है। मिस्टर आर्थर ह्विटन (Arthur whitten) अंग्रेजी और भारतीय सरगम की तुलना कर इसे प्रशंसनीय बतलात है—

भारतीय	सा रे गा मा पा धा नी
योरोपियन	Doh Ray Me Fat Sol La Tee.

कुछ पाश्चात्य विद्वानों का विचार है कि आधुनिक शब्द गम्यूट (Gamut) भारती सरगमा 'गा, मा' से लिया गया है।

५७. The Land of the Vedas P. P. 132, 133, 134

५८. Short account of the Hindu System of music.

५९. Imperial gazetteer P. P. 224.

६०. Hindu mythology Preface P. IX

हिन्दुओं के प्रसिद्ध राग हिन्दोल, श्रीराग, मेवमलार दीपक नैरवी और मात्तकोस हैं। इसके अतिरिक्त ३६ रागनियां भी इन्हीं ने सम्बन्धित हैं प्रोफेसर विल्सन की राय है कि हिन्दू संगीत निर्माण वैज्ञानिक आधार पर हुआ है। सर डब्ल्यू. जॉन और काल ब्रक के वर्णनों ने पता चलता है कि कि हिन्दू लोगों ने इस के लिपि-तत्व ममय विभाग आदि का वर्गीकरण बड़ी सूक्ष्मता ने किया है जैसा कि योरोप में नहीं मिलता ११ मिस्टर हिटन भी इसी का समर्थन करते हुए कहते हैं ये गाग एक प्रकार की प्रेम भावना का संचार करते हैं १२ ये स्थान, ऋतु और काल के अनुसार गाये जाते हैं। १८७८ से १८८२ तक भारत में निवास करने वाली श्रीमती रावर्ट मास किंग यैथिपि इस सम्बन्ध में कोरी ही रहीं फिर भी आप लिखती हैं कि 'मैंने सुना है कि वड़े वड़े योरोपियन संगीतज्ञ इसे अत्यन्त मनोरंजक, सुन्दर और अतीव वैज्ञानिक रूपाल करते हैं ।' १३

वीकर महोदय कुछ प्राचीन संगीतज्ञों के नाम भारत, ईश्वर प्राण और नारद बतलाते हैं । १४ नायक गोपाल, वैद्यनाथ, और नानसेन विश्वदिग्गज्वर आदि भारत के सुप्रसिद्ध संगीतज्ञ हो गये हैं। नायक गोपाल के सम्बन्ध में मिस्टर हिटन बतलाते हैं कि उनका संगीत जादू का प्रभाव उत्पन्न करता था। आप नानसेन के सम्बन्ध में भी कहते हैं कि उन्हें श्रीराग (रात्रिगायन) को अकबर की ओर से दिन के दोपहर में गाने की आङ्गा हुई। फलतः जहाँ तक रागी का स्वर पहुंचा वहाँ तक वायुमण्डल में

61 The music of the Ancients P. P. 21, 22,

62. Mill's India Vol II P. 153,

63. A civilians wife of India Vol I P. P. 278, 279

64. Webers Indian Literature P. 279

रात्री का अंधकार छा गया । ६५ भारत के गायकों के करिशमे निराले थे । निर्दय लंगड़े तैमूर की सभा में निव्वत्तर करने वाला भी भारत का प्रजाचक्षु गायक दौलत था ।

### वाद्य यंत्र—

संगीत कज्ञा और वाद्य यंत्रों का चोली दामन का साथ है । भारतीय साहित्य में इनके विवेचन अलग २ प्रन्थों में किये गए हैं । प्राचीन संगीतज्ञों ने वाजों को चार भागों में विभाजित किया है । ( १ ) तत ( तंत्रीगत ) ( २ ) आनन्द ( चर्मवद्ध ) ( ३ ) शुपिर ( रध्रंयुक्त ) ( ४ ) धन ( धातुनिर्मित )

संगीत दामोदर प्रन्थ में केवल २६ प्रकार की वीणाओं का उल्लेख किया गया है । इसी भान्ति आनन्द वाद्ययंत्रों के अनेक भेद है जिस में से ३० प्रसिद्ध है । ६६ प्राचीन हिन्दुओं के वाद्ययंत्रों का भी निरीक्षण वैज्ञानिक रीति से किया गया था । विरक्त हृदयों में प्रेम के दरया बहा देना, कायरो को वीरत्व से भर देना—हिन्दू वाद्ययंत्रों का मामूली काम था । डाक्टर टिनेट की राय है कि 'यदि हम केवल वाद्ययंत्रों की संरूप्या को ले कर हिन्दू संगीत विद्या का निरीक्षण करें तो भी हिन्दू कुशल संगीतज्ञ ठहरेंगे ।' ६७ मनुष्य का तो कहना ही क्या है, भारतीय वाद्य-नाद को सुन कर कुरंग भी जाल में अपने आप को फंसा देता है, विषधर व्याल मुरथ हो कर स्वयं सपेरे की भोली में पहुंच जाता है ।

मिस्टर क्लीमेंट भारतीय संगीत की इस शब्दों में दाद देते

65 Music of the ancients P. 21

66, विशेष जानने के लिए 'संगीत शास्त्र' 'संगीत मकरन्द' देखिए ।

67. Hindu Siperious P. 321 foot note

हैं। 'स्वरूप के विद्यार्थीं के लिए भारतीय सङ्गीत एक नये नंसार का उद्योगन करता है।' ६८

गायक की स्वर लहरी के साथ मन मयूर का नाचने लग जाना, जब कुछ भूल कर आनन्द की अनन्त तरङ्गों में धिरकने लगना—यह है भारतीय सङ्गीत का प्रभाव ! कारण, विदुयी शिरोमणी मैनिंग के मुंह से मुनिये—'हिन्दू गायक केवल सङ्गीत मस्तव्यी वातों का ही ज्ञान नहीं रखते अपितु उस कला में भी कुशल होते हैं।' ६९

सर हेटर इस सम्बन्ध में खोज करते करते पांगिन कालनक पहुंचे हैं। आप बतलाते हैं कि सङ्गीत लिपि का नियमन पांगिन काल से पूर्व हुआ था यह सङ्गीत लिपि भारत ने इरान किर अरब और वहां से गाइडो डी अरेजो द्वारा इसी की र्यारहवीं शताब्दी में योरोप पहुंची।' ७० भारत में जन्म लेकर इस सङ्गीत विद्या ने विश्व के कोने कोने को मुखरित कर दिया। प्रोफेसर बीवर आदि कितने ही पाश्चात्य परिषिद्ध भी इसे मुक्त करन से स्वीकार करते हैं।

अभी थोड़े दिनों की बात है १६०७ ई० में पार्लियमेन्ट के प्रसिद्ध सदस्य के केरहाड़ी महोदय भारत पधारे थे। आप ने यहां का प्रसिद्ध 'वन्द मातरम् गायन' सुना और विमुख हो गये। ७१ आप ने अपनी पुस्तक में उसका अनुवाद भी दिया है जो पाठकों के अवलोकनाथ उसका कुछ अंश यहां उद्घृत किया जाता है।

68. Ibid P. 78

69. Antiquities and哇लीवल India Vol II P. 141.

70. Indian Gazetteer P. 223,

71. India Impressions and Suggestions P. 15

वन्दे मातरम् ।

तु जनाम् सुकनाम् मत्यज-शीतजाम्

शस्य-श्यामजाम् मातरम् ।

शुभ्र ज्योतस्ना-पुनकन्-यामिनीम्

फुल्ल-कुमुमित-दुमदल्-शोभिनीम्

मुहाम्बिनीम्-सुमधुर-भाषिणीम्

सुखदाम वरदाम मातरम् ।

त्रिंश-कोटी-करण करकन निनाद कराले,

द्वित्रिंश-कोटी-भुजैर्वृत खरकरवाले

के बोले मां ? तुम्ही अबले,

यहुचन धारिणीम्, तमामि तारणीम् ।

रिपुद्वन वारिणीम् मातरम् ।

वन्दे मातरम् ।

My motherland I sing,  
 Her Splendid Streams, her glorious trees,  
 The Zephyr from off Vidyan heights,  
 Her field of weaving Corn  
 The rapturous radiance of her Moon lit nights,  
 The trees in flower that flame a far,  
 The Smiling days that sweetly vocal are,  
 The happy blessed Mother land !

## चित्र कला

चक्रनाम कृत्रिम पत्रिपंक्ते: कपोत पाञ्चाषु निकेतनानाम् ।  
मार्जे रसप्यायन निश्चताह्न्, यसां जनः कृत्रिममेव भेने ॥ शिगुपान वन् ।

चित्रकला, भारत की अपनी प्राचीन चीज है। ग्रेमी जनों के आकुल हृदयों को मान्त्वना प्रदान करने की इसमें वहूत कुछ शक्ति मौजूद है। पुरुषों ही ने नहीं प्रत्युत चित्र लेखा और रत्नावली सरीखी भारतीय ललनाओंने अपनी कोमळ अंगुलियों में तूलिका ले कर कला के कमाल दिखलाये हैं। साहित्य और शिल्प सर्वत्र ही चित्रकला की प्रभा जगमगा रही है। भद्रामुनी वात्सायन ने इसके छै भेद बतलाये हैं—कपभेद, प्रमाण, भाव लावण्य योजना, सादृश्य और वर्णिका भंग !

प्राचीन भारतीय कला की प्रशंसा करते हुए रेवरेण्डर पीटर पर्सिवल लिखते हैं—‘चित्रकला की टृष्णि से हिन्दू प्राचीन मिसियों (Egyptians) से बढ़कर है ।’<sup>72</sup> एजन्ता की चित्रकला का निरीक्षण कर मिस्टर ग्रिफ्थ्स (Griffths) कहते हैं—‘चित्रकार जिन्होंने ये चित्र खींचे हैं, देव थे ।’<sup>73</sup> इतिहासकार अब्दुल फजल की राय है कि ‘उनकी (हिन्दुओं) चित्रकला हमारी कल्पना से भी ऊंची हैं। समस्त संसार में शायद ही कोई उनकी समता कर सके ।’<sup>74</sup> चीनी विद्वान लियांग चिचाव मुक्केठ से स्वीकार करते हैं कि भारतीय प्रभाव ही चीनी कला का आधार भूत है।

72 The Land of the Vedas P. 137

73. Indian Antiquary Vol III P. 24.

74 Bloch man's Asia Akbary Vol I P. 108

चिज्जपट पर चित्र प्रस्तुत कर कुछ काल के लिए आंगों को हैरत में डाल देना हिन्दू चित्रकारों की ही कलम का करिशमा था। मिस्टर मिल ने विलकुल ठीक कहा है—‘हिन्दू वड़ी कुशलता के साथ चित्रण करते हैं। ... ... वे व्याक्ति और समृद्ध दोनों ही के चित्र खींचते हैं और वड़ी वारीकी से। इतिहान्त गण्ट दक्षिण का वर्णन करता हुए लिखते हैं कि यहां लोगों में ललित कलाओं का अच्छा विकास हुआ था। मिस्टर विसेन्ट स्मिथ भी मुक्कंठ से स्वीकार करते हैं कि हिन्दुओं ने इस क्षेत्र में आश्चर्य जनक सफलता प्राप्त की थी।’<sup>५</sup>

पाश्चात्य प्रभाव से भारतीय चित्रकला को वित्तना दक्ष पहुंचा है सर जान स्टेकली के शब्दों में सुनिए—‘भारतवर्ष को हम (पाश्चात्य) लोग चित्र कला और वस्तु कला आदि कुछ नहीं सिखा सकते। हमने भारत के सद्यः जीवित सुन्दर कलाओं को पतित कर दिया है। जो कुछ पाश्चात्य प्रभाव भारत की कला पर पड़ा है उसका फल हितकर नहीं हुआ।’<sup>६</sup>

ग्यालियर राज्य ने अमफेरा जिले में वाघ गांव के पास की पहाड़ी गुफा में बहुत से रणीन चित्र हैं, उनका काल अनुमानतः ईसा की छठी और सातवीं शताब्दी माना जाता है। लन्दन के ‘टाइम्स’ पत्र में उनकी समालोचना करते हुए लिखा है कि योरोप के चित्र उत्तमता में इनकी समता नहीं कर सकते। डेली टेली-ग्राफ ने लिखा है कि कला की दृष्टि से ये चित्र इतने उत्कृष्ट हैं कि इनकी प्रशंसा नहीं की जा सकती।

योरोपियन और भारतीय चित्र कला की तुलना करते हुए मिं० ई० वी० हैवल लिखते हैं, योयोपिय चित्रों के पंख कटे होते

हैं, कारण यहां लोग केवल पार्थिव सौन्दर्य का करना ही जानते थे, और भारतीय चित्र कला अन्तरिक्ष में ऊँचे उठे हुए हृश्यों को धगधाम पर लाने का भाव और सौन्दर्य को प्रकट करी । ११

## नृत्य कला

जिस नृत्यकला को विज्ञान वेताओं ने स्वास्थ्य एवं प्रसन्नता का एक साधन समझ रखा है, जिसका आज पाश्चात्य देशों में दोल वाला है । उस नृत्यकला का जन्म स्थान यही पुरातन भूमि है । अस्तु इन के सम्बन्ध में भी कुछ लिख देना असंगत न होगा मेघमाला का दर्शन कर जिस भान्ति सयुर उन्मत्त होकर नाचने लग जाता है ठीक उस भान्ति उस सर्वव्यापी सचिदानन्द के साथ अपना स्नेहमूत्र जोड़ कर भक्ति विरक्ते लग जाते थे । भारत वर्ष में इस कला के जन्म का यही इतिहास है ।

हाथ पैर पटक कर नृत्य की नकल करना दूसरी बात है किन्तु कला को समझना कठिन है । आज भी एक दो नहीं अनेकों योगोपियन महिलाओं ने इस पर सुधर होकर अपने नाम तक भारतीय रखे हैं । उद्यशङ्कर जैसे नृत्यकला निषुण ने संसार को हैरान कर रखा है । भारतीय इतिहास की राई रत्ती खोजने वाले कर्नल टड़ कहते हैं—‘अतिशय देव भक्ति से उन्मत्त नृत्क, रासमण्डल, आज भी कृष्ण के पवित्र त्योहारों में होता है । वह ( कृष्ण ) मुरुट वारण कर नृत्य करने की शैली से उपस्थित होते हैं और चारों ओर कुलांगनाओं के मध्य में खड़े हो कर बंशी बजाते हैं, उन के भी हाथों में वाद्ययंत्र होते हैं । ये

कुलांगनाये ही नव रागनियां कहलाती हैं, गायन में प्रत्येक स्वर माधुर्या द्वारा नव रसों की जागृत करती हैं। क्या हम इस के अन्दर अपालो (Apollo) और पवित्र नाइन (Nine) का आदि स्रोत नहीं पाते ! १८

### वस्त्र कला

ज्ञनेष्वनि सप्तरेषु यत्र, स्वच्छानो नारी कुज मण्डलेषु ।

आकाश साम्यं दधुरम्बरणि न नामतः केवल सर्थनोर्पि ॥ माघ

पुण्य-पावन भारतवर्ष कला कौशल के शिखरं पर बैठ कर कितना समृद्धिशाली था, सन् १६१६ ई० के औद्योगिक कर्मशाल की रिपोर्ट खोलिये, यहां प्रथम पृष्ठ पर आपको उसका यहिंकित आभास मिल जायगा 'जब पश्चिमीय योरोप जहां वर्तमान औद्योगिक संगठन का जन्म हुआ है, जंगली जातियों का निवास स्थान था। उस समय भारतवर्ष अपने शासकों की सम्पत्ति एवं उनके कारीगरी के लिए प्रसिद्ध था।'

कताई-बुनाई की कला इल अग्रन्तता देश में वैदिक काल से ही प्रचलित थी। बेदों में अनेक स्थानों पर ताना तनना और भरना का जिक्र आया है। एक स्थान पर लिखा है कि यज्ञ के वस्त्र को पूर्ण करने के लिए दिनों को ताना और रात को भरनी होती रहती है। महाराज मनु ने इस सम्बन्ध में नियमों तक का निर्माण कर डाला था। मनुस्मृति में १० पल सूत देकर ११ पल कपड़ा बसूल करने का विधान बतलाया गया है। क्योंकि कपड़े

में एक पल माड़ी लगती है। सुविश्वात भारतीय अर्धशास्त्री चाणक्य ने पांच पल कपास और पांच पल पटसन से एक पल मूत निकलना बतलाया है। शुक्लाचार्य ने तो अपने समय के एक कर्मचरी का उल्लेख किया है, जिसे वस्त्रार्प कहते थे।

इन उद्धरणों से मिछु होता है कि प्राचीन भारतीय इस कला में परिचित ही न थे प्रत्युत इसका वैज्ञानिक विकास भी उस आदिम काल ही में हो चुका था और शामन व्यवस्था में उसके नियम भी बन चुके थे। इसका समर्थन पाइन्यात्य इतिहासकी जवानी सुनिए—‘बुनने वालों का समाज विश्वस्त और सम्पन्न था। वह लेने देने का काम करने के अतिरिक्त जनता का सप्त्या भी जमा करता था।’<sup>७९</sup> बुनकरों की यह सम्पन्नावस्था और सामाजिक सम्मान तत्कालीन भारतीय वस्त्र-कला विकास और व्यापार का उत्तम प्रमाण है।

भारतीय कलाई, बुनाई कला के सम्बन्ध में इतिहास बत्ता मिल लिखते हैं कि ‘हिन्दुओं के कोमल ढांचे (Weaving frame) उनकी वाह्य चातुरी और गान के परिचायक हैं। इस सम्बन्ध में उनका स्पर्श अद्वितीय और उंगलियों की लचक आश्र्यजनक थी।’<sup>८०</sup> सूत कालने की कलामें भारतीय नारियों ने कमाल दासिल कर रखा था। आज भी आसाम और मध्य प्रदेश के कुछ जिलों में नववधूओं से चर्खा कतवाने के अतिरिक्त साल

79 Cambridge History of India Vol I

80. Mill's India Vol II P. 17

श्लोष्टने में ३३०४२६, शाहाबाद में १५६०० और गोमद्धपुर में १७५६०० स्त्रियां चब्बों पर सूत कात कर ३५ लाख रुपये वार्षिक कमाती थीं। दीनाजपुर की स्त्रियां ६ लाख, और पूरनियां जिले की स्त्रियों की आन १० लाख वार्षिक इसी काम से होती थीं,—निवन्ध संग्रह पृ० १०

भर तक दूसरा काम नहीं लिया जाता । मिस्टर ओर्मी कहते हैं ‘भारतीय स्त्रियां कबीं रेशम ढोडे (Pod) से निकालती हैं । एक ढोढ़ी रेशम उत्तमता की दृष्टि से २० डिमियों में विभक्त की जाती है । कातने समय की भावना इतनी उत्कृष्ट होती है कि जब धागा मुलायमत के साथ उनकी उंगलियों से निकलता जाता है उस समय इस काम में उन्हें आंखों की सहायता की आवश्यकता नहीं पड़ती । वे उसको ठीक उसी समय तोड़ती हैं, जब उसके पृथक करण की आवश्यकता होती है ।’<sup>१</sup>

वस्त्रकला भारत की प्रधान घरेलू कारीगरी थी । प्रत्येक घर में कम से कम अपने उपयोग के लिए वस्त्र तैयार करना एकान्त आवश्यक समझा जाता था । आज भी विवाह संस्कार में परिणत मण्डप के नाचे वर अपनी बधू को वस्त्र देते समय कहता है कि ये सुन्दर वस्त्र हमारे घर की स्त्रियों ने काते और बुने हैं । इन्हें तुम जीवन पर्यन्त धारण करो ।<sup>२</sup>

किन्तु आज कहां है वह भारत और उसकी देवोपम कलाएँ? मणिधर तिरोहित होगया है, केवल लकीर पीटने से क्या लाभ! डाक्टर वाटसन भारतीय धागे के समान सुन्दर सूत आज भी योरोप में नहीं पाते!

## वस्त्र—

आज से ठीक सौ वर्ष पहले संसार के शौकीन चर्खे के कते और करघे के बुने जिन भारतीय वस्त्रों पर निष्ठावर हुआ करते थे, आज का मैशीन-युग भी उनकी समता करने में असमर्थ है । रेवरेण्डर पीटर पर्सिवल उन्हीं का गुणगाण इस भान्ति करते 81. People and government of Hindustan Page 409 and 413, 82. ओं या अकृतज्ञ वर्यं या अतन्त याश्च देवी स्तन्तु नमितां ततन्थ ।

तारत्वा देवीजं र संब्ययस्वायुष्मतीदं परिधत्तव वासः ॥ मं. ब्र. ११६॥

हैं। भारतीय कला कौशल की सुन्दरता और सम्पूर्णता अत्यन्त प्राचीन काल से ही प्रशंसनीय है। + + + मिथ्र फारस अरब पुरातन काल से ही अपनी सुख-सामग्रियां इस असाधारण देश से प्राप्त करते रहे हैं। आधुनिक मैशीनरी भी उसकी समता नहीं कर सकती। उसकी बनावट की सुवृमारता नफासत और चमक अजीब थी। मानचेस्टर की कूट्रिम अला ढाके के मल्लमल के सामने तुच्छ हैं।<sup>८३</sup>

ढाके की मल्ल-मल्ल पारचान्य शौकीनों के लिए एक विलक्षण कौतुक था, जिसके लिए आज तक आंखें तरसती हैं। महात्मा बुद्ध ने धार्मिक जीवन व्यतीत करने वाली स्त्रियों के लिए उसके पहनने का नियेध कर दिया था। क्योंकि उन्होंने एक बार मल्ल-मल्ल पहने हुए स्त्री को देखा था जो बाहर से बिल्कुल नंगी दिखाई देती थी।<sup>८४</sup> इतिहासज्ञ थार्टन कहते हैं कि कोमलता और सौन्दर्य में भारतीय मल्ल-मल्ल अद्वितीय है।<sup>८५</sup> सम्राट अकबर को एक बार मल्ल-मल्ल का पूरा धान पंखे की जली में रख कर भेट किया गया था। औरंगजेब की लड़की ने एक बार ढाके की मल्ल-मल्ल पहनी थी यह इतनी अधिक बारीक थी कि उसके सारे अंग बाहर से दिखलाई देते थे। यह देख कर औरंगजेब नाराज हुआ। राजकुमारी ने बतलाया कि उसने सात तहे कर कपड़े को पहना है। पाठकों की कल्पना क्या, उस कला के कमाल तक पहुंच सकती है? अच्छा विद्वान भरे से ही पूछ लीजिये—इसके वस्त्र, अत्यन्त सुन्दर थे, जिसको कहीं मानुषीय कला ने उन्पन्न किया था।<sup>८६</sup> ढाका के रेजीडेन्ट महोदय के

८३ The Land of the Vedas P. 16

८४ Journal of the Royal Asiatic Society of Bengal Vol VI 1837

८५ British History of India

८६. Murray's History of India Page 27

लेखानुसार आध सेर हुई से २५० मील लम्बा सूत तैयार किया गया था। डाक्टर बाटम बतलाते हैं कि ऐसे थानों का मूल्य सन् १७७६, ई० में ५६० पौंड तक पहुंच गया था।<sup>87</sup> सुप्रसिद्ध इतिहास लेखक एल्फ्रेन्स्टन स्वीकार करते हैं कि भारतीय सूती वस्त्रों का सौन्दर्य और सुकुमारता बहुत काल तक प्रशंसित होती रही है। + + + बुन बट की उस नफासत को अब तक कोई देश नहीं पहुंच सका।<sup>88</sup> अभी हाल ही बात है कि भारत का परिभ्रमण करने वाले पार्लीमेंट के सदस्य जें० कें० हार्डी ने लिया था—मैंने निरीक्षण कर देखा है कि स्वदेशी माल अच्छे ही किसी का नहीं होता किन्तु कुछ विशेष कपड़ा जैसे धोती—कीमत में भी विदेशी माल की अपेक्षा सस्ती होती है।<sup>89</sup> धोतियों की कन्नी बनाना अंग्रेजों ने भारतीयों ही से सीखा था, किन्तु शिष्य आज तक भी बुड्डे गुरु का मुकाबला न कर सके। डाक्टर वैंस ने ढाके की मल-मल की प्रशंसा करते हुए कहा था कि इसे देखकर कुछ नहीं मालूम होता कि मुझ्यों की बनाई है।

### रेशमी वस्त्र—

सच बात तो यह है कि आधुनिक काल की उभरी हुई जातियां जिस समय तन ढाकने के लिए वृक्षों की पत्तियों और छालें खोजा करती थीं, भारतवासी रेशमी कस्त्र पहन कर बड़े तमाक से जहाजों पर संसार की गति विधि का निरीक्षण किया करते थे। पुराना ईतिहास लेखक प्लीनी सूचित करता है कि रोम सम्राट क्लोडियस के शासन काल में भारतीय रेशम की चमक और सुन्दरताने रोमन महिलाओंको पागल बना दिया था।

87 Textile Manufactor P. 79

88. Elphinston's History of India p. 163, 164

89. India Impressions and Suggestions

फलतः वहां डतना पतला वस्त्र पहनने की मनाही करदी गई थी। औरंगजेब काल में फ्रांसीसी यात्री का हवाला देती हड्ड डाक्टर ने विसेन्ट लिखती हैं कि अकेले बंगाल के कासिम बाजार नामक गांव में २२ लाख पौंड रेशम बिदेशीं को जाता था।<sup>१०</sup>

आज मे केवल २०० वर्ष पहले की बात है। इंगलैण्ड के एक कवि ने एक कविता लिख कर वहां की शौकीन महिलाओं को यह सलाह दी थी—‘भारती करधों के बने वस्त्र दद्यपि तुम्हारी सुपमा वृद्धि कर रहे हैं, फिर भी यहां के निवासियों की जिगाहों से तुम्हें अपने को छिपा कर रखना चाहिए कहीं ऐसा न हो कि अजीविका के लिए तरसने वाले यहां के कारीगर ईथं और क्रोध से तुम्हारे शरीर के इन वस्त्रों को छीन कर नष्ट करदें।’<sup>११</sup> पाठक अनुमान कर सकते हैं कि उस समय भारतीय वस्त्रकला और व्यापार कितना बढ़ा चढ़ा रहा होगा। क्योंकि समाज के नियमस्थान महिला मण्डल पर ऐसे असभ्य आक्रमण की कल्पना हीं अन्नभ्यता की योतक है। यह विचार कदाचित इंगलैण्ड में उसी समय उठा होगा, जब वहां के दस्तकारों की कल्पना भारत के वस्त्र निर्माण तक न पहुंच सकी होगी और देश में ‘भरता क्या न करता का प्रश्न उपस्थित हुआ होगा।

### शाल-दुशाले—

सर टामसरो महोदय बतलाते हैं कि एक भारतीय शाल को हम सात वर्षों से काम में ला रहे हैं। इतने दिनों तक उपयोग में लाने पर भी उसमें कोई विशेष परिवर्तन नहीं हुआ। सच बात यो यह है कि सुफत मिलने पर भी हम योरोपियन शाल का व्यवहार करना नहीं चाहते। एफ बनियर लिखता है कि कशमीर

को मालामाल करने वाली विलक्षण दृस्तकारी, उसके शाल हैं।<sup>९२</sup> मिसेज मेनिंग कहती हैं कि कशमीरी शाल आज भी अद्वितीय है।

### कालीन—

जै० वी० टेवरनियर मुगल काल की बारें बतलाता है कि यहां रेशमी और सुनहरे, रेशमी रूपहले और खाली रंशम के भी कालीन तैयार किए जाते हैं किन्तु मब से घटिया कालीन आगग के निकट वेलापुर (Vella Pour) में तैयार होते हैं।<sup>९३</sup> श्रीमती मेनिंग भारतीय कालीनों को देख कर कहती है—हमें भारत की कला की शिक्षा देने का प्रयत्न न करना चाहिए।<sup>९४</sup>

### जरवफ्त कमखाव—

मिस्टर एर्लिंफस्टन स्वीकार करते हैं कि रूपहले कमखाव और जरवफ्त भारत की अपनी कला हैं।<sup>९५</sup> टेवरनियर बतलाता है कि सोने और चांदी के तारों से बे सुन्दर वस्त्र तैयार करते हैं और वाप्ता भी बुनते हैं।<sup>९६</sup> विश्व-यात्री काहन बतलाते हैं कि अहमदाबाद में कपड़ों पर सोने चांदी के तारों से काम होता है।<sup>९७</sup> भारतीय इतिहासक्ष रमेशचन्द्रदत्त ने एक पाश्चात्य कवि का हवाला देकर बतलाया है कि पश्चात्य लोंग भारतीय रेशमी कारचोबी के वस्त्रों को बाजार में आंखें फाड़ फाड़ कर देखा करते थे।

92. Travels in the Mogul Empire P. 439

93. Taverniers travels in India P. 299

94. Ancient and Mediaeval India Vol II P. 363

95. Cole broke' Asiatic Researches Vol V P. 61

96. Taverniers travels in India

97. A trip round the world

भारतीय पुरातन काल से ही विविध प्रकार के वस्त्रों के लिए विस्मय है दुनिया के बाजारों में इसी देश के शाल का बोलबाला था। अस्त्रिया देश के सम्बन्ध में इतिहासिक खोज करने वाले डाक्टर संस कहते हैं कि प्राचीन काल में सिन्धु के आस पास गहने वाली जातियों के साथ काषुल का व्यापार रहा होगा। वहां की एक पुरानी वस्त्र सूची में मल-मल के लिए सिन्धु शब्द आया है। यूनानी भाषा में भी मिलने वाला 'सिन्दोन' इसी का अंगड़ा रूप है।

रोम और अरब के साथ भारत का व्यापार इसकी पहली शताब्दी में बहुत बढ़ा चढ़ा था, इसका पता अरब की कहावतों में भी चलता है। 'भारतीय रेशम वहां सोने के साथ तुलती थी। मिश्र को भी भारतीय वस्त्र प्रचुर परिणाम में जाते थे। ३००० वर्ष पूर्व भारतीय मल-मल में लिपटे हुए भर्ती (मुद्रे) उसका प्रमाण हैं। खलीफा उमर के मिश्र पर विजय प्राप्त कर लेने पर वह व्यापार शिथिल पड़ा था। पुरातन व्यापार का प्रमाणिक लेखक पेरिप्लस ने 'कार्यसास' शब्द द्वारा भारतीय वस्त्रों का वर्गीकरण किया है।

इसकी प्रथम शताब्दी का इतिहासकार एरियन लिखता है कि सभी देशों से कहीं उजले कपड़े अरब के लोग भड़ौच संलाल समुद्र को ले जाते थे और अपूर्ली में उतारते थे। मछली पट्टम की छीट का व्यापार धूम धाम से चल रहा था।

जुष्टियन की विधान माला ( ५वीं शताब्दी ) में भी भारतीय वस्त्र व्यापार का पता चलता है। हारूंरशीद भारतीय वस्त्र ही पढ़ना करते थे।

आठवीं शताब्दी का सब से पहला मुसलमान यात्री सुलेमान सौदागर भारत के किसी तत्कालीन रोहमी राज्य का बयान करता

हुआ तिखता है तंक इस गाउय म एक ऐमा कपड़ा होता है जो दूसरी जगह कहीं नहीं होता । वह कपड़ा (थान) छोटी अंगूष्ठ के धेरे से गुजर सकता है । पश्चम के वस्त्र भी होते हैं ।<sup>95</sup>

चौहाद्वारी शताब्दी का यात्री मर जान १६वीं शताब्दी के कादर मी० डी० जेरिश इच्चन बतूता, बनियर और टेबरनिय आदि मध्ये ने भारतीय वस्त्र व्यापार को बहुत बढ़ा चढ़ा बतलाया है । १७५७ ई० के लगभग डंगलैण्ड और भारत का वस्त्र व्यवसाय शिथिल पड़ गया, क्योंकि वहां भारतीय वस्त्र देवतावालों को (३००) रुपया और पहनने वालों को १५) रुपया जुमांत का नियम बन गया । शीरे २ ये नियम और भी कड़े हो गए ।

एक पाश्चात्य चिद्वान के शब्दों में 'भारतीय करघों ने कपड़े में इतनी सफलता प्राप्त कर ली थी जो आधुनिक योरोप अपनी मशीनों की सहायता से भी नहीं पा सका ।<sup>96</sup> भारत का यह वस्त्र व्यवसाय किसी न किसी रूप में १६वीं शताब्दी के प्रारम्भ तक चलता रहा । श्रीमती हिल्डाउड के शब्दों में 'भारत कलाकौशल में दुनिया में सब से बड़ा देश था ।<sup>97</sup>

### अन्य कलाएं

प्राचीन भारत की समृद्धि का मुख्य कारण उसकी विभिन्न कलाएँ और विशाल मस्तिष्क था । जिस ओर इसकी विचारधारा दौड़ी अमूल्य रत्न ढूँढ़ लाई । दुनिया मशीनवाद को सराहती है किन्तु आज के दिन भी भारतीय अपने हस्तकौशल से उसकी धज्जियां उड़ाया करते हैं । भारतीय एक दो नहीं हैं कलाएँ

98 सुलेमान सौदागर पृष्ठ ५४

99, Encyclopedaea Britanica P. 4:6.

100 Modern review, Sept. 1980

मीम कर कलाविद् कहलाने के अधिकारी बनते थे । यात्री स्टावरनम् लिखता है 'इतने कम औजारों से उतना कलापूर्ण कौशल, इसे देख कर कोई भी पाइचात्य विस्मत हो सकता है ।' १०१

### अलझ्कार निर्माण कला--

भारत के प्रत्येक भाग में कला-कुशल व्यक्ति हैं । वे थोड़े औजारों की सहायता से कारीगरी की विविध बढ़िया वस्तुएँ तैयार करते हैं । + + + मोने के आभूषण तो वे इतने सुन्दर बनाते हैं कि कदाचित ही कोई योगोपयन सुनार उन से वाजी ले जा सके । १०२ यह है १६४६ में भारत पश्चाने वाले फ़ांसीसी डाक्टर बर्नियर के शब्द । इतिहास वेत्ता एलिफ्स्टन भी उस भारतीय कला की पूरी पूरी प्रशंसा करते हैं । १०३ सच वात तो यह है कि अतीतकाल में भारत ही एक ऐसा सुसम्पन्न देश था जहां सोने चांदी और हीरों के ढेर लग रहते थे । आवश्यकता से अधिक होने ही के कारण लोगों के जेवर गङ्गाने की सूझा करती थी । अस्तु प्राचीन भारती ही इस कला के अविष्कारक हैं ।

### रंगाई--

डाक्टर टीनेन्ट और जेम्सनिल स्वीकार करते हैं कि भारतीय रंग भूमण्डल में सब से अधिक चमकदार होते हैं । हिन्दू लोग सर्व प्रथम व्यक्ति हैं जिन्होंने पौदों से रंग निकालने की कला का अविष्कार किया था । पौदों के नाम जिन से कि वे विदेशों में विरुद्धात हैं इस वात का प्रमाण है । नील अन्य देशों

101 Stavrocius Voyage P. 412

102, Travels in the Mughal Empire P. 251,

103. See, Elphinstone's History of India P. 164.

में Indigo अथवा Indies के नाम से मशहूर है। १८८७ ई० में भारत दर्शन करने वाला विश्वयात्री भारती वस्त्र रंगाई की प्रशंसा करता हुआ कहता है कि एक रंगरेज की दुकान में दो आदमी कपड़े को इन्डु धनुष की भान्ति रंग डालते हैं। १०४ एलिफन्स्टन महोदय की सम्मति है कि रंगाई की कला और पायदारी में आज भी योगोपयन भारतियों की बराबरी नहीं कर सकते। १०५

### छपाई—

‘हिन्दू कलाओं में कपड़े की छपाई और रंगाई मशहूर है। इसमें जो सुन्दरता, चमक और पायदारी वे उत्पन्न करते हैं वह विशेष प्रशंसनीय हैं।’ ०६ यह हैं विद्वान मिल के विचार। अब सन् १८७६ ई० के यात्री टेवरनियर की भी जबानी मुनिए—‘मसूलीपटम और कालीकट की छपी छींट बहुत सुन्दर और बढ़िया होती है।’ ०७

### परिधान—

कपड़े पहनना भी कला है, इसमें भी भारतियों ने कमाल हासिल किया है, उपयोगिता और आराम की दृष्टि से भारतियों की पोशाक संसार के अन्य लोगों से बहुत अच्छी हैं। श्रीमती मेनिंग थोटी के पहनाव की सराहना करती हुई स्वीकार करती हैं—‘कोई भी पोशाक जो चलने, फिरने, और बैठने में आराम दह हो सके, इससे अच्छी आविष्कृत होनी असंभव है।’ १०८

103. A trip round the world P. 364

104. History of the India P. 164

105. Mill's India Vol II P. 21.

107. Tavernier's travels in India P. 102.

108. Ancient and mediæval India Vol II P. 358

जमन यात्री आस्ट्रिअर कहता है—‘भारती पोशाक साड़ी, स्मृती और बहुत आगम देने वाली है।’ लाई डफरिन ने एक दिन कहा था कि पोशाक के सम्बन्ध में अभी पश्चिम को पूर्व से बहुत कुछ सीखना है।

अब भारतीय ललनाओं की परिधान-धारणा कला के सम्बन्ध में प्रांस की प्रभिद्ध प्यानिए श्रोमती फ्रेनिमा की जवानी सुनिए—  
दुनिया भर में मित्रयों के लिए साड़ी सब में सुन्दर पोशाक है। ‘भारती स्त्रियां वे सं ही सुन्दर हैं, पर उनकी पोशाक (साड़ी) उन्हें अन्य देशों की स्त्रियों से और भी अधिक सुन्दर बना देती हैं।’ सर फ्रिस्किनपेरे का कथन है कि साड़ी हिन्दू महिलाओं की विश्व-प्रसिद्ध पोशाक है। जब एक हिन्दू लड़की सुन्दर साड़ी पहन कर कुंए से जल भरा घड़ा रख कर चलती है, तो वह अत्यन्त प्राचीन काल की स्मृति दर्शक के हृदय में जागृत कर देती है। १०६ यात्री जेस्स फोर्ब्स भी हिन्दू लक्ष्मनाओं की रेशमी पोशाक की जी भर का सराहना करता है। १०७

### कड़ाई—

जरचपत, सल्मा सतारा, चिकन और जरी आदि की कलाएँ इसी देश की उपज हैं। मिस्टर केने इस कला में बनारस, अहमदाबाद और दिल्ली की बहुत प्रशंसा करता है।

### शीशे का काम—

शीशे की खिड़कियां लगवाना सम्यता के विकास का एक उत्तम प्रमाण है किन्तु इसमें भी रोम और यूनान वाले भारत को नहीं पास के, यह प्रोफेसर विल्सन का विचार है। १११ प्लीनी

इतिहासकार कहता है कि सब से बढ़िया शीशे भारतीय होते हैं। दर्पण और खुद्दीन दूरबीन (Lenses) आदि भान्ति २ के शीशे भारत में तैयार होते थे।<sup>११२</sup> शीशे का उपयोग सब से पहले भारत ने ही किया था। महाभारत काल में भी यहां बहुत सुन्दर सुन्दर दूरबीन तैयार होती थीं। व्यास जी ने सज्जय को एक टेलिस्कोप (Telescopes) दिया था जिसकी सहायता से वह वर बैठे कुरुक्षेत्र का युद्ध देखा करता था।<sup>११३</sup>

### वार्निश--

लुक फेरना अथवा वार्निश द्वारा बस्तुओं को चमकाना यह भारत की अत्यन्त प्राचीन कला है। मौर्यकाल में इसका उत्तम विकास हुआ था। प्राचीन वार्निश वतलाता है कि—वे वार्निश (Varnish) कला को पूर्णत्व से जानते थे।<sup>११४</sup> मिल महोदय कहते हैं—‘हिन्दू हीरो को तलाश कर उन पर बहुत चमकदार पालिश करते हैं और वड़ी सफाई से उन्हें सोने चांदी पर जड़ते हैं।’<sup>११५</sup>

### अस्त्र शस्त्र—

जिस देश के निवासी युद्ध क्षेत्र में प्राण समर्पण करना धर्म समझते हों, वहां की अस्त्र शस्त्र निर्माण कला का कहना ही क्या ! एफ० बनियर एम० डी० १७वीं शताब्दी की बात कहता है कि भारतीय बहुत बढ़िया बन्दूकें और फैक कर मारने वाले औजार (Fowling Pieces) बनाते हैं। लार्ड रोनाल्डशे

११२ See, History of Hindu Chemistry Vol, II,

११३. देखिए, महाभारत भोम्प पर्व।

११४ Travels in the Mogal Empire Page 439

११५, History of India Vol II Page 30

बड़े बड़े झोंकने वाले चाकुओं की तारीफ करते हैं। तीर और बलवारे तो भारत से विदेशों को जाया करती थीं। ११६

### कृषिकला—

कृषि प्रधान देश भारत की यह अत्यन्त प्राचीन कला है। यहाँ से हुनिया ने पेट भरने वाले अन्न को उत्पन्न करना सीमा है। भारतीयों की इस कला को सर टामस मुनरो इत्तम प्रणाली बतलाते हैं। डाक्टर रॉयले (Royle) की गय है—फसलों के डगाने का ज्ञान भारत से लिया गया है। हिन्दू किसान जमीन की उत्पादक शक्ति को सुरक्षित रखना भर्ता भान्ति जानने हैं। अब प्रसिद्ध परिणाम सैन्य के भी डिलाइक्रिटिक अनुसन्धान का निष्कर्ष सुन लो जिए—‘शिल्प में लेकर खेती बाड़ी तक में मुक्तमानों को हिन्दुओं पर निर्भर रहना पड़ता था। हिन्दू उत को बहुत सी बातें जैसे जोतने, बोने, सीचने, मिक्के बनाने, औचित्य तैयार करने, मकान बनाने भिन्न भिन्न ऋतुओं में पहनने योग्य कपड़े बुनने आदि की शिक्षाएँ देते थे। ११७



## जहाज

मृष्टि के प्रारम्भ काल में सोते हुए समुद्रों में खलवली मचाने वाले, वायु के चञ्चल अञ्चल को चीर कर आकाश मण्डल में मण्डराने वाले हिन्दू जहाजों का भी वर्णन मुनिए । प्रोफेसर एच. जी० रालीविंसन आई० सी० एस० बतलाते हैं कि 'भारतीय अत्यन्त प्राचीन काल में अनुभवी मन्त्राहं थे । आदि कालीन भारतीय साहित्य में जहाज और समुद्र यात्रा के प्रचुर हवाले और प्रमाण मिलते हैं ।' <sup>१</sup> ऋग्वेद में कई स्थानों पर समुद्र यात्रा का वर्णन मिलता है इन में मुन्द्र द्वीपों में १०० पतवारों वाले जहाजों के जाने का उल्लेख किया गया है ।<sup>२</sup> पुर्वकाल ही में भारतीय बड़े बड़े जहाज बनाते थे जो कि उन जहाजों में अपेक्षाकृत अधिक बड़े होते थे जो कुछ काल पूर्व स्म सागर में चला करते थे ।<sup>३</sup>

वैदिक काल के बाद मनुस्मृति<sup>४</sup> और सूत्रों द्वारा भी हिन्दुओं की समुद्र यात्रा का प्रमाण मिलता है । स्वर्गीय प्रोफेसर बुहलर

1. *Regveda*; I, 25, 7, 56, 2, 97-7 1163, Buhler's Rig-veda of the Brahman alphabet's Page 64.

2. *Regveda* I 116, 3,

3. 'अस्त्रिं वां दिवस्पृशु तोर्ये सिन्धूनां रथः । धिया युपुब्र इन्दवः ।'

ऋ० अ० ३ स० ४६, ऋक् ७

4. समुद्रयान कुशला देश कालार्थ दर्शिनः ।

स्थापयन्ति तु यां द्वृत्ते स तत्राधिगमं प्रति ॥ —मनु० अ० द० १५०

कहते हैं कि दो बहुत प्राचीन धर्म सूत्रों में समुद्र यात्रा का वर्णन मिलता है।

गमायगा काल में जावा सुमात्रा (यवा स्वर्ग द्वीप) आदि विदेशों को जाने का पता लगता है।<sup>५</sup> महाभागत काल में सहदेव ने समुद्र मध्यवर्ती कितने ही द्वीपों में जा कर वहाँ के अधिपती म्लेच्छों को पराजित किया था।<sup>६</sup> इनके अतिनिक्ष शकुन्तला, रत्नावली, शिशुपालवध, हितोपदेश, दशकुमार चरित्र, कथा मणित्मागर, वायुपुराण, वाराहापुराण, हरिवंश आदि अनेक प्रन्थों से भारतीयों की समुद्रयात्रा का समर्थन होता है। सर डल्लू यूँ जोंस स्वीकार करते हैं कि मनु काल में हिन्दू लोग अवश्य ही जहाज चलाना जानते थे क्योंकि उनमें जहाज बन्धक रस्त कर हृपया लेने का ज़िक्र किया है।<sup>७</sup> एलिफन्स्टन भी इसी का समर्थन करते हुए कहते हैं सभी लोग समुद्र यात्रा से परिचित थे।<sup>८</sup>

मिस्टर ए० एम० टी० जैक्सन आई० सी० एस० बुद्ध जात को और संस्कृत के अन्यान्य प्रन्थों के आधार पर सिद्ध करते थे कि इसा की आठवीं शताब्दी से छठी शताब्दी पूर्व तक भड़ौच और सिप्रा से जहाज बैबोलोनिया के साथ व्यापार करते थे।<sup>९</sup>

५. 'अत्वन्ता यवद्वाप सप्तराज्योप शोभितम्।

स्वर्णस्त्रीप्रमुखर्णिकर मरिडतम्।'

'समुद्रमवगाढांश्च पर्वतान् पतनानेच।' —कि० स० ४० इनक २५

६. सागर द्वाप वासांश्च नृपतीन म्लेच्छ योनिजान।

... ... ... ... ... :

द्वीप नामाहक्यञ्चव वशे कृत्वा महिमितः॥'

7. Asiatic researches Vol II, P. 384

8. History of India Page 166

9. Bimbisārya Gazetteer Vol. II, Chap. IV Page 30.

ईसा की प्रथम शताब्दी का इतिहासकार प्लीनी बतलाना कि छठी शताब्दी तक भारत के व्यापारी समुद्र पार कर फारस तक पहुंचते थे। म्यक फर्सन कहता है कि भारत वासी अपना व्यापार दूरदेशों से करते थे, उनके जहाज मिश्र तक जाया करते थे।<sup>१०</sup>

रातीविन्सन महोदय चन्द्रगुप्त काल की समुद्र यात्रा के सुप्रबन्ध का इस भान्ति उल्लेख करते हैं—‘पोर्ट कार्मशनर समुद्री एवं दरियायी व्यापार का निर्गीकण करता था। दन्दरगाह के अध्यक्ष (Harber master) का कर्तव्य था कि वह मुसीबत में फंसे हुए जहाजों की सहायता करें।<sup>११</sup> फाहियान नामक चीनी यात्री ने भारतीय कर्मचारियों द्वारा परिचालित जहाज पर सवार होकर चीन को प्रस्थान किया था उस जहाज पर कितने ही त्राईण भी सवार थे<sup>१२</sup> यह तो हुई शताब्दियों पूर्व की बातें अभी कुछ काल पहले की बात हैं कि भारतीय जहाज अपना सामान लेकर ईम्ट ईण्डया कम्पनी के जहाजों के साथ विदेशों को जाया करते थे।

समुद्र यात्री भारतीयों का व्यापार इतना बड़ा रहा था कि उन्होंने एक दो नदीं भारत में अनेकों जहाज बनाने के कारखाने खोल रखे थे और विदेशियों के लिए जहाज बनाया करते थे। तेहरी शताब्दी का यात्री मार्कें पोलो तत्कालीन भारत में बनने वाले जहाजों का इस भान्ति चित्रण करता है—‘इस व्यापारियों द्वारा व्यवहार किये जाने वाले जहाजों का विदेशन करेंगे जो (Fritiuler) के बनते हैं और एक डेक (Deck)

10. Macpherson's Annals of commerce,

11. Intercourse between India and the Western world

12. See, Journal of the Royal Asiatic Society Vol V

बाले होते हैं इनके नीचे का स्थान जहाज के आकार के अनुमार ६० बड़ कमरो (Cabin) में बंटा होता है। हर पक्के में एक व्यापारी के लिए स्थान होता था। उनको (Heels) भी दिये जाते हैं। उनके पास चार मनूल और इतने ही (Sail) होते हैं। कुछ बड़े जहाजों में कमरों के अनिवार्य अन्य विभाजन भी होता है। .... सभी जहाज दोहरे तरफों बाले होते हैं।..... बड़े आकार के जहाजों को ३००, कुछ को २०० और कुछ जहाजों को केवल १५० मळाहों की आवश्यकता होती है। वे ५-६ हजार टोकरियां ले जाते हैं।<sup>१३</sup>

सूरत के जहाजी कारखानों का वर्णन भी ग्रोसे (Groce) के शब्दों में सुनिए—“वे जहाज निर्माण की कला में सब में बड़े कर हैं। उनके पैदे और चारों किनारे एक दूसरे से छुड़े हुए तरफों से बने होते हैं। वे पैदों (Bottom) को सुरक्षित रखने के लिए विलक्षण उपाय बरतते हैं। वे इन पर कभी कभी एक प्रकार का तेल मलते हैं जो लकड़ी के तेल या पिघलाये हुए कोलटार के नाम से भारत में मशहूर है। ग्रोसे कहता है यह कहने में जरा भी अकिञ्चित नहीं कि भारतीय तुलनात्मक हाई से संसार में सब से अच्छे जहाज बनाते हैं। वे मजबूत और विभिन्न आकारों के होते हैं, जिन में १००० टन और इससे भी अधिक बोझ जा सकता है।<sup>१४</sup>

समस्त भूमरुद्धि में अपनी सम्यता और व्यापार का सिक्का जमाने वाले हिन्दु कितने सुन्दर जहाज तैयार करते थे। प्राचीनी सी लेखक एफ. वी. सालोवाइस (Saloyus) की ज्वानी सुनिये—

13. The travels of Marco Polo Page 21, 322

14. Voyage both e East Indies Vol I Page 107, 103.

निपुण थे। आधुनिक कालीन हिन्दू अब भी योसप को सांचे (Models) देते हैं। अंग्रेजों की सामुद्रिक शिल्पकला की सावधानता जिसको उन्होंने अपनी जहाज-संचालन कला में बड़ी सफलता के साथ व्यवहार किया है, हिन्दुओं से उधार ली हुई है। भारतीय जहाज उपयोगिता, सुन्दरता, धैर्य और कलानिपुणता के उत्तम नमूने हैं।<sup>१५</sup>

इन जहाजों पर सवार होकर हिन्दू लोग कितनी लम्बीयात्रा किया करते थे रोमके इतिहासज्ञ टोसिटसके शब्दोंमें पढ़िये मसीह से ६० वर्ष पूर्व कुछ हिन्दू व्यापारियों के जहाज तृफान में पड़कर जर्मनी के किनारे आलगे। साल्वियस (Sulvians) के राजाने उपहारस्वरूप उन्हें गाल (Gaul) के गवर्नर मीटेल्स (Metellus) को दे दिया। कार्नीलियस नेपोस के लेख आज हमें उपलब्ध नहीं किन्तु प्लीनी ने इस सम्बन्ध में लिखा है यह समस्त घटना जहाजी यात्रा के इतिहास में बड़े मार्कों की है। प्लीनी कहता है वर्तमान समय में हमें यह विचार करने के लिये छोड़ दिया गया है कि आया भारती साहसी एटलाइटक महासागर से केप आफ गुड होप (Cape of good Hope) होकर उत्तरी सागर में पहुंचे थे अथवा उस से भी विलक्षण ढंग से जापान और साइप्रिया के किनारे कामस चाट्स्का (Kamschatska) जंम्बाला होते हुए लीपलैंड और नार्वे के मार्ग से वालिटक या जर्मन सागर में पहुंचे।<sup>१६</sup>

हिन्दू लोग उस समय भी कितनी साहसी सामुद्रिक यात्रा किया करते थे जब आधुनिक अंग्रेजों के इतिहास का श्रीगणेश

15. Les Hindous (1931) see also, National in the Hindu culture

Page 6.

16. Taoitus. Translated by murphy Page 606,

भी नहीं हुआ था। भारत को पानी पी कर कोमने वाले मिशनरी मार्सिन के शब्दों में—‘राजा मागर बड़ा बली था कि उसी के नाम पर समुद्र मागर कहा गया और उसने अपने जहाजों द्वारा समुद्र में अनेक अद्भुत कार्य किये।’<sup>17</sup> अब भारत के जहाजी कारखाने वालामोर के सम्बन्ध में १६ दिसंबर सन् १६७० ई० में एक अंग्रेज ने लन्दन कम्पनी के प्रमुखों को जो चिट्ठी लिखी थी उसका भी भाव पढ़ लीजिए—वहां से अंग्रेज सौदागर और दूसरे लोग अपने जहाज और नौकाएं हर साल यहां बनवाते हैं यहां पर सर्वोत्तम सीमी हुई लकड़ी वहुतात से मिलती है और समुद्री तट पर उत्तम प्रकार का लोहा भी प्राप्त होता है। यहां के रहने वाले कारीगर में से, बोल्डू, लंगर आदि भान्ति भान्ति की चीज़ें और हर तरह के लोहे का काम बड़ी हांशियारी और उद्दिमता से बना सकते हैं यहां पर वहुत से ऐसे कुशल कारीगर जहाज बनाने वाले उस्ताद मौजूद हैं जो सर्वोत्कृष्ट जहाज बनाते हैं और सारे सव से मुन्दर जहाज चलाने वालों की भान्ति उन्हें समुद्र में चलाते हैं। यही नहीं पालखम्बे और रससे भी बढ़ उत्तम बनाते हैं।<sup>18</sup>

प्रतिपूर्त अंग्रेज सर जान माल्कम भी कहते हैं—‘भारतीय जहाज प्रशसनीय हैं अपने उच्चविज्ञान के बावजूद भी योरूपियन भारतीयों के संसर्ग में आने के दो शताब्दियों बाद तक भी कोई एक सुधार सफलता पूर्वक कायंरूप में परिणित न कर सके।’<sup>19</sup> अभी १३८ वर्ष पहले की बात है कि इंगलैण्ड के लिए साधारण और जंगी जहाज भारतवासियों ने बनाये थे। यही नहीं जहाजों

17. Marsh man's History of India.

18. A History of Indian maritime shipping. Page 233

19. Journal of the Royal Asiatic Society London Vol. I.

के नक्शे और योजनायें भी भारतीयों ने अंग्रेजों को मांगने पर दी थीं २० इससे भी बाद वस्त्रई में जंगी जहाज बनने की सूचना डाक्टर ब्रूक्स एम० डी० देते हैं २१

जब जब हुनिया के शंख देशों ने आंखें खोल कर समुद्रों पर निगाह दौड़ाई है उनकी छाती को चीर कर इधर उधर दौड़ने वाले हिन्दू जहाज दिखाई पड़े हैं। इन भारतीय जहाजों ने सर्व प्रथम किस शुभ-वेला में समुद्र के तरा तोड़ी थी— किसी को भी उसका ज्ञान नहीं। हिन्दू मल्हाहों, हिन्दू जहाजों लम्बी लम्बी समुद्र यात्राओं और संसार के जहाज बनाने वाले हिन्दू कारखानों की साज्जी आज भी पारचात्य इतिहासकार दे रहे हैं।

हिन्दुओं ने इस कला में कितना कमाल हासिल किया था, जगन्नाथपुरी, भुवनेश्वर एजन्टा और बुर्गेंदर (जावा) के मन्दिरों की दीवारों पर बने हुए जहाजोंके चित्र आज भी यात्रियों को अतीत भारत के स्वर्ण युग का सन्देश सुना रहे हैं।

## हवाई जहाज—

सृष्टि के आदि ज्ञान का परम-पावन सन्देश सुनाने वाले भारतीय क्या कभी पृथ्वी प्रदक्षिणा करने में समर्थ हो सकते थे यदि उनके पास बायु-वेग संहाइ लगा कर आकाश में दौड़ने वाले विमान न होते ! आयों के विश्व मान्य ज्ञानकोष बेंद्रों में पढ़िये, कल्पनात्मित बायुयानों का विस्तृत विवेचन मिलेगा। देखिये 'जिन्होंने प्रचण्ड समुन्नत आकाश और पृथ्वी को दृश्य स्थापित किया है, जिन्होंने स्वर्ग और देवलोक को संभित-

20 A History of Indian maritime and shipping page 214. and 250

21. See, The General gazetteer and geographical dictionary

'Bombay'

किया है, जिन्होंने चित्रित विमान पर रमन किया है, हवा द्वारा हम लोग उम सुवदायक परत्रह की प्राप्ति के लिए सब सामर्थ्य से विशेष भक्ति करें । २३ विश्व प्राचीन-तम ब्रान के भरहार ऋत्वेद में भी हवाई जहाज की वहार देखिये—

नितः वपस्त्ररहाति ब्रजद्वन्नामत्या भुज्युमहृः पतंगः ।

ममुदस्य धन्वन्नादस्य पारं त्रिभी स्थैः शतपांडः पदूर्ददः ॥

शृ० १११११५

अथान्—‘(नासत्या) सदा सत्यरूप में या तत्त्वरूप में अथवा शक्तिरूप में विद्यामान आग्नि और जल तत्त्व (नित्यःक्षयः) तीन गत (त्रिःअहा) तीन दिन तक (आति ब्रजद्विः पतंगः) अत्यन्त वेग से गति करने वाले (शतपांडः) सौं पर या चक्रों और (पदू-अर्थवैः) छः अश्वों अर्थात् इंजिनों ने युक्त (त्रिभिःरथैः) तीन याना या रथों से (भुज्युम्) भोग एवं व्यवाहार पुरुष को (समुद्रस्य धन्वन् आद॑स्य पारं) ममुद समस्यल और गाले देशों के भी पार (उहथूः) पहुंचा देने में समर्थ हैं ।’

आधुनिक वैज्ञानिकों ने ३८४ मील प्रति घण्टा की गति चलने वाले वायुयानों का निर्माण कर डाला है किन्तु १२ घण्टे में इतनी लम्बी यात्रा करने वाला हवाई जहाज वो दक्ष काल के अतिरिक्त आज तक लोगों की आखों के सामने नहीं आया ।

प्रसिद्ध इतिहासकार रालीविन्सन ने भी जिन देव मन्त्रों का हवाला देकर प्राचीन भारत के जहाजी बेड़े का परिचय दिया है उन में से एक अपने स्वर्य बल से चलने वाला अन्तरिक्ष में गति २२. येन द्यारुगा पृथ्वी च इदा, येन स्वः स्तम्भतं येन नाकः ।

या अन्तरिक्षं रजसो विमानः कस्मैः दत्वाय हविया विधेम ॥

शृ० अ० ३२२० ६

करने वाला जहाज है। २३

प्राचीन भारत में एरोप्लेन, जेप्लिन आदि सभी कुछ व्यवहृत होते थे। २४ रामायण काल में भी वह प्रचुरता के साथ इनका व्यवहार होता था। आर्थर लिली लिखता है कि मेघनाद के पास एक ऐसी गाड़ी (Car) थी जिसको वह अपनी इच्छानुकूल जहां चाहे ले जा सकता था। २५

आदि कवि बाल्मीकि ने रामायण में, महर्षि वेदव्यास ने महाभारत में, कविशिरोमणि कालिदास ने शकुन्तला में हवाई जहाजों और आकाश यात्रा का विवरण किया है। इस के अतिरिक्त अन्य कितने ही प्रन्थों में भी उल्लेख मिलता है। सन् १८८१ ई० में इलाहाबाद में व्याख्यान देते हुए कर्नल अल्काट महोदय ने भी स्वीकार किया था कि प्राचीन हिन्दू लोग आकाश मार्ग से यात्रा करना ही नहीं प्रत्युत पक्षियों की भान्ति युद्ध करना भी जानते थे। २६ महर्षि स्वामी दयानन्द जी ने भी अपने एक व्याख्यान में प्रवल प्रमाणों के आधार पर सिद्ध किया था कि महाराज भोज के समय में लगभग १४०० वर्ष पूर्व ऐसे विमान थे जिन में नगरों के बहुसंख्यक व्यक्ति अपनी आवश्यक सामग्री के साथ विदेशों की यात्रा किया करते थे।

यह तो हुई हवाई जहाजों द्वारा हवा में आकाश में उड़ने की बात किन्तु भारत तो वह भव्य भूमि है जहां कि प्रत्येक २३, तुम्हों ह भुज्युमश्विनोदमेधे रथि न काश्चिन्ममृवां अवाहः।

तमूहृथनौभिरात्मन्वती मिरन्तरिच्च प्रदिभरपोदकाभिः शू० १११६।३

See intercourse between India and the western world Page 4.

४२ देहिये ऋग्वेद

25. Rama and Hemer Page 187,

26. See, The theosophist for March 1891.

वानें लोगों की कल्पना से भी परे होती थीं । यहां के महाशयगण या विना किसी वस्तु का सहारा लिए ही आकाश में उड़ा करते थे । आज से ठीक एक शताब्दी पूर्व एक पाश्चात्य अपनी आंखों देखी घटना का वर्णन करते हुए लिखता है कि मट्रास प्रान्त के कड़व्या नामक स्थान का निवासी शेषल ब्राह्मण विना किसी सहारे के बायु में (अधर) बैठा रहता था । उसके इस चमत्कार को देखने के लिए तत्कालीन मट्रास गवर्नर ने भी आमंत्रित किया था । ३७

इस स्वर्ग भूमि भारत में आधुनिक काल की अपेक्षा अधिक अद्भुत और सुन्दर हवाई जहाज मौजूद थे । जिन की कल्पना भी आधुनिक अधोगति में सख्ति पड़ गई है ।



## वाणिज्य-व्यापार

न मन्ये वाणिज्यान् किमपि परमं वत्तेनमिह ।—पञ्चतन्त्र

सर्वं परंः सर्वान्वितम् ।—ग्रथर्वेद

प्राचीन भारतीय साहित्यों ने धनवरत उद्योग और उथन परिश्रम से दुनिया के विभिन्न भागों में उपनिवेश बसाये, अन्तत अगाध समुः की छाती पर मूँग ढ़ल कर, बीहड़ बनों के अड़चल को चाक कर, पर्वत मालाओं के सिरों पर पथ बकाकर अपने व्यापार को उद्य अस्त तक विसर्त किया था। किन्तु किनी राष्ट्र की व्यापारिक उन्नति पर विचार करने से पूर्व उसके व्यापार बन्दरगाहों और सड़कों का निर्माण कर लेना नितान्त आवश्यक है। यही ऐसे साधन हैं जिनके द्वारा राष्ट्र अपने व्यापार के सम्बन्ध होने का प्रमाण दे सकता है।

### सड़कें

सड़कें जहां व्यापार के विकास की परिचायक हैं वहां सभ्यता की सूचक भी हैं। भारत की आदिम सड़कों का इतिहास बहुत पुराना है। संसार का आदिम ग्रन्थ ऋग्वेद है उस में कहा गया है—हमारे रथों के चक्रों के हाल, घोड़े मजबूत हों और वागड़ार जो रथ को बराबर कावू में रखे, वह उत्तम रीति से स्वच्छ और सुन्दर रीति से बनी हो।<sup>१२</sup> पर्यटक अलद्धनी भी सृष्टि के ६०० वर्ष बाद हिन्दुओं के रथ अविष्कार करने की । 'स्वराः वःसन्तु नेमयो रथा अश्वान् एवाम् सुस्कृता अभी शबः ।'

बात बतलाता है। घोड़ जुने रथ सड़कों के बिना जंगलों अथवा गतियों में चल ही नहीं सकते। प्रोफेसर ग्रिफ्थ, कीथ और रेंगोजीन भी वैदिक काल में 'महापथ' (देश एक सिरे से दूसरे सिरे तक जाने वाली) सड़कों तक का अस्तित्व स्वीकार करते हैं।<sup>२</sup> महाकाव्यकाल में सड़कों और गतियों का विषद् वर्णन मिलता है। राजपथ, महाकाल, वामन, मंगल बीथि आदि इनके भेद थे।<sup>३</sup> रामायण में इन के जल से ही महीं मुगन्धित हृव्यों द्वारा छिड़के जाने का विवरण मिलता है।<sup>४</sup> बौद्ध कालीन भारत में भी प्रोफेसर रीम डेविड सड़कों और पुलों का जिक्र करते हैं।<sup>५</sup>

प्राचीन इतिहास का अनुसन्धान कर्ता प्लीनी लिखता है कि भारत में प्रवेश करते ही मैगस्थनीज के मस्तिष्क में जो पहली वस्तु चुम्ही, वह थी सीमाप्रान्त (Frontier) से पाटलीपुत्र जाने वाली सड़क। इस पर राजदूत ने अवश्य यात्रा की होगी।<sup>६</sup> इतिहासज्ञ रालीबिंसन बतलाता है कि यह गान्धार की राजधानी पुष्कलावती से तक्षशिला तक्षशिला से सिन्धु को पारकर खेलम, व्यास, सतलुज, जमुना और कदाचित् हस्तिनापुर होती हुई गंगा तक पहुंचती थी। गंगा से यह सड़क अनूपशहर के निकट ढबाई कस्बे को जाती थी। यहां से कन्नोज, कन्नोज से शक्तिशाली शहर प्रयाग और वहां से पाटलीपुत्र को चली जाती थी। लेखक रामायण में बतलाई गई एक अन्य सड़क का भी वर्णन करता है जो अयोध्या से हस्तिनापुर होती हुई राजगृह को जाती थी। इन

२, See, *Vedic India* *Regveda* Vo I and II—edited by Griffith,

३ See, *History of Aryan rule in India* Page 26.

४, रामायण वालकारण्ड

५, *Budhist, India* Page 98,

६, *Pliny, N. H.* VI Page 21.

सङ्कों के किनारे दूरी दर्शक पत्थर और छायादार बृक्ष होते थे ।<sup>७</sup> चीनी यात्री हानच्चांग और फाहियान भी यहां की सङ्कों का अपनी यात्रा में विस्तृत वर्णन करते हैं ।<sup>८</sup>

सिन्धसे उज्ज्यन, ब्रोचसे उज्ज्यन, कौशुम्बी से बनारस और बनारस से पटना आदि स्थानों को जाने वाली अनेक सङ्कों का वर्णन भारत के पूर्वकाल में मिलता है ।<sup>९</sup> हिन्दू नीति प्रन्थों में भी सङ्कों का विस्तृत विवेचन मिलता है । शुक्राचार्य ने चार प्रकार की सङ्कों का उल्लेख किया है—पद्य, वीथि, मार्ग और राजमार्ग ।<sup>१०</sup> चाणक्य ने भी राजपथ, हस्तपथ, रथपथ आदि कितने ही प्रकार की सङ्कों और मार्गों का वर्णन किया है ।<sup>११</sup> आदिकाल से लेकर विगत शताब्दी तक पधारने वाले सभी विदेशी दर्शकों ने भारतीय सङ्कों का वर्णन किया है । भारत में सदैव ही सङ्कों का जाल बिछा रहा है, स्ट्रोबो, प्लेटो, अपालो डोरस, हेवलस्मिथ आदि सभी इतिहास लेखक इसे स्वीकार करते हैं ।<sup>१२</sup>

इतिहासवेत्ता सिमथ तो यहां तक लिखते हैं कि छाये के लिए सङ्कों के किनारे बट और आम के बृक्ष थे, हर आधे कोस पर कुंए और विआमालय और कितने ही मनुष्यों और पशुओं के आराम के लिए बाबड़ियां (Watering place) बनी थीं ।<sup>१३</sup>

7. Inter Course between India and the Western world Page 42

8. See water travels of Yawan Chwang and Fabian travels.

9. See town planing in Ancient India

10. देखिये शुक्र नीति

11. देखिये अर्थशास्त्र अधिकरण ७ अध्याय १२ प्र० ११३

12. See, strabo, Chapt. XV. History of Aryan rule in India P 36 etc

13. Early History of India Page 162

हीरन महोदय बतलाते हैं उन के किनारे फूल भी थे ।<sup>१४</sup> क्या आधुनिक सभ्य संसार ने अतीत भारत के अतिरिक्त फिर और कहीं ऐसी सड़कें देखी हैं ?

यह तो हाए देश के आन्तरिक व्यापार के स्थलीय मार्ग और जलीय मार्ग का भी निरीक्षण करना चाहिए । पीरीप्लस (Periplus) बतलाता है कि उत्तरी भारत में गंगा और उसकी सहायक नदियां व्यापार का विशाल मार्ग है + + + दक्षिण की नदियों में भी नावें चला करती हैं ।<sup>१५</sup> डाक्टर विन्सेट आईन अकबरी का हवाला दे कर बतलाते हैं कि सिन्धु के व्यापार में ४० हजार नावें लगी रहती थीं । ऐरीयन के कथनानुसार पूर्वी और पश्चिमी किनारों का व्यापार स्वदेशी जहाजों द्वारा होता था ।<sup>१६</sup>

भारत का आन्तरिक व्यापार जल और थल दोनों मार्गों से होता था । भारत के प्रत्येक भाग में होने वाले मेले सामाजिक और राष्ट्रीयता के अविरक्त स्वदेशी व्यापार के केन्द्र भी थे । प्रोफेसर हीरन बतलाते हैं कि प्रति वर्ष जगन्नाथ काशी और अन्य स्थानों पर एकत्रित होने वाले लाखों प्राणी व्यापार को अवश्य ही प्रोत्साहित करते हैं ।<sup>१७</sup>

किसी राष्ट्र की व्यापारिक अवस्था को जानने के लिए नगरों और व्यापारिक मंडियों पर दृष्टि डालना भी जरूरी होता है अन्तु विदेशी यात्रियों एवं इतिहास लेखकों की कलम से निकला हुआ भारतीय नगरों का कुछ वर्णन यहां पर दिया जावा है ।

14. Historical researches Vol II. Page 279

15. Periplus Page 29

16. Commerce of the Ancients Vol I. Page 12.

17. Historical researches Vol. VI Page 279,

**पाटलीपुत्रः**-( ३०५ ई० पू.) यह भजवूत लम्बी चौड़ी दीवारों से घिरा अत्यन्त सुरक्षित नगर गङ्गा और सोन के सङ्गम पर स्थित है। इस में ६४ फाटक और ५७० बुर्ज हैं।<sup>१९</sup> स्वर्ग प्रायः द्वीप (भारत) का माल, रेशम और बढ़िया मल-मल तथा अरब और अन्य पश्चिमी देशों का माल इसके बाजारों में आ कर जमा होता है। गङ्गा के काफिले बिना रोक टोक खैबर के मार्ग से चले जाते हैं। चन्द्रगुप्त के शानदार कानूनों द्वारा विदेशी व्यापार की सम्पन्नता की साख है।<sup>२०</sup>

**कल्याण तथा नासिकः**-( २३० ई० ) गैरेट लिखते हैं कि ये दोनों नगर बहुत मालदार और शानदार थे और व्यापार खूब जोरों पर था।<sup>२१</sup>

**कोरकाईः**-( ४ श० ) गैरेट बतलाते हैं कि पाण्ड्य राज्य में यह एक विशाल और सम्पन्न बन्दरगाह था। इसका व्यापार जोरों पर चमक रहा था। इसका मुख्य व्यापार भारीयों का था।

**कोलमः**-( ६ श० ) मुलेमान यात्री मालावार के किनारे घर इस स्थान को बतलाता है जिस की आबादी १५००० थी। यह बन्दरगाह पन्द्रहर्वी शताब्दी तक चीन और फारस के साथ व्यापार करता रहा।<sup>२२</sup> चौहदर्वी शताब्दी के मध्य में इसी नगर के सम्बन्ध में इन्ह बतता बतलाता है कि यहां के सौदागर धनाड्य

19. A, History of India Page 55

19. Megasthenes apud Strab. XV, Page 51

20. A History of India Page 86

21. मुलेमान सोदागर पृ० ११६

थे माल के जहाज के जहाज स्वर्गद लेते थे। उन्नवनृता इने राज्य कहता और राजा का नाम निनरी बतलाना है जो बड़ा न्याय प्रिय था।

**कालीकटः—**( १५ श० ) इतिहासकार पाइन एक यात्री के शब्दों में इस सुप्रसिद्ध बन्दरगाह की व्यापारिक महत्वा का वर्णन करता है—‘प्रत्येक शहर और देश के व्यापारी यहां पर मिलते हैं। यहां समुद्री देशों में विशेष कर अबीसेनिया, जीरवाड़ जे जीवार से Rorities आती है जो यहां बहुतात से मिलती है। यहां समय समय पर खुदा के घर ( मक्का ) और हजाज की ओर भी जहाज आते रहते हैं और जब तक इच्छा होती है ठहरते हैं। यहां पर विदेशी व्यापारी अपना माल ढाल कर चले जाते हैं जो सड़कों पर चुंगी अफसरों की निगरानी में पड़ा रहता है ! विकने पर वे २३ प्रांत सैकड़ा चुंगी ले लेते हैं जतह वे किसी प्रकार का हस्ताक्षेप नहीं करते।’ २३

**विजयानगरः—**पेनी लिखता है कि इसके बाजार बहुत लम्बे चौड़े हैं। हर किसम के व्यापारी अलग अलग बैठते हैं। जौहरी लोग खुले आम बाजारों में हीरे जवाहिरात और मणिक्य मुक्ताओं का व्यापार करते हैं।

**सूरतः—**अकबर कालीन यात्री फादर मान्सरेट लिखते हैं कि स्वभाविक रूप से ही इस बन्दरगाह की स्थिति मुद्द और सुरक्षित है। यह व्यापारियों और जहाजों से भरा रहता है।’ २४

**दिल्ली:-**— डब्ल्यू० एस० केन नामक विश्व-यात्री बतलाता है—देहली संसार के प्राचीन नगरों में से है। भारत की राजनीति पर इनका नियन्त्रक प्रभाव अत्यन्त पूर्वकाल से ही रहा है। ईशा से १५०० वर्ष पूर्व का इनका इतिहास विलक्षुल स्पष्ट है। उत्तरी पश्चिमी प्रान्तों का यह व्यापारिक केन्द्र है, विशेषता काश्मीरी शाल, चादर, अरीबस्त्र, आश्चर्य जनक करघे के कपड़े, सोना, चांदी जवाहरात, धातु के वर्तन, अस्त्र शस्त्र, जिरावरुत्तर, चिकन और अन्य कलापूर्ण वस्तुएँ यहां बहुत होती हैं, जिन के लिए भारत प्रसिद्ध है। २४

**बनारस:-**— यहां जुलाहों के भुण्ड कपड़ों पर सोने चांदी का काम करने के लिए बड़े बड़े दुकानदारों की प्रतीक्षा किया करते हैं जिस के लिए बनारस प्रसिद्ध है। भारत दर्शक जे० के० हार्डी एम० पी० बतलात हैं कि यह अपनी दिल्लि और पीतल के वर्तन के लिए प्रसिद्ध है जिसका मुकाबला जर्मनी वर्तन नहीं कर सकते। २५

**जयपुर:-**— संसार की यात्रा करने वाले पालियामेण्ट के मेस्टर मिस्टर केन लिखते हैं, कपास चुरने, गेहूँ पीसने, बस्त्र रंगने, मिट्टी और पीतल के वर्तन बनाने, चस्ती कातने, जवाहिरात खरादने, जूता बनाने, जेवर गढ़ने और पचास प्रकार के अन्य दूसरे उद्योग, यहां साथ साथ होते रहते हैं। वाजारों में मचने वाला शोर यहां के व्यापार का परिचायक है मैंने ऐसा शहर अपने समस्त सफर में नहीं देखा।

**अहमदाबादः**—यह पश्चिम भारत का महानतम और अत्यन्त प्रतिष्ठित नगर रहा है यहां की लकड़ी की नक्कासी बहुत प्रसिद्ध है। यहां एक कहावत मशहूर है कि—‘अहमदाबाद सूत, रेशम और सोने के बागों में भूमता है’ आज यही इसके मुख्य व्यापारिक व्यवसाय हैं। यह सुन्दर इमारतों से भरपूर है। इसकी वस्तुकला एक विशेषता रखती है। २६ टेवरनीर सूचित करता है कि यहां रेशमी पट्टू बहुत सुन्दर बनते हैं जिनका दाम ८) रुपये से ४०) रुपये तक होता है ये फिल्पाइन, बोर्नियो, जावा, सुमात्रा आदि देशों में भेजे जाते हैं। २७

**बम्बईः**—मिस्टर आर ब्रूक्स एम० डी० लिखते हैं कि बास्ते में अत्युत्तम व्यापारिक जहाज तैयार होते हैं। समस्त लकड़ी आम पास के स्थानों से आती है जो अंग्रेजी और पश्चिमी लकड़ी की अपेक्षा अधिक पायदार होती है। जंगी जहाज भी यहां पार्सियों की निगरानी में तयार हुआ था। समस्त भारत में व्यापारिक दृष्टिकोण से कलकत्ता के बाद दम्बई का दूसरा नम्बर है। यह फारस, अरब, अबीसीनिया, आर्मीनिया और समस्त पश्चिमी एशिया और पूर्वी एशिया और हिन्दमहासागर के अधिकांश द्वीपों के व्यापारियों से भरा रहता है। २८

**कश्मीरः**—१७वीं शताब्दी के मध्य में भारत पधारने वाले डाक्टर फ्लान्कवीस वर्नियर एम० डी० की जबानी कश्मीर का भी जिक्र सुनिए—कश्मीरी भारतीयों की अपेक्षा अधिक कला-

26 A trip round the world Page 364, 370

27 Tevernier's travels in India Page 99, 300.

28 General Gazetteer and Geographical dictionary Page 117

कार निपुण और गुणी होते हैं। उनकी पालकी, पलंग, टूंक, कलमदान, बक्स, चम्मच की सुन्दरता और कारीगरी कमाल की होती है। किन्तु कशमीरकी उस विलक्षण और प्रधान व्यापारिक वस्तु के लिए क्या कहा जाय जो कि उस प्रान्त के व्यापार का विकास कर उसे सम्पत्ति से मलामाल कर देती है। वह है शालों की प्रचुर संख्या, जिन्हें वे लोग तैयार करते हैं जिस के द्वारा छोटे छोटे बच्चों तक को काम मिल जाता है। २६

**केरला (ट्रावनकूर):**--मिस्टर गैरेट कहते हैं कि यहां पर कभी मुसलमान आक्रमणकारी राजाओं का प्रभाव नहीं पड़ा, अस्तु भारत साम्राज्य में इसका विशेष स्थान रहा है। यहां के चेर सम्राट् सदैव पश्चिमी देशों के साथ व्यापार करते रहे हैं। दूसरी वस्तुओं के अतिरिक्त अरब के साथ चेर लोग मोती का व्यापार करते थे। इनके समुद्री व्यापार का प्रमाण रोम और यूनानियों द्वारा भी मिलता है।

**चोला राज्यः**--यह मैसूर, नीलौर और कूर्ग तक फैला था। इस कीराजधानी पुरानी तिरचनापली थी इनके पास जहाजी बंडा था, जिसके द्वारा ये भारतीय उपद्वीप समूह (Archipelago) मलाया और मिश्र तक पहुंचते थे। पूर्व पश्चिम दोनों ओर इन का बड़ा चढ़ा व्यापार था। कावेरी नदी के मुहाने पर इस का प्रधान बन्दरगाह था। उचीं शताब्दी में हुआ नत्सांग यात्री ने इस राज्य के सम्बन्ध में भी लिखा है। २०

29. Travel in the Mogul Empire Page 402, 403

30. A History of India Page 92, 93

**कामिम बाजारः**—जीन बेटाडम्ट टेवर नियर बतलाना हैं कि बंगाल गाज़िय के अकेले डम गांव में विदेशों को रेशम की दूर हजार गांठे भेजी जाती हैं। प्रत्येक गांठ १०० पौण्ड होती है। कंबल हालैएड है—७ हजार गांठे ले जाते हैं। यहां सुनेहरे रूपहरे कालीन भी बनते हैं।

फ्रांसीसी पर्यटक टेवर नियर कहता है कालीकट और ससूलीपटन की छीट बहुत सुन्दर होती है किन्तु लाहौर की मही और सस्ती होती है। + + + सफेद आगरा, लाहौर, भड़ौच, रेनसूर, बंगाल बड़ौदा से आती है।

एक दो नहीं प्राचीन भारत के व्यापार की अगमित मणिवां थीं आगरा, मथुरा, लखनऊ, जालन्थर, लुधियाना, अमृतसर, चन्द्र नगर, चन्द्र कोना, पालमा, बद्वान, दीनापुर, मऊ, हुशियापुर, पटियाला, टाएडा, यवला, अहमदनगर, खानदेश शोलापुर, शान्तिपुर, नदिया, आजमगढ़, भावली, आसन्दी, कराची, हैदराबाद, काबूली, अलीगढ़, मिदनापुर, राजशाही मुर्शिदाबाद, भागलपुर, किलासपुर, सम्भल, मुजफ्फरनगर आदि। इन स्थानों से बराबर माल तैयार होकर विदेशों को जाता था।

आज भारत के दुर्भाग्य और भारतीयों की आकर्षण्यता में इस हरी भरी भूमि का सब कुछ उजड़ कर खाड़ खांड बन चुका है और का तो कहना ही क्या है वे बन्दरगाह तक नहीं रह गए जिनके ऐश्वर्य का विदेशी यात्री राग गा गए हैं। आज हमारे भूगोल के विद्यार्थी बड़े गर्व से अधुरिक भूगोलों में भारत का स्वाभविक व्यापारिक अयोग्यता का पाठ पढ़ते हुए बड़े गर्व से कहते हैं—‘इस देश का समुद्रो कलारा कटा फटा—दनदानदार

नहीं, उसी लिपि यहां उत्तम व्यापारिक बन्दरगाहों का अभाव है। ऐसे विद्यार्थियों को उपरोक्त भारतीय बन्दरगाह 'कालीकट' की ओर छ्यान देना चाहिए। क्या संसार के पहें में ऐसा दृमगा बन्दरगाह आज कहीं मिल सकता है? आज से केवल ५०० वर्ष पूर्व फारस से भारत आने वाला मुसलमान यात्री कमालुहीन अबदुलरज्जाक सूचित करता है कि केवल 'विजयनगर' के सम्राट के राज्य में ३०० बन्दरगाह थे और हर एक कालीकट के बगवर था।<sup>३२</sup> डिनिदासज्ज रालीविन्सन आई० ई० ए० ईसा से ७२७ वर्ष पूर्व पटाला (जिहलम) बन्दरगाह का उल्लेख करता है जो कि उत्तर पश्चिमी भारत का प्रधान बन्दरगाह था।<sup>३३</sup> यूनानियों ने लिखा था कि केवल सतलज और सिन्ध नदियों के बीच १५०० शहर आबाद थे।<sup>३४</sup>

जिस देश के पूर्वकाल में इतनी सुन्दर सड़कें बन्दरगाह, शहर मरिहायां आदि मौजूद हों वहां की व्यापारिक अवस्था कितनी अच्छी होगी, साधारण में ही अनुमान लगाया जा सकता है।

### विदेशी-व्यापार—

यह तो हुई देश की आन्तरिक अवस्था। अब इस के अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार पर भी दृष्टि डालनी चाहिए। प्राचीनकाल में भारत का खुशकी (Land) के रास्ते से व्यापार बड़े बड़े काफिलों द्वारा हुआ करता था।

मिस्टर आर० सीवल इसी का समर्थन करते हैं कि—' (भारत का) पश्चिमी एशिया, यूनान, रोम, मिश्र और चीन के साथ

32. Scenes and Characters of Indian history Page 64

33. Intercourse between India and Western world Page 35

34. See, Poverty and the British Rule in India

जल थल दाना मार्ग में व्यापार होता था । ३५

### अन्तर्राष्ट्रीय मार्ग—

मिस्टर रालीविन्मन चिर अनुमन्धान के पश्चान इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं—‘डितिहासकाल में भी पूर्वकाल में भारत के साथ पश्चिम के बड़े व्यापारी मार्ग मिले हुए थे।’ खुशकी के गम्ते का उल्लेख आपने इस भान्ति किया है—‘भारत से दर्रे द्वारा बलख व्यापारी बलख पहुंचते थे। बलख से दरया के गम्ते कस्पियन होकर इयूक्साइयन (Euxine) पहुंचते थे, अथवा थल मार्ग से काफिलों को उस सड़क से ले जाने थे जो कानानियन रेगिस्तान के उत्तर से होकर कस्पियन गेट प्रेस्टवोकट (Antioc) पहुंचती थी। रालीविन्मन महोदय गान्धार और पाटलीपुत्र को मिलाने वाली सड़क का सम्बन्ध फारस की सड़क से भी बतलाते हैं। ३६ मिस्टर रीस डेविड्स कहते हैं कि पटना और बनारस काफिलों के केन्द्र थे। इन काफिलों में ५०० वैल गाड़ियां होती थीं। ये पूर्व और पश्चिम दोनों ओर जाया करते थे। ३७

### समुद्री मार्ग—

एच० जी० रालीविन्मन बतलाते हैं कि मर्व ब्रथम और सम्भवत ग्राचीनतम मार्ग फारस की खाड़ी है जो कि सिन्ध के मुहाने से शुरू होकर योरूप तक पहुंचती है। + + + इस मार्ग का उल्लेख मिटानी सम्राट (Mitam) हिटीटे (Hittite) के लेखों में मिलता है जो ईसा के १४, १५ शताब्दी पूर्व हुए थे। इन सम्राटों के नाम आयों के थे और इनका सम्बन्ध भी वैदिक

कालीन आर्यों से था ।<sup>३७</sup> रेवरेण्डर पीटर पर्सिवल भी प्राचीन भारत के जल थल व्यापार का विवेचन करते हुए बतलाते हैं कि 'वह देश जहां भान्ति २ की जल वायु और सुख की इतनी सामर्या हो प्राचीन और नवीन जातियों को अपनी ओर आकर्षित करने में असमर्थ कैसे हो सकता है । अरब और फारस की स्वाभाविक व्यापारिक स्थिती भारत के अनुकूल थी । हमें इतिहास से यह भी पता चला है कि उसके साहसी मज्जाह अत्यन्त प्राचीन काल में बहुत दूर के मार्ग तय कर फोनोशिया तक पहुंचे थे । उन्होंने अरब मरु भूमि के साथ साथ पेटरा (Petra) और पालमीर होकर लोहित सागर (Red Sea) में जहाजी बेड़ा छालकर प्राचीन टायरे (Tyre) और भारत का सीधा सम्बन्ध स्थापित किया था ।<sup>३८</sup>

इस विवेचन को यह निष्कर्ष निकला कि जिस समय आधुनिक पश्चिम की अनेकों जातियां पश्चुओं के साथ कन्द्राञ्चे में खरीटे लिया करते थीं, उस समय भारतीय कार्पले और जहाज थल और जल दोनों ही मार्गों से भूप्रदक्षिणा कर संसार में भारतीय व्यापार का जीज बो रहे थे । दोंखए, डावटर जी-विसेन्ट महोदया बतलाती हैं कि भारत का वेबिलोनिया के साथ ईशा से ३०० वर्ष पूर्व व्यापार सम्बन्ध था । आप कहती हैं कि २००० ईशा पूर्व तो मिश्र के मुद्रे (Mumies) भारतीय मल-मल में लिपटे पाए गए हैं ।<sup>३९</sup>

व्यापार का जीवन है उसकी साख (Credit) साख की उत्पत्ति, शुद्ध व्यापार और नीयत से होती है व्यापार का जितना काम

३८. See, Intercourse between India and the Western world P. 1, 2

३९. See, the Land of the Vedas Page 15

४०. See, A Bird's eye view of India's Past

नकदी से नहीं चलता उतना उधार पर चला करता है जिनकी साथ व्यापार में से ही सलामत रहती है, वे लोग आधी रात को परस्पर आख्य सीच कर दिना लिखते हैं वे लोगों की परस्पर आख्य सीच कर दिना लिखते हैं वे लोगों की परस्पर आख्य सीच कर दिना लिखते हैं। मारवाड़ीयों में आज तक यह कहावत प्रचलित है 'जाजो लाख पर रीजो साख ।' डब्बे के मूलपूर्व सेटलमेंट कमिशनर डब्ल्यू० सी० वीनेट लिखते हैं कि यहां लोग वहे बड़े कर्जे के बल जबानी ही ले लेते हैं। परस्पर मनोमालिन्य होने पर भी कर्जदार कभी कर्जे से इन्कार नहीं करते। लोग अपने पूर्व पुरुषों द्वारा जबानी किए गए कर्जों को सो-मों वर्ष बाद तक चुकाते हैं। १६१४ में भारत आने वाले डब्ल्यू०एड के राजदूत सर टामसों के भी भारतीयों की साख के सम्बन्ध में उद्धार देखिए—ये लोग कुशल कलाकार और अपने कामों में बहुत हासियार होते हैं इनका विश्वास है कि 'पर्सोन की कमाई में बरकत होती है।' २३ प्रास्त्र पाश्चात्य पारेंट विलियम डिगवी सी० आई० ई० की जबानी सुनिए! 'भारतीयों का साधारणतः और व्यापारियों का सदृचारित्र और व्यापारिक सम्बन्ध विशेषतः बड़े मार्कें का होता है।' २४ यह है भारतीयों की पर्वत सी अचल व्यापारिक साख। स्वर्गीय देशदत्तु चित्ररङ्गन-दास ने अपना पैतृक क्रृष्ण जो कानून की हाई से नाजायज हो चुका था, चुकाया था। आपका यह कार्य वीसवीं शताब्दी में भी भारतीयों की साख का प्रमाण है।

अब व्यापार का भी थोड़ा सा दिग्दर्शन कीजिए। संसार के साथ भारत की व्यापारिक सम्बन्ध किस शुभ मुहूर्त में शुरू

41. The Oudha Gazetteer 1837 Page 7,8

42 The People of India

43. Indian for the Indians and for England

हुआ उसका पता आज तक कोई भी इतिहास का अनुसन्धान कर्त्ता नहीं लगा सका। ऐसे भी पाश्चात्य विद्वान् मुक्तक-एटु से इसकी प्राचीनता को स्वीकार करते हैं। ध्रीमति ऐनी विस्तृत पाश्चात्य देशों के साथ भारत के व्यापारिक सम्बन्धों को ३००० वर्ष ईसा पूर्व से भी प्राचीन स्वीकार करती हुई लिखती है कि हिन्दो वाइबिल में भारतीय चम्तुओं के तामिल नाम अब तक मिलते हैं। ट्रे (Tyre) के हिराम ने अरब की खाड़ी के बन्दरगाहों द्वारा भारत से व्यापार किया था।<sup>44</sup> हिराम तथा सूलेमान ईसा से दस शताब्दी ईर्ष्य अपने जहाज-भेजकर भारत से चन्दन, मोर, हाथी दान्त, सोना, चांदी आफिर सम्प्रदाय के लोगों से खरीद कर लेजाया करते थे। इतिहासवेत्ता पटोल्मी आफिर सम्प्रदाय (Ophir Tribe) के सम्बन्ध में लिखते हैं सिन्धु के मुहाने पर भीरिया नाम एक नगर था। आहीर जाति के लोग आज भी भारत के विभिन्न प्रान्तों में 'आहीर' नाम से विख्यात हैं। मिस्टर केनेडी पर्याप्त प्रमाणों के आधार पर सिद्ध करते हैं—  
 ६-७ शताब्दी पहले भारत और बंबीलोनिया में जबरदस्त व्यापारिक सम्बन्ध था।<sup>45</sup> जेटकाक्यूम्यू विश्वस्त चीनी ग्रन्थों के आधार पर बतलाते हैं कि ७५० ई० पू० तक ब्राह्मणों के जहाज केन्टन में आया करते थे।<sup>46</sup> सौदागर सूलेमान ने लिखा है कि नवीं शताब्दी में अरब, चीन और भारत का व्यापारिक सम्बन्ध जोरों पर था, 'इरिडयन शिपिंग' के विद्वान् लेखक ने सिद्ध किया है कि पूरी ३० शताब्दियों तक भारत विश्व देश का प्रधान केन्द्र रहा है। उत्तरी चीन, मलाया, अरब, फारस, अफ्रीका पूर्वी

44. A Bird's eye view of India's Past; See also Indian Shipping Pg

45. Royal Asiatic Society Journal 1898

46. Periplus Page 34

## वार्षिक्य-व्यापार

१७। नामान शतहासवत्ता प्लॉनी लिखता है कि अकेले भारत के १२५ जहाज एक समय रोम के किनारे लगे थे ।

चौहदवीं शताब्दी के प्रारम्भिक काल में दुनिया भारत के प्रति व्याविचार रखती थी । विश्ववान्नी सरजान मान्दिविले के ० टी० से सुनिए—‘इथोपिया से विभिन्न देशों से होकर लोग भारत जाते हैं और उसे विशाल भारत कहते हैं ।’<sup>४७</sup> उत्तिहासकार यरीप्लास बतलाता है कि भारत, अरब और ग्रीक के हिन्दू व्यापारी सकोत्रा में आकर ठहरते हैं । मिस्टर माणटर लिखते हैं कि सम्राट स्लीस्यूडा के समय असीरिया के साथ भारत का व्यापार जोरों से चल रहा था ।<sup>४८</sup> अभी केवल ढाई मीं वर्ष पहले भारत दर्शक फ्रांसीसी टेवरनियर बतलाता है कि बङ्गाल की खाड़ी से जहाज अराकान, पिगू, स्याम, सुमात्रा, कोर्चीन, मर्नीलास, हुमुंज, मक्का और मुदगास्कर वे लिए रवाना हुआ करते थे ।<sup>४९</sup>

उससे बाद की दास्तान इङ्लैण्ड के अनुदार दळ के प्रमुख भारत की राष्ट्रीय उन्नति के कट्टर विरोधी लाई रादर-मिवर के मुख से सुनलीजिए—कुछ वर्ष पूर्व आपने अपने पत्र डेली मेल में लिखा था—वडे २ जहाजी वेडे जो पहले भारतवर्ष के मसालों रेतमी वस्त्रों, सोने और हीरों से लदे टेगस में लंगर ढाला करते थे बाद को लिजविन के मार्ग से दूसरे भरणे के नं. चे आकर टेम्स में लंगर ढालने लगे ।

४७. Voyages and travels of Sir John Page 102

४८. Treasury of History Page 775

४९. Tavernier's travels by Ball

## वस्त्र व्यापार—

भारतीय करघे की मब से आश्चर्य जनक बस्तु रेशम थी जिसकी सब से अधिक खपत फारम और रोम में हुआ करती थी। कहा जाता है कि वहां इसका विनियम सोने से होता था । १० रेबेटर पीटर पर्मिकल रोम के प्राचीन इतिहासकार के एक पत्र का उल्लेख करते हैं जिसमें वह शिकायत करता है कि भारतीय व्यापार ने डटली को सोने से ग्वाली कर दिया । ११ रोम और उसके अन्य प्रान्तों से भारत आने वाले सोने की वार्षिक रकम लगभग ४० लाख रुपया थी । १२ प्रोफेसर रालीविन्सन बतलाते हैं कि ग्रीव लोग भारत के रेशमी वस्त्र पहनते थे जिसे सिन्दोन कहते थे । प्रोफेसर रालीविन्सन बतलाते हैं कि सिन्धु शब्द असुर वाणी पाल (६६८-६२८ ई० पू०) के पुस्तकालय में पाया गया है । इन्हीं समस्त आधारों पर आप कहते हैं कि पश्चिमी भारत की रुई का व्यापार बहुत पुराना है । १३

अरब की सभ्यता भी ऐश्विया में बहुत पुरानी है । प्रोफेसर हीरन प्राचीनतम काल से ही उसके साथ भारत का व्यापारिक सम्बन्ध बतलाते हैं । हजरत अल्लू तो सदैव भारतीय मल-मल का अंगरखा ही पहनते थे । इतिहास के माने हुए विद्वान अलिकजेंड्रिया पुस्तकालय के पुस्तकालय की यमन और पट्टाला बन्दरगाहों में बहुत पुराना व्यापारिक सम्बन्ध बतलाते हैं ।

मुसलमान यात्री इन चतुर्ता बतलाता है कि योरोपियन लोगों,

50. *Encyclopaedia Britannica* Vol XI Page 459. See also, Indian

Shipping Page 83

51. *The Land of Vedas* Page 16

52. *Encyclopaedia Britannica* XI 400

53. *Intercourse between India and the Western world* Page 3

का भारत से मीर माल खरीदने और बेचने का व्यापार अरब वालों को नागंवार मालूम होता है ।<sup>५४</sup> भारतीय वस्त्र व्यवसाय का विवेचन करते हुए फांसीमो यात्री वर्नियर लिखता है—वैगाल से मुगल साम्राज्य, काशुल और समस्त बाहर के देशों को किसना कपड़ा प्रति वर्ष भेजा जाता है, यह बतलाना सम्भव नहीं ।<sup>५५</sup> टेवरनियर यात्री कहता है कालीकट और मसूलीपट्टम की ढीटों के बुकें समस्त ऐशिया की स्त्रियां प्रयोग करती हैं ।<sup>५६</sup>

ममस्तु दुनिया के शांकिन भारतीय वस्त्रों का ही प्रयोग करते थे । भारतीय कुशल व्यापारी भी दुनिया की नव्ज टटोलना अच्छी तरह से जानते थे । वे कब्जे माल को विदेशों में प्राप्त बहुत ही कम भेजा करते थे । जीन वपटाइस्ट टेवर नियर कहता है गुजरात और ब्रह्मपुर में आने वाली कच्ची रुई की भारतीय कभी योरोप नहीं भेजते थे क्योंकि उसका दाम बहुत सस्ता पड़ता है हां, वे इस आरमीनीया, बालमरा और कभी फिल्पाइन ढीपों को भी भेज देते हैं ।<sup>५७</sup>

### लोहा—

श्रीमती मेनिंग बतलाती है कि भारतवर्ष से रंगीन कपड़ा और लोहा भारतीय जहाजों पर लद़ कर बर्बालोन और ट्रै (Tyre) को जाया करता था ।<sup>५८</sup> दमिश्क के लिए तलवारें भा भारत से ही बनकर जाया करती थीं । लाडू रोनाल्डसे भी इसका समर्थन करते हैं ।

54. Scenes and Characters from Indian History Page 104

55. Travels in the Mogul Empire Page 439

56. Tarverniers Travels in India Page 302

57. Tarverniers Travels in India Page 304

58. Ancient and Medieval India Vol II Page 364

## मसाले—

प्रोफेसर हीरन बतलाते हैं कि मसालों की जन्मभूमि भारत है। यह पूर्वकाल से ही पश्चिम संसार को मसाले पहुंचाता रहा है।<sup>५६</sup> विद्वान डिग्वी कहते हैं कि भारतीय मसाले लोगों का जबान पर कहावतों की भान्ति चढ़ गये थे।<sup>५७</sup> श्रीमती मेनिंग भारतीय मसालों का वर्णन करती हुई इत्रों की भी प्रशंसा करती हैं।<sup>५८</sup>

## हाथीदान्त—

हाथीदान्त और लकड़ी के काम में भारतीय संसार के माने हुए कारीगरों में हैं। पोलीटीकल एजेन्ट विलियम डिग्वी लिखते हैं—‘रत्नजटित और हाथीदान्त की बनी भारतीय वस्तुओं की योरोप में बहुत बड़ी मांग थी।<sup>५९</sup> हाथीदान्त इस देश की अपनी चीज है। मिश्र, यूनान, पैलेस्टाइल और फारस के साथ प्राचीन काल में इसका भी भारत से व्यापार होता था।

## शक्कर—

शक्कर के सुस्वादु से भी दुनिया को परिचित करने वाले भारतीय ही हैं। मिसेज मेनिंग कहती हैं कि सर्व प्रथम भारत में यूनानियोंने इसको चक्खा।<sup>६०</sup> ‘शक्करा’ शब्द संस्कृत है इसीसे बिगड़ कर अंग्रेजी शुगर (Sugar) बना है जो इस के भारतीय होने का परिचायक है। बनियर भी विदेशी व्यापारियों को

59. Historical researches Vol II Page 274

60. Prosperous India Page 90

61. Ancient and Mediaeval India Vol. II

62. Ancient and Mediaeval India Vol. II Page 353

63. Ancient and mediaeval India Vol II Page 353

आकर्षित करने वाली चीजों में शक्ति की गणना बड़ी प्रशंसा के साथ करता है।

### रुक्ष—

इसका भी भारतमें जन्म होकर दूरदेशोंमें प्रचार हुआ है। एक पाश्चात्य पण्डित बतलाते हैं कि नील भी भारत से रोम और यूनान को भेजा जाता था।<sup>६४</sup> टेबर नियर भी भारत से नील के बाहर जाने का ज्ञानेख करता है।

### सुगन्धित द्रव्य—

सुरभित-सुमन भारत के अतिरिक्त प्राचीन काल में प्रायः अन्यत्र नहीं ही पाये जाते थे और आज भी इनका दूसरे देशोंमें आभाव सा ही है। कोई भी अंग्रेजी फूल देखिए रुक्ष-रूप बाहरी तड़क भड़क बहुत हांगी किन्तु सुगन्धि का नाम तक भी न होगा। यहीं कारण है कि सुगन्धित इन्हें तैल तैयार करने की कला ने सब से पहिले भारत में ही जन्म लिया था। भारतीय इन्हें और तैल बड़ी चाह से फारस और अरब के वाजारोंमें विकते थे।

इतिहासकार पेरिप्लस के कथनानुसार अन्य चीजों के अतिरिक्त भारत से सूती और रेशमी वस्त्र, मोती, बमरूद तथा अन्य वहु मूल्य पत्थर भेजे जाते थे। विद्वान् स्टीसियास (Clesias) इस सूची में गोटा, फौलाद, औषधियां, सुगन्धित पदार्थ तथा अन्य किंवद्दि वस्तुएं शामिल हैं<sup>६५</sup>

## लङ्का

भारतीय व्यापार वर्गन में लङ्का का भी उल्लेख करता अप्रामङ्गिक न होगा, क्योंकि यह रामायण काल से लेकर आज तक भारत के साथ बन्ध है। उसकी सभ्यता धर्म सब कुछ भारत का है और वह स्वयं इस विशाल गण का एक अंग है। प्रोफेसर हीरेन के कथनानुसार ईसा के जन्म काल से ५०० वर्ष पहले ही यह अपने समुद्री व्यापार के लिए विश्व-विश्रृत था। यही नहीं, भारत का भी व्यापारिक इतिहास बहुत कुछ इस पर निर्भीर है। पटोलमी सूचित करते हैं कि इसका समुद्री किनारा बन्दरगाहों से भरपूर था और इसमें कितने ही व्यापारिक नगर थे। पूर्वकालीन इतिहासकार ऐरियन कहता है कि उत्तरी लङ्का सुसभ्य जाति से बसा था। यह बहुत बड़ा व्यापारिक बैन्द्र था।<sup>66</sup> उत्तर में चीन से आगे और पश्चिम से डटली तक इसका व्यापार विस्तृत था। प्रोफेसर हीरेन इसे आस्ट्रोलिया का भी व्यापारिक बाजार बतलाते हैं।<sup>67</sup>

लङ्का के व्यापार की विस्तृत विवेचना करते हुए पारचात्य इतिहास लेखक स्वीकार करता है कि 'यहां समस्त संसार का माल आता और जाता था।'<sup>68</sup>

इस विवेचन से यह स्पष्ट है कि भारत विस्तृत काल से ही विगत शताब्दी तक संसार को जीवन की सुख सामग्रियां पहुंचाता रहा है। उसका व्यापार भी सभ्यता की भान्ति असीम था। श्रीमती मेर्निंग कहती है कि भारतीय वैदिक काल से ही

66 Historical Researches Vol II Page 432

67 Historical Researches Vol II Page 426

68 Historical Researches Vol II Page 293

व्यापार करते थे । ६० रेवरंगडर पीटर पर्मिवल की गय है कि व्यापारिक हस्ति कोण में कोई भी प्राचीन अथवा अर्वाचीन, ग्रन्थ उपयोगिता में डम्स से टक्कर नहीं ले सकता । ६०

वान्तव में यदि त्याय की गम्भीर हस्ति से देवा जाय तो अध्यात्मिक भारत की भौतिक उत्तरि जगत को जीवन-रमन्त्र बनाने के लिए ही थी । यदि तत्कालीन भारतीय अपनी कला के नमूने और प्रकृति प्रबन्ध नायाव तोहफ, जहाज और काफिले द्वाग दुनिया को न बांटते, तो संसार कव तक उन पदार्थों से बच्चित रहता—कौन कह सकता है ।



## सम्पत्ति

मानव जीवन-यात्रा को चलाने के लिए जिन जिन वस्तुओं की आवश्यकता पड़ती है और जिनकी प्राप्ति के लिए पर्याप्त परिश्रम करना पड़ता है, उनकी गणना सम्पत्ति में होती है। दूसरे शब्दों में आवश्यकता, अप्रचुरता और परिश्रम ये तीनों मिलकर वस्तु को सम्पत्ति का रूप देते हैं।

सम्पत्ति का प्रवान लक्षण है उसका 'विनियम साध्य होना। जिसके बदले में दूसरी आवश्यक वस्तुएँ नहीं मिल सकतीं, उनके प्राप्त करने में कितना ही परिश्रम क्यों न करना पड़ा हो, सम्पत्ति नहीं कही जासकती। उदाहरणार्थ आधुनिक भारतीय विश्व विद्यालयों की दिवियां ! बहुत सं लोग केवल रूपये पैसे ही को सम्पत्ति समझ बैठते हैं किन्तु ऐसा नहीं। सिक्का तो केवल विनियम के सुभांते के लिए बनाया है। अब वस्त्र आदि को छोड़ कर लोग केवल सोना चांदी आदि को ही सम्पत्ति मान लेते हैं। वास्तव में सम्पत्ति इन सब के समुद्दय की संज्ञा है। सम्पत्ति के दो विभाग हैं स्थावर (Inimmoveable) ज़ङ्गम (Moveable) लाडे रोजाल्डशे का कथन है कि प्रारम्भिक सम्पत्ति उत्पादनके लिए मनुष्य, शक्ति और कश्ये द्रव्य (Raw materials) आवश्यक है, भारत का यह चीजें उदारता से मिलती हैं, मिसेज पी० केन्डाल जैसी चान्दी सोने के टुकड़ों पर फिसलने वाली अमरीकन महिला भी यह कहने पर विवश है 'भारत

के पास तुरुहारे लिए बहुमूल्य उपहार है, वह अपने अजायबात और रहस्यों को उन्हीं की भेषट करता है जो उसे खोजने हैं।<sup>२</sup> 'भारत की प्राचीन सम्पत्ति की पुरानी कहावतें अब भी प्रसिद्ध हैं।'<sup>३</sup> यह है भारत के वैभव-सम्पन्नता के सम्बन्ध में कर हार्डी महोदय का विचार। इस रत्नगमीभूमि के जगमगाते जवाहिरात, भिलमिलात सोने और चमचमार्ती चांदी की कहानियां दुनिया के कोने कोने में आज तक कही जाती हैं। ईतिहासकार एलिफन्स्टन कुछ पाश्चात्य यात्रियों के शब्दों में कहता है—'यह ( प्रान्त ) चांदी सोने और अमूल्य रत्नों से भरा है।'<sup>४</sup> डाक्टर वाईज सूचित करते हैं कि भारत की विशालता और सम्पन्नता ने सिकन्दर के अस्तित्व पर अपना सिक्का जमा रखा था। पर्शिया से प्रस्थान करते समय वह अपने सैनिकों को सम्बोधित कर कहता है 'हम उस स्वर्ण भारत को चल रहे हैं। जहां अपरिमेय सम्पत्ति है। फारस धनधान्य में उसके सामने कुछ भी नहीं।' डब्ल्यू० एस० केन (Caine) मेम्बर पार्लिमेन्ट कहते हैं 'अंग्रेजों का विचार है कि भारत अनन्त सम्पत्ति का देश है।'<sup>५</sup>

लाडू रोनाल्डशे के शब्दों में 'भारत गुप्त सम्पत्ति का विशाल भण्डार है।'<sup>६</sup> भारत वसुन्धरा की छाती चांक करके ही आज संसार मालामाल हो रहा है। जिन हीरक मणियों को पाकर आज पाश्चात्य देश अपने में नहीं रहते वे इसी की गोद के अमूल्य

२ 'India and the British'

३ India Impressions and Suggestions Page 1

४ Elphinstone's India Vol II Page 10

५ A trip round the world Page 382

लाल हैं। इस मर्वोपम भूमि में कितना जबरदस्त मम्पन्जि को पुकुपा था, उसका निर्गीक्षण ही इस लेख का उद्देश्य है।

## हीरा जवाहिरात—

खानिज वस्तुओं में हीरा सब से अधिक मूल्यवान है। वह किसी समय इस देशों की खनों से निकलता था और काफी परिमाण में, अथवा यह कह लीजिए कि इस देश को छोड़कर अन्यत्र पाया ही नहीं जाता था। अतीत का इतिहासकार प्लानी भारत को 'बहुमूल्य हीरे जवाहिरात की 'माँ' वह कर सम्बोधित करता है। विश्व-यात्री सरजान मारिडविले के० टी० कहता है भारतीय हीरे बहुत सुन्दर और अत्यन्त मूल्यवान होते हैं। वे सख्त और तिरङ्गे होते हैं। हीरे के सम्बन्ध में आचार्योंने मंस्कृत साहित्य में अनेकों ग्रन्थ तक लिखे हैं। मन १६५६ में भारत आने वाला फ्रांसीसी यात्री देवरनियर लिखता है—'हीरा समस्त पत्थरों से अधिक मूल्यवान होता है। कर्नाटक प्रान्त में सबसे पहले हीरे की खान जो मैंने देखी वह गोलकुण्डा से ५ दिन की यात्रा कर पहुंचने वाला रोलकुण्डा है। यहां बहुत से हीरा तराशने वाले हैं किन्तु किसी के पास भी एक मरीन से अधिक नहीं। दूसरी हीरे की खान गोलकुण्डा से पूर्व की ओर (Mill) गनी (Gani) है यहां जितना ही अधिक पहाड़ के निकट वे खोदते हैं उतने ही अधिक बड़े हारे पाते हैं। यहां लड़के, स्त्रियां और मनुष्य कुल मिलाकर ६०००० आदमी काम करते हैं। तीसरी प्राचीनतम हीरे की खान बंगाल प्रान्त में सोमलपुर है।<sup>6</sup> प्राचीन ग्रन्थों के अनुसार भातड़ (गोलकुण्डा) सौराष्ट्र

6. India a bird's eye view Page 169

7. Voyage and travels Page 102, 103

8. Tavernier's travels in India Page 319, 436

(गुजरात) पौरडू (छोटा नागपुर) कोशङ्ग (अब्ब) मौवीर (पड़ाव) वेणुगङ्गा (अङ्गात) और हैम अर्थात् हिमालय के आमपास के स्थानों में हीरे की खानों का पता चलता है। इसके अतिरिक्त मडास पन्ना और बुन्देलखण्ड में भी हीरे पाये जाने थे। चैम्बर्म इन साईकलोपीडिया के ग्रन्थकार का कहना है कि भारत स्वाभाविक रूप से अपने ऐश्वर्य के लिए सुविख्यात था।<sup>9</sup>

आयुर्विक संसार के बहुमूल्य हीरे भारत मां के ही अलङ्कार हैं। फ्रांस की शोभा बढ़ाने वाला पिट (Pitt) भिसका मूल्य आज १४०००० पौरडू है, और भारत सम्राट के मस्तक को अलंकृत करने वाला कोहनूर जिसकी कीमत ४८०,००० पौरडू आंकी जाती है, इसी देश की सम्पत्ति हैं। भारत का परिचय देने समय डॉक्टर आर० डी० ब्रूक्स आज भी सर्व प्रथम यहां पैदा होने वाले बहुमूल्य हीरे जवाहिरातों को बतलाकर अर्तीत की सृति को ताजा करना नहीं भूलते।

### मोती-मणि-माणिक्य—

मणि-माणिक्य-मुक्ता, पन्ना, पुस्तराज, नीलम आदि सभी के भारत में मिलने का टेबरनियर पता देता है।<sup>10</sup> बेनर और स्पेनसर (Spencier) की राय है कि पीत, नील, लाल आदि रंगों के मणि-माणिक्य पैदा करने का केवल भारत ही दावा कर सकता है। ब्रूटस की माता सरवीलिया (Servilia) को जूलियस सोजर द्वारा उपहार दिये गए मोती और सिल्योपाटा (Cleopatra) के कान के लटकन, इसी कमज़ा कोप के

9 Encycloedia Britannica Vol XI Page 446

10. See, The General Gazetteer and Geographical Dictionary

“Hindostan” Page 431

11. See, Taverniers travels in India

बहुमूल्य रत्न थे ।<sup>12</sup> जियालोजिकल सबै आफ डिएड्या के डाइरेक्टर जनरल टी० एच० हालैंड मुक्त कण्ठ से स्वीकार करते हैं कि प्रश्नति ने इस देश को सब कुछ दिया है । प्रमिल पाश्चात्य विद्वान मोल्स वर्थ भी कहते हैं—‘भारत भूमि धन की खान है ।’ मोरिसन लाल मणिक्य और जाडे (lade) का प्राप्ति स्थान ब्रह्मा बताता है ।<sup>13</sup> कालीकट के निकट नीलकण्ठा नामक एक बन्दरगाह था । इतिहासज्ञों के कथनानुसार दुर्निया भर में मोतियों के व्यापार की यह अंकली मण्डी थी । जिन मणि मुक्ताओं और हीरे जवाहिरातों का गुणगान फिरोसी<sup>14</sup> किया करता था, शेक्सपियर<sup>15</sup> की कविता के जो अलझार थे, वही बहुमूल्य पत्रा पुखराज और हीरे आज पाश्चात्य देशों का आश्रम ले रहे हैं, आधुनिक भारत के लिए तो उनका नाम कथा व शेष हो गया है ।

### सोना-चान्दी—

भारत का अतीत धन-धान्य-सम्पन्नता की एक सजीव कहानी था । इसका ‘कण-कण’ कमला का घर था । भारतीय आज भी सत्युग की वे कहानियां सुनया करते हैं जब प्रत्येक हिन्दू घर में सोने के बर्तन बर्ते जाते थे । हीरोडोटस कहता था

12. Hindu Superiority Page 389

13. A New Geography Page 222

14. ‘जियाकूनो अज्ञामासो जितेगहिन्द ।’—शाहनामा

15. My crown lies in heart not on head,

Not decked with Indian stones and diamonds,

Not to be seen it is called Contents,

A Crown it is that seldom Kings enjoy,

‘भारत सोने से मालामाल है।’<sup>१६</sup> यात्री टेबरनियर उसका पता बतलाता है—‘सोना कशमीर राज्य से आता है। वहाँ तीन पहाड़ियाँ एक दूसरे के सन्निकट स्थित हैं, जो अन्युत्तम सोना उत्पन्न करती हैं। टेपरा (आसाम) राज्य से भी सोना आता है।’<sup>१७</sup> पेरीप्लस (Periplus) गङ्गा के निचले मैदान में सोने की खाने बतलाता है। हीरन इतिहासकार सोने और चांदी के लिए भारतीय पर्वतमालाओं का पता देता है।<sup>१८</sup> अन्य इतिहासकार दक्षिण और मालावार के किनारे को चांदी सोने से भगपूर देखते थे तो हीरोडोटस ने नदियों से भी स्वर्ण संग्रह की पुरानी दास्तान सुना दी। चांदी के लिए जावर (मेवाड़) की खान मशहूर थी। सुलेमान सौदागर बतलाता है कि बेलद्रा राज्य में दृव्य बहुत है और चांदी की खाने हैं। यहाँ के लोग सोने के साथ चांदी का व्यापार करते हैं।<sup>१९</sup> सरजान एम० के भी अनुसन्धान को सुन लीजिए—‘सुन्दर जवाहिरात साधारण समुद्री चट्टानों और पहाड़ियों पर पाये जाते हैं जहाँ सोने की खाने हैं।’<sup>२०</sup> कोलार (मैसूर की खान से अब तक सोना निकलता है।। वहुत थोड़े दिन हुए कजारमाड़ेर जै० डेनिमल ने दुनिया को बतलाया था। ‘सन् १८८९ के शुरू में अमुद्रित सोना भारत में काफी (Stock) परिमाण में बिल्कुल बेकार पड़ा था।’ जिसका

16. Herodotus 111 Page 106

17. Tavernier's travels in Indian Page 366

18. See, Heeren's Historical Researches Vol II

19. सुलेमान सौदागर पृ० ५१, ५२

20. Voyage and Travels of Sir John Page 102

† सन् १९०५ ई० में इस खान से २४,००,०० पौरुष का सोना प्राप्त हुआ था। — सी० मोरिसन

व्यापार में कोई उपयोग नहीं होता था और प्रति वर्ष लगभग ३० लाख की गति से बढ़ रहा था, जिसकी बाजारीं कीमत २७,००,००,००० पौंड से कम न थी। यह सोना संयुक्त राज्य अमरीका में प्रचलित सोने का ढाई गुना था। <sup>२१</sup> टेवरनियर ने भी यही शिकायत की थी कि 'भारतीयों ने काफी सोना, चांदी और जवाहिरात जमीन के अन्दर दबे रख रहे हैं।' <sup>२२</sup> सर आर० टेस्पुल तो यहां तक कहते हैं कि 'प्राचीन काल से हिन्दू करेंटी सोने में थीं जिसका स्टैण्डर्ड (Standard) हमें एक रहता था।' <sup>२३</sup> अभी सोगल शासन से हुमायूँ के समय भिशती ने एक दिन के लिए चमड़े का सिक्का चलाया था। उसमें भी सदा सत्तरह आने के मूल्य का सुनहरा कुरड़ा लगा था। प्राचीन भारत वसुन्धरा का कौन सा सोना सोने चांदी से खाली था, यह बतलाना भी बहुत कठिन है। फ्रांसीसी यात्री वर्नियर अपने साथी कालथटे को सूचत करता है—'यह भारत एक (Aby<sup>ee</sup>) है, जिसमें विश्व के एक बहुत बड़े भूभाग का सोना चांदी चारों ओर से अनेकों उपायों द्वारा प्राप्त होता है।' <sup>२४</sup> पेरीप्लस यह भी बतलाता है कि यूनान भारत से सोना खरीदा करता था। यात्री अलवेस्नी तो यहां तक कहता है कि भारती अन्य धातुओं से सोना बनाने की रसायण विधि भी जानते थे किन्तु फिर भी वे अपना ध्यान इस और न देते थे। <sup>२५</sup> ध्यान भी कैसे देते

21. Travels in the Mogul Empire Foot Note

22 Travels Vol 11 Page 204, 205. See also Travels in the Mogul Empire Page 473

23. The Indian Review for Sept 1930

24. A Bird's eye view of India's past..... I Page 33

25. Alberuni's India Vol I

उनके पास तो इतनी अपरिमेय सम्पत्ति थी कि ये अर्थ को अनश्व और कमला को चञ्चला कह कर उपेक्षा की दृष्टि से देखा करते थे। किंवा भी उन्हें कभी उनके सद्बच्य से दूर होने की कल्पना नहीं की। प्रोफेसर हीरन की गवाही सुन लीजिए—भारत अतीत काल से ही सुसम्पन्न था।<sup>25</sup>

विगत कितने ही शताब्दियों तक निरन्तर यहां वर्षों के आक्रमण होते रहे। महमूद गजनवी ने केवल सोमनाथ के मन्दिर से इतने होरं जबाहिरात और सोना, लूटा था कि लूट के माल की कीमत का अन्दाजा लगाना कठिन नहीं—विलक्षण असम्भव था।<sup>26</sup> लङ्घड़ा तैमूर, गढ़गिया नादिर और दासीपुत्र गौरी कितना कुछ यदां में ले गये, अनुसान लगाना आसान नहीं। किंवा ये सो वर्ष पूर्व भारत की सत्रादिता को स्वीकार करते हुए केंद्रीय एवं पौर कहते हैं कि भारतीय इंतहास में कांड भी ऐसा समय जब कि उसके निवासियों की चूसने का ऐसा नियमित नहीं लगा हो, नहीं या जैसा कि अब है।<sup>27</sup>

भारत के सामृद्ध्य ने ही एक दिन उसे संसार के मुँह से 'सोने की चिड़िया' कहलाया! प्राचीन हिन्दुओं ने इस सोने पर प्रथ के प्रथ रच डाले थे।<sup>28</sup> मिल्टन<sup>29</sup> की कविता का विषय,

*In Heron's Historical Researches Vol II Page 266*

27 See Lethbridge's History of India

28. India; Impressions and Suggestions Page 1

‡ सुवर्ण पञ्चात्य खातं, प्रकृतं सहजं परम्।

वहिजं खनिजं तद्रद्देन्द्रवेयसं भवम्॥

29 "High on a throne of Royal State which for  
Out stone the wealth of ormany and of Ind  
Or where the gorgeous east with highest hand  
Showers on her kings barbarous pearls and gold."

*'Paradise lost' Vol II*

नैपोलियन का भाग्य निषायक और इंग्लैण्ड एवं योरोप का रक्षक—यह भारतीय सोना है। भारत का यह सोना उसके सपूत्रों के लिए अम्पष्ट रेखा मात्र है जो मन्त्रित अमरीका और योरोप की गतियों में ठोकरें खा रहा है।

## लोहा-फौलाद—

जिस जाति ने अपनी वीरता का सिक्का संसार पर जमा दिया हैं, जिसके अस्त्रों के बल पर कराल काल की डायरी (Diary) भरी जाती है, जिसने जहाज और हवाई जहाज की कला में कमाल हासिल कर लिया हो, उस देश में लोहे और फौलाद जैसी आवश्यकीय वस्तुओं का क्या धाटा ? प्रोफेसर विल्सन बतलाते हैं कि लोहे को गलाने, साफ करने और फौलाद तैयार करने की कला में हिन्दू आदि काल ही से कुशल थे। इंग्लैण्ड को तो कुछ ही वर्षों पूर्व कला का ज्ञान हुआ है। ३० दिल्ली के लोहस्तम्भ को देख कर डाक्टर फर्गुन महोदय कहते हैं— ‘हमको विश्वास करना चाहिए कि वे लोग इस धातु का काम बनाने में अपने प्रचात होने वाले कारीगरों की अपेक्षा अधिक दक्ष थे। यह बात कम आश्चर्य की नहीं है कि १४०० वर्ष हवा और पानी में रह कर अब तक भी उसमें जंग नहीं लगा। डाक्टर मुरे और पसीं भी इसके लोहे का निरीक्षण कर मुक्करठ से प्रशंसा करते हैं। एडनवग विश्वविद्यालय के मिस्टर कैमर्सन मोरिसन बतलाते हैं कि भारत में लोहे के प्रयान प्राप्ति स्थान, सर्लीम (मद्रास) चांदा (मध्य भारत) रानीगंज (बंगाल) हैं। अन्य स्थानों पर अभी कोई कोयले और चूने का निकट प्रवन्धन होने के कारण लोहा निकालने का काम नहीं होता। ११

श्रीमती मेनिंग का कहना है 'ऐमा प्रतीत होता है कि प्राचीन भारत मे लोहा उसकी आवश्यकता से अधिक होता था। क्योंकि फोनिशिया वाले दूसरी वस्तुओं के साथ यहां से लोहा भी ले जाते थे।' ३३

### कोयला—

खानिज द्रव्यों में कोयले का भी बहुत महत्व है। मोरीसन बङ्गाल मे रानीगंज, भिरिया, गिरीहीह, आसाम, बागेश्वर (म० प्रा०), सिंगरेनी (हैंदराबाद) और उमारिया (रीवा) कोयला मिलने के स्थान बतलाते हैं। ३४ लार्ड रोनाल्ड्शे का कथन है कि सन् १९१६ई० मे इस महाद्वीप मे २,२५,००,००० टन कोयला निकला और भविष्य मे अभी और गुजरात है। ३५

### नमक—

मिस्टर मोरीसन के शब्दों में नमक यहां बहुत पैदा होता है और बाहर विदेशों मे भी भेजा जाता है। पंजाब मे भी नमक की खाने हैं। कच्छ, सांभर, खेवड़ा पिंडादनसां और सुगृद से भी नमक निकाला जाता है, बङ्गाल मे भी नमक बनता है और मिट्टी द्वारा तो भारत के प्रायः सभी स्थानों मे तैयार किया जाता है।

### मिट्टी का तैल—

ब्रह्मा और आसाम मे काफी मिट्टी का तैल निकलता है। मोरिसन महोदय के कथनानुसार ब्रह्मा मे ६८ प्रति शत तैल

32. Ancient and mediæval India Vol II Page 364

33. A new geography Page 221

34. India A bird's eye view

फसल खेतों में खड़ी है वह निहायत अच्छी है। कपास की फसल यद्यपि समाप्त हो चुकी है, परन्तु देखने से पता चलता है कि वर्षा वहुत अच्छी हुई होगी। सम्पर्क के निश्चित चिन्ह भी यहां सुरक्षा देखने को मिलते हैं। मैंने खांड के कई कारखाने देखे हैं।<sup>१२</sup>

### अन्न—

विभिन्न प्रकार की जल वायु और उर्वरा भूमि ने भारत के अन्दर उन सभी पदार्थों को प्रचुर परिमाण में प्रकार्त्रित कर दिया है जिनकी कि जीवन में कभी आवश्यकता पड़ सकती है। मिठो मोरिसन लिखते हैं कि 'चावल, गेहूँ, चना, मक्की, मोठ, ममू जुवार, थाजरा, अरहर, उड़द, शकर, मसाले, मद्दजारा, निलहन सब कुछ यहां पाये जाते हैं। चाय और काफी, तम्बाकू अफीम सिनकोना आदि भी खूब पैदा होते हैं।<sup>१३</sup> लाई रोनाल्डशे बतलाने हैं कि सन् १९१६-१७ के साल में ३४७५००००० टन चावल, १०२५०००० टन गेहूँ, ३७०००००००० पौरुष चाय, ५०००००० टन अलसी और लगभग १२०००००० टन राई एवं (Rape) तथा इतने ही परिमाम में मूँग कलियां वृटिश भारत में उत्पन्न हुई थीं।

भारत निरामिष भोजी देश है अस्तु भारत के से शाक फल फूल प्रकृति ने दूसरे देशों को दिये ही नहीं। मिसेज रावर्ट्स मास किंग कहती हैं 'भारत में पुष्पों की प्रचुरता है। अधिकांश लोग जिनके पास कोई वाटिका नहीं, वे लोग भी माली नियुक्त करते हैं, जिसका काम प्रति दिन फूल लाना और उन्हें सजा कर

रखना है। प्रत्येक घर में आपको फूलों से भरी टोकरियाँ और गुलदस्ते मिलेंगे जिसका दाम लन्दन में गिनियाँ हैं।<sup>४१</sup> सी० मोरिसन का कथन है कि भारत में अनेकों प्रकार के फल उत्पन्न होते हैं। प्रांसीसी यात्री डाक्टर फ्रांकवीस टेवरनियर लिखता है— मैंने आज तक ऐसा देश देखा ही नहीं जहाँ पर भानि २ की चीजें उत्पन्न होती हों।<sup>४२</sup> आगे चल कर आप कहते हैं कि १८१६-१७ ई० में ब्रृटिश भारत के अन्दर २५५०००० टन कच्ची शक्कर पैदा हुई। टेवरनियर प्रांसीसी ने यात्रा बर्यान में लिखा है कि नील, अदरक, पीपली, दारचीनी आदि मसाले भी यहाँ से बाहर भेजे जाते हैं।<sup>४३</sup>

केसर भारत भूमि के विस्तृत अब्बल की अपनी अनोखी वस्तु है। संसार भर का चक्कर लगा आइए कशमीरी केसर की क्यारियों का आत्मन्द कर्ही भी नसीब न होगा। लेफ्टीनेंट कर्नल एच० ए० नेवल लिखते हैं कि नवीं शताब्दी में प्रथान आमात्य पद्म द्वारा बसाया गया पद्मपुर अपने केसर के खेतों के लिए सुविख्यात है।<sup>४४</sup> टेवरनियर सूचित करता है कि फारस में बिकने वाला मुश्क बहुत बड़ी सात्रा में भूटान से पटना को आता है।<sup>४५</sup>

### रुई—

अब भारत की उस रुई पर भी विचार करना आवश्यक है। जिसने संसार के अन्य देश वासियों को उनके बल्कल परिधान से

41. A civilians wife in India Vol I Page 94, 95

42 Travels in the Mogul Empire

43, Taverniers travels in India

44 Topee and Tarban Page 42

45, Taverniers travels in India Page 300

मुक्त कर के सम्यता का स्टार्टीफिकेट दिया था। रुई की जन्म भूमि भारत है। इसका प्रमाण एच० जी० रालीचिन्सन आई० ई० एम० की जबानी सुनिए—‘आसुर वार्गी पाल (असीरिया) ने रुई और उन के बृहों के लिए भारत को आदमी भेजा था, जैसा कि इसने सुन रखा था। इसने ६६८ मे ६१६ ई० पूर्व तक राज्य किया था।’<sup>46</sup> योरोप के रंगमंच पर खड़े होकर सम्यता की प्राचीनता का ढोल पीटने वाले यूनानियों का हाल भी देखिए। सिकन्दर का मेनापति अरिष्ट दुजुंसे कहता है कि ‘कपास उन का पेड़ होता है।’ उसीका सेना नायक अमीराल नियर्डस अपने देश वासियों को सूचित करता है—‘भारतवर्ष में ऐसे पेड़ होते हैं, जिन से भेड़ों के रोये के समान उन निकलती हैं।

अब प्रश्न यह है कि पाश्चात्य देशों ने इस पहली को समझा कब ? श्रीमती मेनिंग के शब्दों में भारतीय कपास से अबौ ने ‘कुटा’ (Quata) बनाया और कुटा योरोप में परिवर्तित होकर काटन (Cotto) बन गया काटन (रुई) कूमेंड काल में अबौ द्वारा योरोप पहुंची।<sup>47</sup> मिस्टर मिल मानते हैं कि प्रकृति ने भारत को एक दूसरा सुभीता और देरखा था। उनकी जल वायु और भूमि कला के लिए उत्कृष्ट साधन इकट्ठा करती थी और वह संसार भर से सुन्दरतम हुई।<sup>48</sup> आज भी संसार में पायदारी के ख्याल से कोई भी रुई भारती रुई से टकर नहीं ले सकती। श्रीमती मेनिंग भी इसका समर्थन करती है। प्राचीन भारत बुनने के लिए सर्वोत्तम रुई एकत्रित करता था।<sup>49</sup>

46 Intercourse between India and the western world Page 3

47 Ancient and Mediaeval India Vol II 356

48. History of India Vol II Page 17

49. India; a bird's eye view Page 171-172

लाई गोनार्डो के कथनानुसार मन् १६१६-१७ ई० में ब्रिटिश भारत ने ४५०००००३०० पौंड रुप्त की गांठ तैयार की।<sup>१०</sup>

## रेशम—

इतिहास के प्रसिद्ध अन्वेषक विडान कालब्रुक वतनाते हैं— सिल्क Silk शब्द की व्युत्पत्ति कदाचित संस्कृत के 'मूत्र' शब्द से हुई है। जो रेशम के भारतीय होने का व्यापक है।<sup>११</sup> सी० मोरिसन एम० ए० बंगाल और आसाम की रेशम और दसर को अच्छी वतनाते हैं। डाक्टर एफ० वर्नियर कहता है कि केवल बंगाल ही में कपास और रेशम इतनी मात्रा में पैदा होती है कि वह इन दो चीजों का शुदाम (Store House) कहलाता है। यह केवल भारत के लिए ही नहीं प्रत्युत आस पास के राज्यों और योरोप को भी जाती है।

## जूट—

सर्व प्रथम पाश्चात्यों का ध्यान इसकी ओर आकर्षित करने का श्रेय डाक्टर राक्सवर्ग को है। इन्होंने १७६५ ई० में ईस्ट इण्डिया कम्पनी के डाइयेक्टरों के पास जूट की एक गांठ भेजी थी। यह जूट शब्द का सम्भवतः सर्वप्रथम लिखित प्रयोग था। पूर्वी बंगाल में इसे पाट और कुछ काल पूर्व माट कहते थे। यह वहां के लोगों का घरेलू व्यवसाय था। उन दिनों कलकत्ते के व्यापारी हेनली के कथनानुसार इस दस्तकारी में लड़के, स्त्रियों और मनुष्यों को काफी काम मिल जाता था। मल्लाह, कृपक, कहार घरेलू नौकर अपने अवकाश समय में इसे कातने में व्यय किया

करते थे । यह हिन्दू विधवा आं को परिवार पर भारस्वरूप होने के बजाय उन्हें अपना गर्वच चलाने में महायता देता था ।<sup>५०</sup> एक वर्ष ( १९१६-१७ ) में बृटिश भारत ने ४२००,००० जूट की गांडे उत्पन्न कीं । जूट गंगा और ब्रह्मपुत्र की निचली बांदीयों, बम्बई और मद्रास में पैदा होता है ।

इसके अतिरिक्त बम्बई में वास्त्रे हेम्प (Bombay Hemp) नाम का एक दूसरा पैदा होता है । मोर्गन साहब कहते हैं कि इसके रेशे से बन हुग बेग का मूल्य साधारण जूट की अपेक्षा छँ गुना अधिक होता है ।<sup>५१</sup>

### जङ्गल—

लाडे रोनाल्ड्स लिखते हैं—‘यहाँ प्रकृति अपने को एक मित्रता के परिधान में प्रकट करती है । + + + ये हमें फल फूल आश्रय, छाया, दंधन और चारा देते हैं । यहीं भारत के आदिम वैदिक साहित्य का निर्माण हुआ था । उस की एक शाखा ‘आरण्यक’ कहलाती है । जिस के दार्शनिक विचार अत्यन्त ऊचे हैं । सभ्य के साथ साथ बन निवासियों के लिए बानप्रस्थ शब्द का प्रयोग हुआ । तत्पश्चात् समस्त द्विजातियों के जीवन का इसी सम्बन्ध से वर्गीकरण भी हुआ ।<sup>५२</sup> बास्तव में भारत के जङ्गल उस के लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं । जङ्गलवृष्टि, वायु शुद्धि गोचर भूमि के अतिरिक्त आर्थिक दृष्टि कोण से भी इनका उपयोग कुछ कम नहीं, अनेकों औषधियों, कल्पनियों, वनस्पतियों, वनस्पति वनस्पति और भान्ति २ की लकड़ी इन से प्राप्त होती हैं कितने ही पश्च पक्षी जिन

52 India; A bird's eye view Page 157

53. A new geography of India and Ceylon Page 81

54. ब्रह्मवर्य, गृहस्थ, बानप्रस्थ और सन्यास । See India; a bird's eye

view Page 187-188

काव्यापार और उपयोग आज संसार कर रहा है, भारतीय बनों की ही सम्पत्ति थे। सी० मोरिसन का कथन है कि भारतीय जल वायु की विभिन्नता के कारण यहाँ अनेकों प्रकार के वृक्ष उन्पन्न होते हैं।<sup>५५</sup> किन्तु काल चक्र ने भारत के भाग के माथ ही इनकी किम्मत को भी पलट दिया। लार्व महोदय बड़े दुम्ब के माथ कहते हैं—भारतीय जङ्गल आज शिकायगाह है इन गड़े हैं। + + + अमङ्गल का आक्रमण हुआ है कि राज्य की ओर से उनके पशु नाश के उपदार दिये जाते हैं।

### पशु—

पशु राष्ट्र की बहुत बड़ी मम्पत्ति है। सर जान उड़स्फी कहते हैं कि 'जहाँ पशुओं की अवस्था अच्छी है, वह देश सुसम्पन्न है।' यही कारण है कि पूर्वकाल में भारत के अन्दर पशु पालन का बहुत बड़ा महत्व था। इनके चरने के लिए राज्य की ओर से गोचर भूमि छोड़ दी जाती थी। आनंदेयुल जमिटम उड़स्फी बतलाते हैं कि 'प्राचीन पौराणिक कहावतों के अनुमार वह घर जिस में गो (Cow) नहीं है शमशान तुल्य है।'<sup>५६</sup> गाय को प्राचीन हिन्दुओं ने इतना महत्व क्यों दिया था? इस प्रश्न का उत्तर संयुक्त राज्य अमेरिका के प्रिन्सिपल जान पैच० गेहर्स की जबानी मुनिए 'गड़े' के बल दूध दही मक्खन आदि ही नहीं देतीं, वे पृथ्वी की उत्पादक शक्ति को भी कायम रखती हैं। दूसरे कृषि कला विशेषज्ञ सी० डब्ल्यू० वर्कट की शय मुनिए—'लगातार २० वर्ष तक एक खेत में गेहूँ बोने से वह निस्तत्व हो जाता है। गेहूँ की उपज जमीन को बनजर बना डालती है। उसकी उत्पादन शक्ति की रक्ता केवल गायों द्वारा ही हो सकती है।'<sup>५७</sup>

55. A new geography Page 83

56. Bharat Shakti

57. The Soil Page 258

उपयोगिता की दृष्टि से कृषि प्रचान देश भारत में गाय का बहुत बड़ा महत्व है। इसका धी दूध मानव शरीर का पोषक है मिस्टर गोहर्स के शब्दों में गाय के दूध में सभी पोषक तत्व मौजूद हैं जिनकी शरीर को आवश्यकता है।<sup>१</sup> मल-मूत्र खाद के रूप में काम देता है, इनके बछड़े धरती को जोतते और गथों में चलते हैं। यही कारण था कि प्राचीन भारत भूमि में दूध धी की कमी न थी, कृषि कर्म में भी वाधा उपस्थित न होती थी। सर जॉ उड्डल्फी कहते हैं 'अतीत और वर्तमान की तुलना करो। अतीत से मेरा आशय किसी स्वर्ण काल से नहीं प्रत्युत उम विगत काल से है जिसका कि आज के लोगों को समरण हो। पञ्चास वर्ष की अवस्था का मनुष्य भी उस समय को याद कर सकता है, जब गाय का दूध रूपये का ३२ संर विकता था और एक दो सेर तो केवल कहने-मात्र से ही मिल जाता था। अब उसका मूल्य बासों बढ़ गया है और किसी भी कीमत पर शुद्ध दूध मिलना कांठन है।'<sup>५६</sup>

भारत के अतीत और वर्तमान में इतना वेष्य क्यों? यह कि तब राजा की ओर से उनकी रक्षा होती थी और अब वध। उस समय पशु बेचना अपराव था और अब न बेचना। देखिए सर जान उड्डल्फो क्या कहते हैं—'इसका भी ध्यान रखना चाहिए कि भारतोंय पशु विदेशों को भेजे जाते हैं। + + + भारत सरकार के अण्डर सेक्रेटरी मिस्टर ह्यूम की रिपोर्ट के अनुसार प्रत्येक पशुओं की एक बहुत बड़ी सख्त्या की भारत में हत्या होती है। खालों के बाहर भेजने के व्यापार में बढ़ती बतलाई जाती है। १८६५ में यह ६० लाख की थी और १८१४ में १३ करोड़। मिस्टर जासवाल कहते हैं कि लगभग १ लाख

५० हजार पशु योरोपियन सैनिकों के लिए वध किए जाने हैं। रिपोर्ट से यह भी पता चलता है कि एक वर्ष में १ करोड़ पशु श्रीमारियों में मर गए।<sup>१</sup>

लाड गोनालडशे पशुओं की उपयोगिता पर विचार करते हुए लिखता है कि किसी दूसरे राष्ट्र का नाम बतलाना जो भारत में चमड़े के व्यापार में बढ़ा चढ़ा हो करिन है। + ÷ ÷ युद्ध में पहले १६०६४२१ हण्डरवेट चमड़ा और खालै विदेशों को गई जिन का मूल्य १०६०६००० पौंड था।<sup>२</sup>

हाथी भी भारत मां की गोद में पला हुआ अपना पशु है। प्राचीन काल में यह भारत के आर्तिरिक्त अन्यत्र कहीं भी नहीं पाया जाता था। भारत में आदि काल से ही ऐसी किसी सेना का वर्णन नहीं मिलता जिसमें हाथी का इलंख न किया गया हो। मोरिसन महोदय बतलाते हैं कि आधुनिक काल में ब्रह्मा में हाथी को लकड़ी के बड़े २ लट्टे खींचना और एकांत्रत करना स्थिराया जाता है। राजपूताना और सिन्धु के ऊंट, काटियाबाड़ के धोड़े ब्रह्मा के टैंबन (Poney) मद्रास की भैंसें, हरियाना की गायें और हिमालय के अनेभैंसें, खचर, भोड़ वकरी आदि पशु आज भी इस देश में प्रचुरता से पाये जाते हैं।<sup>३</sup>

भारत के विशाल द्यान में आनन्द का राग अलापने वाले पक्षी, आज तक विश्व के बड़े बड़े यात्रियों ने अन्यत्र देखे ही नहीं। पपीहे की पुकार, कोयल की कूक, शुकमारिकाओं का गान, मयूर का नृत्य, मराल की मन्द-मन्थर गति दुनिया के कोन से एक देश को नसीब है। विदेशी शौकीनों ने भारतीय मार के लिए रकमें खर्च की हैं।

संस्कृत में मोर को 'केकी,' प्राचीन तामिल काव्यों में 'टोकी' और हिन्दू में 'दुकी' (Tuki) कहा गया है। प्रोफेसर लेसन भी बतलाते हैं कि यह शब्द संस्कृत से लिया गया है।<sup>११</sup> कहने का आशय यह है कि मोर भी भारत से ही अन्य देशों को पहुंचा है।

पशु-पक्षियों का पालन कर 'अहिंसा परमो धर्मः' को जीवन का आदर्श मानकर ही भारत सूर्योदासी देना था। लार्ड रोनाल्डशं बतलाते हैं कि औद्योगिक कर्मीशन के अनुसार भारत में ( १८१६-१७ ई० ) १०००००००० पशु और ८५०००००० भेड़ बकरियां थीं।<sup>१२</sup>

भारत का वैभव बहुत कुछ इन पशुओं की ही दर्दालत सुरक्षित था। इसी लिए समाट अकबर ने गोवध बन्द करने का बड़ा कड़ा कानून बना रखा था। विदेशी यात्री कमालुहीन अबदुल रज्जाक भी कालीकट के ऐश्वर्य का चित्रण करते हुए कहता है कि 'इस बन्दरगाह पर हर एक वस्तु मिल सकती है, केवल एक गाय का तुम वध नहीं कर सकते और न ही खा सकते हो उसका मासि !'<sup>१३</sup> प्राचीन भारत की चतुर्दिक उन्नति के मूल में थे ऐसे राज्यकीय नियम !

भारत पूर्व काल में पूर्ण रूप से सम्पन्न था। यहां हीर-जवाहिरात, मणि-मणिक्य, सोना-चांदी, लोहा-तांबा कोयला आदि की बड़ी बड़ी खानें थीं, पशु पालन धर्म का अंग समझा जाता था 'धी-दूध के स्रोत उमड़ते थे और धन धान्य से भरपूर था। इतिहास वेच्चाओं के मतानुसार ईसा की १८वीं शताब्दी के

C1 Ancient and mediaeval India Vol II Page 350

62 India; A bird's eye view,

63, Scenes and Characters from Indian History Page 55.

अन्त तक इस विशाल देश की गणता विश्व के सम्पन्न-जगत् देशों में की जाती थी। धन-धान्य की प्रचुरता के कारण बहुत थोड़े खर्च में लोग आशम की जिन्दगी दिताते थे। अभी १८७७ ई० में अपने पति के साथ भारत पवारने वाली अंग्रेज महिला श्रीमती रावर्टमास किंग लिवर्टी हैं—‘निश्चयात्मक रूप से किसी दूसरे देश में नहीं प्रत्युत भारत में आप बहुत थोड़े खर्च पर गुजारा कर सकते हैं। आप बतलानी हैं कि १२ पौरुष ( १८० सप्ते ) वार्षिक काफी हैं।’<sup>६४</sup> योरोपिय-शासक जाति की महिला के रहन सहन को सोचिये और १५) रूपये मासिक खर्च !!

मुग अपने मद ( कस्तूरी ) के कारण मृत्यु-मुख में प्रवेश करता है, तुमने अपने सौरभ एवं सौन्दर्ये के कारण लोनुपों का शिकार बनता है, पक्षी अपनी मुरीली सदा के कारण बन्दी बनता है और भारत भी ठीक उसी भान्ति अपनी अमित सम्पत्ति राशि के कारण विपन्न बना ! ब्रह्मा के भूतपूर्व गवर्नर सर हार्ट-कोर्ट बट्टलर के ये शब्द इस उक्ति का समर्थन करते हैं—‘भारत की कालपेनिक और वास्तविक सम्पत्ति ने पुर्तगेज, डच, फ्रांसीसी और अंग्रेजों को अपनी ओर आकर्षित किया।’<sup>६५</sup>

जिस भारत के उत्कर्ष की कहानियां संसार के लिए अलादीन के चिराग से कम आश्चर्य जनक न थीं। जिसके असाधारण धन को मिस्टर एफ० ए० स्टील प्राचीन काल में सर्वत्र विवरा हुआ बतलाते हैं।<sup>६६</sup> लार्ड रोनाल्डशे के शब्दों में उसी ‘भारत भूमि के पौदे पर आज भी पाश्चात्य जगत् का औद्योगिकबाद बहुत कुछ टिका हुआ है।’<sup>६७</sup>

64. A civilian's wife in India Page 20

65. India Insistent Page 63

66. See, India through the ages

67. India; A bird's eye view Page 161

## प्राच्य और प्रतीच्य

कुछ समय से हम धर्म, समाज, साहित्य, शिल्प और इतिहास आदि की अलोचना में 'प्राच्य' एवं 'प्रतीच्य' इन दो शब्दों का व्यवहार करते आ रहे हैं। भारतीय सभ्यता को केवल भारतीय सभ्यता कह कर ही हमें सन्तोष नहीं होता, हम कहते हैं प्राच्य सभ्यता। प्राच्य शब्द की प्राचीन काल से कोई भी व्यञ्जना क्यों न रही हो, आधुनिक काल में यह अंग्रेजी के 'ओरियेटल' (Oriental) शब्द के प्रतिस्थित में ही व्यवहृत होता है। विभिन्न समयों में पश्चिम या योरोप की दृष्टि से प्राच्य जगत् के जो चित्र प्रतिभासित हुए, 'ओरियेटल' शब्द में वे सब विचित्र दौतनाएं निहित हैं।

पाश्चात्य योरोप ने प्राच्य एशिया का परिचय पाया है खण्ड-खण्ड में, आंशिक रूप में। प्रारम्भ में ही एक समय सम्पूर्ण परिचय ले कर, उसके प्रतीक स्वरूप 'ओरियेटल' शब्द की सृष्टि नहीं हुई। युग-युग में परिचय जितना व्यापक और घनिष्ठ होता रहा, शब्द की व्याप्ति और तात्पर्य भी उतना ही रूपान्तरित हो गया। हेरोडोरस का प्राच्य-जगत्, रोमन साम्राज्य का प्राच्य जगत्, कूसेडार का प्राच्य जगत्, मार्कोपोलो का प्राच्य जगत्, अठारहवीं शताब्दी का प्राच्य जगत् उन्नीसवीं और बीसवीं शताब्दी का प्राच्य जगत्—यह सब परस्पर विभिन्न हैं योरोप ने जब से अपना एक विशिष्ट सत्त्व उपलब्ध करना आरम्भ किया, तब से उसे जो कुछ अपने से स्वतंत्र, और विषम प्रकृति का

मिला, उसी के प्रतीक स्वरूप वह प्राच्य मंड्जा का व्यवहर करता आरहा है। प्रतीच्य की कल्पना से प्राच्य उस के निकट 'Not-Self' अर्थात् 'जो मैं नहीं' वह प्राच्य।

इस 'Not-Self' का परिचय यदा-कठा बदलना अवश्य रहा है, परन्तु 'East & West' 'प्राच्य और प्रतीच्य' इस 'Dichotomy' मूलगत द्वैत भावना से आज तक कोई अन्तर नहीं पड़ा। एक समय था जब प्राच्य कतिपय वडे वडे यथेच्छाचारी समाजों की लोला भूमि था, योग में जब योग गम्भीर समूह से गणतन्त्र का बोलबाला था, तब प्रतीच्य के चित्त पर प्राच्य का यहाँ चित्र प्रतिभासित हुआ और जब रोमन साम्राज्य का गौरवमय युग आया, तो योग के धर्म समाज की आखों में प्राच्य मणि-मुक्ता, धन-रत्न, गन्ध-दृव्यादि विलास सामग्री का भएड़ार-ऐश्वर्य विलासियों का भूम्बर्ग बन गया।

क्रिश्चियन धर्म के अभ्युदय काल में प्राच्य से प्रतीच्य देश तक धर्मोन्साद का स्रोत बहा, उस धर्म एकावन युग में प्राच्य आध्यात्मा-साधन का देश, योग रहस्य का देश, संमार वैदिक्य का देश मान लिया गया।

मुमलमान धर्म की उद्दीपना में जब अरब और तातार ने आधीं की तरह उठ कर क्रिश्चियन योगोप के दो प्रान्त विघ्वस्त कर डाले, तब प्राच्य वर्वर, धर्म विघ्वांसी, क्रिश्चियन द्वेषी देश के रूप में बदल गया।

क्रमेड युद्ध के उपलक्ष में जब प्राच्य प्रतीच्य के साक्षात् समर्ग म आया तब उस चित्र का रङ्ग फिर पलटा, प्रतीच्य जिसे कोरे शैतानों का राज्य समझता था, वहीं अब उसे एक मार्जित सभ्यता की प्रतिष्ठा देख पड़ी, जो उस की तत्कालीन सभ्यता से श्रेष्ठ थी।

मार्कोपोलो जब मुन्दर चीन से मंगोल लग्नाट के गौरव मणिडत दरवार का समाचार ले गया, तब प्रतीच्य की आंखों में प्राच्य की सम्मता और बढ़ गई। भारत के मुगल और पारस के माकाविदीय साम्राज्य ने इस चित्र पर और भी नया रङ्ग चढ़ा दिया।

संक्षेप में जो चित्र बना, उम में प्राच्य जगत् की भाष प्रस्पदा के स्थान पर इसकी अप्रतिहत गङ्ग शक्ति की महिमा, मर्गि-मणिक्य की समुज्ज्वल दृष्टि, शिल्प-संसार का ऐश्वर्य और प्रासादों एवं मन्दिरों के गगन चुम्बी शिखरों ने योरोप की आंखों में चका चौंद बैठा दी। लोगों की विली सी आंखें ललचाई, परन्तु नैपालियन ने सहमते-सकुचंत कह दी डाला—सोते सिंह को सोने ही दो, जगाने से लाभ नहीं।

जब वारन हैम्प्टिंग्स के जमाने में विलीयम जोन्स ने कलकत्ते में एशियाटिक सोसाइटी की स्थापना की, तब योरोप में प्राच्य परिचय का एक नया अध्याय खुला, संस्कृत और फारसी साहित्य के ज्ञान-भण्डार और भाव-सम्पदा योरोपियन पण्डितों के सामने आते ही उन में प्राच्य सम्बन्धी कुछ विशेष धारणाएं उत्पन्न हो गईं।

पहली धारणा है प्राच्य सम्यता की प्राचीनत्व सम्बन्धी। पूर्व देश ही संसार की प्राचीनतम सम्यताओं की जन्म भूमि है, इसकी अति वृद्ध स्थविरता में न जाने कितने युगों की अभिज्ञता का रहस्य संचित है, वाद्वैक्य के गौरव और सम्मान का जबलन्त प्रमाण है प्राच्य! रोमान्टिक युग के भावुक हृदयों में प्राच्य के प्राचीनत्व ने कितने ही भावों की सृष्टि की। मनस्वी एण्डमण्ड वर्क ने हेस्टिंग्स के कार्यकलापों के विरुद्ध जो अभियोग उपस्थित

किया था, उसकी उहीपना की जड़ में भारत की प्राचीनत्व मर्हदा ही थी ।

इसके साथ ही साथ एक और धारणा उठी—प्राच्य की स्थावरता । एशिया के कार्य जीवन की कहानी कमशः उन्मुक्त हुई, जिस में शायद जीवन की चक्रलगति न थी, था पुनरावृति की, पुनरावृति गतानुगतिका का प्रवाह । किसी ने कहा इस महादेश के रक्त प्रवाह की गति इतनी मंथर है कि यह बहुत दिन पहले ही बुद्धापे के पल्ले पड़ा प्रतीत होता है, इसे जिन अवसाद ने धेर रखा है वह मृत्यु का ही पूर्व लक्षण है । कुछ ने कहा नहीं जी, मृत्यु तो बहुत पहले ही हो चुकी है, अब जो कुछ शेष है वह है 'मर्मा' मात्र । विद्याता के जिस उद्देश्य से प्राच्य का उद्व हुआ था, उसे समाप्त कर यह न जाने कब अपनी जीवन लीला साग कर चुका है । वस्तुतः यह बलासिकल सभ्यता की सड़क कूटने आया था, और अब अपना काम खत्म कर रङ्गमच से विदा हो चुका है । इसके बाद आया बलासिकल और वह भी रोमाइटिक अर्थात् उन्नीसवीं शताब्दी की योरोपिय सभ्यता का मार्ग बना कर चिरावसर प्रहरण कर गया । संसारके वर्तमान और भावी इतिहास में अब इसका कोई स्थान नहीं ।

प्रतीय है गतिशील, चक्रल-यौवन, और प्राच्य है स्थावर स्थविर । इसके साथ ही साथ प्राच्य का एक और गुण रोशनी में आय, यह है तत्वान्वेषी, ध्यानमग्न, संसार-विमुख, विहिर्जगत् और वस्तु जगत् से एकान्त उदासीन । वैभव, ऐश्वर्य, समाज, राष्ट्र प्रासान्ध्रासन और ऐहिक कल्याण साधन ने विचित्र उपकर की अपेक्षा उसने कोपीन-कन्था को महत्व दिया है । साधन में आत्मा नियोग किया है । यही बात दूसरे

तरह कही जा सकती है। यह है स्वप्न विलासी और स्वप्न का नाश ही इसे ले डूवा है।

इस तरह ऐतिहासिक घवेपणा की दृष्टीने से उन्नीसवीं शताब्दी भर प्रान्त्य-प्रकृति के भिन्नता विशेषत्व आविष्कृत होते रहे। और साथ ही साथ बढ़ता रहा बाहिर्जय एवं शासन विस्तार के सूत्र से बास्तविक प्रान्त्य के साथ संसर्ग। फल स्वरूप जो चित्र बना, उस में नाजा असंगतियों का समावेश हो गया और उस चित्र से जो रस प्रकट हुआ वह भी था अद्भुत। रुंप, शेर मिट्टी, कीचड़, मरु, जंगल, योगी, उम्मीदवार, दरबंश, पुंगी, मदारी, कुली, बादू, ताजमहल, कांथा, कीमखवाब और रङ्ग विरङ्गे मन्त्र्य—सब मिलाकर बन गया एक किम्भूल किम्कार देश, एक ख्याली राज्य।

इसका एक शब्द में 'परिचय इं तो वह था अप्रतीन्य' योरोप का 'Not 1'—'मैं नहीं'। किप्लिंग जैसे प्रमुख हास्य-रस लेखक ने इसी दुनिया का पल्ला पकड़ कर योरोप के रसिक समाज के सामने अद्भुत रस की चटनी परोसी थी।

उन्नीसवीं शताब्दी के शेष भाग और बीसवीं की सूचना के साथ ही साथ एक नवीन अनुभूति मिली। मृत एशिया के शुष्क अस्थि पञ्चर में न जाने कहाँ से नूतन प्राण की चञ्चलता आगई। 'असभ्य जापान' रात की गहरी नीद छोड़ कर योरपीय राजचन्द्र के मध्यस्थान में जा छटा। चीन, फारस, अरब, अफगानिस्तान, यहाँ तक की चिरनिरित भारत भी—सब एक साथ आंखें मल कर उठ बैठे। एक दम भौतक कांड! योरोप के चित में एक नई शङ्का उठ खड़ी हुई, जिस का प्रथम नामकरण हैं पीतातङ्क (The Yellow peril), बाद में व्यापक व्याख्या की गई,

'The problem of the Coloured Race,' अर्थात् 'पंगीन जातियों की समस्या।'

यह हुआ प्रतीच्य के प्राच्य परिचय का इनहास। योरोप के पण्डित और मनस्वी समाज में कितने ही ऐसे हैं, जिन्होंने गहरी अन्तर्राष्ट्र से प्राच्य जगत् का निविड़तर परिचय लाभ किया है, जिसका चित्रण आप को पुस्तक के प्रत्येक पृष्ठ पर मिलेगा।

अब हमारे हृदय में प्राच्य जगत् सम्बन्धी क्या धारणा है, इसका भी विश्लेषण कर लेना चाहिए। पहले ही कहा जा सकता है कि अंग्रेजी शिक्षा के पूर्व कभी हमने प्राच्य शब्द से अपना परिचय नहीं दिया। यह शब्द वर्तमान काल में अंग्रेजी 'Oriental' का अनुवाद मात्र है। अंग्रेजों ने जब हमें पाश्चात्य शिक्षा में दीक्षित किया, तब हमने भी शिष्योच्चित श्रद्धा के साथ, चित्त क्षेत्र से पूर्व संस्कारों का ज्ञाल हटा कर, योरोप के विज्ञान समुज्ज्वल जगचित्र को आत्मसात् कर लिया। योरोप ने जिस भाव से जिस वस्तु को देखा, हमने भी वही दृष्टिकोण अपना लिया। योरोप की आंखों में जो निकट और स्पष्ट था, वह हमें भी वैसा ही जंचने लगा। योरोप के लिए जो सुदूर और अस्पष्ट था, वह हमारे निकट, घर के पास होते हुए भी, दूराति-दूर और बाधपाकार बन गया।

प्राच्य जगत् के अन्तर्मुक्त होते हुए भी हमने उसका परिचय सीखा शिक्षा गुरु योरोप से। अतएव आदि काल से प्रतीच्य के चित्त पर प्राच्य जगत् के जो विभिन्न खण्डचित्र अद्वित हो गये थे, उन्हीं का एक एकत्रित-कम्पोजिट फोटोग्राफ लेकर हमने अपना प्राच्य जगत् बना लिया। फलतः मानसिक प्रतिक्रिया भी एक रूप होगई प्राच्य जगत् योरोप के चित्त में जिन अद्भुत रसों (Bigarre, & exotic) की सृष्टि करता है। हमारे मन में

भी वही रस जाग पड़े । इस 'किम्भूतकिमाकार' देश के अधिवासी होने के नाते हम लड़ा का अनुभव करने लगे । आद्वार-विहार पोषाक परिच्छद, आचार-व्यवहार, गति-नीति और चिन्ता-चेष्टा — सब विषयों में प्राच्यत्व का नाम निशान मिटा देने की चेष्टा हमारे लिए माधु प्रयत्न बन गई ।

धीरे धीरे नूतनदीक्षा की मोह निद्रा दूटने लगी । हम ने पाश्चात्य ओरिएटलिस्ट परिषदों के प्रन्थ पढ़े, मेकाले के स्थान पर मैक्समूलर के शिष्य बने । नवीन गुरु एवं तत्प्रवर्तित सम्प्रदाय के प्रन्थों में प्राच्य सभ्यता के बहुत से प्रशंसा पत्र मिले । सदा शिर अवनत करके नहीं रहा जा सकता । प्रशंसा पत्र ज्वान की नोक पर रख कर सभा समितियों में प्राच्य गैरव का प्रचार करने लगे । हम प्राचीन जाति हैं, स्थिति ही हमारा आदर्श है, गति नहीं, हम जड़ विमुख हैं, तात्त्विक हैं, ऐहिक जीवन के तत्वों की हमने उपेक्षा की है, परमार्थ ही हमारे लिए एक ग्रात्र अर्थ है— आदि अनेक सान्तवना वाक्यों में हमने अपने वर्तमान आधुनिक जीवन की जड़ता और आलस्य की सुन्दर आध्यात्मिक व्याख्या खोज निकाली । इस तरह जातीय आत्माभिमान को छक्कुण्णा रख कर सरकारी चाकरी के सहज स्वच्छन्द मार्ग पर भीड़ लगा कर खड़े हो गये—दग्धोदरस्यार्थे ।

इस क्रोत्र में भी अविक समय तक खड़ा न रहा गया । आत्म परिचय की एक नूतनधारा निकली । प्राच्य आज पुकार कर कहना चाहता है, 'मैं मरा नहीं, जीवित हूँ मैं चलूँगा तो चरणपात की धमक से ही मेरा परिचय विश्व विदित हो, जायगा । मैं प्राचीन हूँ, मृत हूँ ? मैं जब नीद में अचेतन था तब मैं ने स्पन देखा था कि मैं प्राचीन हूँ, मर गया हूँ । आज जब मैं अन्तर में प्राणों का आवेगा अनुभव कर रहा हूँ, तब कैसे

कहूँ कि मैं प्राचीन हूँ, महास्थविर हूँ? इतिहास कहता है मैं स्थावर हूँ? कौन सा इतिहास? इतिहास क्या अतीत के किसी अंधेरे गहवर में पत्थर की भान्ति जमा बैठा है, जो हृद लेते हा गवाही दे देगा? इतिहास तो मन की सृष्टि है, प्रत्न-नत्व माल मसाला देता है, जड़ उपादान, ऐतिहासिक का मन उसे गति और गठन प्रदान करता है। जब मैं जड़ बना पड़ा था, आलसी बना पड़ा था, तब मैं भी समझता था कि मैं स्थावर हूँ, अचंचल हूँ। किन्तु आज अन्तर में जिस चान्द्रस्य का अनुभव हो रहा है, मेरे अतीत में उसी प्राण शक्ति की ही तो असंस्य लीलाएं देख पड़ती हैं! मैं विषय-विमुखी हूँ, तत्वान्वेषी हूँ? मैं ऐश्वर्यविलासी हूँ, भोगपरायण हूँ? मैं विष्वंशी हूँ, शान्तिनिष्ठ हूँ? मैं सब कुछ हूँ, बहुरूपी हूँ—कारण, मैं जीवित हूँ, प्राणवान हूँ!

प्राची के अन्तर की यह उच्छ्रवास क्या हम अपने अन्तर अनुभव नहीं करते?— अबश्य करते हैं, किन्तु उभी तक उस अनुभूति ने एक विशिष्ट रूप धारणा नहीं किया। एशिया के प्रत्येक देश में इस अनुभूतिके चिह्न पाये जाते हैं, किन्तु खण्ड-खण्ड रूप में। हम प्राच्य शब्द के उच्चारण को मुरुयतः भारतवर्ष समझते हैं और उसके चारों ओर रहता है अन्यान्य प्राय देशों के अस्पष्ट खण्ड परिचय का एक बाह्य मण्डल। पहले ही कह चुका हूँ कि हमारी प्राच्य जगत् की कल्पना, अब तक योरोप की प्राय कल्पना की प्रतिलिपा मात्र थी! वह केवल ज्ञान का विषय थी, उसके साथ हृदय का सम्बन्ध तो नितान्त सामान्य ही था। किन्तु अब प्राच्य शब्द के साथ हृदय का रंग लग चुका है। ३० वर्ष पूर्व जापानी मनीषी ओमाकुटा ने जब अपने 'Ideals of the East' में चीन और जापान के ज़िल्प के साथ भारतीय

सभ्यता का घनिष्ठ सम्बद्ध दिखाते हुए लिखा था—‘Asia the great Mother of one’—‘महिमा मयी एशिया ही माँ है—तब उन शब्दों ने हमारे हृदय में एक अभूतपूर्व भक्तार दी थी। एशिया निवासियों के मुँह से प्राच्य शब्द का यह उचारण। वहूकाल विस्मृत भाव का नूतन उद्घोषन प्रतीत हुआ। यह केवल कल्पना प्रमूल भानुकता है—यह मैं किमी तरह मान ही नहीं सकता।

मुझे मालूम होता है कि हम जो भारतीय नहीं प्राच्य कह कर अपना परिचय देते हैं, इसके पीछे एक यथार्थ प्रेरणा है। योगेविधन सभ्यता और शिक्षा-दीक्षा के बोझ से हम विचार, कर्म व्यवहार में अपनी निजस्व प्रवृत्ति का अनुग्रहण करते ही न्वाचीनता भी खो रहे हैं। सर जार्ज वर्ड के शब्दों में—‘इस शिक्षा प्रणाली (पाश्चात्य) ने भारतीयों के अपने साहित्य-प्रेम की भावना, उनकी विकासशील आत्मा, अपने कला कौशल का अनुराग, उनकी परम्परागत लोकोक्तियों और राष्ट्रीय धर्म का मत्यानाश कर डाला है। वे अपने घरों से, माता-पिता और बहन भाइयों से उक्ता गये। इसका जहां तक प्रभाव पहुंचा है, लोग अपने परिवारों से असन्तुष्ट मेर रहते हैं।’

हां, तो इसके विनाश खड़े होने के लिए हमें शक्ति चाहिये। बल-वृद्धि सदा आत्मीयों के सहयोग से होती है। हमारे आत्मीय कौन हैं? आपको याद होगा, समय एशिया, अब भी भारत की प्राचीन साधना का अशर्मीगी है। क्या शताब्दियों से चलते आये इस भाव के व्यापार का कोई प्रभाव ही नहीं? है, और अबश्य है, चीन के भाग्य विधाता स्वर्गीय डॉ सनयात सेन ने Bombay Chronicle के प्रतिनिधि से बातचीत करते हुए कहा था—‘संसार की सभ्यता का आदि जन्मदाता एशिया आज सब

के पेरों तरे गैदा जा रहा है। पश्चिया के युवकों का प्रवान करन्वय है उसे उमके गत गौरव पर प्रतिष्ठित करना। चीन यह चेष्टा कर रहा है, आशा है समस्त एशिया हमें अपनी नैतिक स्वानुभूति प्रवान करेगा।' प्रसिद्ध अपेज लेखक मान कीर्ति भी स्वीकार करते हैं—'समस्त मानव जाति का जन्म स्थान एवं समार की सम्भ्यता व सर्व श्रेष्ठ धर्मों का केन्द्र स्थान पश्चिया समार का सब से बड़ा महादंश है। इसका और वर्फल १५० लाख वर्ग मील है और आवादी है ससार के आवे न अधिक ८० करोड़।' योगोप में सब से पहले प्रकाश रश्मियां एशिया ही में पहुंची थीं और एशिया न ही उसका बीरता से उद्धार किया था।'

—मुस्का कमालपाणी

कहन का नात्पर्य यह है कि आज समस्त पश्चिया में फिर भावों का आदान-प्रवान आगम्भ हुआ है। पहले भी विभिन्न दिशाओं से प्राय जगत् के विभिन्न खण्डों में भावों का कारबार चला विचारों का समिश्रण हुआ था। किन्तु हमारी शिक्षा व्यवस्था के कारण दूर होगया निकट, और निकट पहुंच गया दूर। प्राचीन ग्रीस का माहित्य और सम्भ्यता का इतिहास तो हमारे नावों में भरा है, किन्तु चीन या फारस की बात उठते ही हम असहाय बन जाते हैं, मानो सौर जगत् के किसी प्रह उपग्रह की चर्चा चल रही है। अस्तु, जिस नूतन भाव के उद्घोषन की ओर ऊपर इसारा किया गया है, वह तभी यथार्थ शक्ति उत्पादक बन सकता है, जब यह आत्मीय परिचय सम्पूर्णता लाभ कर लेगा, जब एशिया की सम्भ्यता और साधना का इतिहास प्रत्येक प्राच्य देश वासी के लिए अवश्य ज्ञातव्य विषय बन जायगा।

॥ शुभ समाप्ति ॥

# भारत पुस्तक भरणार

कटड़ा आहलूवाला अमृतमर की

## नवीन पुस्तकें

अनथक नेता—राठोर कुल प्रदीप महावीर दुर्गादास को सभी इतिहास प्रेमी जानते हैं। यह खोज पूर्ण शुद्ध जीवन चरित्र उसी ओर श्रेष्ठ का है जिस ने किशोरावस्था से आरम्भ कर द० वर्ष की आयु तक हाथ से तलवार न छोड़ी। जिसका ब्रत देश सेवा था, जिसकी प्रतिज्ञा अटल थी, जिसकी तलवार का लोहा औरंगजेब ने भी माना, जो अकेला ही महान शक्तिशाली मुगलशाही से टक्कर लेने के लिये मैदान में कूदा, जिसने स्वामी भक्ति का महान आदर्श संसार के सम्मुख रखा, जिसने देशोद्धार को अपना मूलमन्त्र बनाया जिस त्यागी वीर ने राज प्राप्ति को भी ठोकर मारदी तथा ज़िसकी निःस्वार्थ सेवा से भारत वासियों के हृदय में धर कर लिया, उसी अनथक नेता के इस प्रामाणिक चरित्र को पढ़कर सत्य असत्य की परीक्षा कीजिये। सर्वांग सुन्दर रंगीन चित्र से उत्तराभित सजिलद पुस्तक का मूल्य २)

नोट—इनके असली चित्र को फोटो लेकर उसी के अनुसार बनाया गया।

मेवाड़ रत्न—मेवाड़ के ओर सूर्य महाराणा प्रताप को कौन नहीं जानता ? हिन्दी साहित्य में महाराणा प्रताप के चरित्रों की कमी नहीं है परन्तु वे टाड राजस्थान एवं अंग्रेजी इतिहासों के आधार पर हैं, जो इस खोज पूर्ण जीवन चरित्र के सम्मुख गलत साबित होंगे। इस जीवन चरित्र को लिखने के लिये सत्य की खोज करने में बहुत परिश्रम करना पड़ा है।

हमारा दावा है कि महाराणा प्रताम का ऐसा शुद्ध चरित्र अब तक नहीं छपा है। महाराणा की महानना, दोरता, देश-भक्ति, कुलाभिमान, उदारता, साहस, त्यग तथा बलिदान का अपूर्व वर्णन पढ़ कर आपका हृदय उड़ल पड़ेगा। स्थान पर उत्तमोत्तम कविताएं पढ़ कर आप कड़क उठेंगे। इस प्रमाणिक चरित्र को पढ़ कर हमारे परिश्रम को सफल कीजिये सर्वांग सुन्दर रंगीन चित्र सहित मजिल्द मूल्य २।

**सुन्दर रामायण**—पंजाबी कविता में मम्पूर्ण ४८ चित्रों से मुशोभित यह रामायण, पंजाबी के सुप्रसिद्ध कवि श्री चक्रधारी जी बेजर की रंगीन लेखनी से लिखी गई है। भगवान श्री रामचन्द्र जी का पवित्र चरित्र चित्रण करने में लेखक महोदय ने घटनाओं का सजीव चित्र सींच दिया है ८०० पृष्ठकी सचित्र तथा सर्वांग सुन्दर पुस्तक हिन्दी उर्दू तथा गुरुमुखी भाषा में कीमत ४) हिन्दी में बढ़िया कागज की ४॥)

**दशमेश दर्शन**—अर्थात् जीवन चरित्र गुरु गोविन्दसिंह जी का। गुरु गोविन्दसिंह जी का डरवार लगा है। लोगों ने बताया कि काश्मीर में यवन शासक ने हिन्दू जाति पर धोर जुल्म करना अपना दीनी कर्तव्य समझा हुआ है। गोरक्षा की जगह गो वध होरहा है हिन्दू जाति के लाल तलवार के जोर पर धर्म से पदच्युत किये जारहे हैं। अवलाओं पर दिन दिहड़े बलात्कार तथा उन्हें पतित किया जारहा है, ऐसे धोर संकट में पड़ी हिन्दू जाति की रक्षा का बीड़ा गुरु जी महाराज उठाते हैं। उन्होंने अपनी बाणी का शक्ति द्वारा लोगों को कायर से बहादुर बनाया, उन्हें अपने कर्तव्य का पालन करने शिक्षा दी। यही नहीं हिन्दू जाति के लिए अपने प्यारे दो लाल भी सरहिन्द में जीवित दीवारों में चुनवा दिए। ऐसे बीर

पुरुष का जीवन तथा उनकी शिक्षा को पढ़ना प्रत्येक हिन्दू का कर्तव्य है ।  
मूल्य केवल २)

गागर में सागर—यह नाम ही बता रहा कि अमूल्य रत्नों के भण्डार सागर को गागर में भर दिया गया है । इस पुस्तक में उन सभी अनमोल विषयों का संग्रह किया है जिसके द्वारा युवकों को सभी आवश्यक ज्ञान सहज में ही कराये जा सकते हैं जैसे, प्राचीन भारत की महानता, विश्व भूगोल, इति-हास, साहित्य, ज्ञान विज्ञान मानस समाज का विकास, प्राचीन सभ्यता तथा संस्कृति आदि का संक्षिप्त वर्णन, अप्रमाणिक रूप से वर्णन किया गया है । इसके अतिरिक्त भारतीय महापुरुषों धार्मिक नेताओं, दशों गुरुओं, और पुरुषों एवं वोर रमणियों के पवित्र चरित्रों का भी व्यथेष्ट वर्णन है । इतना ही नहीं, इस पुस्तक रत्न में संसार के विकास सम्बन्धी बहुत से विद्वानों के लाभदायक लेखों का भी संग्रह है, जो प्रन्थों में हूँडने पर भी प्राप्त होने कठिन हैं । पुस्तक क्या है विश्व कोप है सैकड़ों प्रन्थों को पढ़ कर जो जाभ होगा, वह ६ भागों में विभक्त इस एक ही पुस्तक से हो सकेगा । यह हमारा दावा है । इस की उपयोगिता इसी से सिद्ध है कि हाथों हाथ विक रही है । बहिंया कागज सुन्दर छपाई की सजिलद का मूल्य २)

## भारत पुस्तक भण्डार

कट्ठा आदलूबाला अमृतसर

